1998 से निरंतर प्रकाशित

ISSN 2581-446X
वर्ष-8, अंक-4, फरवरी-मार्च 2025, ₹100/-

कला समय

कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

RNI. No. MPHIN/2017/73838

28 वर्षों की गौरवशाली सांस्कृतिक यात्रा का 133 वाँ अंक...

'पद्म श्री' सम्मान से विभूषित
डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित केन्द्रित विशेषांक

अतिथि संपादक : पं. कैलाशचंद्र घनश्याम पाण्डेय

संपादक : भँवरलाल श्रीवास

दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय भोपाल में हरिशंकर परसाई पर केन्द्रित कला समय विशेषांक का लोकार्पण

मंचासीन बी.के. लोखण्डे, जज साहब, सुरेखा कामले, रामगोपाल ठाकुर, देवीलाल पाटीदार, अवधेश वाजपेयी, श्री रामराव वानकर, अतिथि संपादक उमेश कुमार गुप्ता, संपादक भँवरलाल श्रीवास सहित समस्त हॉबी ग्रुप तथा पासिबल 582 समूह के सभी सम्मानित सदस्यगण उपस्थित थे।

हरिशंकर परसाई के जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय के राज सदन में कला समय का लोकार्पित किया गया। इस अवसर पर सेवानिवृत प्रमुख प्रधान जिला न्यायाधीश उमेश कुमार गुप्ता , शिल्पकार श्री देवीलाल पाटीदार और कला समय का आवरण बनाने वाले कलाकार श्री अवधेश बाजपेई जी और दुष्यंत संग्रहालय के अध्यक्ष श्री रामराव वामनकर वामनकर जी विशेष रूप से उपस्थित थे। कला समय के संपादक श्री भँवरलाल श्रीवास ने कला समय की यात्रा के बारे में बताते हुए कहा कि यह पत्रिका 28 वर्षो से निरंतर निकल रही है और हमने अनेक विशेषांक निकाले हैं। इसी क्रम में उमेश गुप्ता ने अतिथि सम्पादक के रूप में इसे सम्पादित किया है। उन्होंने दुष्यन्त संग्रहालय का आभार मानते हुए कहा की संग्रहालय ने हमें परसाई जी का आलेख गर्दिश के दिन की 24 पृष्ठ उनकी हस्तलिपि की पाण्डुलिपि प्रदान किये। इस अवसर पर हॉबी ग्रुप के सदस्यों के साथ-साथ अनेक साहित्यकार उपस्थित थे।

RNI NO. MPHIN/2017/73838

1998 से निरंतर प्रकाशित

देश की सर्वश्रेष्ठ एक मात्र सांस्कृतिक पत्रिका

कला समय पत्रिका वेबसाइट पर उपलब्ध

www.kalasamaymagazine.com

ISSN 2581-446X

(पंजीयन पूर्व प्रकाशित अंक, वर्ष सम्मिलित)

(वर्ष : 20+08=28) पूर्णांक-133,

वर्ष-8, अंक-4, फरवरी-मार्च 2025, मूल्य : ₹100/-

माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल म.प्र. द्वारा 'रामेश्वर गुरु सम्मान' से पुरस्कृत
श्री भारतेन्दु समिति कोटा (राज.) द्वारा 'साहित्यश्री' सम्मान एवं
साहित्य मण्डल श्री नाथद्वारा (राज.) द्वारा 'सम्पादक रत्न' सम्मान से सम्मानित
म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन भोपाल (म.प्र.) द्वारा उर्मिला तिवारी स्मृति 'सप्तपर्णी सम्मान' से पुरस्कृत
इन्टरनेशनल ध्रुवपद-धाम ट्रस्ट, जयपुर (राज.) द्वारा 'लाइफ टाइम अचीवमेंट' सम्मान

कला समय

कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

❈ पत्रिका नहीं, एक रचनात्मक अनुष्ठान ❈

संरक्षक
विजयदत्त श्रीधर
(पद्म श्री सम्मान से विभूषित)
श्यामसुंदर दुबे
कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय
महेश श्रीवास्तव
❈
कानूनी सलाहकार
उमेश कुमार गुप्ता
(प्रिंसिपल जिला न्यायाधीश रिटा.)
❈
परामर्श
लक्ष्मीनारायण पयोधि
डॉ. नारायण व्यास
प्रो. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'
प्रो. सुधा अग्रवाल
❈
सांस्कृतिक प्रतिनिधि
चेतना श्रीवास
❈
वेबसाइट प्रबंधन
मयंक अग्रवाल

रेखाचित्र: सिद्धेश्वर प्रसाद

संपादक
भँवरलाल श्रीवास
❈
सलाहकार संपादक
डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा
❈
सह संपादक
डॉ. मधु भट्ट तैलंग
देवेन्द्र प्रकाश तिवारी
❈
उप संपादक
राहुल श्रीवास
सुन्दरलाल प्रजापति
❈
नरिन्दर कौर
प्रबंध संपादक
❈
संपादक मंडल
डॉ. बिनय षडंगी राजाराम
साहित्य
❈
अरुण तिवारी
समसामयिक
❈
हरीश श्रीवास
कला, संस्कृति

सदस्यता सहयोग राशि:

(रजिस्टर्ड डाक शुल्क 300/- प्रति वर्ष अतिरिक्त) साधारण डाक

वार्षिक	:	600 (व्यक्तिगत)	700 (संस्थागत)	साधारण डाक
द्वैवार्षिक	:	1200 (व्यक्तिगत)	1400 (संस्थागत)	साधारण डाक
चार वर्ष	:	2300 (व्यक्तिगत)	2700 (संस्थागत)	साधारण डाक
आजीवन	:	10,000 (व्यक्तिगत)	12000 (संस्थागत)	साधारण डाक

(15 वर्ष के लिए)

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाईन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'कला समय' के नाम पर उक्त पते पर भेजें)

विशेष : 'कला समय' की प्रतियाँ साधारण डाक से भेजी जाती हैं यदि कोई महानुभाव रजिस्टर्ड पोस्ट से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं तो कृपया वार्षिक डाक खर्च 300/- अतिरिक्त भेजने का कष्ट करें।

कार्यालय सम्पर्क :
संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग
जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016
फोन : 0755-2562294, मो.- 94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
bhanwarlalshrivas@gmail.com
वेबसाइट : **www.kalasamaymagazine.com**

ऑनलाइन सदस्यता सहयोग सुविधा :
'कला समय' का बैंक खाता विवरण
पंजाब नैशनल बैंक की शाखा अरेरा कॉलोनी भोपाल, म.प्र. **(IFSC : PUNB0093210)** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में ऑनलाइन राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

कला समय पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों, अतिथि संपादकों के अपने हैं, यह जरूरी नहीं कि संपादक, प्रकाशक, मुद्रक उनसे सहमत हो। पत्रिका से संबंधित समस्त विवाद, भोपाल न्यायालय के अधीन ही रहेंगे। सम्पादन, संचालन, प्रबंधन एवं प्रकाशन- अवैतनिक, अव्यवसायिक

विशेष नोट : © सर्वाधिकार सुरक्षित 'कला समय' प्रबंधन यह स्पष्ट करना आवश्यक समझता है कि 'कला समय' में प्रवेशांक फरवरी-मार्च 1998 से लेकर अब तक प्रकाशित होने वाली समस्त सामग्री या सामग्री के अंश के पुनर्प्रकाशन तथा पुनरुत्पादन के सर्वाधिकार कॉपीराइट अधिनियम के अंतर्गत 'कला समय' के पास सुरक्षित हैं। अत: कोई भी व्यक्ति या संस्था 'कला समय' की इस सामग्री या इस सामग्री के अंश का उपयोग प्रबंधन की पूर्वानुमति के बिना न करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा गणेश ग्राफिक्स, 26 बी, देशबन्धु भवन, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कालोनी, भोपाल (म.प्र.) - 462016 से प्रकाशित। संपादक - **भँवरलाल श्रीवास**

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित वर्ष विशेषांक के प्रमुख विद्वान हस्ताक्षर...

डॉ. मोहन यादव

डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा

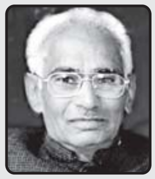
डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित

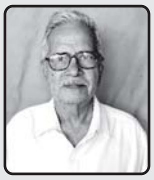
अमरसिंह कुशवाह

डॉ. नारायण व्यास

डॉ. मीनाक्षी टिकावत

नरेन्द्र सिंह पँवार

डॉ. रमण सोलंकी

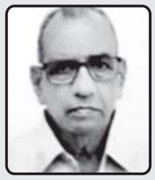
गौरीशंकर दुबे

प्रो. डॉ. सरोज गुप्ता

श्रीराम दवे

डॉ. रवीन्द्र कुमार सोहोनी

कैलाशचन्द्र पन्त

डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

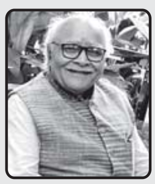
डॉ. राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी

डॉ. राम वल्लभ आचार्य

लक्ष्मीनारायण पयोधि

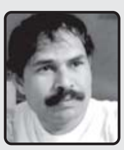
चेतन औदिच्य

डॉ. देवेन्द्र वर्मा 'ब्रजरंग'

डॉ. सुरेश गर्ग

सुनील कुमार महला

अश्विनी कुमार दुबे

सत्य नारायण शर्मा

डॉ. आशीष जैन आचार्य

इस प्रतिष्ठा विशेषांक के अतिथि संपादक

पं. कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय
(राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त)
वरिष्ठ साहित्यकार, इतिहासकार एवं पुरातत्वविद्
मो. 9424546019

इस बार

- **अतिथि संपादक की कलम से**
  पद्मश्री 05
- **संपादकीय**
  मध्यप्रदेश के गौरव पुरूष : डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित 07
- **आलेख**
  डॉ भगवतीलाल राजपुरोहित और उनका .../ डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा 09
- **साक्षात्कार**
  अपने मुँह मियाँ मिट्ठू होना कोई अच्छी बात नहीं/ श्रीराम दवे 15
- **संस्मरण**
  पद्मश्री विभूशित डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित के.. / अमरसिंह कुशवाह 20
- **आलेख**
  राष्ट्र निर्माणकारी साहित्य निर्माता : डॉ. .../ प्रो. डॉ. सरोज गुप्ता 22
- **संस्मरण**
  पद्मश्री से सम्मानित डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित/ डॉ. मीनाक्षी टिकावत 24
  तपस्वी : डॉ. भगवतीलाल जी राजपुरोहित/नरेन्द्र सिंह पँवार 26
  पद्मश्री विभूषित डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित .../डॉ. रमण सोलंकी 27
  सहज, सरल व्यक्तित्व के धनी पद्म श्री डॉ. .../ गौरीशंकर दुबे 28
  समय के शिलालेख पर हस्ताक्षर पद्मश्री .../डॉ. रवीन्द्र कुमार सोहोनी 29
- **आलेख**
  संवत् प्रवर्तक विक्रमादित्य / डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित 30
- **आलेख**
  विक्रम सम्वत् प्रकृति के संरक्षण, संवर्धन और .../ डॉ. मोहन यादव 33
- **रचना संसार**
  डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित जी के प्रमुख रचना संसार 35
- **आलेख**
  जीआईएस-2025 का प्रधानमंत्री द्वारा शुभारंभ.../ डॉ. मोहन यादव 39
- **अद्वैत विमर्श**
  भारत की सांस्कृतिक एकता के उद्घोषक आचार्य शंकर/ कैलाशचन्द्र पन्त 41
- **आलेख**
  स्वावलंबन व स्वाभिमान के प्रतीक नानाजी/ डॉ. मोहन यादव 43
- **समय की धरोहर....**
  लोक के महान अध्येता डॉ. भानावत... / डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' 45
- **आलेख**
  होली निरंकुशता के विरुद्ध लोक का .../ डॉ. राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी 48
- **जनजातीय संस्कृति**
  संस्कृति के रंग जनजातीय जीवन शैली का ... / लक्ष्मीनारायण पयोधि 53
- **कला-अक्ष**
  कला एक गहरी यात्रा / चेतन औदिच्य 54
- **संगीत-चिंतन**
  ब्रज में होली के विविध रंग / डॉ. देवेन्द्र वर्मा 'ब्रजरंग' 55
- **व्यंग्य आलेख**
  क्या व्यंग्य में आलोचना का स्थान होना चाहिए/डॉ. सुरेश गर्ग 59
- **आलेख**
  मातृभाषा हमारी सांस्कृतिक विरासत और पहचान/सुनील कुमार महला 60
- **स्मृति शेष**
  समानांतर सिनेमा के प्रमुख फिल्मकार : श्याम.../ अश्विनी कुमार दुबे 63
- **टूरिज्म समिट**
  जीआईएस के दौरान पर्यटन में निवेश की संभावनाओं के लिये खुलेंगे... 65
- **आलेख**
  ''सूचना क्रांति व एआई चैटबॉट युग में भी .../ सुनील कुमार महला 67
  महाकवि तुलसीदास जी की सामाजिक दृष्टि/ सत्य नारायण शर्मा 70
- **विविध**
  पुस्तक समीक्षा, पुण्य स्मरण, आयोजन, समवेत, नवांकुर, पत्रिका के बहाने 72-98

शब्द संयोजन एवं आकल्पन - गणेश ग्राफिक्स, भोपाल, 9981984888
मुख्य आवरण - प्रो. शैलेन्द्र कुमार शर्मा के सौजन्य से
छायाचित्र -मनीष सराठे, सुनील सेन, गूगल से साभार, समाचार पत्र
सहयोग- धन सिंह, लता श्रीवास | **रेखाचित्र** : सिद्धेश्वर प्रसाद
आवरण सज्जा - मनोज माकोड़े, गणेश ग्राफिक्स

पद्म श्री

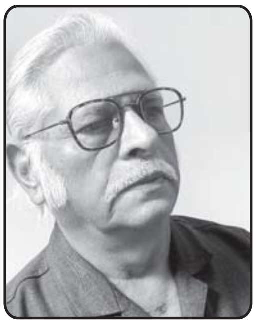

वीरों व विद्वानों को पुरस्कार से अलंकृत करने की परम्परा प्राचीन काल से रही है। महाभारत में वीर पुरुष का सम्मान इन्द्रपुरी में होने का उल्लेख है। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में वीरता पुरस्कारों का विशद वर्णन किया है। मेवाड़ में विद्वानों को लाख पसाव तथा युद्ध वीरों के 'मुण्ड कटाई' यानें आत्मोत्सर्ग करने के प्रतिसाद के रूप में वंशपरंपरागत जागीर प्रदान करने का उल्लेख मिलता है।

आगे चलकर अंग्रेजों ने भी कई प्रकार के अलंकरणों का प्रचार किया जिनमें से रायसाहब, रायबहादुर की उपाधि की जो प्रतिष्ठित व्यक्तियों को प्रदान जाती थी। इसी परंपरा में स्वतंत्र भारत में ब्रिटिश शासन की समाप्ति के बाद जून 1948 में परमवीर चक्र, महावीर चक्र आदि वीर अंलकरणों का प्रदान करने हेतु प्रारूप को अंतिम रूप प्रदान किया गया। 06, जनवरी, 1950 को जारी अंलकरणों की पहली सूची 15 अगस्त, 1947 से लागू की गई।

गैर वीरता के कार्यों के लिये अथवा विशिष्ट प्रकार की साहित्यिक सेवा अथवा सांस्कृतिक सेवाकार्य के बदले जिन अंलकरणों की व्यवस्था की गई उनमें 'भारतरत्न' व 'पद्म विभूषण' है। पद्मभूषण गैर राजनीतिक व्यक्तियों एवं शासकीय कर्मचारियों के लिये पुरस्कार है जिसे जीवित व मरणोपरान्त दोनों रूपों में व्यक्ति की किसी भी क्षेत्र में की गई अद्वितिय एवं विशिष्ट सेवा हेतु प्रदान किया जा सकता है। इसकी स्थापना 02. जनवरी, 1950 को निम्न 3 श्रेणियों 1. पद्म विभूषण, 2. पद्मभूषण, 3. पद्मश्री के रूप में की गई। किन्तु हकीकत में 08, जनवरी, 1955 को इन्हें तीन-तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया था। ये अंलकरण वक्षस्थल के बांयी ओर सवा ईंच चौड़े कमल पुष्प के रंग के फीते से लटकाकर पहने जाते हैं।

पद्मश्री इस अंलकरण की स्थापना राष्ट्रपति के द्वारा 02, जनवरी, 1954 को पद्म विभूषण तृतीय श्रेणी के से की गई। 02, जनवरी, 1955 को एक संशोधन द्वारा इसका नाम बदलकर 'पद्मश्री' कर दिया गया। प्रारंभ में इन पुरस्कारों हेतु राज्य सरकारें राज्य से अनुशंसा करती थीं जिसके आधार पर केन्द्र सरकार नाम घोषित करती थी। आगे चलकर विज्ञापन जारी कर स्वयं व्यक्ति से व्यक्ति द्वारा आवेदन करके नाम आंमत्रित किए गए। 21 वीं शताब्दी में ऑनलाईन आवेदन कर सकता है परन्तु यदि आप किसी से अपने नाम का प्रस्ताव करवा रहे हैं तो प्रस्तावक स्वयं एक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त होना चाहिये था।

पद्मविभूषण, पद्मभूषण तथा पद्मश्री सम्मानों की घोषणा गणतंत्र दिवस पर भारत सरकार द्वारा दिल्ली में की जाती है।

मुझे विश्वास था राजपुरोहितजी को पद्मश्री मिलने का

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित से मेरा परिचय 1978 में तब हुआ जब आप सान्ध्य कालीन सांदीपनी महाविद्यालय में हिन्दी का अध्यापन कराते थे। पूज्य गुरुवर्य डॉ. वाकणकर ने मुझे लिपि शास्त्र का अध्ययन करने की सलाह दी। मैं डॉ. राजपुरोहित के पास गौरी शंकर हीराचंद ओझा द्वारा लिखित पुस्तक लेने गया व इन्होंने नेठू मना कर दिया। बाद में जाकर मुझे ज्ञान हुआ कि पुस्तकें प्रदान करने पर हम लोगों से शत्रुता मोल ले लेते हैं।

85 वर्ष की देहरी पर खड़े डॉ. राजपुरोहित आज भी 'ऐकला चालो मतानुयायी हैं। न काहू से दोस्ती न काहू से बैर। निरंतर ज्ञान साधना के इस पथिक ने मन्दसौर जिले की सीतामऊ तहसील के ग्राम लदूना के प्राथमिक विद्यालय से अपनी शिक्षा दीक्षा प्रारंभ की। जिस विद्यालय में महाराज कुमार डॉ. रघुबीर सिंह ने अध्ययन किया उसी श्रीराम विद्यालय से मिडिल तक पढ़ाई की। अवन्तिका से तीन विषय में एम. ए. किया, विशेषता यह कि तीनों विषय के गुरुजन 'पद्मश्री' थे। हिन्दी में एम. ए. किया तो डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन पद्मश्री', संस्कृत में एम. ए किया तो डॉ. वैकटाचलम् पद्मश्री व प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व में एम.ए. किया तो पुरावेत्ता डॉ. वि.श्री.वाकणकर पद्मश्री। डॉ. वाकणकर के चेलों की खुशकिस्मत है कि उनके दादा गुरु डॉ. हँसमुखलाल

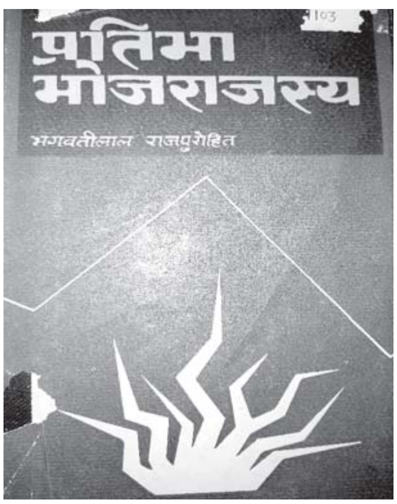

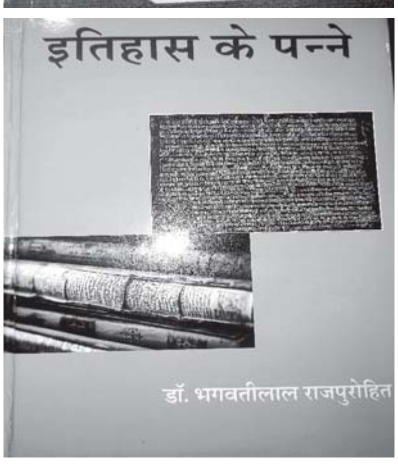

धीरजलाल साखलिया पद्मम भूषण थे। डॉ. साँखलिया की शिष्य परंपरा में डॉ. वाकणकर ने पद्मश्री प्राप्त कर अपने गुरु को गौरवान्वित किया। 9 मई, 2024 को पद्मश्री प्राप्त कर दादागुरु की लाईन में डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित ने एक और सितारा जड़ दिया।

फिर, मेरा विश्वास इस दम पर था कि जब मात्र एक गीत लिखने वाले के नाम की अनुशंसा पद्मश्री हेतु की जा सकती है तो 125 से अधिक पुस्तकें लिखने वाले डॉ. पुरोहितजी को पद्मश्री क्यों नहीं मिल सकती? मेरी जलन इतनी सी थी कि गुरु ने एक किताब नी दी। पर, मुझे राष्ट्रपति पुरस्कार मिलने के बाद उन्होंने 21 पुस्तकें प्रदान कर दीं। फिर, राजपुरोहितजी ने तो कई ऐसे पुरस्कार प्राप्त कर रखे थे जो पहली बार उन्हें ही मिले दूसरी बार बन्द ही हो गये। मेंरी स्पष्ट धारणा यह है कि जो अकेला चलता है वह जल्दी अपनी मंजिल पर पहुँच जाते हैं। डॉ. राजपुरोहित इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

गुरुवर्य स्व. डॉ. वि.श्री. वाकणकर ने अपने जीवनकाल में जिस शिष्य का ज्ञानाश्रय प्राप्त किया वे राजपुरोहित ही हैं। सर, अपने द्वारा खोजे शिलालेखों की भाषा, संस्कृत के लिये डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित का परामर्श लेने में संकोच नहीं करते थे। अब हम लोग पुरोहितजी के श्री मुख से अपनी समस्याओं का जादुई समाधान प्राप्त कर रहे हैं। आपने भी उज्जयिनी की लेखन परंपरा का प्रतिमान कायम रखने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। अब तक आपने अवन्ति सम्राट विक्रमादित्य पर 20, महाकवि कालिदास पर डेढ़ दर्जन, परमार शासक महाराजाधिराज भोज पर डेढ़ दर्जन, प्रतिकल्पा पर 8, साहित्य और भाषा पर 20 इतिहास एवं संस्कृति पर 16, लोक संस्कृति पर 11, नाटक पर 3 पुस्तकें प्रकाशित की हैं। महाराजा विक्रमादित्य शोध पीठ के निदेशक के रुप में आपके द्वारा लेखन का जो प्रतिमान किया गया उसे अब शायद ही कोई अखण्ड रख पावेगा।

12. बिल्लोटीपुरा, उज्जैन में आपका निवास उन सब जिज्ञासुओं का तुष्टिकेन्द्र है जो साहित्य, कला, इतिहास, संस्कृति और पुरातत्त्व के क्षेत्र में जिज्ञासा रखते हैं। लोग बिना किसी सूचना के जा धमकें पर कोई वर्जना नहीं। सर घर पर न हों तो पूजनीया भाभी साहब श्रीमती निर्मला राजपुरोहित को हल्के में न लेंना। कमती नी है, आप तो चारे लगी जावो। श्रीमती निर्मला राजपुरोहित इस समय मालवी के मामले में ठावा जानकारां ती आगे है। आपकी विशेषता या है कि पट्टी पर बैठा-बैठा एकाध दर्जन किताबां रंगी दी है। वा जदी, ठीक।

ऐसे पद्म श्री सम्मान से विभूषित राजपुरोहित जी के अभिनन्दन अंक हेतु 'कला समय' के प्रकाशक / सम्पादक, श्रीभंवरलाल श्रीवास ने अपनी सहमति प्रदान कर जिस उदारता का परिचय दिया, तदर्थ, मैं उनका हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। मालवा में इन महिनों में किसान बहुत व्यस्त रहते हैं. खेतों में अफीम, लहसुन, चना, रायड़ा आदि फसलें जो खड़ी हैं। पर, लेखक इतनें व्यस्त रहेगें इसका अनुमान मैं नहीं कर पाया। लेखन निमंत्रण प्राप्त करने पर लेखन वीरों के मोबाइल सन्देश कुछ इस तरह प्राप्त हुए घर से बहुत दूर हूँ परीक्षा कार्य के कारण बहुत व्यस्तता है, बाई बीमार है, शादी में जा रहे हैं, सर के साथ फोटो तो बहुत हैं, कलम वीरों के ऐसे दपाडों हेतु बहुत बहुत धन्यवाद। जिन्होंने लिखा उनका शुद्ध अभिनन्दन, आप इस अंक में हमारे हम सफर हैं। कुछ ने अपनी प्रसिद्धि हेतु डॉ. भ.ला. राजपुरोहित पर वर्षों पूर्व लिख दिया था उनकी बहुत बहुत कृपा। कृपया, नाराज न हों यदि हमने आपकी प्रकाशित सामग्री का उपयोग इस अनुष्ठान में आपकी पूर्वानुमति के बिना कर लिया हो तो। सिद्धिरस्तु ।।

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा । सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः ।।
यशसिचाभिरुचर्व्यसनंश्रुतौ । प्रकृतिसिद्धि मिदंहि महात्मनाम् ।।

फाल्गुन, 14 वि.स. 2082
तदनुसार गुरुवार, 27 फरवरी, 2025

कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय
श्री दशपुर प्राच्य शोध संस्थान, मंदसौर मोबा. 94245-46019

संपादकीय

मध्यप्रदेश के गौरव पुरूष : डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित

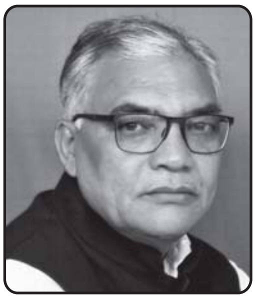

"आज जरूरत है यह समझने की कि मानवधर्म के महासागर में कहीं भी गोता लगाओं उसका स्वाद एक जैसा ही होगा। मनुष्यता ने आज तक इसी से समस्त विश्व को आलोकित किया है। धर्म की धरा को कहीं से भी चखों उसका स्वाद एक जैसा है। परमेश्वर ने जब सृष्टि की रचना की तो उसने मनुष्य को हर प्रकार की आध्यात्मिक और भौतिक संपदा से समान रूप से संपन्न किया। उसी के साथ उसने मनुष्य के हृदय में प्रेम, आनंद और उत्सव के फूल खिलाए।"

'' बाधाएँ आती हैं आएँ
घिरे प्रलय की घोर घटाएँ
पाँवों के नीचे अंगारे
सिर पर बरसे यदि ज्वालाएँ
निज हाथों में हँसते-हँसते
आग लगाकर जलना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा।''

– अटल बिहारी वाजपेयी

पूरी मानव जाति के एक होने की धारणा सिर्फ किसी भावुकता अथवा नीति से पैदा नहीं हुई थी बल्कि इस समझदारी से पैदा हुई थी कि घरती के सभी लोगों के उदगम और विकास का स्त्रोत एक ही है। दर असल जब इस सृष्टि की रचना की गई तो धरती पर कहीं भी कोई सीमा नहीं बनाई गई पर इंसान ने कागज के नक्शे बनाकर समस्त मानव जाति को भिन्न-भिन्न सीमाओं, राष्ट्रों और संप्रदायों में जकड़ दिया। किन्तु आज जरूरत है यह समझने की कि मानवधर्म के महासागर में कही भी गोता लगाओं उसका स्वाद एक जैसा ही होगा। मनुष्यता ने आज तक इसी से समस्त विश्व को आलोकित किया है। धर्म की धरा को कहीं से भी चखों उसका स्वाद एक जैसा है। परमेश्वर ने जब सृष्टि की रचना की तो उसने मनुष्य को हर प्रकार की आध्यात्मिक और भौतिक संपदा से समान रूप से संपन्न किया। उसी के साथ उसने मनुष्य के हृदय में प्रेम, आनंद और उत्सव के फूल खिलाए। आज हम एक ऐसी ही शख्सियत को जानते हैं जिनका जन्म मध्यप्रदेश में 2 नवंम्बर 1943 को चंदोड़िया (जिला धार) में जन्में पद्म श्री से विभूषित डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित का अध्ययन रचना क्षेत्र हिन्दी, संस्कृत, मालवी, इतिहास एवं संस्कृति सम्बन्धी रहा। निरन्तर अनुसंधान लेखन में सक्रिय श्री राजपुरोहित का विशाल साहित्य सृजन में राजा भोज, कालिदास, कालिदास का वागर्थ, रघुवंशफल और कालिदास उज्जयिनी और महाकाल, संस्कृत, भाषा और रंगमंच मालवी संस्कृति और साहित्य, विधोत्तमा (उपन्यास), वीणावासवदत्ता, पद्मप्राभृतक, उभयाभिसारिका (संस्कृति रूपकों का हिन्दी रूपांतर), सेज को सरोज (पद्मप्राभृतक का मालवी रूपांतर), हलकारों बादल (मेघदूत का मालवी रूपांतर)। वररूचि, भोजदेव आदि विक्रमादित्य प्रमुख हैं।

भारत के प्राचीन राजवंश (विश्वेश्रवरनाथ रेउ कृत) तीन खण्ड, मालवी लोकगीत, भारतीय अभिलेख का संपादन। म.प्र. उच्च शिक्षा अनुदान आयोग का डॉ. राधाकृष्णन सम्मान, मध्यप्रदेश संस्कृत अकादमी का भोज पुरस्कार, मध्यप्रदेश साहित्य परिषद का बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' पुरस्कार भोज सम्मान अमृत महोत्सव अंतर्गत संगीत नाटक अकादमी अर्वाड सहित भारत सरकार का पद्मश्री सम्मान भी आपको प्रदान किया गया है। श्री राजपुरोहित जी साहित्य, संस्कृति एवं लोक धारा पर निरंतर अनुसंधारन चिंतन, लेखन काव्य, नाट्य कथा व्यंग्य रचना में अभिरूचि है। वे अपनी पुस्तक मालवी लोकगीत में कहते हैं कि लोकगीतों में लोक की स्वयंस्फूर्त पारंपरिक भावनाओं का अटूट प्रवाह पाया जाता है उस प्रवाह का वाहक भी स्वयं लोक होता है। उन लोकगीतों को सहेजने का प्रयास विभिन्न बोलियों में तो हुआ है, परन्तु पश्चिम मध्यप्रदेश के लोक अंचल मालवा के मालवी लोक गीतों को विधिवत् प्रस्तुत करने का वृहत् प्रयास अब तक प्राय: उपेक्षित रहा। इस कार्य को सम्पन्न करने का बीड़ा मालवी के वयोवृद्ध एवं प्रसिद्ध कवि श्री टीकमचन्द्र भावसार 'ब' और डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित जो संस्कृत-हिन्दी-मालवी के जानकार हैं। ने उठाया। मालवी लोकगीत डॉ. राजपुरोहित जी के वर्षो के अथक प्रयास का परिणाम है यह ग्रन्थ। इसमें मालवी के संस्कार-गीत-ऋतुगीत पर्वोत्सव गीत आदि का यह अदभुत संकलन उन श्रुतिगीतों के सहजने का सशक्त प्रयास है जो आज की हवा में

तेजी से बुझते जा रहे हैं। साथ ही रूपमती आदि के दुर्लभ यथा सुलभ गीतों की बानगी भी इस ग्रंथ में देखी जा सकती है। डॉ. राजपुरोहित जी ने अपनी पुस्तक '' मालवी लोकगीत '' उन अनजाने अगणित कण्ठों को समर्पित की है जिनके कण्ठ से फूटे ये मधुर गीत। वे कहते है कि यह संग्रह बहुधा भावसार ''बा'' के कण्ठस्थ गीतों का है। परन्तु गाजनोद की आनंद कुंवर पुरोहित अथवा निर्मला राजपुरोहित या अन्य विभिन्न स्त्रोतों से भी इस संग्रह में गीत प्राप्त कर उनका संकलन तैयार किया गया है। गीतों के साथ-साथ संक्षिप्त हिन्दी अनुवाद या संकेत तथा यथावशक टिप्पणियाँ भी संग्रह में दी गई है। धारावाही परंपरा को रेखांकित करते ये गीत हिन्दी को समृद्धि में कुछ तो योग करही सकते हैं। हम यहाँ पर इस महत्वपूर्ण संग्रह संकलन का एक कबीर भजन मालवी भाषा में हिन्दी अनुवाद के साथ पाठकों के लिए सुलभ करा रहे हैं-

थारो हीरा सो जनम गवायो भजन बिना बावरो......
ना तु संत शरण में आयो ना हरि को गुण गायो
पच पच मरियो बेल की नाइं, सोय रयो ने उठ धायो
भजन बिना बावरो......
यह संसार हाट बनिये का सब कोई सोदा लायो,
चतुर करे चोगुना, मूरख मोल गमायो
भजन बिना बावरो.....
यह संसार माया का लोभी, ममता मेल चुणायो
कहत कबीर सुणो भई साधू, अंत समय पछातायो
भजन बिना बावरो.....

अरे पगले ! विना भजन के तैने अपना हीरा जैसा जीवन गंवा दिया। न तो तु संतों की शरण में आया, न हरि का ही गुण गाया। बैल के समान परेशान होता रहा। जीवन भर सो रहा और मृत्यु समय उठकर भाग चला। यह संसार तो बनिये का हाट है। इसमें हर प्रकार का सौदा लाया। जो चतुर होता है वह चौगुना कर लेता है और मूर्ख लागत मूल्य भी गंवा बैठता है। यह संसार माया का लोभी है। ममता का महल बनाया गाया।

कबीर कहते है- अरे साधुओं सनो। बिना भजन के अंत समय पछताना पड़ता है।

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित का विशाल रचना संसार आने वाली भावी पीढ़ियों के लिये प्रेरणा और शोध का विशाल भंडार हैं। हम बहुत आदर के साथ उनके स्वस्थ और दीर्घ आयु की कामना के साथ उनके साहित्य सृजन समुद्र से एक अंजुली भर जल के माहयम से यह अंक उनके सहान व्यक्तित्व की झलक मात्र है। वर्तमान में आपका उज्जैन में निवास है।

'कला समय' का यह प्रतिष्ठा विशेषांक डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित पर केन्द्रिय विशेषांक के अतिथि संपादक पं. कैलाशचन्द्र धनश्याम पाण्डेय जी ने पुन: हमारे आग्रह को स्वीकार करते हुए इस विशेष अंक का अतिथि संपादक के रूप में संपादन करना स्वीकार किया है। हम श्री पाण्डेय जी के प्रति आभारी हैं। आपने 'कला समय' के दो और महत्वपूर्ण विशेषांकों का संपादन किया है। ''स्वतंत्रता आन्दोलन में मध्य प्रदेश की गौरव गाथा विशेषांक (1857-1947)'' तथा ''देवी अहिल्याबाई होलकर 300 वाँ जन्म जयंती'' वर्ष विशेषांक शामिल है। हम उनके प्रति कृतज्ञ हैं। डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित के इस महत्वपूर्ण विशेषांक के सभी विद्वान लेखकों के हम अत्यन्त आभारी हैं। जिनकें रचनात्मक सहयोग से यह अंक संग्रहणीय हो सका ऐसे सभी विद्वानों के प्रति भी हम कृतज्ञ हैं। और आशा करते है कि आगे भी आपका सहयोग 'कला समय' को इसी तरह मिलता रहेगा।

कला समय के सभी पाठकों और लेखकों को 'कला समय' परिवार की ओर से बसंत पंचमी, होली पर्व और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, विक्रम सवत् 2082 नवसंवत्सर की अनेक शुभकामनाएं।

।।शुभमस्तु।।

- भँवरलाल श्रीवास

आलेख

डॉ भगवतीलाल राजपुरोहित और उनका लोक तत्त्व- विमर्श

डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा

लोक की संज्ञा अत्यंत व्यापक और निस्सीम है। प्राय: इसे जनपदीय या ग्राम्य के अर्थ में देखने का प्रयास कई मनीषियों ने किया है। इसके पीछे कारण है- पाश्चात्य फोक से भारतीय लोक के समीकरण का प्रयास। भारत में लोक-साहित्य के अध्ययन की पद्धति के शुरुआती दौर में लोक का आशय पश्चिम के फोक की तर्ज पर असंस्कृत, अविकसित, आदिम या रूढ़िग्रस्त जनसमूह से लिया गया, जो उपयुक्त नहीं है। वस्तुत: ये समस्त प्रवृत्तियाँ कथित सभ्य या आधुनिक समुदाय की ओर से गढ़ी गई हैं, लोक को महज उनके बरअक्स चिन्हित करना उचित नहीं है। भारतीय संदर्भ में देखें तो लोके वेदे च सूत्र का संकेत साफ है कि वेद या शास्त्र के समानांतर, किन्तु पूरक रूप में एक लोकधारा भी यहाँ सतत प्रवाहमान रही है, जो वेद से किसी भी आधार पर हीन नहीं है। इन दोनों धाराओं को समन्वय से ही भारत की पहचान बनी है। लोकधारा के अनेक सूत्र वैदिक वाङ्मय से लेकर आधुनिक साहित्य तक सहज ही उपलब्ध हैं। कई शास्त्रीय परम्पराओं के मूल उत्स लोक में ही हैं। लोक की इस विलक्षण उपस्थिति और महिमा को भारतीय मनीषा सदियों पूर्व से वर्णित करती आ रही है। इधर लोक-साहित्य के अनुशीलन की परम्परा पश्चिम में सत्रहवीं शती में प्रारंभ हुई, जिसने विश्वभर के मनीषियों का ध्यान खींचा। इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी आदि देशों के अध्येताओं ने अपने-अपने देशों की परम्परा और प्राचीन संस्कृति के शोध के लिए पुरातत्त्व के साथ लोक-साहित्य को भी महत्त्व देना प्रारंभ किया। तभी से लोक-साहित्य और संस्कृति को ऐतिहासिक विज्ञान का दर्जा मिलने लगा।

उन्नीसवीं सदी तक आते-आते लोक-साहित्य के अध्ययन की कई दृष्टियाँ उभरीं, जिनमें सांस्कृतिक, नृतत्त्वशास्त्रीय, धर्मशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय, ऐतिहासिक आदि उल्लेखनीय हैं। भारत में इस दिशा में शुरुआती प्रयास ब्रिटिश अधिकारियों और मिशनरियों ने किए। इनका प्रभाव भारतीय मनीषियों पर भी पड़ा। उन्नीसवीं-बीसवीं शती में इस दिशा में कार्य करने वाले भारतीय लोकवेत्ताओं में तोरुदत्त, लालबिहारी डे, दिनेशचन्द्र सेन, रायबहादुर शरदचंद्र राय, रामनरेश त्रिपाठी, देवेन्द्र सत्यार्थी, वासुदेवशरण अग्रवाल, विश्वनाथ काशीनाथ राजवड़े, श्रीधर व्यंकटेश केतकर, साने गुरुजी, डॉ सत्येन्द्र, दुर्गा भागवत, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, डॉ. श्याम परमार, डॉ. चिंतामणि उपाध्याय, डॉ. महेन्द्र भानावत, डॉ प्रहलादचन्द्र जोशी, डॉ. बसन्त निरगुणे, डॉ. श्यामसुंदर निगम, डॉ. पूरन सहगल, डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इसी श्रृंखला के विलक्षण विद्वान् हैं पद्म श्री डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित (1943), जिन्होंने श्लोक और लोक दोनों के प्रति गहन समर्पण और अध्यवसाय से इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

आधी शताब्दी पूर्व मालवी लोकानुसन्धान के क्षेत्र में जाग्रत नवीन संचेतना के प्रमुख संवाहक हैं पद्मश्री डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित। उनके पहले इस दिशा में पद्मभूषण डॉ. सूर्यनारायण व्यास, डॉ. रघुवीरसिंह, डॉ. श्याम परमार, डॉ. चिन्तामणि उपाध्याय, डॉ. बसंतीलाल बम आदि महत्वपूर्ण कार्य कर चुके थे। विश्वविद्यालयीन शोध यात्रा में डॉ. श्याम परमार और डॉ. चिंतामणि उपाध्याय अग्रणी बने। यह सिलसिला चल पड़ा। मालवी लोक साहित्य के संकलन, सर्वेक्षण से लेकर अनुशीलन की दिशा में गतिशीलता बढ़ने लगी। फिर तो मालवा में लोक साहित्य और संस्कृति से जुड़े शोध और विवेचना की कड़ी में कई लोग जुड़ते चले गए, जुड़ रहे हैं। इनमें उल्लेखनीय हैं- डा. प्रहलादचंद्र जोशी, डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित, डा. बंसीधर, डा. धर्मनारायण शर्मा, डॉ. शिवकुमार मधुर, डॉ. पी. डी. शर्मा, डॉ. श्यामसुंदर निगम, डॉ. पूरन सहगल, डॉ. शिव चौरसिया, डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा, झलक निगम, डॉ. महिपाल भूरिया, डॉ. हजारीलाल वर्मा, डॉ. जगदीशचन्द्र शर्मा, श्रीमती निर्मला राजपुरोहित, डॉ. शशि निगम, श्रीमती देवांगना पंडित, डॉ. दशरथ मसानिया, श्री बंसीधर बंधु, डॉ. कृष्णकुमार श्रीवास्तव आदि।

उज्जैन स्थित विक्रम विश्वविद्यालय में एक साथ कई शोध दिशाओं में मालवी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति को लेकर काम हुआ है

श्रृंखला में प्राचीन भारतीय साहित्य, कला, इतिहास और संस्कृति पर केन्द्रित डॉ. राजपुरोहित के ग्रंथ संस्कृत नाटक और रंगमंच, भारतीय कला और संस्कृति, प्राचीन भारतीय अभिलेख और इतिहास, भारतीय अभिलेख, भारत के प्राचीन राजवंश (संपा), उज्जयिनी और महाकाल आदि उनकी गहन गवेषणाओं का साक्ष्य देते हैं। डॉ. राजपुरोहित ने वेताल पंचविंशतिका की आधार कथाओं तथा भोज कृत चाणक्य माणिक्य का महत्वपूर्ण संपादन अनुवाद किया है। राजा भोज का चाणक्य माणिक्य ग्रंथ प्राचीन राजनीतिशास्त्र से संबंधित तो है ही, साथ ही इसमें लोकनीति का भी समावेश है।

और आज भी जारी है। मालवी भाषा और उसकी उपबोलियों रजवाड़ी, सोंधवाड़ी, दशोरी, उमठवाड़ी आदि पर काम हुआ है। साथ में ही निमाड़ी, भीली, भिलाली, बारेली पर भी पर्याप्त काम हुआ है। आज भी कई लोक और जनजातीय साहित्य एवं संस्कृति पर महत्वपूर्ण कार्य चल रहा है। मालवी संस्कृति के विविध पक्ष जैसे व्रत, पर्व, उत्सव के गीत, लोकदेवता साहित्य, श्रृंगारिक लोक गीत, लोक विश्वास, हीड़ काव्य, माच परम्परा, संझा पर्व, पहेली, चित्रावण, मांडणा, कठपुतली कला, श्रृंगार प्रसाधन, ग्रामीण प्रौद्योगिकी, सत्तावन की क्रांति से जुड़े लोक साहित्य और संस्कृति पर काम हो चुका है। मालवी की विरद बखाण, गाथा साहित्य, लोकोक्ति आदि पर भी काम हो चुका है। मालवी की शोध यात्रा में कई नए लोग जुड़े हैं, जिन्होंने प्रो. शैलेंद्रकुमार शर्मा के निर्देशन में नए-नए विषय पर काम किया है और कई आज भी कर रहे हैं। डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित, डॉ. शिव चौरसिया, डॉ. प्रकाश उपाध्याय, डॉ. जगदीशचंद्र शर्मा, डॉ. सी एल शर्मा आदि के निर्देशन में कई नए लोग जुड़े।

लोक एवं शास्त्रवेत्ता पद्मश्री डॉ, राजपुरोहित का कृतित्त्व उनके व्यक्तित्व के अनुरूप समावेशी है। उन्होंने साहित्य, संस्कृति, पुरातत्त्व, इतिहास, दर्शन आदि का गहन मंथन किया है और प्राय: इन सभी क्षेत्रों में उनकी खोज एवं विवेचनाएँ कई नवीन तथ्यों को उद्घाटित करने में सफल रही हैं। महाकवि कालिदास, सम्राट विक्रमादित्य और भोज पर केंद्रित उनके ग्रंथ विशिष्ट अध्ययन क्षेत्रों से जुड़े शोध की नई दिशाओं को उद्घाटित कर रहे हैं। इन ग्रंथों में उल्लेखनीय है- कालिदास का वागर्थ, रघुवंशफल और कालिदास, मेघदूत भाष्य और महाकवि कालिदास, आदि विक्रमादित्य, पुराणों में विक्रमादित्य (सं), विक्रमादित्य कथाएँ (सं), वेताल पंचविंशतिका (सम्पा), पुरातत्त्व में विक्रमादित्य, सम्राट विक्रमादित्य और नवरत्न, वररुचि, भोज का रचना विश्व, राजाभोज, प्रतिभा भोजराजस्य, भोजदेव आदि। भारतीय साहित्य और लोक परम्परा के महानायक विक्रमादित्य की राज्य और न्याय व्यवस्था का स्मरण आज भी सुधीजन करते हैं।

संवत प्रवर्तक युगांतरकारी विक्रमादित्य के बारे में शिलालेख, मुद्राएं, साहित्य और अनुश्रुतियों में अनेकानेक विवरण और प्रमाण उपलब्ध हैं। ऐसे प्रेरणास्पद विक्रमादित्य के सम्बन्ध में डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित की शोध पुस्तक आदि विक्रमादित्य एक महत्वपूर्ण प्रकाशन है। वर्ष 2022 में प्रकाशित संवत प्रवर्तक विक्रमादित्य (कृत युग) पुस्तक के माध्यम से डॉ. राजपुरोहित ने विक्रमादित्य द्वारा संवत प्रवर्तन से जुड़े महत्वपूर्ण पुरातात्विक, ऐतिहासिक एवं पौराणिक साक्ष्यों को अत्यंत गवेषणापूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। यह एक तरह से विक्रम संवत के सभी पक्षों पर केंद्रित विश्वकोशीय कार्य है। उन्होंने सिंहासन बत्तीसी के दक्षिण भारत से प्राप्त पाठ का संपादन एवं अनुवाद किया है, जो इस अध्ययन क्षेत्र में पहला कार्य है।

भोज कृत चारुचर्या अत्यंत लोकप्रिय और अनूठा ग्रन्थ है। इस ग्रंथ का डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित द्वारा अनूदित एवं सम्पादित संस्करण प्रकाशित हुआ है। इस ग्रन्थ की संरचना में राजा भोज की एक श्रेष्ठ संकलनकर्ता और शोधकर्ता की दृष्टि दिखाई देती है। ग्रन्थ के केंद्र में आदर्श जीवन चर्या है, जिसे साकार करते हुए भोज ने कई शास्त्रों का मंथन किया था।

सुनीतिशास्त्र सद्वैदय धर्म शास्त्रानुसारतः ।
विरच्यते चारुचर्या भोजभूपेन धीमता ।।

आयुर्वेद, धर्मशास्त्र और नीतिशास्त्र के तत्त्वों से संवलित इस ग्रंथ को जीवन विज्ञान का प्रादर्श कहा जा सकता है। डॉ. राजपुरोहित ने इन विषयों पर भोज की दृष्टि का गहन विश्लेषण किया है। भोज के इस ग्रंथ के माध्यम से संकेत मिलता है कि स्वस्थ और सुव्यवस्थित जीवन शैली के लिए प्रकृति और पदार्थों का सूक्ष्म निरीक्षण, शोधपरक जिज्ञासा और ज्ञात-अज्ञात तथ्यों की सम्यक पड़ताल आवश्यक है। ग्रंथकार ने जीवन की प्रत्येक गतिविधि की सूक्ष्म मीमांसा की है और मानव मात्र को वैज्ञानिक दृष्टि से जीने की सलाह दी है। ऐसा कोई कार्य नहीं है, जो ग्रन्थकार भोज की आँखों से ओझल हो या अनुवादक एवं सम्पादक डॉ. राजपुरोहित की आंखों से। क्या प्रात:कालीन चर्या, क्या वस्त्राभूषण, क्या भोजन और क्या ऋतु अनुसार करणीय कर्म - सब कुछ इस ग्रंथ में विचारणीय बने हैं।

इसी श्रृंखला में प्राचीन भारतीय साहित्य, कला, इतिहास और संस्कृति पर केन्द्रित डॉ. राजपुरोहित के ग्रंथ संस्कृत नाटक और रंगमंच, भारतीय कला और संस्कृति, प्राचीन भारतीय अभिलेख और इतिहास, भारतीय अभिलेख, भारत के प्राचीन राजवंश (संपा), उज्जयिनी और महाकाल आदि उनकी गहन गवेषणाओं का साक्ष्य देते हैं। डॉ. राजपुरोहित ने वेताल पंचविंशतिका की आधार कथाओं तथा भोज कृत चाणक्य माणिक्य का महत्वपूर्ण संपादन अनुवाद किया है। राजा भोज का चाणक्य

माणिक्य ग्रंथ प्राचीन राजनीतिशास्त्र से संबंधित तो है ही, साथ ही इसमें लोकनीति का भी समावेश है। अवंती क्षेत्र और सिंहस्थ महापर्व जैसा महत्वपूर्ण ग्रन्थ डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी, डॉ. श्यामसुंदर निगम, डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित, डॉ. शिव चौरसिया एवं डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा के सम्पादन में क्लैसिकी शोध संस्थान, उज्जैन से 2004 ई. में प्रकाशित हुआ था। इसमें डॉ. राजपुरोहित के कई अनुसन्धानपूर्ण आलेख प्रकाशित हुए।

इस सुदृढ़ पृष्ठभूमि में डॉ. राजपुरोहित द्वारा लोकभाषा, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र, विशेषत: मालवांचल के परिप्रेक्ष्य को लेकर किये गये कार्य का विलक्षण होना स्वाभाविक ही था। उन्होंने मालवा क्षेत्र की लोक संपदा के संकलन-संपादन के साथ ही उसके शोध विवेचन में गहरी रुचि दिखाई है। लोक के अन्वेषण में उन्होंने यथावसर भारतीय कला, संस्कृति, इतिहास आदि सहित विविध शास्त्रों से प्राप्त संदर्भ और तथ्यों का समावेश करते हुए कई नई उद्भावनाएँ की हैं।

लोक-साहित्य के संकलन-संपादन की दृष्टि से मालवी लोकगीत, मालवी कहावत कोश, मालवी संस्कार गीत, जनपदीय कथाएँ, ऋतुगीत आदि जैसे संचयन उन्होंने दिए हैं, जिन्हें उन्होंने मालवी कवि भावसार बा एवं धर्मपत्नी श्रीमती निर्मला राजपुरोहित के सहयोग से तैयार किया। उनके द्वारा भावसार बा के साथ डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित ने प्राय: सभी विषय क्षेत्रों से जुड़े मालवी लोकगीतों का विशाल संग्रह तैयार किया था, जो हिंदी अनुवाद के साथ कालिदास अकादेमी से प्रकाशित हुआ।

लोक-साहित्य एवं संस्कृति के अनुशीलन विवेचन की दृष्टि से उनके तीन ग्रंथ विशेषत: उल्लेखनीय हैं- मालवी संस्कृति और साहित्य (2004), चितरावन: मध्यप्रदेश के मालवा जनपद की चित्रकला (2008) एवं लोकभाषा और साहित्य (2009)। इनमें से तीसरा ग्रंथ लोक तत्त्व विमर्श की दृष्टि से विशेष महत्त्व का है जो शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली से 2009 ई. में प्रकाशित हुआ था। डॉ. राजपुरोहित ने इस ग्रंथ में लोक संस्कृति से जुड़े कई पक्षों जैसे मिथक, इतिहास, लोक संवेदना, कला-परम्परा आदि का सैद्धांतिक विवेचन तो किया ही है, साथ ही अनेक लोकाभिव्यक्तियों की तलस्पर्शी व्यावहारिक मीमांसा भी की है।

डॉ. राजपुरोहित लोक की व्याप्ति में समस्त चराचर जगत् को समेटते हैं। उनकी दृष्टि में लोक से परे कुछ भी नहीं है। वे कौटिल्य के साक्ष्य पर चारों वर्ण और चारों आश्रम अर्थात् पूरे समाज को लोक कहने के पक्षधर हैं। संस्कृत वाङ्मय की लोकधर्मिता को उन्होंने सप्रमाण प्रस्तुत कर इस मिथक को तोड़ा है कि संस्कृत महज अभिजन की भाषा रही है। वर्तमान दौर में जारी लोक की उपेक्षा का वे प्रतिकार करते हैं। वे लिखते हैं, 'लोक प्रकृति है, समस्त जनता है। प्रकृति कभी अप्रासंगिक नहीं होती। प्रकृति यदि किसी काल में अप्रासंगिक होगी तो लोक भी।' डॉ. राजपुरोहित की लोक-दृष्टि अत्यंत व्यापक है, इसीलिए वे जब मालवा की विविध लोकाभिव्यक्तियों की ओर दृष्टिपात करते हैं, तो उसका सातत्य सुदूर अतीत की अभिव्यक्तियों से दिखाते हैं। उनका ग्रंथ चितरावन मालवा को चित्रकला के आवास के रूप में रेखांकित करता है जो आदिवासी लोककला एवं तुलसी अकादमी, भोपाल, से 2008 ई. में प्रकाशित हुआ था। मालवा में गुहाओं और मृद्भांडों पर अंकित चित्रों से लेकर वर्तमान युग में आनुष्ठानिक रूपांकनों की निरंतरता दिखाई देती है। इस ग्रंथ में उन्होंने भारतीय कला की आधारभूमि से लेकर मालवा के विविध लोक प्रतीकों, मांडणे, चितरावन, संजा, पत्र रचना आदि का विशद विवेचन किया है।

डॉ. राजपुरोहित ने अपने वृहद ग्रंथ मालवी संस्कृति और साहित्य के माध्यम से मालवा की लोक-संस्कृति पर सही अर्थों में एक विश्वकोशीय कार्य किया है। आदिवासी लोककला अकादमी, मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल से 2004 ई में प्रकाशित यह ग्रंथ मालवा के इतिहास, लोक-संस्कृति, वाचिक परम्परा, रूपंकर एवं प्रदर्शनकारी कला रूपों का विशद विवेचन करता है। मालवी लोक से जुड़े प्राय: सभी पक्ष, प्राकृतिक परिवेश, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, धार्मिक आस्था, मालवी और उसकी विविध छटाएँ, सांस्कृतिक उपादान आदि इस ग्रंथ में साकार हो उठे हैं।

बारह से अधिक खण्डों में बंटे इस ग्रंथ के प्रारंभिक अध्याय मालवा देस मनोहरू में डॉ. राजपुरोहित ने मालवा की उपजाऊ भूमि, फसलों से लेकर विभिन्न शासकों, विद्वज्जनों, रचनाकारों का वर्णन किया है। मालवा शब्द के अर्थ, इसके उद्भाव तथा क्षेत्र के नामकरण पर उन्होंने महत्त्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए है। यहीं वे सप्त मालव का वर्णन भी करते हैं। ग्रंथ का दूसरा खण्ड मालवा के प्राकृतिक परिवेश पर केन्द्रित हैं, जिसमें मालवा के बीस से अधिक जिलों में विस्तृत क्षेत्र और उसके भूगोल का परिचय दिया गया है। मालवा का पठार विश्व की प्राचीनतम पर्वतमालाओं में एक पर्वतमाला से विकसित हुआ है। डॉ. राजपुरोहित ने मालवा के पठारों-मध्यवर्ती, उत्तरपूर्वी, उत्तर-पश्चिमी पठारों तथा नर्मदा घाटी का विशद वर्णन किया है। मालवा की जलवायु, खनिज संपदा, नदी और जंगलों का परिचय भी वे देते हैं। मालवा की प्रमुख नदियों में माही,

चंबल, नर्मदा, बेतवा, बड़ी और छोटी कालीसिंध, नेवज, पार्वती, शिवना, शिप्रा, गंभीर सहित मालवा के जल प्रपातों की चर्चा भी इस खण्ड में की गई है। मालवा की प्रमुख फसलों, खेती के तौर-तरीकों, कृषि संबंधी लोक-देवताओं आदि का रोचक विवरण उन्होंने दिया हैं।

ग्रंथ का तीसरा भाग मालवा के प्रागैतिहासिक विरासत पर केन्द्रित है। उन्होंने मालवा की पुरातात्त्विक संपदा से लेकर पौराणिक, ऐतिहासिक मालवा के शासकों, उनकी उपलब्धियों और शासन पद्धति का परिचय निबद्ध किया है। मालवा में हुए विभिन्न पुरातात्त्विक सर्वेक्षणों और उत्खननों से प्राप्त तथ्यों का विशद विवेचन वे करते हैं। प्रख्यात पुराविद् पद्म श्री वि. श्री. वाकणकर ने मालवा के विभिन्न उत्खननों और शैलाश्रयी चित्रों को खोजकर मालवा को विश्व के प्रमुख पुरातात्त्विक पर्यटन के रूप में स्थापित किया था। उनके द्वारा किए गए पुरा-समन्वेषण से लेकर मालव की कायथा सभ्यता के क्रमिक विकास का वर्णन इस अध्याय में किया गया है।

मालवी संस्कृति और साहित्य ग्रंथ में मालवा की ऐतिहासिक परम्परा का भी पर्याप्त परिचय दिया गया है। मालवा प्राचीनकाल से ही कई शासकों के अधीन रहा है, जिनमें प्रमुख हैं- नाग, हैहयों के राजा कार्तवीर्य, तालजंघ, वीतिहोत्र, चंद्रगुप्त मौर्य, अग्निमित्र, भर्तृहरि, राजा विक्रमादित्य तथा राजाभोज आदि। यहाँ लेखक ने मालवा क्षेत्र में पूर्व पाषाण युग, मध्य पाषाण युग तथा उत्तर पाषाण युग के अवशेषों का वर्णन करते हुए मालव संस्कृति तथा सभ्यता की विवेचना की है। मालवा में पाये जाने वाले खनिज, प्राचीनकाल में प्रयोग में लाये जाने वाले पात्रों का भी निरूपण किया गया है। मालवा अनेक शासकों के राज्य का हिस्सा रहा, उन सभी की विस्तृत चर्चा इस पुस्तक में की गई है। ऐसे शासकों में कुमारगुप्त, चंद्रगुप्त, भोज देव, अर्जुनवर्मा, मुस्लिम शासकों में इल्तुतमिश, दिलावर खाँ, हुमायूँ, शुजाअत खां, औरंगजेब और फिर कई मराठा शासक शामिल हैं।

किस प्रकार धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा ऐतिहासिक कारणों से उज्जयिनी मालवा का पारंपरिक केन्द्र रहा है? मालवा में कौन-कौन से प्राचीन व्यापारिक मार्ग रहे हैं ? प्राचीनकाल में मालवा को सुदूर स्थित महत्त्वपूर्ण स्थलों से जोड़ने वाले व्यापारिक मार्गों का जाल संसार में कहाँ-कहाँ तक फैला है? जैसे कई प्रश्नों का समाधान डॉ .राजपुरोहित करते हैं। पुराण में मालव्य पुरुषों का सिर से लेकर पैर तक वर्णन किया गया है। इस ग्रंथ में मालवा की प्रदक्षिणा, मालवा के अवंती क्षेत्र की तांत्रिक भैरव-साधना, शक्ति-साधना, गणपति उपासना, वैष्णव पंथ आदि का उल्लेख किया गया है। यहीं लोक-धर्म का निरूपण किया गया है। साथ ही मालवा के लोक-विश्वास, पूजा-पद्धति, प्रार्थना, तंत्र-मंत्र, जादू-टोना आदि का भी परिचय दिया गया है।

मालवा की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि खण्ड में डॉ. राजपुरोहित ने भारत के उर्वर उत्साह के केन्द्र के रूप में मालवा क्षेत्र की विशेषताओं का

निरूपण किया है, जिनके रहते रोम, चीन, ईरान, अफगानिस्तान, श्रीलंका सहित कितने ही देशों की कितनी ही जातियों के प्रबुद्धजन सदा के लिये यहाँ बसते रहे हैं तथा इस क्षेत्र के शांत स्वभाव का पूर्ण उत्साहजनक आतिथ्य ग्रहण करते रहे। कुछ वापस चले गये और कई यहाँ पर बस गये। वे यहाँ की सभ्यता-संस्कृति से अनछुए न रह पाये। मालवा अपनी सांस्कृतिक साहित्यिक परम्परा की दृष्टि से अपनी एक विशेष पहचान रखता है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर ऐतिहासिक सुदीर्घ काल तक व्याप्त इस परम्परा में मालवा ने पर्याप्त समृद्धि प्राप्त की। भित्तियों पर चित्रांकन की मालवा की समृद्ध परम्परा रही है। खुदाई में प्राप्त मिट्टी के खिलौने के प्राचीन अवशेषों से भी यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मूर्तिकला में भी मालवा लोग पारंगत थे। नगर योजना में भी मालवा के लोग पारंगत थे। मालवा की आर्थिक स्थिति भी समृद्धिपूर्ण थी। आभूषणों में उच्च कलात्मकता दिखाई देती थी। इस ग्रंथ में डॉ. राजपुरोहित ने मालवा के समाज का विस्तृत परिचय दिया है। पूरे भारतीय समाज के समान मालवा का समाज भी चार वर्णों में विभाजित रहा है। पूरा समाज पारम्परिक रूप में वर्ण तथा आश्रम की व्यवस्था को मानता था। मालवा की सभ्यता मिली-जुली सभ्यता है। कालक्रमानुसार उसमें कुछ तत्त्व पीछे छूटते गये और कुछ जुड़ते चले गये।

डॉ. राजपुरोहित ने इस ग्रंथ में मालवा के क्षेत्र विस्तार, भौतिक संरचना, मालवा की प्रमुख नदियों एवं जलवायु का विस्तृत परिचय दिया है। मालवा एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। उन्होंने मालवा में मिट्टी के प्रकारों, फसलों और मालवा में पाये जाने वाले खनिज, उद्योग-धंधों, परिवहन के साधनों के साथ ही मालवा में निवासरत जातियों का वर्णन किया है। अनेक जातियाँ बाहर से आयी हैं, उन्होंने मालवा को प्रभावित किया, इनमें बंजारा, जिप्सी, शक, कुषाण, हूण, अरब, तुर्की, मुगल आदि प्रमुख हैं। डॉ. राजपुरोहित ने उनकी विस्तृत चर्चा की है। इन सभी विदेशी जातियों के संपर्क का मालवा पर क्या प्रभाव पड़ा, इसका भी अध्ययन डॉ. राजपुरोहित ने किया है।

डॉ. राजपुरोहित ने अपने ग्रंथ में मालवा में खान-पान के विषय में

पर्याप्त जानकारी दी है। मालवा स्वादिष्ट एवं सुरुचिपूर्ण भोजन से सम्पन्न प्रदेश हैं। यहाँ पर मक्का, ज्वार, बाजरा, तुवर, मूंग, उड़द, चवला, सोयाबीन, गेहूँ, चना, राजगिरा आदि से कई प्रकार के व्यंजन बनाये जाते हैं। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि भोज्य पदार्थ षड्रस से परिपूर्ण होते हैं। इस ग्रंथ में डॉ. राजपुरोहित ने मालवा के प्रसिद्ध मालपुए के मालवा में आगमन का भी वर्णन किया है। मालवावासियों का प्रमुख भोजन है-बाटी तथा बाफले, जिन्हें कण्डों में सेका जाता है और तुवर की दाल के साथ खाया जाता है। इसके अतिरिक्त मालवा में गेहूँ का दलिया, प्रमुख मिठाइयों में थूली-लापसी तथा मोतीचूर के लड्डू भी काफी लोकप्रिय हैं। मालवा के भोजन के बाद पान या सौंफ-सुपारी खाने की आदत भी लोगों में पायी जाती है। इस प्रकार डॉ. राजपुरोहित ने मालवा के खान-पान से परिचित करवाने का प्रयास भी किया है।

डॉ. राजपुरोहित ने मालवी वेश-भूषा का वर्णन भी किया है। स्वयं को संजाने-सँवारने की अभिलाषा मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृति है। मालवा के प्राचीन आभूषणों का विस्तृत परिचय उन्होंने दिया है। आभूषणों में भँवर, टीका, साल, झुमके, टोटी, करण-फूल, नथ, हंस माला, गलरानी, बजट्टी, ठस्सी, बाजूबंद, चूड़ा, अँगूठी, पायल, तोड़ा, कड़ी, आँवला आदि का परिचय दिया है। डॉ. राजपुरोहित ने यह भी स्पष्ट किया है कि समय के साथ-साथ इन प्रचलित आभूषणों के प्रति नर-नारियों के अनुराग कम होने लगा है तथा पुरुषों को आभूषणों के प्रति आकर्षण खत्म हो चुका है।

मालवी संस्कृति और साहित्य ग्रंथ के एक भाग में उन्होंने मालवा के धार्मिक परिवेश का वर्णन किया है। भारत के हृदय की धड़कन मालवा है, उस धड़कन के प्राण हैं यहाँ की आस्था एवं विश्वास। इसकी आस्था को आधार देने वाले आस्तिक दर्शनों पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांसा आदि का वर्णन भी किया गया है। मालवा क्षेत्र में सिंहस्थ मेले का विशेष महत्त्व है। इस दृष्टि से ग्रंथ में उन्होंने उज्जैन के सिंहस्थ का विस्तृत वर्णन किया है।

डॉ. राजपुरोहित ने मालवा के पर्व, व्रत एवं उनके विधानों का विस्तृत वर्णन भी किया है। इनमें प्रमुख हैं ग्यारस, करवाचौथ, पूनम, शीतला अष्टमी, दशामाता, आखातीज, गणगौर, जन्माष्टमी, बछ-बारस, हरतालिका तीज, ऋषि पंचमी, अनंत चौदस, संजा, नवरात्रि आदि तथा त्यौहारों में प्रमुख राखी, होली, दशहरा, दीपावली के साथ ही मालवा में पूजित प्रमुख देवी-देवताओं का वर्णन भी उन्होंने किया है।

पुस्तक का एक खण्ड मालवी बोली के रंग में रंगा है, इसमें मालवी बोली की पाँच भिन्न-भिन्न छटाओं का विवेचन किया गया है। मालवा तथा मालवी बोली की प्राचीनता, मालवी का अपभ्रंश के साथ संबंध, मालवी के उद्‌भव विकास तथा मालवी के पोषक तत्त्वों का विस्तृत वर्णन डॉ. राजपुरोहित द्वारा किया गया है।

पुस्तक का एक भाग मालवा के पारम्परिक खेलों पर आधारित है। मालवा में विभिन्न प्रकार के खेल प्रचलित हैं, जिनमें बच्चों तथा वयस्कों दोनों के ही खेल हैं। बच्चों के खेलों में प्रमुख हैं- पकड़ा-पाटी, छिपम-छाई, बैठकचाँदी, खो-खो, कबड्डी, लंगडी, गुल्ली-डंडा, चंग-पौ, पाँचे आदि। बच्चों के प्राय: सभी खेलों का वर्णन डॉ. राजपुरोहित ने अपने ग्रंथ में किया है। उन्होंने वयस्कों के पारंपरिक एवं आधुनिक खेलों का भी वर्णन किया है, जिनमें पतंग, दौड़, ताश, श्रावण के झूले, हॉकी, क्रिकेट, तीरदांजी आदि प्रमुख हैं। अंत में बच्चों के गीतों को उदाहरण सहित प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने संजा की कथा, पूजन विधि तथा संजा के इक्कीस गीतों का वर्णन भी किया है।

ग्रंथ मालवी संस्कृति और साहित्य में मालवा की लोक-चित्र और शिल्प परम्परा का वर्णन किया गया है। डॉ. राजपुरोहित ने मानवीय मनोवृत्तियों के अनुसार मालवा के लोक-चित्र की विविध भाव-भूमियों, विविध प्रणालियों का वर्णन किया है। यहाँ उन्होंने भीमबेटका के विश्व प्रसिद्ध चित्रों का निरुपण किया है। मालवा में पाये जाने वाले अन्य पारम्परिक लोक-चित्रों, शिल्पों का वर्णन भी उन्होंने किया है। जैसे वस्त्र छपाई, लकड़ी की नक्काशी, मिट्टी की प्रतिमाएँ, व्रत-त्यौहार के लोक-चित्र, दशहरे का रावण, होली गाड़ी, लाख-शिल्प, बाँस-शिल्प, पत्ता-शिल्प, सन-शिल्प, गोदना, माँडना, गोबर-शिल्प, धातु-शिल्प आदि। ग्रंथ का एक भाग मालवा की वाचिक परम्परा पर केन्द्रित है, जिसमें मालवा के सम्पूर्ण लोक-साहित्य को समेटने का सफल प्रयास किया गया है। इसके अंतर्गत लोकगीत, लोकसंगीत, लोकनृत्य, नाट्य, लोककथा, लोकोक्ति, कहावत, मुहावरें एवं पहेलियाँ आदि के विषय में विस्तृत चर्चा की गई है।

डॉ. राजपुरोहित ने ग्रंथ के अंतिम अध्याय मालवा का आधुनिक प्रवाह में मालवी साहित्य की सदियों से चली आ रही परम्पराओं के साथ

आधुनिक धारा का वर्णन किया है। उन्होंने मालवी लोक-साहित्य के प्राचीन एवं नवीन साहित्यकारों का परिचय दिया है। मालवी गद्य परम्परा पर्याप्त प्राचीन एवं समृद्ध है। नए दौर में मालवी के साथ चलने के लिए मालवी का मीडिया के साथ सामंजस्य कितना आवश्यक है, यह अपेक्षा भी डॉ. राजपुरोहित ने की है।

डॉ. राजपुरोहित मालवी लोकप्रवाह में आ रहे परिवर्तनों से भी अनभिज्ञ नहीं हैं। वे इन परिवर्तनों को स्वाभाविक मानते हैं, किन्तु उनकी चिंता जड़ों के बदलने की चिंता है। वे मालवा के बहाने पूरे भारतीय लोक में आ रहे परिवर्तन को कलमी बना देने की चेष्टा से जोड़कर देखते हैं, जो निश्चय ही स्वीकार्य नहीं हो सकते।

डॉ. राजपुरोहित ने प्राचीन मालवी कविता पर भी गहन अनुसंधान किया है। उनकी दृष्टि में धार की भोजशाला से प्राप्त रोडकवि के शिलांकित काव्य राउलवेल में मालवी के प्राक्रूप के दर्शन सहज ही होते हैं। अत: रोड का राउलवेल महज हिन्दी की धरोहर कृति नहीं है, उसका गहरा रिश्ता मालवी से भी है। डॉ. राजपुरोहित ने मालवी कविता के प्राचीन प्रवाह से जुड़े कई कवियों की रचनाओं का संकलन-संपादन भी किया है, जिनमें जसराज, नागपथ, वछराज, सजन, उदेराज, गरीबदास, मार्कण्ड, कुशलेश आदि का काव्य उल्लेखनीय है।

डॉ. राजपुरोहित स्वयं मालवी के श्रेष्ठ गद्यकार, कवि और अनुवादक है। उन्होंने कई संस्कृत रचनाओं का सरस-मधुर मालवी में अनुवाद किया है, जिनमें कालिदास के नाटकों अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम् और विक्रमोर्वशीयम् सहित मेघदूत का, हलकारो बादल शीर्षक से मालवी रूपांतर, शूद्रक कृत पद्मप्राभृतक का मालवी अनुवाद सेज को सरोज आदि उल्लेखनीय हैं। डॉ. राजपुरोहित ने लोकनाट्य माच के गुरु श्री सिद्धेश्वर सेन की तीन महत्वपूर्ण माच कृतियों कालिदास, शकुंतला और राजा विक्रमादित्य का संपादन किया है। उन्होंने कालिदास की प्रेरणा रही विद्योत्तमा पर इसी शीर्षक से हिन्दी में उपन्यास की रचना की है। संस्कृत नाटक वीणावासवदता और वररुचि कृत उभयाभिसारिका का हिन्दी में अनुवाद भी किया है।

डॉ. राजपुरोहित द्वारा रचित महानाट्य सम्राट विक्रमादित्य एक विशिष्ट उपलब्धि बन गया है, जो इतिहास, अनुश्रुति और कल्पना की समावेशी बुनावट से भारतीय संस्कृति के मेरुदण्ड समाट विक्रमादित्य की रम्य गाथा को प्रस्तुत करता है। इस नाट्य का देश-प्रदेश के लाखों दर्शकों ने अपलक आनंद लिया है। इसी श्रृंखला में उन्होंने भोज के राज्यारोहण के सहस्त्राब्दी वर्ष में राजा भोज नाटक की रचना की है, जो पर्याप्त मंचित-प्रशंसित हुआ। उनकी नाट्यकृति मीरा इस अनुपम रचनाकार के जीवन-कृतित्त्व की सरस झाँकी प्रस्तुत करती है। श्रीकृष्ण कथा में उज्जैन से जुड़े प्रसंगों पर उन्होंने श्रीकृष्ण उज्जयिनी नाटक की रचना की है, जिसके कई सफल मंचन हुए हैं। विख्यात ज्योतिर्विद् पं आनन्दशंकर व्यास, श्री रमेश दीक्षित के साथ डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित एवं डॉ. जगन्नाथ दुबे के सुधी संयोजन सम्पादन में प्रकाशित ग्रन्थ महर्षि सान्दीपनि श्रीकृष्ण विद्यांजलि सन् 2016 में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में आया था, जिसमें डॉ. राजपुरोहित ने प्राचीन शिक्षा प्रणाली पर महत्वपूर्ण मंथन किया है।

डॉ. राजपुरोहित ने संस्कृत के अलावा प्राकृत और अपभ्रंश के साथ मालवी भाषा के सम्बन्धों पर प्रामाणिक अनुसन्धान, अनुशीलन और अनुवाद कार्य भी किया है। उनका प्राकृत मालवी कोश पूर्णता पर है। अपभ्रंश की रचनाओं में वे मालवी के प्राक् रूप के दर्शन कराते हैं। कुछ उदाहरण देखे जा सकते हैं। कालिदास कृत 'विक्रमोर्वशीयम्' नाटक के एक अपभ्रंश दोहे में मालवी के प्राक् रूप की छटा बकौल डॉ. राजपुरोहित

मइँ जाणिअँ मिअलोअणी णिसअरू कोइ हरेइ ।
जावणु णवतउसामलि धाराहरू वरिसेइ ।।

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित ने इसका मालवी रूपांतर कुछ इस प्रकार किया है, जो दोनों भाषाओं की निकटता का प्रमाण है।

में जाणूँ मिगलोचणी हरे निसाचर कोय।
बिजरी वारो साँवरो बरसे बादल होय ।।

स्वयंभू ने शुद्धशील की एक अपभ्रंश गाथा को प्रस्तुत किया है, जिसका डॉ. राजपुरोहित द्वारा आज की मालवी में किया गया रूपांतर अधिक अंतर लिए हुए नहीं है।

पंथिआण जीवअं खुडंतिआ
पखआण मत्थअं दलंतिआ।
सिंचन त्व जीहिआ लुलंतिआ
पोच्छ भीरू विज्जला वलंतिआ।। (स्वयंभूछंद 6/6/1)

इसका डॉ. राजपुरोहित द्वारा प्रस्तुत मालवी रूपांतर अनुवाद देखिए -

पंथीड़ा का जीव खुड़ता
परवताँ का माथा दरता
बाज जसी जीभाँ लपलपाती
पेख भीके वीजरा वलता ।।

वस्तुत: डॉ. राजपुरोहित का योगदान शास्त्र और लोक, लिखित और अलिखित परम्पराओं के समन्वय की दृष्टि से अनूठा है। वे मालवा सहित मध्यप्रदेश के सांस्कृतिक वैभव के उद्गाता हैं, जिसके बहाने वे समूची भारतीयता के मर्म को उद्घाटित करने में निमग्न रहे हैं। शास्त्र के पूरक रूप में लोक संपदा को सहेजने-विचारने की सही राह सुझाता हैं, उनका विविधमुखी कृतित्त्व ।

लेखक : आचार्य एवं विभागाध्यक्ष,
हिंदी अध्ययनशाला तथा कुलानुशासक विक्रम
विश्वविद्यालय, उज्जैन हैं।
संपर्क: सृजन 407, साँईनाथ कालोनी,
सेठीनगर, उज्जैन (मध्य प्रदेश)
ईमेल- shailendrakumarsharma66@gmail.com

■

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू होना कोई अच्छी बात नहीं

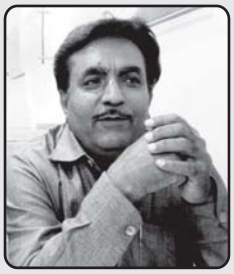

श्रीराम दवे

● **कृपया आपकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, बचपन एवं शिक्षा-दीक्षा पर विस्तार से बताने का कष्ट करें।**

● प्राय: दस पीढ़ी पूर्व हमारे पूर्वज राजस्थान के पाली जिले के कुलथाना ग्राम से मालवा के मंदसौर जिले की तहसील सीतामऊ के पास के लदूना गाँव में आ बसे थे। पिताजी पं. झब्बालाल जी संस्कृत के विद्वान थे। उनकी बाल विधवा बड़ी बहन का परिवार नहीं था। अत: उनकी जागीर सम्हालने के लिए पिताजी को उनके पास भेजा गया। वहीं मेरा जन्म हुआ। दस भाई-बहनों में सबसे कनिष्ठ। मालवा-डूंगर का सीमावर्ती लगभग पचास घरों का आदिवासी भीलबहुल गाँव चन्दोड़िया। एक कुम्हार, एक नाई और एक जायसवाल परिवार। खेती-किसानी का वातावरण। ग्रामीण भीली मिश्रित मालवी वातावरण और वही मालवी-भीली मिश्रित बोली। धार-रतलाम सड़क गाँव से पाँच कोस दूर। पैदल, घोड़ा या बैलगाड़ी से यात्रा। बाहरी कोई व्यक्ति आकर पिताजी से खड़ी बोली में बात करता तो वह अजनबी भाषा हम बच्चों की समझ में नहीं आती। हम मुँह देखते रह जाते। पूर्व अमझेरा राज्य का यह ग्राम अब सिन्धिया रियासत का अंग था। वहाँ से दो किलोमीटर पूर्व से धार रियासत की सीमा थी। हमारा मिट्टी का घर था। छोटी-सी बरसाती नदी के तट की टेकरी पर। आस-पास भीषण जंगल और जंगली जानवर। एक बार तो रात में हमारे घर के अहाते में घोड़ा-पशु आदि का शिकार करने शेर भी छलाँग लगाकर आ गया और गाय की एक बछिया को पकड़ लिया। खुली गायों के समूह ने एक साथ उस पर हमला किया और यह बछिया छोड़ भाग गया। हमारे रावले का अपना मन्दिर और बचपन से ही पूजा। नदी से सिर पर पानी लाना, खेत पर जाना, मजदूरों में रहना। पास के कोटेश्वर तीर्थ पर मेले में जाना, वहीं पिताजी के आचार्यत्व में आस-पास के ठाकुरों द्वारा विशाल यज्ञ। यज्ञ में ही यज्ञोपवीत संस्कार। न स्कूल, न सड़क, न बिजली। पिताजी और ठकुराइन बुआ के पास लालन-पालन। बहनें अपने-अपने घर। भाई पढ़ाई के लिये माताजी के साथ लदूना। घर पर अक्षर ज्ञान। हिन्दी 'मोटा/ताजा' आदि पुस्तक पढ़ना। फिर स्वयं ही माता के पास लदूना। जाते ही स्कूल का चपरासी आया और भर्ती। घर लौटने पर भाइयों ने पूछा किस क्लास में फर्स्ट या सैकण्ड। पता नहीं ये क्या पूछ रहे हैं? कभी फर्स्ट बताता, कभी सैकण्ड। पिटाई होती। इतना भी नहीं जानता? कुँए पर जाते तो सिंचाई के औजार लाने को कहा, खेती के औजार। चन्दोड़िया की बोली और लदूना की बोली में अलग-अलग नाम। आदेश हुआ-ताकर्यो ला। वस्तु होने पर भी नाम जानने पर नहीं लाने पर पिटाई होती। वस्तु सामने पड़ी। परीता कहते तो लाता। दन्तारी को खारस्या, वक्खर को करी। अलग नाम।

भाषा में बलाघात में अन्तर। पर है मालवी। यहाँ कक्षा में पढ़ाई हिन्दी में। खेत पर जाना, सिर पर कुँए-तालाब से पानी लाना। विशाल तालाब। तट पर एक किलोमीटर तक घाट और मन्दिर। मन्दिर तालाब के अन्दर। पुल से मन्दिर तक पहुँच। तालाब के दूसरी ओर एक अन्य ग्राम। दोनों के बीच तालाब, कमलों से हरा-भरा लहलहाता तालाब, पाल से भीषण जंगल, मीलों तक फैला। सीताफल, टीमरू (तेंदू पत्ते) के साथ सभी प्रकार के विशाल पेड़। भालू, शेर, जंगली सूअर, स्याहगोश (शरभ), फेकरी। नीरव में फेकरी की आवाज के बाद शेर की दहाड़ सुनाई देती। तालाब का पानी पीने शेर आया है। आगे-आगे फेफे करती फेकरी। मुख से झार (ज्वाला) निकालती। रात में बोलने पर अन्धेरे में उसकी जीभ चमकती। नवरात में पारकी माता, सगस बापजी के भाव। जमातों के करतब प्रदर्शन। मीरा का, जगदीश का अटका। हर पूनम को

अगस्त 1990, म.प्र. राज्यपाल कुंवर मेहमूद अली खां के साथ

सत्यनारायण कथा। मन्दिर ही मन्दिर। एक मस्जिद । ताजिये। उपासरा में नये वर्ष का टीपणा सुनाता पण्डित। पंचायती ऊँचे चबूतरे से सीतामऊ दरबार के मेहमानों द्वारा शिकार में मारे गये वन-पशुओं को बैलगाड़ी में पड़े देखना। वहाँ से जादूगर का गुठली का होता हरा आम का पौधा, उस पर पका फल। दर्शक आदमी की अंजली भर धूल से साँप निकलना। बाजार के (देवनारायण के) देवरे की अन्धेरी में प्रतिमा पर भैंस का दूध चढ़ाने जाना। दूध बढ़ेगा उससे। उसके सामने के चौक में विवाहों के समय वाना (डण्डे) खेलने के अनोखे करतब। बैलों के घुघरे पैरों में कमर में बाँधकर गोलगोल, बैठकर, सोते-सोते ढोल के डंके के साथ डंडे खेलना मशालों के उजाले में। मशालों के या गैस के हाण्डों के उजाले में रामलीला देखना। तालाब के किनारे के मन्दिरों में भागवत पुराण सुनना, वहीं सामने सत्य हरिश्चन्द्र चन्द्रहास जैसे नाटक देखना। एक पैसा, दो पैसा टिकट और उनकी नकल में खेलना। 26 जनवरी को प्रभातफेरी में जाना। कुँए के डागरे पर से मक्का की या शीतकाल में पछेड़ा ओढ़कर चने की रखवाली। घास, मैथी, रचका, ज्वार का चीवड़ा काटना सिर पर लाना। चड़स बलाना, खेत में पाणत करना, ज्वार के भुट्टे झूड़ना, भुट्टे सेंकना। यह सब सुबह-शाम। दिन में पाँचवीं तक लदूना में। छठी से एक कोस दूर सीतामऊ हाईस्कूल में पढ़ने जाना, रात में गोवर्धननाथ के मन्दिर के चौंतरे पर होने वाले राणा प्रताप या 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति एकांकियों-नाटकों में भाग लेना। दिन में अंटी, गुल्ली-डण्डा, गगन्या (गोल पत्ती का पहिया) दौड़ाना। सीतामऊ जाते बरसात के मार्ग में गोल पत्थरों को हटाना, नीचे से निकलते बिच्छू को डोर के पाश से बाँधकर माचिस की डिब्बी में बंद करके दो पीरियड के बीच शिक्षक के आने-जाने के खाली समय में कक्षा में छोड़ देना, क्लास का भाग जाना, शिक्षक की डाँट-फटकार। कथा-वार्ता का वातावरण, रामचरित मानस का गर्मी की छुट्टियों में तालाब के मन्दिर में पाठ। क्लास में पढ़े दोहे और चौपाइयों की तर्ज पर उनकी पैरोडी बनाना।

राम कहे रावण से तू क्या मारे मोहिं।
एक दिन ऐसा आयेगा मैं मारूँगा तोहिं।।

भूषण जैसे कवित्त बनाना। छठी से अंग्रेजी, सातवी से संस्कृत। पद, संस्कृत के श्लोक जैसे गलत-सलत श्लोक बनाना। तब ग्राम पंचायत ने पूरे गाँव के खंभों पर लालटेन लगा दिये थे। शाम को चौकीदार दीये जलाता। अन्धेरे में यात्रा सुगम हुई। एक वरिष्ठ मित्र के साथ उसके सीतामऊ के मित्र के भरोसे रात में सिनेमा देखने जाना। चवन्नी का टिकट। मित्र का न मिलना। अन्धेरे में कोस मुँह लटकाकार वापस आना।

आठवीं से धार भाई सा. के पास आकर पढ़ाई। सीतामऊ जैसी स्कूल में पढ़ाई की सख्ती नहीं रहने से आजाद। विक्रम ज्ञान मन्दिर पुस्तकालय से भाई सा. के नाम पर किताबें लाकर पढ़ना। पूरा प्रेमचन्द साहित्य पढ़ डाला। छमाही में फेल। भाई सा. की डाँट। पर पढ़ने का चस्का। 'बसन्तोत्सव नाटक लिखना। उसमें कविता, दोहों की भरमार। अब वह लुप्त।

सुनारी सुनारी पर ही तो लरजाय है। या
भिक्षा मांगने टेर में उचित चाहिए दण्ड।
बिना दण्ड मिले नहीं भिक्षा कहे उद्‌दण्ड।।

संस्कृत विद्यालय में प्रातःकालीन अध्ययन, दिन में स्कूल, शाम को हिन्दी साहित्य सम्मेलन की कक्षाओं में हाईस्कूल संस्कृत कोविद (बम्बई), विशारद। हायर सेकेण्डरी में 'छायापथ' उपन्यास लिखना (जो अब तक अधूरा) बी.ए. के साथ साहित्य सब एक साथ। संस्कारी कार्यक्रमों-नाटकों में भाग लेना। कालिदास समारोह के अन्तर्महाविद्यालयीन निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम शोध लेख लिखने का पहला पाठ। हिन्दी, संस्कृत, इतिहास। बी.ए. के साथ कहानियाँ, कविताओं पर भी हाथ आजमाना। साहित्य में रुचि। हिन्दी के प्रति विशेष। पर उसकी पृष्ठभूमि के लिए संस्कृत की उपेक्षा। अतः उज्जैन माधव कॉलेज से पहले संस्कृत, फिर हिन्दी में एम.ए.। बी.ए. में इतिहास पढ़ा, इतिहासकार बी.एन. लुनिया से। उज्जैन में शिप्रा तट के रामानुजकोट में रहते हुए तीनों एम.ए.. पीएच.डी. । फिर वहीं सान्दीपनि महाविद्यालय में सान्ध्यकालीन कक्षाएँ।

● **आप तो हिन्दी, संस्कृत, प्राचीन इतिहास पढ़ाते रहे हैं-अध्यापन का यह दौर कैसा रहा ?**

● वरेण्य आचार्य श्रीनिवास रथ और ख्यात रंगकर्मी डॉ. प्रभातकुमार भट्टाचार्य के निर्देश पर सान्दीपनि महाविद्यालय में संस्कृत पढ़ाना प्रारंभ। बाद में नियुक्ति। तीन-चार वर्षों में ही छात्रों की न्यूनता के कारण संस्कृत कक्षाएँ बन्द। भट्टाचार्य जी के प्रयास से हिन्दी अध्यापन। स्नातक-स्नातकोत्तर हिन्दी। पीएच. डी. के साथ ही डॉ. के.सी. जैन के आग्रह पर प्राचीन भारतीय इतिहास में एम.ए. । तभी डॉ. वि.श्री. वाकणकर का भी शिष्यत्व। संस्कृत से सम्बन्ध के कारण वे शिलालेख पढ़ने के बाद उन्हें अन्तिम रूप देने के लिए मुझे देते रहते थे। डॉ. भगवतशरण उपाध्याय का आगमन। प्राचीन इतिहास में अभिलेख पढ़ाने के लिए ही उन्होंने आमंत्रित नहीं किया, अपितु प्राचीन भारतीय अभिलेख पुस्तक भी दोनों ने मिलकर तैयार की। इसके लिए मुझे मेरा शोध कुछ माह के लिये रोक देना पड़ा। तभी संस्कृत एम.ए. में अभिलेख पढ़ाने के लिए वेंकटाचलम जी का निर्देश। वर्षों तक एक साथ हिन्दी, संस्कृत और प्राचीन इतिहास की एम.ए. कक्षाओं का अध्यापन। धीरे-धीरे हिन्दी में ही केन्द्रित।

● **क्या अध्यापन के दौरान ही लेखन शुरू कर दिया था आपने ?**

● विविध विषय पर एक साथ पढ़ने-पढ़ाने से सबका घालमेल हो गया और सबमें लेखन-शोध भी एक साथ होता रहा। बीच में मनोरंजन के लिए कहानियाँ, कविताएँ, नाटक, एकांकी भी लिखना चलता रहा।

1993 भारत भवन भोपाल में म.प्र. साहित्य परिषद् द्वारा बालकृष्ण शर्मा नवीन पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री नरेश मेह

संस्कृत में लिखे श्लोक एक यात्रा में रथ सा. की नजर में आ गये और रायपुर की कविगोष्ठी में रथ सा. बच्चूलाल जी के साथ मुझे भी डरते-डरते श्लोक पाठ करना पड़ा और वह सिलसिला चल पड़ा। एक संकलन प्रकाशित हो गया। दूसरा, तैयार हो गया। कालिदास समारोह के लिए शोध लेख लिखना नियम बन गया। गोष्ठी में जाना क्रम बन गया।

● **आपने लोकभाषा मालवी में महत्त्वपूर्ण लेखन किया है तथा कई नाटकों का प्रस्तुतीकरण भी। कृपया शास्त्र से लोक की ओर की इस यात्रा पर प्रकाश डालें।**

● मालवी में कविताएँ शुरू से लिखता रहा हूँ फिर शूद्रक के पद्मप्राभृतक के भाग में मालवी और हिन्दी में रूपान्तर। मालवी में छापा प्रसिद्ध मालवी कवि हरीश निगम ने और हिन्दी में राधावल्लभ त्रिपाठी ने नाट्यम में। मालवी की प्रस्तुति बाद में कालिदास अकादेमी में हुई थी एकांकी रूप में। उसके पूर्व 1984 में संगीत नाटक अकादमी के पश्चिम क्षेत्र की प्रस्तुति के लिए मुझसे हफीज खान ने किसी संस्कृत नाटक के मालवी रूपान्तर की चाह की। तब 'वीणावासवदत्ता नाटक' को पूर्ण कर मैंने मालवी आलेख तैयार किया। उदयपुर, ग्वालियर, धार में प्रस्तुत हुआ। फिर उसका ही हिन्दी रूप कालिदास अकादेमी में भी प्रस्तुत हुआ। इस बीच प्रसिद्ध नाट्यविद् बंसी कौल के आग्रह पर 'विदूषक' नाटक लिखा जिसके पाँचों अंक आपस में रेल के डिब्बे के समान साथ हैं भी और नहीं भी। इसी बीच विद्योत्तमा उपन्यास लिखा जिसकी भूमिका महाराज कुमार डॉ. रघुवीरसिंह जी व भगवतशरण जी ने लिखी। उसे देखकर हमारे मित्र प्रमोद त्रिवेदी ने राजा भोज पर उपन्यास लिखने का आग्रह किया जो अभी तक पूरा नहीं हुआ पर नाटक अवश्य लिख दिया। तभी कालिदास समारोह में प्रस्तुति के लिए मालवी में मालविकाग्निमित्रम नाटक का आलेख तैयार किया। इन आलेखों में गीत भी लिखने ही होते थे। उसका संगीत सुप्रसिद्ध रंगकर्मी ब.व. कारंत ने दिया।

● **सांस्कृतिक अस्मिता वाले उज्जैन नगर की अनेक संस्थाओं को आपने अपनी सक्रियता से समृद्ध किया है. कृपया बताएँ यह सब कैसे हो पाया?**

● पं. आनन्दशंकर व्यास, प्रो. कलानिधि चंचल जी के साथ मिलकर 1978 से आठ दिवसीय भर्तृहरि समारोह आयोजित किया। यह प्रायः पन्द्रह वर्ष तक वैशाख शुक्ल अष्टमी से पूर्णिमा तक होता रहा। इसमें विद्वानों का सम्मान, संस्कृत-हिन्दी-मालवी कवि सम्मेलन, भरथरी माच, व्याख्यान, गोष्ठी आदि होती रहीं। इसमें भगवतशरण जी. सुमन जी, वेंकटाचलम जी, शमशेरबहादुरसिंह जी, नरेश मेहता जी, कवठेकर जी. विश्वंभरनाथ उपाध्याय जी. वाकणकर जी, राममूर्ति त्रिपाठी सहित कई हस्तियों ने भाग लिया। स्मारिकाएँ, पुस्तकें निकालीं। धर्मयुग में लेख छपे, रपटें छपीं। वाकणकर जी के साथ मिलकर विशाला शोध परिषद् की स्थापना व संचालन किया। आचार्य रथ सा. के साथ प्रतिकल्पा संस्था वर्षों तक घर-घर संचालित की। बाद में शहीद पार्क के पास के सत्यनारायण मन्दिर के हॉल में प्रतिमाह मिलते थे। इसमें हिन्दी, संस्कृत, इतिहास सम्बन्धी शोध चर्चाएँ होती रहतीं। इसमें भी चिन्तामणि दादा. ह.भू, जैन सहित कई विद्वान मित्रों का भी जमावड़ा होता था। इसी बीच मालवा के कुल चार सौ घरों के राजपुरोहित परिवारों को संगठित कर उज्जैन में राजपुरोहित समाज हेतु भूमि क्रय करके आश्रम भवन बनवाना आदि में सक्रियता रही। शोध गोष्ठियों में आना-जाना चलता रहा। इस बीच सुमन समग्र के गद्य खण्ड का सम्पादन भी किया।

● **लदूना (सीतामऊ) और चन्दोड़िया (धार) के बाद उज्जैन में ठहराव और यहाँ की मालवी की ओर आपका झुकाव होने पर कृपया बताएँ।**

● उज्जैन की पुरानी बस्ती बिलोटीपुरा में मकान बनवाया। सामने चौक में ढोलक चाल पलट के की आवाज के साथ माच प्रदर्शन होता रहता था। सामने पीपल के नीचे मालवी के प्रसिद्ध कवि भावसार बा रहते थे। उनके पड़ोस में माच का राजा गोपाल। भावसार बा को कई लोकगीत मुखाग्र थे। महिलाएँ गातीं तो खोट निकालते। किसी विवाह में चुपचाप यात्रा में निकलतीं तो कहते इ कंई चालचलावा (शवयात्रा) में जई रीं। मुझे एक योजना सूझी। उनसे कहा- आप लोकगीतों का संकलन करो। वे बोले- मैं लिख नहीं सकता। पढ़ा-लिखा नहीं हूँ। दो किताब पढ़ा हूँ। मैंने कहा- आप बोलो मैं लिखूँ। वे बोले टेम नी हे, दुकान, कवि सम्मेलन, दुनियादारी। मैंने कहा- जब आपको समय मिले तब बैठते रहेंगे। और सिलसिला चल पड़ा। मालवी के संस्कार-गीत, भजन आदि संकलित होने लगे। फिर तो उन्हें भी चस्का लग गया। जैसे ही कोई गीत याद आता वे घर आ जाते और लिखवा देते। कभी-कभी मेरे पास आने तक वे भूल जाते और खेद करते। 'धोकतो धोकतो आतो थो ने बीच में ऊ (गाली) आई ग्यो। भूली ग्यो।' प्रायः 12-13 वर्ष में एक संग्रह तैयार हो गया। उन्हें

मैंने सावधान कर दिया कि कोई पक्ति भूलें तो अपनी ओर से न जोड़ें, समझ में न आये तो भी वैसी की वैसी लिखवा दें। लिखने के साथ ही कठिन शब्दों के अर्थ और हिन्दी अनुवाद मैं लिख देता था। जब अटकता तो उनसे मार्गदर्शन मिलता। कई बार वे भी अटक जाते तो खोजकर मूल तक पहुँचने का प्रयास होता। तीसरा का वाचक 'अग्न्यो' आया। मैंने कहा तीसरा क्यों? वे चुप। फिर मिला 'अग्नायी' तीन का वाचक है संस्कृत में। मूल संस्कृत अप्रचलित शब्द मालवी में सुरक्षित। कितनी समृद्ध हैं लोकभाषाएँ। डॉ. प्रकाश रघुवंशी को ज्ञात हुआ तो विवाह गीतों की कैसेट बनाने की योजना बनायी। पर पूरी नहीं हुई। तब तक डॉ. भट्टाचार्य जी कालिदास अकादेमी में निदेशक हो गये। उन्होंने पूछा तुम्हारा मालवी लोकगीत कहाँ तक पहुंचा है। मैंने कहा– 'हरि अनंत हरिकथा अनंता।' फिर भी बहुत बड़ा हो गया है। उन्होंने छाप दिया। मेरा 'मेघदूत' का मालवी रूपान्तर 'हलकारो बादल' छापा और हिन्दुस्तानी अकादमी से छपने वाली मेरी पुस्तक 'कालिदास का वागर्थ' भी प्रकाशित कर दी। लोकगीत की यह पुस्तक पूर्व प्रकाशित गीत-संकलनों में सबसे बड़ी थी। यह सिलसिला यहीं नहीं रुका। किताब छपी, पर गीत संकलित करती रहीं। पत्नी श्रीमती निर्मला राजपुरोहित। और उसका अगला भाग आदिवासी लोककला अकादमी से छपा। लोक स्वाद उधर भी बढ़ चला और कई पुस्तकें छप गयीं। आदिवासी लोककला अकादमी ने मुझसे आग्रह करके 'मालवी संस्कृति और साहित्य' पुस्तक लिखवाई। मालवी हिन्दी कोष बनवाया। लोककथा, मुहावरों, कहावतों, पारसियों के संकलन श्रीमती के भी छपते रहे और छपते जा रहे हैं। इधर आग्रह पर 'विक्रमोर्वशीय' का मालवी नाट्यालेख भी कालिदास समारोह में प्रस्तुत हुआ। कालिदास के शाकुन्तल का मालवी नाट्यालेख भी बना ही दिया। इसी बीच मालवी मित्रों के आग्रह पर प्राय: इस सदी के आरम्भ में एक लघु मालवी बैठक का आयोजन किया। उसमें हरीश निगम, भावसार बा:, चन्द्रशेखर दुबे, झलक निगम, मोहन सोनी, शिव चौरसिया, प्रहलादचन्द्र जोशी नवनीत आनन शैलेन्द्र शर्मा सहित कई मालवी रचनाकार, विद्वान और माचकार सम्मिलित हुए और एक संस्था का गठन किया – मालव लोक संस्कृति प्रतिष्ठान। सचिव डॉ. शर्मा की कल्पनाशीलता से दो वर्ष तक उसके मालवा के विभिन्न निकट दूर के स्थानों पर मालवी सम्मेलन, गोष्ठियाँ की गयीं। उसके अब तक कई प्रकाशन हो चुके हैं। उसमें सिद्धेश्वर सेन भी सक्रिय रहे। सेन अन्तिम दिनों में विक्रमादित्य माच की रचना कर रहे थे। गीत लिखकर सुनाते। कई गीत लिखे। कहा– पहले गीत पूरे हो जाएँ। फिर चबोलों जोड़ना तो सरल है। मुझे भरत का वाक्य याद आ गया-गीते प्रयत्न: प्रथमस्तु कार्य:। नाटक में पहले गीत बनाना चाहिए। गीत-संगीत सध जाए तो नाटक सफल हो जाए। इसीलिए कालिदास भवभूति कवि पहले हैं नाटककार बाद में। वे विद्वत्सभा या राजसभा में मान्य हो सकते हैं. जनता के लायक उनसे अधिक मृच्छकटिक या भाण हैं। नाटक लिखते समय मेरे सामने सिनेमा के समान बच्चे से बुढ़े तक आम जनता रहने लगी। अत: भाषा गीत आदि सभी तदनुरूप ही बनने लगे। तब भी नाटक निदेशक की रचना होती है। नाट्यालेख कैसा भी हो निदेशक की कल्पना उसे चमका सकती है या उसे धूनिल कर सकती है।

● **मेरी अल्प जानकारी में आपने कई धारावाहिकों का लेखन तो किया ही. 'जाणता राजा' की तार्ज पर 'सम्राट् विक्रमादित्य' महानाट्य की रचना भी की है, यह सब कैसे हो पाया?**

● भारतीय जय कथाओं के विकास पर सीरियल लिखवाने रानी रूपमती फिल्म के निर्माता मंडलोई के पुत्र आये और श्रम करवाया। भर्तृहरि पर सीरियल लिखने रंगकर्मी रफीक के अभिनेता बहनोई आये और श्रम करवाया, काव्यात्मक दो सीरियल लिखने का भी प्रयास चला। सबका कुछ-कुछ लिखा। लिखवाने वालों का आग्रह छूटा और पूर्णता हो नहीं पाई। वास्तव में नाटक बहुधा आग्रह पर लिखे गये जिनमें से कई प्रस्तुत हुए, कई लिखे रह गये। 'मीरा' धीरेन्द्र परमार की संस्था शिप्रा ने प्रस्तुत किया। उसके लिए लिखा राधा अभी प्रतीक्षा में है। एक नयी संस्था ने राणा प्रताप लिखवाया और प्रस्तुत नहीं हुआ। सन् 2007 के आरंभ में ही एक दिन अचानक उज्जैन विकास प्राधिकरण के तत्कालीन अध्यक्ष मोहन यादव प्रकट हुए। उनका आग्रह था कि 'जाणता राजा' जैसा सम्राट् 'विक्रमादित्य' नाटक मार्च में प्रस्तुत करना है और उसका आलेख मैं लिखूँ। मैंने जाणता राजा की प्रस्तुति, मंत्र आदि के बारे में उनसे ही जानकारी ली। समय था नहीं। मैं जितना लिखता निर्देशक ले जाते और रिकार्डिंग आदि तैयारी करवाते रहते। सिनेमा के समान छोटे-छोटे सीन। एकाधिक मंचों पर प्रस्तुति होने से यह सम्भव था। पारिवारिक बाधाएँ होने पर भी यह शीघ्र पूर्ण हुआ और समय पर तीन सफल प्रस्तुतियाँ हो गयीं। उस सफलता से उत्साहित होकर डॉ. यादव ने मुझसे 'आदि विक्रमादित्य' पुस्तक लिखवाई। विक्रमादित्य शोध पीठ की परिकल्पना तैयार हुई। दूसरे वर्ष के विक्रम समारोह में वही महानाट्य। पाँच दिनी प्रस्तुतियाँ। दोनों वर्ष दर्शक हर प्रदर्शन में दस-दस हजार तक रहे। दूसरे वर्ष आडवाणी जी मुख्यमंत्री आदि भी दर्शक बने। 'आदि विक्रमादित्य' का लोकार्पण आडवाणी जी ने किया और मुख्यमंत्री ने शोध पीठ की घोषणा की। इसी बीच डॉ. भट्टाचार्य जी के आग्रह पर पंचतंत्र का संस्कृत नाट्य रूपान्तर किया। फिर तात्याटोपे नामक एक नाटक लिखा। इसी बीच महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ के निदेशक का कार्यभार आ गया। इस अवस्था में नये सिरे से प्रशासकीय गतिविधियों से परिचय होने लगा।

विक्रमादित्य समारोह के लिए श्रीकृष्ण उज्जयिनी नाटक लिखा और प्रस्तुत हुआ तीन दिन तक। रोज वैसी ही भीड़। राजा भोज के

राज्यारोहण सहस्राब्दी वर्ष की शासन ने घोषणा की। अत: राजा भोज पर नाटक लिखा। उसकी भी प्रस्तुतियाँ हुई। फिर तो शासन की अपेक्षानुसार भोज पर पहले की अनेक पुस्तकों के अतिरिक्त नयी पुस्तकें छपीं। इधर मोहन यादव के पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष बनते ही छत्रसाल रानी दुर्गावती, जय महाकाल आदि कई नाटक लिखे। पर इन सबसे पहले लिखा नाटक 'शुन: शेष' अभी भी पूर्ण होने की प्रतीक्षा में है। एकांकियाँ भी लिखी गयीं। सतीश दवे ने उज्जैन और मृच्छकटिक के आलेख लिखवाए और वे प्रस्तुत भी हुए।

● **आपके द्वारा सृजित और सम्पादित कृतियों के बारे में बताने का कष्ट करें।**

● कितनी ही अनछपी और कितनी ही छपी। कितनी पुस्तकें छपीं यह गिनने का अभी अवसर नहीं आया। तब तक दूसरा काम हो जाए। संस्कृत कविताएँ एकत्र हुई, संकलित छपी और भी दूसरा संकलन तैयार। मालवी और हिन्दी कविताएँ असंकलित पड़ी हैं। ललित निबन्ध, व्यंग्य आदि सभी न जाने कहाँ-कहाँ। कुछ छपे, बहुधा इधर-उधर। शोध लेखों में हिन्दी, संस्कृत, इतिहास, लोकनाट्य इस तरह घालमेल अनायास हो जाता है कि वह उन विषयों में जाकर भी अलग-सा बनने लगता है। ऐसे प्रकाशित-अप्रकाशित लेखों के दस से अधिक संकलन प्रकाशित हो गये। इस मात्र में हिन्दी, अपभ्रंश, पालि, प्राकृत के बिना काम नहीं चलता। अत: इन पर भी प्रयत्न। अनायास पुस्तकें तैयार होती गयीं। उज्जैन पर बरबस बारबार लिखवाया गया। उसका थोड़ा संकलित छपा तथा अधिक असंकलित पड़ा है। इसी यात्रा में विद्वानों के पत्र आते रहे। महाराजकुमार रघुबीरसिंह के तो इतने पन्त्र आये कि एक पुस्तक तैयार हो जाए।

● **निश्चित ही आपका लेखन प्रभूत और प्रशंसनीय है तथापि आपको अपनी किस कृति से संतुष्टि हुई?**

● किसी एक या दो पुस्तकों से संतोष का अर्थ होता है कि शेष पुस्तकें असंतोषदायक हैं जबकि छपने के बाद लगभग सभी पुस्तकों में कोई न कोई कसर प्रतीत होती है. क्योंकि नवीन चिंगारियाँ तो सब विषयों में हर समय प्रकट होती रहती हैं। फिर भी कहने को कह सकते हैं कि मालवी-संस्कृति और साहित्य अपेक्षाकृत अधिक असंतोषजनक नहीं हैं।

● **आपको मिले कुछ विशेष सम्मान के बारे में कृपया बताएँ।**

● यों तो कई सम्मान और पुरस्कार मिले हैं, किन्तु 2023 में मिला म.प्र. शासन का शिखर सम्मान और 2023 में ही संगीत नाटक अकादमी का नाट्य विशेषज्ञ अवार्ड इन अर्थों में विशेष है कि देश की आजादी के अमृतकाल में जिसे देश के 75 वर्ष की आयु वाले 75 साधकों को दिया गया, जिनमें मैं भी हूँ। वर्ष 2024 में भारत सरकार द्वारा महामहिम राष्ट्रपति जी के हाथों मिला पद्मश्री अलंकरण निश्चित ही मेरी अब तक की सृजन साधना का सम्मान ही है जिसके लिए मैं आभारी हूँ।

● **सृजन सम्पादन की इस सुदीर्घ यात्रा में क्या ऐसा कुछ अभी भी नहीं लिख पाए हैं जिसे लिखने के लिए आप सोचते रहे हैं?**

● बहुत कुछ लिखा जाना शेष है पर सदा विभिन्न कारणों से हो नहीं पा रहा है- देवरात या शुन: शेष नाटक जो राह देख रहा है। वररुचि केन्द्रित ऐसी ही रचना भी। पर समय जो करवा लें।

● **यद्यपि आप अपनी उपलब्धियों का बखान नहीं करते हैं तथापि यदि बताना पड़े तो आपकी प्रतिक्रिया?**

● अपने बारे में बताने का यह खतरा सदा रहता है कि स्वयं को नायक बनाकर आत्मप्रशंसा का पाप करना पड़ता है। अब तक मैं चलाया गया हूँ। मैं स्वयं नहीं चला। अपने मुँह कर अपनी बरनी और अपने मुँह मियाँ मिट्ठू होना कोई अच्छी बात नहीं। यही समस्या राजा भोज के सामने आई थी। और उसे भी स्नेहियों की इस दलील के सामने झुकना पड़ा और आत्मवर्णन करना पड़ा कि अपनी वास्तविक उपलब्धियों (बायोडाटा) को कहना दोष नहीं है। यह दण्डी का तर्क है- स्वगुणाविष्क्रिया दोषो नात्र भूतार्थशंसिन:।

संपर्क : रामेन्दु, सी-31, तिरुपति ड्रीम, नागदा-बड़नगर बायपास, उज्जैन
मोबा. 9425915010

कला समय
संस्कृति, शिक्षा और समाज सेवा समिति, भोपाल, म.प्र.
पं.क्र. 01/01/01/26174/13
कला समय संस्कृति, शिक्षा और समाज सेवा समिति, भोपाल (म.प्र.)
गौरवशाली 12वाँ वर्ष
कलाकारों के उत्थान, प्रोत्साहन और सम्मान जनक मंच उपलब्ध कराने हेतु
कलाओं और कलाकारों को समर्पित संस्था 'कला समय'
0755-2562294, 9425678058
kalasamay1@gmail.com
कार्यालय: जे-191, मंगल भवन, ई-6 महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462016 (म.प्र.)

संस्मरण

पद्म श्री विभूषित डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित के शोध-साधना में प्रकाशित शोध पत्रों की संक्षिप्त उपयोगी जानकारी

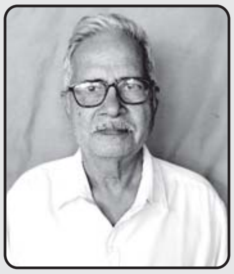

अमरसिंह कुशवाह

महाराजकुमार डॉ. रघुबीरसिंहजी ने वर्ष 1980 से शोध-पत्रिका 'शोध-साधना' का प्रकाशन इतिहास के शोधार्थियों तथा संशोधकों के लिये प्रारम्भ किया था। महाराजकुमार का डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित से अनन्य स्नेह था। इनका आपस में निरन्तर पत्र व्यवहार होता रहता था।

आप के शोध पत्र 'शोध-साधना' में निरन्तर छपते रहे। आपके शोध पत्र निम्नवत् प्रस्तुत हैं जिनकी संक्षिप्त जानकारी शोधार्थियों के लिये उपयोगी होगी।

1. मालवा में नवज्ञात द्रोण वंश संबंधी उज्जैन के दो लेख शोध-साधना वर्ष 3, 1982 ई. में प्रकाशित हुए थे।

अ. चौबीस खम्भा लेख- डॉ. राजपुरोहित ने अपने शोध पत्र उज्जैन के चौबीस खम्भा लेख से उज्जैन क्षेत्र में द्रोण वंश के अस्तित्व तथा उस वंश के कृतित्व की जानकारी विस्तृत दी है। द्रोण वंश भोपाल क्षेत्र के अधिद्रोण वंश का क्या संबंध था, आपने बताया कि इस बारे में कुछ अधिक जानकारी नहीं मिलती हैं। यद्यपि 11वीं शत्ताब्दी के उत्तराद्ध काल में मालवा के इतिहास तथा तत्कालीन उज्जैन क्षेत्र की राजनीतिक गतिविधियों पर नवीन जानकारी प्राप्त होती है।

ब. भावे के बाड़े वाला लेख- डॉ. राजपुरोहित ने इस लेख का अज्ञातनामा राजा परम्परानुसार शत्रु विजयी बताया है। राजा ने अपनी वीरता की धाक विभिन्न राजाओं के मन में स्थापित कर दी थी। द्रोण वैरी की उपाधि धारण की थी। लेखक का कथन है कि ये घटनाएँ ईसा कि 12वीं शताब्दी के मध्य तथा तत्काल बाद ही हो सकती है। द्रोण वंश संबंधी उज्जैन के उक्त दो शिलालेख प्रकाशित किये गये हैं कि संशोधकों को इन द्रोण वंशीय इतिहास की जानकारी सुलभ हो सके। जो लुप्त कड़ियो की खोज कर उज्जैन क्षेत्र के तत्कालीन स्थानीय इतिहास पर नवीन प्रकाश पड़ सकें।

2. उज्जैन की नदियाँ (शोध साधना, वर्ष 4, 1983 ई.):-

डॉ. राजपुरोहित ने उज्जैन में शिप्रा की छोटी-बड़ी सहायक नदियों क्षाता, नीलगंगा, खगता, सीमा अथवा सोमवती, फल्गू, मन्दाकिनी, नवनदी, गन्धवती आदि हैं। जलाशयों तथा उद्यानों के लिये यह उज्जैन नगरी चिरकाल से प्रसिद्ध हैं। शिप्रा प्राचीन नदी है। यह काकरी वरदी नदी से निकलती है, जो 12 मील दक्षिण-पूर्व में है इन्दौर से उज्जैनी गांव के पास है। उत्तर-पश्चिम में बहती 54 मील दूर उज्जैन पहुँचकर अन्तत: 120 मील दूर कालाखेड़ी के पास चम्बल में मिल जाती है। इसकी सहायक नदियों की संक्षिप्त जानकारी दी गई है।

3. मौर्यकुमार चन्द्रोदय (शोध-साधना, वर्ष 4, 1983 ई.) :-

डॉ. राजपुरोहित ने बताया की चन्द्रोदय के विरह में कुमुद्वती श्रीहीन हो गई। चन्द्रोदय मौर्य उज्जैन का शासक था। राजा विक्रमादित्य ने राजा चन्द्रोदय को हराकर विजय प्राप्त की। इस लेख में विस्तृत विवरण दिया गया है।

4. प्रसेनजित तथा कपिल का एक अज्ञात युद्ध (शोध-साधना, वर्ष 4, 1983 ई.) :-

लेखक ने बताया की प्रसेनजित नामक अनेक पौराणिक राजा हुये है, परन्तु उसमें से कोई भी काशी का राजा नहीं हुआ है। भारतीय इतिहास में प्रसेनजित तथा कपिल के युद्ध का संकेत होता है। लेखक का कथन है कि यह काव्य 11वीं सदी के पूर्वार्ध से पूर्व का है।

5. रिस्थल शिलालेख (संवत् 572) कुछ और तथ्य (शोध-साधना, वर्ष 5, 1984 ई.) :-

लेखक ने इस शिलालेख को 572 संवत का माना है। तद्नुसार 551 ई. की ग्रीष्म ऋतु में विविध निमितियाँ की गयी है और यह शिलालेख लिखा

गया। इसके पूर्व प्रकाश धर्मा ने तोरमाण सहित विभिन्न राजाओं को हराया था। विजय की स्मृति में उसी रण स्थल में तालाब खुदवाया तथा शिव का विशाल मंदिर बनवाया। तब निश्चित रुप से तोरमाण विजय संवत् 571 में कमी हुई होगी। कक्क के पुत्र वासुल ने राजा के संतोष के लिये यह प्रशस्ति रची। इसी वासुल ने यशोधर्मा की तुष्टि हेतु मन्दसौर के जय स्तम्भों पर उत्कीर्ण प्रशस्ति रची थी। लेखक ने बताया की वासुल की रचना संस्कृत काव्यधारा श्री अमूल्य निधि है इसके छदों तथा अलंकारो, भावों तथा

कल्पनाओं, लालित्य तथा प्रसाद गुण का मनोहारी सामंजस्य है।

6. मध्यकाल में महाकाल (शोध-साधना, वर्ष 5, 1984 ई.):

लेखक ने बताया की उज्जैन की महत्ता महाकाल से बनी है क्षिप्रा की महत्ता भी महाकाल और भारतीय संस्कृत के विशिष्ट विकास क्षेत्र उज्जैन के कारण बढ़ी है। महाकाल उज्जैन के प्रमुख देव के रूप में चिरकाल से विख्यात है। महाकवि कालिदास, राजा भोज, नरवर्मा आदि ने भी महाकाल का चित्रण किया हैं। इल्तुतमिश ने भी उज्जैन पर आक्रमण कर महाकाल के मंदिर को क्षतिग्रस्त किया। इसी प्रकार तबकाते नासिरी में इतिहासकार मिनहाज-उ-सिराज ने उज्जैन में आक्रमण कर महाकाल के मंदिर को नष्ट किया। विक्रमादित्य की पीतल की तथा महाकाल के पत्थर की मूर्ति को दिल्ली ले जाया गया। लेखक ने स्पष्ट उल्लेख किया है कि मंदिर के निर्माण तथा विध्वंस के मध्य भी उनके प्रति आस्था सदैव अटूट रही हैं।

7. शाहजहाँ कालीन दो हस्तलिखित ग्रंथ (शोध-साधना, वर्ष 12, 1991 ई.) :-

लेखक ने बताया की शाहजहाँ कालीन (1628-58 ई.) दो हस्तलिखित ग्रन्थ उपलब्ध है -

अ. श्री भागवत महापुराण एकादश स्कंध भाषा -इस ग्रन्थ में 189 पत्र है। ब्रजभाषा पद्य में इसका अनुवाद किया गया है। संत दास के शिष्य चतुरदास ने संवत् 1692 (1635 ई.) में पूर्ण किया था। यह भागवत संस्कृत में है। मध्यकाल में भागवत का हिन्दी पद्यानुवाद करने की परम्परा बन गयी थी।

ब. अज्ञातनामा ग्रन्थ- यह हस्तलिखित अपूर्ण ग्रन्थ का न तो नाम ज्ञात है और न ही रचयिता का नाम। पत्र 1 तथा 7 से 79 तक है। चार पत्र बिना क्रमांक के है। लेखक का मत है कि शाहजहाँ की प्रशंसा होने से इसकी रचना और संकलन शाहजहाँ के समय हुआ होगा। दोहे निम्नवत है-

कल्पवृष करतार व्यो साहजहे संसार।
जाकि साषा जानकहि लेऊँ सदा विस्तार ।।
साहजहाँ संसारपति अविचल जो लो भान।
गढ गंजन भंजन हुजन कल्पवृछ सुकल ।।

8. राजशेखर और मालवा (शोध-साधना वर्ष 14, 1993 ई.) :-

कवि राजशेखर ने अपनी काव्य मीमांसा में परम्परा से हटकर काव्य शास्त्र की रचना की है। इस ग्रन्थ में 18 अध्याय है। इसमें अवन्ति सहित मालवा और वहाँ से संबंध उल्लिखित विभूतियों की ही चर्चा लेखक ने की है। डॉ. राजपुरोहित ने राजशेखर के काव्य मीमांसा की विस्तृत चर्चा की है।

9. रणरंगमल्ल का उज्जैन शिलालेख (शोध-साधना वर्ष 16, 1995 ई.) :-

डॉ. राजपुरोहित ने बताया कि यह शिलालेख विक्रम कीर्ति मंदिर संग्रहालय में रणरंगमल्ल के उल्लेख सहित एक खंडित शिलालेख है। कुल खंडित 10 पंक्तियाँ है। इसमें महाराष्ट्री प्राकृत में गाथाओं के अंश उत्कीर्ण हैं। अन्त में संस्कृत में 'महाराजा' शब्द उत्कीर्ण हैं। द्वितीय पंक्ति में रणरंगमल्लेण का उल्लेख है। रणरंगमल्ल राजा भोज का विरुद था। भोज प्रशस्तियाँ संभवत: उनके ही अशं हो। ऐसी प्राकृत भाषा में विरचित कितनी ही भोज प्रशस्तियाँ धार की भोजशाला में उत्कीर्ण थी। जिनमें से एक कर्मशतक तो पूरा मिलता है और कई अज्ञातनामा काव्यों के खण्ड प्राप्त हैं।

10. दुर्गों के प्रकार (शोध-साधना वर्ष 21, 2006 ई.) :-

लेखक ने दुर्ग दो प्रकार के बतलाये है- 1. अकृत्रिम, 2. कृत्रिम। अकृतिम या प्राकृतिक दुर्ग कई प्रकार के होते हैं वन दुर्ग, पर्वत दुर्ग, नदी का जल दुर्ग. पुराने वन में जो दुर्ग होता है उसमें जो सेना रहती है वह नर दुर्ग कहलाता है। जिस दुर्ग में पर्वत न हों उस राज्य में कृत्रिम दुर्ग बनाया जा सकता हैं। लेखक ने मनुस्मृति तथा कोटल्य ने अपने अर्थशास्त्र में दुर्गों का विवरण दिया है। प्राचीन से मध्ययुगीन तक कई नगरों में चहार दिवारी बनी हुई हैं वे परकोटे और पुरातन द्वार आज भी उन अतीत गाथाओं की याद दिलातें है। उज्जैन तथा धार में पुरातन परिखाओं में घिरे प्राकारों में बसी नगरी देखी जा सकती है। वर्तमान में धीरे-धीरे अतिक्रमण, खुदाई और क्षरण से क्षीण होती जा रही है। लेखक ने सुझाव दिया कि भारत में असंख्य छोटे-बडे दुर्ग है। इनका सर्वेक्षण यथोचित समुचित योजनाबद्ध उपयोगिता से तलाश की जाना चाहिये, क्योंकि युद्ध और सुरक्षा की तकनीक के बदले स्वरुप में अब वह पुरातन उपयोगिता तो अतीत की स्मृतियाँ बन गई है। हमें इस ओर शासन का ध्यान आकर्षित करना आवश्यक है।

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित का मध्यप्रदेश के धार जिले के चन्दोड़िया में 2 नवम्बर 1943 ई. को जन्म हुआ। संस्कृत, हिन्दी तथा प्राचीन इतिहास से स्नातकोत्तर परीक्षाएँ ऊर्तीण की थी। आपने लोक साहित्य के साथ-साथ कविता, नाटक, उपन्यास, सहित विभिन्न विधाओं में निरन्तर रचनात्मक लेखन कार्य कर रहे हैं। आप मूलत: सीतामऊ के पास ग्राम लदूना के निवासी हैं। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा श्रीराम माध्यमिक विद्यालय सीतामऊ से उर्तीण की थी। भारत सरकार ने डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित को हिन्दी तथा इतिहास में विशिष्ट सेवाओं के लिये वर्ष 2024 में पद्मश्री के अलंकरण से विभूषित किया हैं। आपको डॉ. राधाकृष्णन सम्मान मध्यप्रदेश उच्च शिक्षा अनुदान आयोग, भोज पुरस्कार म.प्र. सस्कृत अकादमी बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' पुरस्कार म.प्र. साहित्य परिषद् सहित कई सम्मान। सेवानिवृत्त आचार्य एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग, सान्दीपनि स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उज्जैन। पूर्व निदेशक, महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ, उज्जैन स्वराज संस्थान संचालनालय, संस्कृति संचालनालय, भोपाल। आपकी निम्नलिखित प्रमुख कृतियाँ प्रकाशित है:-

1. प्रतिभा भोज राजस्य प्रकाशन वर्ष, 1984
2. कालिदास प्रकाशन वर्ष, 1988
3. भोजराज प्रकाशन वर्ष, 1988
4. भारतीय कला और संस्कृति प्रकाशन वर्ष, 2003
5. भारतीय अभिलेख और इतिहास प्रकाशन वर्ष, 2003
6. मालवी संस्कृति और साहित्य प्रकाशन वर्ष, 2004
7. संस्कृत भाषा और साहित्य प्रकाशन वर्ष, 2004
8. राजा भोजकृत स्तुति एवं अभिलेख प्रकाशन वर्ष, 2005
9. भोजदेव समरांगण सूत्रधार प्रकाशन वर्ष, 2005
10. संवत् प्रवर्तक विक्रमादित्य (कृतयुग) प्रकाशन वर्ष, 2022

सम्पर्क: सीतामऊ (मालवा)

■

आलेख

राष्ट्र निर्माणकारी साहित्य निर्माता : डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित

प्रो. डॉ. सरोज गुप्ता

भारतीय ऋषियों के चैतन्य को अपनी लेखनी से ऊर्जस्वित करने वाले सृजन और संवेदनशील साहित्यकारों में डॉ. भगवती लाल राजपुरोहित का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा । बीसवीं सदी के आरम्भ में सामाजिक जनजागृति से देश में साहित्य के प्रति रुचि जागृत करने राष्ट्रीय आंदोलनों के समय लोगों में नयी स्फूर्ति लाने सम्राट राजा विक्रमादित्य, महाराजा भोज और महर्षि पतंजलि के सिद्धांतों को लिपिबद्ध कर एक मिशन के रुप में कार्य करने वाले राजपुरोहित जी प्रसिद्ध विद्वान लेखक हैं जिनका भारतीय साहित्य, संस्कृति और विरासत के संरक्षण और प्रचारप्रसार में अद्वितीय योगदान है।

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित 2 नवंबर,सन् 1943 को मध्य प्रदेश के धार जिले के चंदोड़िया गांव में जन्मे। आपका पालन-पोषण पारंपरिक माहौल में हुआ। आपने संस्कृत, हिंदी, प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति में स्नातकोत्तर डिग्री हासिल की। इसके बाद आपने विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन से पीएच.डी. की। हिंदी, संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश और मालवी जैसी भाषाओं में पारंगत डॉ. राजपुरोहित एक उत्कृष्ट विद्वान, शिक्षक और शोधकर्ता हैं। विद्वानों के बीच उनके शोध की बहुत अधिक प्रामाणिकता है। उन्होंने प्राचीन भारतीय ब्राह्मी और अन्य लिपियों के अभिलेखों के अर्थ निकाले हैं। उन्होंने महाराजा विक्रमादित्य अनुसंधान संस्थान, उज्जैन के निदेशक और संदीपनि महाविद्यालय, उज्जैन में हिंदी के प्रोफेसर सहित कई पदों पर कार्य किया है। अध्ययन के बाद साहित्य साधना शुरू हुई जो आज तक जारी है। महाप्रतापी राजा विक्रमादित्य के जीवन के अनछुए प्रसंगों हिंदी, मालवी और संस्कृत में करीब 50 से 60 रंगमंचीय नाटक आपने लिखे जिनमें सबसे ज्यादा प्रसिद्धि विक्रमादित्य नाटक से हुई।

परमारवंश के शासक उज्जैन के महाराजा विक्रमादित्य के ज्ञान, वीरता और उदारशीलता का वर्णन सम्राट विक्रमादित्य नाटक में किया। शको को पराजित कर सम्राट विक्रमादित्य ने किया था। अपनी बुद्धि, पराक्रम, अपने जूनून से उन्होंने आर्यावर्त के इतिहास में अपना नाम अमर किया है बेताल पच्चीसी और सिंघासन बत्तीसी के रुप में इनके पराक्रम की सैकड़ों कहानियाँ प्रचलित हैं।

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित की उल्लेखनीय रचनाओं में सम्राट विक्रमादित्य के चित्रण, कालिदासचरितम्, श्री कृष्ण उज्जैनी, महादेव, राजा भोज, श्रीकृष्ण, मीरा, शांकुतलोत्र, कैकेयी और राणा प्रताप, रानी दुर्गावती, छत्राला, बख्तावर सिंह, तात्या टोपे, जैसे अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के चित्रण शामिल है। उन्होंने कई संस्कृत नाटकों का हिंदी और मालवी भाषा में अनुवाद किया। उन्होंने कालिदास के सभी नाटकों और मेघदूत का मालवी में अनुवाद किया। उन्होंने मेघदूत और ऋतुसंहार को हिंदी गीतों में भी प्रस्तुत किया। वह लगातार भारतीय भाषाओं हिंदी-संस्कृत और भारतीय सांस्कृतिक क्षेत्र में होने वाले महत्वपूर्ण शोध में योगदान दे रहे हैं। आपकी सौ से अधिक पुस्तकें हैं। इन ग्रन्थों में हिन्दू-सभ्यता की वह संजीवनी शक्ति है जब तक हिंन्दू-जाति अजर-अमर रहेगी तब तक इन ग्रंथों का सुधा-श्रोत प्रवाहित होता रहेगा। उल्लेखनीय रचनाओं में प्रसिद्ध उपन्यास 'विद्योत्तमा' (हिंदी) हैं। ये ग्रन्थ हिन्दू-सभ्यता के आदर्श हैं; हमारी गौरव-गरिमा के विशाल स्तम्भ है; इनमें हमारे हृदय का मर्म स्वर्णाक्षरों में अंकित है; हमारे सुख-दुख का, हमारे उत्थान-पतन का ज्वलन्त उदाहरण इनमें मौजूद है।

राजपुरोहित जी ने ऐतिहासिक खजाने से अनमोल रत्नों को चुनकर अपने नाटकों की कथावस्तु रचकर अत्यंत कुशलता पूर्वक प्रस्तुतीकरण द्वारा इन नाटकों का महत्व कई गुना बढाया। आपके रचनासंसार में उच्च भावों विचारों के रत्न मणि माणिक्य देखे जा सकते हैं। उज्जैन के सुप्रसिद्ध हिंदी साहित्य आराधक डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन, डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी के साथ युगीन आवश्यकता के अनुरूप लेखन कार्य से भारतीय संस्कृति , राष्ट्र और समाज हित में आपने अपना सर्वस्व समर्पण किया है। उज्जैन के सांदीपनी आश्रम की श्री कृष्णकथा और इतिहास का जादू आपने जनता के साथ जोड़कर आध्यात्मिक और नैतिक आकांक्षाओं को पूरा किया। शिक्षा जगत में रहते हुए आपने अपना ध्यान राष्ट्रीय परम्परा के आकर्षक और उपलब्धिपरक विषय की ओर उन्मुख किया। वीर पराक्रमी महाराजा विक्रमादित्य के न्यायप्रिय, उदारमना, परोपकारी व्यक्तित्व पर केन्द्रित नाटक लिखकर परमवीर विक्रमादित्य की यशोगाथाएं जो आज भी प्रासंगिक हैं उन्हें समाज में प्रचारित प्रसारित किया। आर्य सभ्यता की उन्नति और विकास के विविध आयामों के साथ भारतीय संस्कृति की रक्षा के समस्त उपक्रम इन पुस्तकों में सुरक्षित है। तत्कालीन समय के सामायिक चित्रों का सांगोपांग चित्रण इन नाटकों में वर्णित है। पुरोहित जी द्वारा रचित साहित्य में आदर्शमूलक विचार हैं,

सामाजिक समुन्नति के महामन्त्र हैं, सिद्धि के सूत्र हैं, व्यवहार के प्रयोग हैं, सफलता के साधन है। उनमें कामद कल्पलतिका है, फलप्रद कल्पतरु है, संजीवनी है, अमर बेलि है और चारु चिन्तामणि है। आपने शोध अनुसंधान और साहित्य साधना के माध्यम से नाट्य लेखन में नवाचारों का प्रयोग किया है। वहीं अनुसंधान क्षेत्र में साहित्य तत्व और लोक संस्कृति का अध्ययन किया। डॉ. राजपुरोहित कहते हैं कि अध्ययन के दौरान हिन्दी, संस्कृत,अंग्रेजी के विशेषज्ञ तथा हमारे गुरुजन भी हमारे मार्गदर्शक रहे हैं । भारतीय मानस में एकीकरण और विश्व शान्ति का संदेश देते हुए डॉ. राजपुरोहित ने पुरातत्व और साहित्य के पारस्परिक सत्यापन के द्वारा विक्रम सम्वत के प्रवर्तक राजा विक्रमादित्य के युग का ऐतिहासिक महत्व स्थापित किया।

डॉ. राजपुरोहित के शोध कार्यों ने विक्रमादित्य के साहित्यिक सहयोगियों के अस्तित्व को भी प्रमाणित किया है। महर्षि पतंजलि के जन्मस्थान की पहचान के साथ उनके योगदान को रेखांकित किया है। भोपाल के राजाभोज पर कई साहित्यिक रचनाएं प्रथम बार प्रकाशित की है। आपने प्राचीन भाषाओं के माध्यम से आधुनिक भाषाओं और संस्कृतियों की जड़ों की पहचान करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ताम्रपत्र, शिलालेखों की खोज और उनकी प्रकाशन व्यवस्था आपकी विद्वतापूर्ण गतिविधियों को प्रमाणित करते हैं।

नाटककार के रूप में डॉ. राजपुरोहित ने संस्कृत, हिंदी और मालवी में पचास से अधिक नाटक लिखे , जिनमें से कई नाटकों का मंचन हुआ है। आपके साहित्य में मानव की नैसर्गिक प्रवृत्तियों में प्रेम क्रोध ,घृणा,साहस,क्षमा ,उदारता,विश्वास आदि का बहुत ही सुंदर ढंग से वर्णन हुआ है। नाट्य कृतियों में नयी अन्तर्चेतना, अपूर्व कला मर्मज्ञता, सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि तथा विश्लेषण पद्धति से विषय को व्यापक एवं महत्वपूर्ण बनाया है। आपके नाटकों के पात्रों में सूक्ष्म चरित्र विकास एवं मानव अन्तर्द्वन्द्व का आभास मिलता है।

अकादमिक जगत में डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित जी भर्तृहरि उत्सव, विक्रमादित्य उत्सव, भोजमहोत्सव, कालिदास समारोह, आदि अनेक सांस्कृतिक गतिविधियों , कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे हैं। आपने उज्जैन में राजपुरोहित आश्रम और मालवी कला संस्कृति संस्थान की स्थापना कर समाज में अग्रणी भूमिका निभाई। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित डॉ. राजपुरोहित को वर्ष 2024 का पद्म श्री सम्मान से विभूषित किया गया है। आप दो बार, कालिदास पुरस्कार (1963 और 1964 में) मध्य प्रदेश संस्कृत अकादमी, भोपाल द्वारा भोज पुरस्कार से सम्मानित किये गये। मध्य प्रदेश साहित्य परिषद ने 1990 में उन्हें बाल कृष्ण शर्मा नवीन पुरस्कार से भी सम्मानित किया और मध्य प्रदेश उच्च शिक्षा अनुदान आयोग ने 1990 और 1992 में उन्हें डॉ. राधाकृष्ण पुरस्कार से सम्मानित किया। 2023 में, उन्हें मध्य प्रदेश सरकार द्वारा संस्कृत शिखर सम्मान और संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली, ने भारतीय रंगमंच में उनके योगदान के लिए अमृत पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित जी की एकनिष्ठ साधना और लोकोत्तर प्रतिभा ने उन्हें उत्कृष्ट स्थान पर प्रतिष्ठित किया है।

लेखिका वरिष्ठ साहित्यकार, पं. दीनदयाल उपाध्याय शासकीय कला
एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सागर (मप्र)

संस्मरण

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित का विक्रमादित्य पर सर्वाधिक कार्य

डॉ. नारायण व्यास

हमारे शिक्षा जगत में डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित जी का नाम कौन नहीं जानता। ये संस्कृत साहित्य, पुरातत्व विशेष रूप से विक्रमादित्य के ऊपर सर्वाधिक कार्य किया है।

मेरा इनसे सबसे पहले परिचय 1968 में हुआ था। मैंने उज्जैन में विक्रम विश्वविद्यालय में प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व में एम. ए. के प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया था। उस समय डॉ. राजपुरोहित जी एम. ए. फायनल में इस विषय में ही थे। कभी हमारी क्लास साथ-साथ भी होती थी। कभी वहां हम लोगों को वाकणकर साहब भी पढ़ाने आया करते थे। मैं संस्कृत साहित्य में ज्यादा अधिक जानता नहीं था इनसे कभी प्रश्नों और शंकाओं का समाधान होता था।

मुझे इनके साथ कार्य करने का अवसर मिला। ये जब उज्जैन में विक्रमादित्य शोध पीठ में निदेशक के पद पर थे, उस समय मुझे भी दो बार शोध पीठ में सदस्य बनाया।

इन्होंने वहां अपने यहां कई सेमिनार आयोजित किए विशेष रूप से विक्रमादित्य एवं पुरातत्व पर। इनके साथ भोजपुर एवं भीमबैठका में भी भ्रमण कर विक्रमादित्य पर शोधकार्य किया। भोपाल क्षेत्र में विक्रमादित्य के समकालीन शैल चित्रों के अध्ययन एवं शोधकार्य के लिए मुझे इनके द्वारा मार्गदर्शन दिया गया।

इनके द्वारा संस्कृत साहित्य, पुरातत्व एवं विक्रमादित्य पर विशेष शोधकार्य एवं विभिन्न प्रकार के कार्यों पर किए गये शोधकार्य पर भारत सरकार ने पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

मैं इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

लेखक पुरातत्वविदद भोपाल हैं
संपर्क : 95, फाईन एवेन्यू फेस 1, नयापुरा कोलार रोड़ पिन 462042
मोबा. 9425600143

संस्मरण

पद्मश्री से सम्मानित डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित

डॉ. मीनाक्षी टिकावत

मध्य प्रदेश के धार जिले के सरदारपुर तहसील के छोटे से गाँव चन्दोड़िया में डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित का जन्म 2 नवम्बर 1943 को हुआ। इनके पिता का नाम झब्बालाल राजपुरोहित तथा माता का नाम श्रीमती चन्द्रकुँवर राजपुरोहित था। एक साधारण परिवार में जन्म लेने वाले डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित बचपन से ही प्रतिभावान रहे है, उन्होंने जीवन के प्रत्येक रंग को देखा है संयुक्त परिवार तथा ग्रामीण परिवेश में पले-बड़े डॉ. राजपुरोहित जी एक स्वाभिमानी व्यक्ति हैं, किंतु साथ ही सहजता, अदम्य, धैर्य एवं आत्मविश्वास उनके व्यक्तित्व के प्रमुख गुण कहे जा सकते हैं आपने जो भी किया, जो भी पाया वह अपनी मेहनत से व कठिन श्रम से पाया। आपने आदर्शों के अनुरूप अपने व्यक्तिव-कृतित्व का निर्माण स्वयं किया।

मध्य प्रदेश की धरती ने साहित्य और ज्ञान के क्षेत्र में अनेक विभूतियों को जन्म दिया है इन अनेक विभूतियों में मालवी के साधक और लोकसंस्कृति के अराधक डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित का एक अलग ही गौरव और गरिमापूर्ण स्थान है। यह इसलिए कि ऐसा कोई भी अन्य विद्वान दृष्टिगोचर नहीं होता, जिसने ज्ञान की अनेक विधाओं का न केवल स्पर्श किया वरन् उन क्षेत्रों में एक अधिकारपूर्ण स्थान भी प्राप्त किया। साहित्य-संस्कृति ज्ञान की अनेक विधाएँ थी जिसमें डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित ने अधिकार पूर्वक प्रवेश किया और इन सभी क्षेत्रों में वे एक गरिमामय स्थान पर प्रतिष्ठित हुए।

मालव माटी में रचे-बसे डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित स्वयं इस उम्र में भी शोध में निमग्न नजर आते हैं तथा निरंतर लेखन कार्य करते रहते हैं। डॉ. राजपुरोहित से मिलना अपने आप में शोध का विषय है। कुर्ता-पायजामा पहने आँखों पर ऐनक धारण किए मध्यम काठी के डॉ. राजपुरोहित एक साधारण व्यक्तित्व से पूरित हैं, उनसे भेंट करके लगता ही नहीं कि यह मणि इतनी अमूल्य है। शांत किंतु अभिमुक्त मुखमुद्रा अस्सी-बय्यासी वर्ष की उम्र को पीछे धकेलकर युवा ऊर्जा से सम्पन्न कार्य क्षमता के धनी डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित के मन में कितना अलोड़न-विलोड़न है यह जान पाना कठिन है। चेहरे पर एक तृप्त मुस्कुराहट और निर्दंभ वार्तालाप उनकी पहचान है। मैं जब उनसे पहली

बार मिलने जा रही थी तब लग रहा था कि इतने बड़े साहित्यकार से कैसे और क्या बात करूंगी, लेकिन ज्यों-ज्यों उनसे बात होती गयी तब-तब मेरा मन अवलौकिक होता चला गया। मुझे लगा कि इतने साधारण व्यक्ति में इतनी प्रतिभा कैसे समाई हुई है। अब तक कठोर कवच में सुस्वाद फल का मुहावरा तो सुना था परंतु इतने कोमल कवच में इतने सुस्वाद फल का आभास पहली बार हुआ था। डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित एक रचनाकार ही नहीं वरन् बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली है। डॉ. राजपुरोहित भारतीय विद्वपरंपरा के अनन्य साधक, सर्जक और अनुसंधाता है। साहित्य, संस्कृति और इतिहास के विलक्षण अध्येता है। संस्कृत, हिन्दी, मालवी में सतत लेखन कार्य करते रहे हैं। मालवी साहित्य पर भी उनकी उतनी ही गहरी पैठ है जितनी हिंदी एवं संस्कृत साहित्य पर। डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित की अभिरुचि: नाट्य रचना, साहित्य, संस्कृति, पुरातत्व, कला, लोक साहित्य एवं संस्कृति का सतत अध्ययन, अन्वेषण, लेखन आदि है। लोक साहित्य एवं संस्कृति में डॉ. राजपुरोहित ने लोक नाट्य 'माच' तथा लोक सुभाषित (मुहावरें, लोकोक्ति, कहावतें, पहेलियाँ) का व्यापक स्तर पर अध्ययन एवं संकलन संपादन किया है। मालवी मुहावरें पुस्तक अभी प्रकाशनाधीन है। डॉ. राजपुरोहित ने लेखन कार्य के साथ-साथ प्रकाशन कार्य भी दक्षता के साथ सम्पन्न किया है। या यूं कहे अभी भी जारी है- नाटक, अनुवाद, समीक्षा, संस्कृति, लोक संस्कृति संबंधी 60 पुस्तकें, विक्रमादित्य, कालिदास और राजा भोज संबंधी लगभग 40 पुस्तकें प्रकाशित हैं। तथा 500 शोधलेख और संस्कृत काव्य भी हैं।

डॉ. राजपुरोहित ने कई काव्य संग्रहों का मालवी रूपांतर करके

मालवा वासियों के लिए अमूल्य कार्य किया है। उनकी प्रतिभा का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि मालवी रूपान्तरित इन नाटकों में भी वही ताजगी व श्रेष्ठता है जो मूल भाषा संस्कृत में है। डॉ. राजपुरोहित ने लगभग पिच्चानवें पुस्तकों का लेखन कार्य किया है। डॉ. राजपुरोहित ने लेखन, प्रकाशन के साथ-साथ विभिन्न प्रस्तुतियाँ भी दी है जैसे रेडियो, दूरदर्शन तथा स्वरचित कई नाटकों के अनेक प्रदर्शन आदि। डॉ. राजपुरोहित की लेखन, प्रकाशन प्रस्तुतियों के अलावा उनकी सम्प्रति है वे सान्दीपनि महाविद्यालय उज्जैन (मध्यप्रदेश) के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग में पूर्व आचार्य के पद पर रह चुके हैं। तथा महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ उज्जैन (मध्यप्रदेश) निदेशक के पद पर (2009-2018) तक रहकर अपनी सेवाएँ दे चुके हैं वर्तमान में डॉ. राजपुरोहित अपने निवास स्थान-बिलोटीपुरा, उज्जैन (मध्यप्रदेश) से ही साहित्य सेवा में निरंतर लेखन कार्य में संलग्न है। डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित जी को पुरस्कार व सम्मान तो उनके अध्ययन के दौरान ही (बी.ए.) उत्तीर्ण करने के पूर्व ही मिलने प्रारंभ हो गये थे और पुरस्कार और सम्मान प्राप्त करने का सिलसिला वर्तमान में भी निरंतर जारी है। डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। कालिदास पुरस्कार (दो बार) 1963, 1964 मध्यप्रदेश संस्कृत अकादमी भोपाल द्वारा (चार बार) 1986, 1990, 1992 और 2000 में भोज पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मध्य प्रदेश साहित्य परिषद द्वारा बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' पुरस्कार से 1998 में सम्मानित किया। मध्यप्रदेश के राज्यपाल द्वारा भोज सम्मान से अलंकृत सन् 1993, मध्य प्रदेश सरकार द्वारा संस्कृत शिखर सम्मान और संगीत नाटक अकादमी दिल्ली ने भारतीय रंगमंच में उनके योगदान के लिए अमृत पुरस्कार से सम्मानित किया। सन् 2003, भारत सरकार द्वारा भारत की महामहिम राष्ट्रपति महोदया द्रोपदी मुर्मू जी द्वारा राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली में 09 मई 2024 को पद्मश्री सम्मान से सम्मानित । पुरस्कारों एवं सम्मानों की श्रृंखला में डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित जी की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित की सफलता का रहस्य उनकी सादगी और साहित्य के प्रति उनकी गहरी समझ में निहित है। डॉ. राजपुरोहित का जीवन और साहित्य के क्षेत्र में उनका योगदान हमें यह प्रेरणा देता हैं कि समर्पण, सादगी और साहित्य के प्रति प्रेम से जीवन को जीकर सार्थक बनाया जा सकता है। एक सामान्य परिवेश से उठकर भी उच्चतम शिखरों को हुआ जा सकता है। परंतु हमारे अंदर लगन, निष्ठा और मेहनत करने की इच्छा होना चाहिए। डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित के जीवन के विभिन्न पहलुओं से यह स्पष्ट है कि वे एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी है जिन्होंने अपने ज्ञान और अनुभव से साहित्य की सेवा की है उनका जीवन वृत्त प्रेरणादायी है।

संपर्क : हिन्दी अध्ययन शाला विक्रम विश्वविद्यालय,
उज्जैन (म.प्र.)

हिन्दी के प्रति महापुरूषों के सुविचार

अपनी भाषा और अपनी श्रेष्ठता का ज्ञान ही यथार्थ मनुष्यत्व है। **- महाकवि निराला**

हिन्दी हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक व्यवहार में आने वाली भाषा है। **- राहुल सांकृत्यायन**

हिन्दी भारत की अमर वाणी है, यह स्वतंत्रता और सम्प्रभुता की गरिमा है। **-माखन लाल चतुर्वेदी**

कला समयः बैंक खाता विवरण

1.	**खाता का नाम**	:	कला समय
2.	**खाता संख्या**	:	09321011000775 (चालू खाता)
3.	**बैंक शाखा**	:	पंजाब नैशनल बैंक की शाखा अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) 462016
4.	**आईएफएस कोड**	:	PUNB0093210

प्रबंध संपादक

कला समय के इस रचनात्मक अनुष्ठान में आपका बहुमूल्य आर्थिक सहयोग पत्रिका के लिए जीवनदायी संजीवनी होगी।

संस्मरण

तपस्वीः डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित

नरेन्द्र सिंह पँवार

जिनके पास बैठकर हम घंटों इतिहास और पुरातत्व पर चर्चा कर सकते हैं, जो हमें अपने अनुभवों और ज्ञान से समृद्ध करदे वो नाम है डॉ. भगवतीलालजी राजपुरोहित।

स्वभाव से बेहद विनम्र, शांत और अहंकाररहित श्री राजपुरोहित साहब से मेरा परिचय लगभग तीन-चार वर्ष पूर्व परमार (पँवार) राजवंश रत्नमाला ग्रंथ के प्रकाशन के समय हुआ।

परमार (पँवार) राजवंश रत्नमाला ग्रंथ लगभग 1200 पृष्ठों का एक ही राजवंश पर लिखा गया एक विशाल ग्रंथ है, जिसे तैयार करने में लगभग 20 वर्षों का समय लगा। इस महत्वपूर्ण ग्रंथ की पृष्ठभूमि मालवा की संस्कृति और इतिहास, सम्राट विक्रमादित्य और महाराजा भोजदेव से जुड़ी होने के कारण इसके ऐतिहासिक तथ्यों को लेकर मन में बार-बार एक संशय उठता रहता था। ऐसी ऊहापोह की स्थिति में आदरणीय गुरुदेव डॉ. के. सी. पाण्डेयजी (मंदसौर) का सान्निध्य और स्नेहयुक्त मार्गदर्शन मुझे प्राप्त हुआ। आदरणीय पाण्डेय साहब के समक्ष मैंने राजपुरोहित साहब से मिलने की इच्छा व्यक्त की। पाण्डेय साहब ने सहर्ष मेरे निवेदन को स्वीकार करते हुए, राजपुरोहित साहब से समय लिया और उज्जैन स्थित राजपुरोहित साहब के आवास पर मेरी भेंट करवाई। इस महत्वपूर्ण ग्रंथ की टंकित पाण्डुलिपि जब आप दोनों विद्वान महानुभावों की पारखी नजरों से गुजरी तब मुझे संतोष हुआ।

आदरणीय राजपुरोहित साहब ने सम्राट विक्रमादित्य, राजा भोज और मालवा की साहित्य, संस्कृति, इतिहास और पुरातत्व को समृद्ध करने के लिए एक तपस्वी के समान अपने जीवन का एक-एक दिन समर्पित कर दिया। सम्राट विक्रमादित्य की जो ऐतिहासिकता को लेकर इतिहासकार और विद्वान प्रश्न चिह्न खड़े करते रहते थे। डॉ. राजपुरोहित साहब ने सम्राट विक्रमादित्य को लेकर अपने पूज्य गुरुदेव डॉ. वाकणकर साहब के द्वारा किए गए शोध कार्य को आगे बढ़ाते हुए स्पष्ट अवधारणा स्थापित की कि विक्रमादित्य एक ऐतिहासिक पुरुष है। सम्राट विक्रमादित्य, अवंतिका, राजा भोज और मालवा के इतिहास को जो समृद्धि आपने प्रदान की उसके लिए आने वाली पीढ़ियाँ डॉ. राजपुरोहित साहब की सदैव ऋणी रहेगी। आपके द्वारा लिखी गई सैंकड़ों पुस्तकें और शोध-पत्र इतिहास के विद्यार्थियों के लिए हमेशा पथ-प्रदर्शक का कार्य करते रहेंगे।

गत वर्ष भारत सरकार ने आपके श्रमसाध्य कार्यों का सम्मान करते हुए आपको पद्मश्री से विभूषित किया जो हम सभी के लिए गौरवान्वित करने वाली उपलब्धि है।

हम सभी सौभाग्यशाली है कि हमें डॉ. राजपुरोहित साहब का आशीर्वाद और सान्निध्य निरंतर प्राप्त हो रहा है।
ईश्वर से यही कामना है कि आप स्वस्थ रहें और शतायु हों।

लेखक राष्ट्रीय अध्यक्ष
राजा भोज जनकल्याण सेवा समिति रतलाम हैं।

अनुरोध

सभी लेखकों एवं पुस्तक समीक्षकों से निवेदन है कि 'कला समय' के लिए भेजे जाने वाले आलेख अधिकतम 3 पृष्ठ तथा पुस्तक समीक्षा अधिकतम 2 पृष्ठ की ही मान्य होगी।

-सम्पादक

संस्मरण

पद्म श्री विभूषित डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित पुरातन सभ्यता की पाठशाला है

डॉ. रमण सोलंकी

सन् 2009 में महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ की स्थापना और उनका निर्देशक बनना बडा पच्चोपेश मे राह माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने उनको इस पद के लिए मनाया और वह राजी हुए उन्होंने सहमति प्रदान की उनकी इस यात्रा का मैं साक्षी शोधार्थी हूँ तब से लेकर विक्रमादित्य के पुरा साक्ष्य को खोजना उन पर मध्य प्रदेश शासन के स्वराज संस्थान संस्कृति विभाग से पुस्तकों का प्रकाशन करवाना भारतीय सभ्यता और संस्कृति के लिए महत्वपूर्ण क्षण थे जो कि हमारे पूर्वज इस कार्य को करने में थक चुके थे यह कार्य डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित जी ने सहजता से डॉ. श्यामसुंदर निगम, डॉ. सीताराम दुबे, डॉ. जगन्नाथ दुबे और मेरे जैसे शोधार्थियों को साथ लेकर कर दिया ।

सन् 2009 से ही आपके पुरोवाक के माध्यम से भविष्य पुराण आधारित 60 नाम जो कि विक्रम संवत के प्राप्त होते हैं उस पर आधारित प्रतिवर्ष चैत्र प्रतिपदा के दिन भारतीय पुरातन सभ्यता संस्कृत साहित्य और भारत उत्कर्ष को लेकर पुस्तक का प्रकाशन कर विमोचन किया जाता है । पुस्तक प्रकाशन और लेखन का कार्य निरंतर आपके मार्गदर्शन में जारी है ।

महाराजा विक्रमादित्य संवत प्रवर्तक को लेकर पुरातात्विक सर्वेक्षण कार्य किए गए डॉ. श्याम सुंदर निगम डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित और मैं स्वयं आपके साथ प्रतापगढ़ के अवलेश्वर सहित अनेक स्थानों पर यात्रा कर पूरा सामग्रियों को खोजा गया इन सब शोध अध्ययन यात्राओं में अश्वनी शोध संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष डॉ. आर. सी. ठाकुर साहब का बड़ा योगदान रहा उन्होंने डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित साहब को अपना भामाशाह की तरह खजाना खोल कर दे दिया हजारों की संख्या में मुद्राओं का संकलन जिसमें विक्रमादित्य की स्वर्ण रजत ताम्र मुद्राएं प्राप्त हुई उनका वाचन डॉ. जगन्नाथ दुबे के द्वारा किया गया और उनका लेखन डॉ. राजपुरोहित जी के द्वारा किया गया यह बड़ा सहयोग रहा कि जहां से राजमुद्रिका, टेराकोटा, अस्त्र-शास्त्र व तमाम सामग्रियां जो की प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व की ब्राह्मी लिपि वह संस्कृत भाषा में लेख युक्त प्राप्त हुई जिसका लेखन आपके ही माध्यम से हो पाया यह बड़ा कार्य राजपुरोहित जी के द्वारा ही किया गया जिसे मध्य प्रदेश शासन ने प्रकाशित किया आपके माध्यम से इस प्रकाशन के कारण भारत वृहतरभारत में सम्राट विक्रमादित्य के पूरा प्रमाण इतिहास वेताओं के सामने आ सके हैं अभी तक कहानी और किवदंतियों का जनक कहा जाने वाला विक्रमादित्य अब पुरातत्व का साक्षी हो चुका था और भारत की अस्मिता का प्रतीक हो चुका था यह सब संभव हो पाया है डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित जी के माध्यम से और इन्हीं सब कार्यों के लिए भारत सरकार ने आपको पद्मश्री से सम्मानित किया ।

आपके निर्देशन में ही हम उज्जैन से बाहर भोपाल, दिल्ली, आगरा, हैदराबाद और अनेक स्थानों पर सम्राट विक्रमादित्य के पुरातत्व इतिहास को लेकर शोध परिचिर्चा और उनके नाटक का मंचन कर पाए हैं।

यह सम्राट विक्रमादित्य के प्रमाणों को प्रस्तुत करने की शोध अध्ययन यात्रा भारत से बाहर पहुंचने वाली है नेपाल और भूटान से आमंत्रण प्राप्त हुए हैं जहां पर सम्राट विक्रमादित्य के पुरातत्व और इतिहास को लेकर परिचर्चाएँ की जाना है ।

श्री कावेरी शोध संस्थान में डॉ. श्याम सुंदर निगम जी की लाइब्रेरी में आप ही के निर्देशन में भोजन उपरांत विक्रम उत्सव का प्रारंभ किया गया और कलश यात्रा प्रात: निगम साहब के द्वारा निकाली गई ऐसे विक्रम उत्सव का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ यह यात्रा भोजन उपरांत से प्रारंभ होकर आज 125 दिन का विक्रम उत्सव उज्जैन में मनाया जा रहा है यह एशिया का सबसे बड़ा उत्सव है जो कि किसी महाराज पर केंद्रित है जिसने भारत की अस्मिता को जागृत किया जिसने भारत के मान सम्मान को उच्च कोटि का बनाए रखा जिसने भारत में अश्वमेघ यज्ञ किया भारत की जनता के लिए कार्य किए विद्वानों का आश्रय दाता बना रहा नवरत्नों के ज्ञान से और 36 पुतलियाँ की न्याय व्यवस्था को संचालित किया ऐसे महाराजा का उत्सव एक मात्र एशिया का भारत देश है जिसमें मध्य प्रदेश है जहां उज्जैन जिला है जहां पर डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित जैसे माननीय निदेशक के द्वारा यह कार्य प्रारंभ किया गया है। मैं उन्हें साधुवाद देता हूं उनको नमन करता हूँ प्रणाम करता हूँ उनके मानव जीवन की लंबी यात्रा की परमपिता परमेश्वर से कामना करता हूँ वे दीर्घायु हो।

सम्पर्क : विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

■

संस्मरण

सहज, सरल व्यक्तित्व के धनी
पद्म श्री सम्मानित डॉ. भगवतीलाल जी राजपुरोहित

गौरीशंकर दुबे

सत्यनिष्ठ समर्पित इतिहास, पुरातत्वशास्त्री, संस्कृत और हिन्दी के अध्येता डॉ. भगवतीलाल जी राजपुरोहित सीतामऊ रिसासत की आपात कालीन राजधानी लदूना के मूल निवासी है। कक्षा 8 वीं तक आपने श्रीराम विद्यालय सीतामऊ में अध्ययन किया था। मेरे ताऊजी श्री प्रभाशंकर जी दुबे के आप शिष्य रहे हैं। आपसे जब भी मिलना होता है तो आप विद्यालय में मेरे ताऊजी के अनुशासन का जिक्र अवश्य करते हैं।

आपने चर्चा के दौरान बताया कि उनका गणित विषय कमजोर था तथा इतिहास में भी रूचि नहीं थी। किन्तु उज्जैन में श्री वाकणकर साहब के शिष्यत्व में आपका रूझान इतिहास की ओर हो गया। आपने संस्कृत साहित्य, इतिहास, पुरातत्व, विक्रमादित्य और भोज पर अनेक शोधपरक ग्रन्थों का प्रणयन किया। हिन्दी संस्कृत और मालवी में नाटक भी लिखे संस्कृत साहित्य एवं इतिहास में आपके अतुलनीय योगदान के दिए आपको 9 मई, 2024 को राष्ट्रपति द्वारा पद्म श्री अलंकरण से विभूषित किया गया। यह सीतामऊ और लदूना निवासियों के लिए भी अत्यन्त ही गौरव की बात है।

वैसे तो विविध स्मारिका एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध आलेखों के माध्यम से सन् 1972 से ही राजपुरोहित साहब से अप्रत्यक्ष परिचय था ही किन्तु प्रत्यक्ष भेंट सन् 2019 में हुई जब मैं अपनी कृति ''सीतामऊ राज्य में साहित्य साधना'' भेंट करने गया था। आपने मेरी कृति ''सीतामऊ राज्य में साहित्य-साधना '' तथा अप्रकाशित कृति कवि ब्रजछैल रचित सियवर-विनोद की पाण्डुलिपि को आपने पूर्ण मनोयोग से पढ़ा तथा इन पुस्तकों की विद्वतापूर्ण भूमिका लिखी। गीत गोविन्द की शैली में लिखे गये ललित गीति काव्य सियवर विनोद की महत्ता को आपने प्रतिपादित किया उसी से उत्साहित होकर (मैने उक्त ग्रन्थ की टीका लिखने का साहस) जुटाया। सियवर विनोद की मुद्रित प्रति जब मैं उन्हें भेंट करने गया तब मैने निवेदन किया कि-इसकी टीका में त्रुटियाँ हो तो मुझे अवश्य अवगत करावें। तब आपने कहा-''मैं गलतियाँ नहीं देखता।'' उनके इस कथन में

परगुण परमाणून् पर्वती कृत्य नित्यम्
निज हृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः।

जैसे सन्तों की छवि का उनमें दर्शन हो गया।

शिवपुराण कथा के प्रसंग में सन् 2023 में उज्जैन जाना हुआ तो उनसे मिलने उनके निवास पर गया। आप बड़ी आत्मीयता से मिले और उन्होंने मुझसे प्रश्न किया - 'आज कल क्या लिख रहे हो?' उनके इस प्रश्न ने ही मुझे लिखने के लिए प्रेरित किया और मैं महापुरूषों, संतों के जीवन के प्रेरक प्रसंगों के संकलन के रूप में ''प्रेरक-पाथेय'' पुस्तक लिख सका।

आपका निष्कपट व्यवहार, आपका सरल और सरस प्रेम, आपकी सहृदयता और उदारता आदि ऐसे गुण है जिनके कारण आप अपने परिचित लोक-समूह द्वारा यथारीति समादृत हुए हैं। आप अपनी विद्वत्ता के कारण अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित हुए किन्तु आपमें लेशमात्र भी अभिमान नहीं है। आपने ''विद्याददाति विनयम्'' को अपने जीवन में चरितार्थ किया है।

जगन्नियंता से प्रार्थना है- आप जुग-जुग जिए और हम जैसों को उत्साहित और अनुप्राणित करते रहें।

संपर्क : सनसिटी कॉलोनी
सी-55 गली नं. 7 सैलाना रोड , रतलाम (म.प्र.)

पुस्तक - समीक्षा

'कला समय' पत्रिका में कला, संस्कृति, साहित्य, इतिहास पुरातत्व, लोक साहित्य, पर्यटन, गीत, ग़ज़ल, कविता एवं समसामयिक इत्यादि विषयों पर प्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा प्रकाशित की जाती है। प्रकाशनार्थ समीक्षा के साथ पुस्तक की एक प्रति भेजना आवश्यक है। साथ ही समीक्षा दो पृष्ठों से अधिक की नहीं होना चाहिए। **-संपादक**

आलेख

समय के शिलालेख पर हस्ताक्षर पद्म श्री विभूषित डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित

डॉ. रवीन्द्र कुमार सोहोनी

चेतना के एकीकृत संस्कार के रूप में स्थित एक सांस्कृतिक निरन्तरता लगभग पाँच हजार वर्षों से भारत की एकता का प्रतीक रही है, जिसमें भारतवर्ष की आंतरिक संरचना को एक निश्चित स्वरूप प्रदान किया है। भारतीय सभ्यता के अंगीकृत अनेकानेक सांस्कृतिक विश्वासों और परिपाटियों को एक विश्वव्यापी जीवनदृष्टि प्रदान करने में भी संलग्न रही है। सारभूत संरचना तथा तदाश्रित प्रक्रियाएँ विभिन्न रूप और आयामों को ग्रहण कर विस्तार को प्राप्त करती रही हैं।

स्थानीय तथा क्षेत्रीय परिवेश में प्रवाहित भारतीय सभ्यता और संस्कृति की यह नदी अपने प्रवाह के साथ समयानुकूल परिवर्तनों को भी सहन करती रही है। भारतीय संस्कृति की क्षेत्रीय परम्पराओं का रूपान्तरण एवम् संश्लेषण की यह विशद् प्रक्रिया एक अद्भुत ऐतिहासिक वास्तविकता भी है इससे मुँह नहीं मोड़ा जा सकता। सांस्कृतिक संश्लेषण की यह प्रक्रिया भारतीय संस्कृति के विविध रूपों में यथा-नागर संस्कृति, ग्राम्य संस्कृति एवं लोक संस्कृति जैसे रूपों में अन्तर्निहित हैं।

जिनका जीवन अविरल पावन नदी की भाँति प्रवाहित है, जिनका हृदय मीठे जल के सागर की भांति धीर गंभीर और जिनकी आत्मा में भारतवर्ष तथा मालवभूमि का कण-कण समाहित है ऐसे व्यक्तित्व का नाम है पद्म श्री विभूषित डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित। आपका जन्म 2 नवम्बर, 1943 को मध्यप्रदेश के धार जिले के ग्राम चंदोड़िया में पण्डित झब्बालालजी एवं चन्द्रकुँवर के यहाँ हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा मंदसौर जिले के सीतामऊ रियासत जिसे छोटी काशी भी कहा जाता है के निकट लदूना ग्राम में हुई, तत्पश्चात् धार तथा उच्च अध्ययन के लिये आप उज्जैन आ गए। डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित के लिये महाकाल की नगरी उज्जयिनी कर्मस्थली बन गयी। साहित्य, कला, पुरातत्व और लोकसंस्कृति के प्रखर प्रवक्ता और निष्णांत अध्येता ने अपनी रचनाधर्मिता से इतिहास रच डाला। एक सौ पच्चीस से अधिक पुस्तकों के प्रणेता डॉ. राजपुरोहित ने एक प्रसिद्ध नाटककार के रूप में संस्कृत, हिन्दी और मालवी भाषा में 50 से अधिक नाटकों का लेखन किया। जिसमें सम्राट विक्रमादित्य, महादेव, राजभोज, श्रीकृष्ण, मीरा, कैकयी, बख्तावरसिंह तथा तात्याटोपे विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अनुसंधान के साथ लोक संस्कृति के मध्य वे जिस तरह का समन्वय स्थापित करते हैं वह अपने आप में न केवल अदभुत है बल्कि सही अर्थों में श्लाघनीय है।

अनेक गुणों में सम्पन्न होने के कारण डॉ. राजपुरोहित का व्यक्तित्व न केवल वैविध्यपूर्ण है अपितु अनुकरणीय भी है, उनके व्यक्तित्व में हर व्यक्ति के लिये कुछ न कुछ है। डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित की कृतियों, विचारों, भाषणों, सम्बोधनों, पत्रों आदि का विश्लेषण करने पर हमें भारतीय मनीषा की स्पष्ट झलक दिखलाई पड़ती है। डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित का लेखन अपने दुर्दान्त आवेग से किसी भी अवगाहनकर्ता को बहा ले जाने में समर्थ हैं वहीं दूसरी ओर वे अपनी निर्मलता, शीतलता और प्राणवेत्ता से जीवन के दुर्गम पथ के पथिकों की प्यास और थकान को मिटाकर नई प्रेरणा की संजीवनी प्रदान करने की क्षमता से सम्पन्न है। आपका लेखन सुधि पाठकों के साथ ही आमजन को सकारात्मक रूप से प्रेरित, प्रभावित, संवेदित, उद्वेलित, जागरूक और चैतन्य करने की क्षमता रखता है।

आपके लेखन का अनुशीलन करने के पश्चात् यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि आप सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की सुमंगल कामना के साथ ही भारतीय अवधारणा और प्राच्य परम्परा के आधुनिक ऋषि है।

साहित्य, पुरातत्व और लोक संस्कृति के मनीषी डॉ. राजपुरोहित को वर्ष 1963 तथा 1964 में लगातार दो वर्षों तक कालिदास पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष 1986, 1990, 1992 तथा वर्ष 2000 में कुल चार बार आप मध्यप्रदेश संस्कृत अकादमी से पुरस्कृत और सम्मानित किए गए। इसी के साथ आप वर्ष 1990 तथा 1992 में राज्य शिक्षा अनुदान आयोग के प्रतिष्ठित डॉ. राधाकृष्ण पुरस्कार से भी नवाज़े गए हैं।

आपकी सृजनात्मक सक्रियता तथा संस्कृत साहित्य में विशिष्ट अवदान को दृष्टिगत रखते हुए मध्यप्रदेश शासन के संस्कृति विभाग ने वर्ष 2021 में आपको राज्य के 'शिखर सम्मान' से सम्मानित किया है।

धीर गंभीर अनुसंधानकर्ता, भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रखर प्रवक्ता, देशज परम्परा के अनन्य साधक, विद्वत परम्परा के संवाहक तथा प्राचीन भाषाओं के माध्यम से आधुनिक भाषाओं और संस्कृति की जड़ों की पहचान करने में निर्णायक भूमिका का निर्वहन करने वाले डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित जी को भारत सरकार ने शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में उनके द्वारा किए उल्लेखनीय अवदान को लक्ष्यगत रखते हुए 9 मई, 2024 को पद्म श्री से सम्मानित किया है।

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित की दृढ़ मान्यता है कि हमारी सभ्यता अत्यन्त प्राचीन है और समन्वय पर आधारित है। सांस्कृतिक राष्ट्रीयता की अवधारणा के प्रबल पक्षधर डॉ. राजपुरोहित का विचार है कि सार्वजनिक जीवन में शुचिता और संयम हमारे सर्वमान्य आधार है और यही हमारी प्रेरणा के स्त्रोत है।

इतिशुभम्

लेखक अग्रणी महाविद्यालय मंदसौर के पूर्व प्राचार्य,
राज्य शिक्षा केन्द्र की पाठ्यपुस्तक स्थाई समिति के सदस्य,
विद्या भारती मध्यक्षेत्र के कार्यकारिणी के सदस्य है।

आलेख

संवत् प्रवर्तक विक्रमादित्य

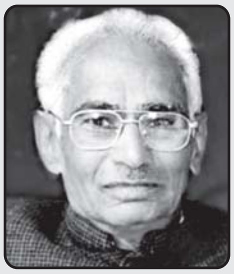

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित

भारत का लोकप्रिय विक्रम संवत् 2070 तक आज भी सुविख्यात है। यह नेपाल का राष्ट्रीय संवत् है। प्राचीन काल में इसे कृत या मालव संवत् भी कहते थे। परन्तु अब तो प्राय: तेरह सौ वर्षों से यह विक्रमादित्य या विक्रम संवत् नाम से ही प्रचलित है। परम्परानुसार इसका प्रवर्तन उज्जैन के यशस्वी राजा विक्रमादित्य ने शकों को पराजित करके किया था। राजा विक्रमादित्य भारत के जन-जन में लोकप्रिय है। भारत, श्रीलंका, नेपाल, तिब्बत, मंगोलिया, अरब, तुर्की आदि के प्राचीन साहित्य के साथ ही भारत में आये विदेशी अलबेरुनी आदि के ग्रन्थों में विक्रमादित्य की गरिमा का बार-बार उल्लेख किया गया है। विक्रमादित्य के तत्काल बाद प्रथम शताब्दी की बृहत्कथा तथा गाहासत्तसई से आरम्भ कर भारतीय साहित्य में अनवरत विक्रमादित्य का सादर स्मरण प्राप्त होता है। भारत के गाँव -गाँव का यह हृदय सम्राट है।

भारत के इस महानायक को पौराणिक और प्राचीन साहित्य में जितनी ख्याति मिली उतनी ही भारतीय आधुनिक इतिहास पुस्तकों में उपेक्षा। जिस गुप्त राजवंश की प्राचीन अभिलेख में लक्ष कोटिमलेखयेत् किल कलौ दाता स गुप्तान्वय: कहकर निंदा की गयी उस वंश के एक विक्रमादित्य उपाधिधारी चन्द्रगुप्त को असली विक्रमादित्य स्थापित कर उसे उस पद पर बनाये रखने की आधुनिक इतिहासकारों ने मुहिम छेड़ रखी है। जबकि पारम्परिक साहित्य में उस चन्द्रगुप्त का नाम विरल ही मिलता है। एक अनुपलब्ध नाटक देवीचन्द्रगुप्त के उस नायक को भारत का नायक बनाये रखने की होड़ चल रही है। उसे नायक बनाये रखने के लिए विशद प्रभामंडल के उस आदि विक्रमादित्य की सब विशेषताएँ इस चन्द्रगुप्त को समर्पित की जाने लगीं जिसके नाम 'विक्रमादित्य' को अपनी उपाधि बनाने में जो स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता था कि वही शकारि है, कि वही साहसांक है।

जबकि ईसवी पूर्व के विक्रमादित्य के समय शक एक प्रबल उभरती हुई शक्ति थी जो भारत में अपनी जगह तलाश रही थी और चन्द्रगुप्त के समय शक एक अस्त होता हुआ तारा था जो पिछली पाँच शताब्दियों से पश्चिमी भारत को जहाँ-तहाँ भोगता रहा था। चन्द्रगुप्त ने उसे अंतिम रूप से अपना बोरिया बिस्तर समेटने के लिए मजबूर कर दिया था क्योंकि शकों को बुरी तरह से पहले ही कमजोर कर दिया गया था। उसी चन्द्रगुप्त के शक्तिसम्पन्न और महिमामंडित महान् विजेता पिता समुद्रगुप्त के द्वारा पराजित शकों की शक्ति को अंतिम विदाई देने के कारण ही वह विक्रमादित्य के समान शकारि हो गया था और वह उस नाम को ही अपनी उपाधि बनाकर विक्रमादित्य होना चाहता था।

इस चन्द्रगुप्त के अनेक शिलालेख, सिक्के, सील आदि प्राप्त हुए हैं। उनमें कहीं भी उसने स्वयं को शकारि या साहसांक नहीं कहा। केवल देवीचन्द्रगुप्त नाटक के उपलब्ध अंशों में एक शक राजा को रानी ध्रुवदेवी बनकर उसने मार डाला था। वहाँ भी रण में शक को आमने सामने नहीं मारा, छल से शक राजा को मारने के कारण आज के इतिहासकार उसे मूल शकारि का गौरव दे रहे हैं। परवर्ती देशी-विदेशी साहित्य में चन्द्रगुप्त सम्बन्धित शकारित्व प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष जो भी प्राप्त होता है वह सब इस नाटक के आधार पर। नाटक नाटक होता है, वह इतिहास नहीं, इतिहासाभास होता है।

परन्तु हमारे इतिहासकारों ने उस इतिहासाभास को ही विभिन्न अप्रत्यक्ष अनुमानित तर्कों से वास्तविक इतिहास बना दिया और जो वास्तविक परम्परा और साहित्य में जीवित था, उसको जड़ से उखाड़ फेंकने का निरंतर प्रयत्न करते रहे। इस प्रकार एक मिथ्या इतिहास पीढ़ियों को बताया जा रहा है। परिणामत: अब तो स्थिति यह हो गयी है कि विक्रम नाम आते ही शिक्षित समुदाय केवल चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ही समझता है।

यह कहा गया कि संवत् प्रवर्तक विक्रमादित्य किस्से कहानियों की गप्प है क्योंकि उसका न कोई शिलालेख है, न सिक्का, न सील। जबकि चन्द्रगुप्त का शकारित्व भी एक कहानी है जो काल्पनिक भी हो सकती है। आधुनिक इतिहासकारों को चन्द्रगुप्त को असली विक्रमादित्य बनाये रखने के दुराग्रह के अनेक उदाहरण क्रमश: प्रकट होते जा रहे हैं। कुछ उदाहरण यहाँ विचारार्थ प्रस्तुत हैं।

(1) हिस्ट्री ऑफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर में

भविष्योत्तरपुराण का वह संस्कृत उद्धरण है जिसमें कहा गया है कि विक्रमादित्य के समान चन्द्रगुप्त भी वीर और संस्कृति प्रेमी था। वह मूल अंश इस प्रकार हैं –

तस्य पुत्रोऽपरश्चन्द्रगुप्ताख्यो वीरकेसरी।
विक्रमादित्यवनित्यं पण्डितैः परिसेवितः ।।

इसका यह अर्थ होता है– उस (समुद्रगुप्त) का अन्य पुत्र वीरों में सिंह था जिसका नाम चन्द्रगुप्त था। उसकी विक्रमादित्य के समान पण्डितगण सदा सेवा करते रहते थे। हमारे इतिहासकार इस उद्धरण का उपयोग तो करते हैं परन्तु विक्रमादित्य शब्द को नाम न मानकर उसका अर्थ आदित्य के समान विक्रम सम्पन्न चन्द्रगुप्त अर्थ करके विक्रमादित्य नाम को ही अर्थ में से गायब कर देते हैं।

(2) विक्रमादित्य के पुरातात्विक प्रमाण नहीं पाये जाते। यह तर्क देकर उसे इतिहास से खारिज कर दिया जाता है। पुरातात्विक प्रमाण तो मौर्यकाल से पहले के प्रद्योत, उदयन सहित कितने ही राजाओं के नहीं मिलते। चन्द्रगुप्त मौर्य या बिन्दुसार के भी नहीं मिलते परन्तु उन्हें इतिहास सम्मत माना जाता है। तब विक्रमादित्य की उपेक्षा पक्षपात का स्पष्ट उदाहरण दिखाई देता है। जब विक्रमादित्य के पुरातात्विक प्रमाण मिलने लगे तो स्वनामधन्य इतिहास कार उनके ओर भी आँख मूंदने लगे या उन्हें फर्जी कहकर निरस्त करने में जुट गये। इसके भी उदाहरण पिछली आधी सदी में सतत पाये जाते हैं। वे इस प्रकार हैं।

(3) सुप्रसिद्ध पुराविद्, मुद्रा तथा अभिलेखों के विशेषज्ञ डॉ. एच.वी. त्रिवेदी ने पवाया के नाग सिक्कों पर 1957 में 'नाग काइंस' पुस्तक प्रकाशित की। उसमें फोटो सहित विवरण दिया। परन्तु एक प्लेट में पाँच सिक्के ऐसे छापे जिनके विषय में लिखा कि नाग सिक्कों की ये सिक्के भूमिका बनाने से महत्वपूर्ण हैं। वे इन्दौर के एक व्यक्तिगत संग्रह में विदिशा से प्राप्त हुए थे।

डॉ. त्रिवेदी ने उन सिक्कों पर अंकित स्पष्ट अक्षरों का वाचन अपनी पुस्तक में नहीं दिया क्योंकि वाचन देने से उनके समय के दिग्गज इतिहासकार उन्हें अपनी बिरादरी से हटा देते और उनकी बुद्धि पर तरस खाने लगते। क्योंकि उन सिक्कों पर स्पष्ट ही कृत लिखा था। जबकि कृत के उल्लेख सहित तो कई शिलालेख मिल चुके हैं। ये सिक्के पहली बार मिले। उनमें से एक सिक्के पर कृत और विक्रम दोनों लिखा है। जिससे इतिहास की एक महत्वपूर्ण गुत्थी सुलझ जाती है कि कृत और विक्रम एक ही हैं। अतः कृत संवत् का प्रवर्तन विक्रमादित्य ने ही किया, इसमें सन्देह नहीं है।

इन सिक्कों का वाचन यदि उस पुस्तक में ही दे दिया जाता तो 1960 से पहले ही यह समस्या सदा के लिए हल हो जाती। क्योंकि एच.वी. त्रिवेदी की बात को इतिहासकार सरलता से टाल नहीं पाते। परन्तु त्रिवेदीजी ने उन सिक्कों के महत्त्व की उपेक्षा नहीं की और उनका प्रकाशन तो कर ही दिया जिनका अब भलीभाँति वाचन सुविज्ञ मुद्राविद् डॉ. जगन्नाथ दुबे ने करके उस छिपाये गये तथ्य को उजागर कर दिया।

(4) प्रतिबद्ध इतिहासकारों की मानसिकता से हटकर पहली बार डॉ. वि. श्री. वाकणकर ने उज्जैन के प्राचीन गढ़कालिका क्षेत्र से प्राप्त एक मुद्रांक प्रकाशित कर दिया जिस पर अंकित है 'कतस उजेनियस'। वह सीलिंग उन्होंने तत्कालीन ख्यातनाम कई ख्यात पुराविदों को दिखाई। पर अवसर आने पर उन्होंने कह दिया कि उन्होंने नहीं देखी और डॉ. मिराशी, डॉ. वि. श्री. वाकणकर के पुराज्ञान पर सवाल खड़े करते हुए अपने लेखों और पत्रों में उन्हें भला बुरा कहते रहे। परन्तु वाकणकर अपने सच्चे पथ पर अडिग रहे।

(5) ताजा उदाहरण है कि नान्दूर उत्खनन से प्राप्त 'श्री विक्रमस' अंकित मुद्रांक को भी चन्द्रगुप्त मान लिया गया। यह न जानते हुए कि इसमें ईसवी पूर्व की लिपि और भाषा भी है। प्राक्त विभक्ति ईसवी पूर्व में लगती थी और गुप्तकालीन होती तो संस्कृत में विक्रमस्य शब्द होता। इस सील पर दण्डधर शिव के सामने हाथ जोड़े एक व्यक्ति (विक्रम) और पास ही एक पक्षी भी अंकित है। विक्रमादित्य शिवभक्त था। अतः यह करबद्ध शिवभक्त विक्रमादित्य ही है।

(6) चतुर्भाणी की भूमिका (पृष्ठ 10) में डॉ. मोतीचन्द्र ने लिखा है– कांकायन अवश्यं आयुर्वेद के कोई बड़े आचार्य रहे होंगे। नावनीतक में जिसका समय डॉ. हार्वले ने ईसा की दूसरी सदी माना है (बावर मेन्युस्क्रिप्ट्स, अध्याय में) एकत्र जगह (5/935) कांकायन का उल्लेख है। पर अगर कांकायन हरिश्चन्द्र का ही विशेषण माना जाए तो नवनीतक के कांकायनऔर हरिशचन्द्र एक ही बैठते हैं। ऐसी अवस्था में नावनी तक का समय हमें पाँचवीं सदी का मध्य भाग मानना पड़ेगा। यह मजबूरी इसलिए है कि डॉ. मोतीचन्द्र आदि इतिहासकारों का दल चतुर्भाणी और साहसांक विक्रमादित्य को गुप्तकालीन मानते हैं।

अब मध्यप्रदेश शासन द्वारा उज्जैन में जब 2009 से महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ स्थापित हुआ है उसके प्रयासों से पिछले डेढ़ वर्षों में ईसवी पूर्व के संवत् प्रवर्तक विक्रमादित्य के कई शिलालेख, सिक्के, मुद्राएँ, मुद्रांक, सिक्कों के साँचे आदि प्रकट हुए और होते जा रहे हैं। इन में से राजा कृत उज्जैन, श्रीविक्रम, कृत, राजा विक्रम, विक्रम आदि अंकित प्रायः 20 सील या सीलिंग प्राप्त हैं। ये मिट्टी, हाथी दाँत तथा धातु की हैं। एक पर श्रीविषम अंकित है। विषमशील विक्रमादित्य का ही एक अन्य नाम था। कथासरित्सागर में श्लोक यही कहता है

नाम्ना तं विक्रमादित्यं हरोक्तनाकरोत्पिता।
तथा विषमशीलं च महेन्द्रादित्यभूपतिः ।।18/1/51

उस पुस्तक में विक्रमादित्य सम्बन्धी कथाखण्ड का नाम ही है विषमशील लम्बक। अतः यह विषमांकित सील विक्रमादित्य की है। विषम का अर्थ है असामान्य। विक्रम असामान्य शील सम्पन था। एक सील पर विक्रम या कृत को देसभानेस अर्थात् देश के आभा मण्डल का स्वामी कहा गया है जो आज तक अपनी कीर्ति से यथार्थ सिद्ध हो रहा है।

विक्रमादित्य और कृत के अब तक 12 ताँबे के सिक्के प्राप्त हुए हैं। एक स्वर्ण सिक्का भी ज्ञात हुआ है जिस पर राजा विक्रमादित्य उजेनिय और राजा की मुखाक्ति अंकित है। विक्रमादित्य के कई सिक्कों पर मानवाकार शिव अंकित है। नन्दूर से प्राप्त मिट्टी की सीलिंग पर शिव के सामने राजा विक्रमादित्य हाथ जोड़े खड़ा है और उस पर श्रीविक्रमस नाम अंकित है। यह उल्लेखनीय है कि एच.वी. त्रिवेदी द्वारा प्रकाशित सिक्के भी नन्दूर क्षेत्र के विदिशा से प्राप्त हुए थे।

ऐसी ही श्री विक्रमस अंकित एक सील अश्विनी शोध संस्थान में भी विद्यमान है। दो सीलिंग वाकणकर द्वारा और शेष सील तथा सीलिंग श्री अश्विनी शोध संस्थान, महिदपुर के अध्यक्ष, डॉ. आर.सी. ठाकुर के सौजन्य से शोधपीठ को अन्वेषण के लिए सुलभ करवाये गये। यही नहीं उनके संग्रह में सिक्कों के मिट्टी के प्राय: साढ़े पाँच सौ साँचे हैं। जिनमें से एक पर विक्रम अंकित है। एक 'विक्रम' नामांकित सिक्के पर बिन्दुओं से स्पष्ट मुखाकृति बनी है, जो विक्रमादित्य की होनी चाहिए। इस प्रकार विभिन्न सील सिक्कों पर अब तक विक्रम की तीन आकृक्तियाँ ज्ञात हो चुकी हैं। इन आकृतियों का मिलानपूर्वक अध्ययन भी किया जा रहा है। न केवल विक्रमादित्य अपितु कथासरित्सागर सहित अनेक प्राचीन कथाओं में मूलदेव को विक्रमादित्य का सभासद बताया गया है। कसरावद उत्खनन से ईसवी पूर्व की ब्राह्मी में मूलदेव अंकित पात्र खण्ड और महिदपुर संग्रह में सील प्राप्त हो चुकी है। तथा अध्येता से भी सिक्के प्राप्त हुए हैं। क्योंकि वह मूलत: पाटलिपुत्र का था जो उज्जैन में भी रहता था। यही नहीं शूद्रक के पद्मप्राभृतक भाण में और बाणभट्ट की कादम्बरी में उल्लिखित उसकी उज्जैन निवासिनी प्रेमिका गणिका विपुला के ईसवी पूर्व की लिपि में साँची स्तूप पर अंकित दो दानलेख भी प्राप्त हुए हैं। अत: विक्रमादित्य और उसके समकालीन विभिन्न सदस्यों के भी पुरासाक्ष्य सुलभ हो चुके हैं। विक्रमादित्य नामांकित दो शिलालेख मंदसौर के निकट अँवलेश्वर से प्राप्त हुए हैं जिन पर जलाशय निर्माण का उल्लेख है। तत्कालीन विभिन्न प्रतिमाओं की पहचान भी होती जा रही है जो अब ग्वालियर, विदिशा सहित विभिन्न संग्रहालयों में प्रदर्शित हैं। तद्युगीन मिट्टी के पात्रादि का अध्ययन भी गतिशील है।

पुरातात्विक अध्ययन के फलस्वरूप विक्रमादित्य के साथ ही तद्युगीन अन्य भी राजाओं, देवी-देवताओं और प्रतीकों का दुर्लभ ज्ञान प्राप्त होता जा रहा है। साहित्य, लोकसाहित्य और पुरासाक्ष्य के बहुविध प्रमाण निरन्तर एकत्र किये जा रहे हैं और उनका सम्यक् अध्ययन भी गतिशील है।

स्त्रोत : विक्रम संवाद पाक्षिक

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी दिवस
महापुरूषों के प्रेरक विचार

हिन्दी हमारी सम्पर्क भाषा है। यह हमारी संस्कृति, परंपराओं एवं इतिहास की द्योतक है, यह हमारी आस्थाओं एवं विचारों को प्रभावित करती है, जिस प्रकार मूल से कटने पर वृक्ष मर जाता है, वैसे ही हिन्दी हमारी आस्था एवं परंपराओं की जड़ है। इसके बिना हमारा विकास असंभव है। **– डॉ. शंकरदयाल शर्मा**

हिन्दी पढ़ना और पढ़ाना हमारा कर्तव्य है. उसे हम सबको अपनाना है। **– लाल बहादुर शास्त्री**

भाषा होकर रहे और आधुनिक भाषाओं के हार की मध्यमणि हिन्दी भारत भारती होकर विराजती रहे। **– रविन्द्रनाथ टैगोर**

उमड़-उमड़ कर आएंगे। हिन्दी भाषा का सौन्दर्य ही कुछ विलक्षण है। मुझे विश्वास है कि एक दिन आएगा जब हिन्दी विश्व की सांस्कृतिक भाषा होगी। **– सुमित्रानंदन पंत**

हिन्दी ही राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी है, इसलिए नहीं कि वह किसी प्रांत विशेष की भाषा है बल्कि इसलिए कि अपनी सरलता, व्यापकता तथा क्षमता के कारण सारे देश की भाषा है। **– नेताजी सुभाषचन्द्र बोस**

विक्रम सम्वत् प्रकृति के संरक्षण, संवर्धन और विकास का उत्सव

डॉ. मोहन यादव

आज से विक्रम सम्वत् 2082 आरंभ हुआ है। यह प्रदेशवासियों के लिये गर्व और गौरव का विषय है कि भारतीय नववर्ष विक्रम सम्वत् के उज्जयिनी से शुरू हुआ। यह सम्राट विक्रमादित्य के राज्याभिषेक की तिथि है। सम्राट विक्रमादित्य ने विदेशी आक्रांताओं को पराजित कर विक्रम सम्वत का प्रवर्तन किया था। न्यायप्रियता, ज्ञानशीलता, धैर्य, पराक्रम, पुरुषार्थ, वीरता और गंभीरता जैसी विशेषताओं के लिए सम्राट विक्रमादित्य को समूचे विश्व में स्मरण किया जाता है। उन्होंने सुशासन के सभी सूत्रों को स्थापित करते हुए अपने सुयोग्य 32 मंत्रियों का चयन किया, इसीलिए उनके सिंहासन को 'सिंहासन बत्तीसी' कहा जाता है।

भारतीय नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का दिन ऋतु परिवर्तन के अनुरूप स्वयं को सक्षम बनाने का समय है। इसे कहीं 'गुड़ी पड़वा' तो कहीं 'चैती चांद', कहीं 'युगादि' तो कहीं 'उगादि' और कहीं 'नवरोज अगदु' के रूप में मनाया जाता है। विविध स्वरूपों में मनाया जाने वाला नववर्ष का यह पर्व 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की संकल्पना को स्थापित करता है। इसके साथ नवरात्र का आरंभ होता है। यह नौ दिन आरोग्य, साधना और कायाकल्प के लिए होते हैं।

नव संवत्सर की तिथि सुष्टि निर्माण की तिथि है। इसका निर्धारण संपूर्ण वैज्ञानिक अनुसंधान के साथ हुआ है। इसे मनाने की परंपरा व्यक्ति, परिवार और समाज, तीनों के स्वस्थ जीवन और समृद्धि को ध्यान में रखकर शुरू की गई। यह हमारे पूर्वजों के शोध की विशेषता है कि हजारों वर्ष पहले पूर्वजों को ग्रहों की गति और नक्षत्रों की स्थिति का पूर्ण ज्ञान था और इस गणना को ही वैदिक घड़ी कहा गया है। बाबा महाकाल की नगरी विश्व में कालगणना का केंद्र रही है। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उज्जैन की वेधशाला में स्थित विश्व की पहली विक्रमादित्य वैदिक घड़ी की पुनर्स्थापना की है।

मुझे यह बताते हुए खुशी है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न पहलुओं के प्रकटीकरण के लिए हम विक्रमोत्सव का आयोजन कर रहे हैं। विक्रमोत्सव हमारी गौरवशाली विरासत और वर्तमान के विकास का उत्सव है। यह उत्सव 26 फरवरी से प्रारंभ होकर 30 जून तक चलेगा। इस 125 दिन तक चलने वाले उत्सव में विविध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कार्यक्रमों के साथ सम्राट विक्रमादित्य के समूचे व्यक्तित्व, कृतित्व और विशेषताओं को परिचित कराने का प्रयास किया जा रहा है। आगामी 12-13 और 14 अप्रैल 2025 को नई दिल्ली में सम्राट विक्रमादित्य पर केन्द्रित एक भव्य आयोजन होने जा रहा है। श्रीकृष्ण की दीक्षा नगरी उज्जयिनी का संबंध भारत की हर विशेषता से है। उज्जैन धरती के केन्द्र में स्थित है। यहां भगवान श्रीकृष्ण ने सांदीपनि आश्रम में शिक्षा प्राप्त की थी। मध्यप्रदेश सरकार ने संकल्प लिया है कि सांदीपनि आश्रम से श्रीकृष्ण पाथेय के निर्माण का आरंभ होगा।

मध्यप्रदेश का 2025-26 का बजट प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत 2047 के संकल्प को केन्द्र में रखकर प्रस्तुत किया गया है। इसमें विकसित मध्यप्रदेश के निर्माण की अवधारणा अनुसार बजट को बहुआयामी स्वरूप दिया गया है। इस बजट में आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के साथ विकसित भारत के संकल्प की सिद्धि का भी प्रावधान है। वर्ष भर के संकल्पों की पूर्ति के लिए हमने बजट में 15 प्रतिशत की वृद्धि की है। हमारा यह बजट मध्यप्रदेश की समृद्धि और आत्मनिर्भरता के लिए बनाये रोडमैप के संकल्प की पूर्ति के लिए है। इसमें आर्थिक सुधार, सामाजिक न्याय, सतत् विकास के साथ प्रधानमंत्री का मंत्र, ज्ञान (जीवायएएन) पर

ध्यान शामिल है। ज्ञान के चारों स्तंभों को सशक्त करने के लिए बजट में विशेष प्रावधान हैं। इसमें गरीब कल्याण (जी) में अंत्योदय की अवधारणा को साकार किया जायेगा। युवा शक्ति (वाय) में कौशल विकास, प्रशिक्षण तथा रोजगार के अवसर प्रदान किये जायेंगे। अन्नदाता (ए) में किसानों की आय में वृद्धि करने के साथ उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जायेगा। नारी शाक्ति (एन) में महिलाओं को समग्र रूप से सशक्त बनाने के लिए आयोजना बनाई गई है। हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हमें विरासत से विकास का सूत्र दिया है। उनके नेतृत्व में समाज, प्रदेश और देश को सशक्त बनाने के लिए मध्यप्रदेश सरकार अपनी तरह से कार्य कर रही है। मुझे बताते हुए खुशी है कि प्रधानमंत्री जी के विरासत के साथ विकास मंत्र को प्रदेश में धरातल पर उतारने का प्रयास किया जा रहा है। मध्यप्रदेश के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और पुरातात्विक स्थलों के विकास के लिए बजट में अलग से प्रावधान किया है। ऐतिहासिक विरासत को सहेजने के इस अभियान में ओंकारेश्वर, उज्जैन, मैहर आदि धार्मिक स्थलों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जायेगा। वर्ष 2028 में होने वाले सिंहस्थ पर्व के आयोजन की भव्यता और दिव्यता के लिए 2000 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। श्रीराम वन गमन पथ और श्रीकृष्ण पाथेय के लिए अलग से बजट है। हम इन स्थानों पर अधोसंरचना विकास के साथ पर्यटन को प्रोत्साहित करने की दिशा में भी कार्य करेंगे। इससे स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा और मध्यप्रदेश की विरासत संसार के सामने आएगी। प्रधानमंत्री के लोकल फॉर वोकल के संकल्प को आकार देने के लिए रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव और ग्लोबल इंडस्ट्री समिट में प्राप्त प्रस्तावों को धरातल पर उतारा जायेगा। इससे मध्यप्रदेश के हर क्षेत्र की विशेषता, क्षमता और दक्षता विश्व स्तर तक पहुंचेगी। यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प को पूर्ण करने के लिए हम प्रदेश की अर्थव्यवस्था को वर्ष 2047 तक 2 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचाने का प्रयास करेंगे।

गुड़ी पड़वा के अवसर पर हमारी परंपरा में सूर्योदय के पहले बहते हुए स्वच्छ जल में स्नान करने का विधान है। ऊषाकाल में सूर्य को प्रणाम किया जाता है। यह जलस्रोत के प्रवाह स्थल को सुरक्षित रखने का संकल्प है। प्रकृति के इस संदेश को स्वरूप प्रदान करते हुए हम प्राकृतिक स्रोतों की सुरक्षा के लिए शनिवार से जल गंगा अभियान शुरू कर रहे हैं। इसकी शुरुआत उज्जैन के क्षिप्रा तट से होने जा रही है। इसमें जल संरक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए वर्षा जल संचयन, जलस्रोतों का पुनर्जीवन और जल संरक्षण तकनीकों को अपनाने पर विशेष जोर दिया गया है।

इसके अंतर्गत 1 लाख जलदूत तैयार किये जायेंगे। लघु एवं सीमांत किसानों के लिए 50 हजार नए खेत-तालाब बनाए जाएंगे। प्रदेश की 50 से अधिक नदियों के वॉटरशेड क्षेत्र में जल संरक्षण एवं संवर्धन के कार्य होंगे। ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व के तालाबों, जलस्रोतों एवं देवालयों में कार्य किए जाएंगे। यह अभियान शनिवार से प्रारंभ होकर 30 जून तक चलेगा। मुझे विश्वास है कि यह अभियान प्रदेश में जल संकट को खत्म करने और भावी पीढ़ियों के लिए जल सुरक्षा सुनिश्चित करने में मील का पत्थर सिद्ध होगा। भारतीय नववर्ष प्रकृति के संरक्षण, संवर्धन और निर्माण की प्रेरणा देता है। इसमें सृष्टि, संस्कृति और समाज का संगम है। ऋतुकाल संधि के इन दिनों में नवचेतना, नवजागृति का संदेश है। मैं प्रदेश की साढ़े आठ करोड़ जनता के साथ प्रकृति के नवसृजन और विकसित मध्यप्रदेश निर्माण का संकल्प लेता हूं। मुझे उम्मीद है कि इस वर्ष आरंभ होने वाले विशेष प्रयास आप सभी के जीवन में समृद्धि, खुशहाली और आनंद लेकर आएंगे।

यह वर्ष आप सभी के लिए मंगलमय हो, शुभ हो। एक बार पुनः भारतीय नववर्ष की शुभकामनाएँ।

लेखक : मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं।

जब हम अच्छा खाने, अच्छा पहनने और अच्छा दिखने में खर्च करते हैं
तो अच्छा पढ़ने-लिखने और सोचने-समझने की खुराक में खर्च क्यों न करें !

कला समय

प्रबंध संपादक

सम्पर्क- जे-191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई-6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल- 462016 फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058

ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com

bhanwarlalshrivas@gmail.com

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित जी के प्रमुख रचना संसार

पुस्तक का नाम	प्रकाशन वर्ष	प्रकाशक, स्थान	प्रकाशित पुस्तके
राजा भोज का रचनाविश्व	1990	पब्लिकेशन स्कीम प्रकाशन, जयपुर	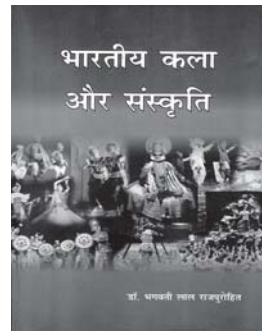
प्रतिभा भोजराजस्य	1984	प्रियदर्शिनी प्रकाशन, उज्जैन	
राजा भोज	2001	पब्लिकेशन स्कीम प्रकाशन, जयपुर	
भोजराज	1988	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	
भोजराज (मालवाधीश परमार	2011	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	
राजा भोज प्रथम)	2011	प्रो. परमेश्वर नारायण शास्त्री प्रकाशन, उज्जैन	
मालव नरेश भोजराज	2011	कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन	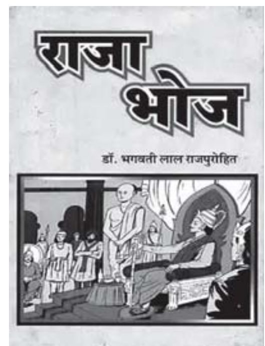
भोजदेव समरांगण सूत्रधार	2005	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	
(श्री भोजराज विरचित:) युक्तिकल्पतक:	2008	प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली	
चाणक्य-माणिक्य	2012	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन	
राजा भोज कृत स्तुति एवं अभिलेख	2005	शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली	
राजा भोज	2011	स्वराज संस्थान प्रकाशन, भोपाल	
चारूचर्या	2016	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन	
राजा भोज और भारतीय विद्या	2012	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन	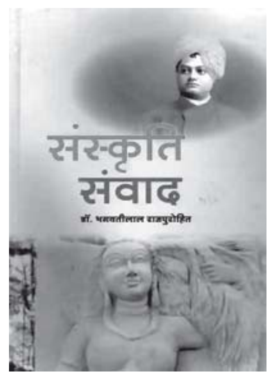
विद्वज्जन वल्लभ	2016	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन	
भुजबलनिबन्ध:	2022	ज्ञान भारती पब्लिकेशन प्रकाशन, दिल्ली	
विविधविद्या विचारचतरा (भोजदेव पठति:)	2022	रचना प्रकाशन, जयपुर	
विश्रांत विद्या विनोद: लम्बायुर्वेदु:	2022	प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली	
राजा भोज का रचनाविश्व	1990	पब्लिकेशन स्कीम प्रकाशन, जयपुर	
प्रतिभा भोजराजस्य	1984	प्रियदर्शिनी प्रकाशन, उज्जैन	
राजा भोज	2001	पब्लिकेशन स्कीम प्रकाशन, जयपुर	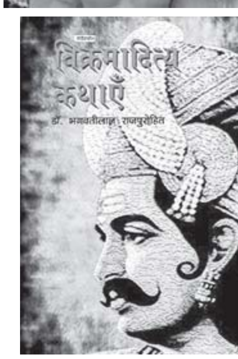
भोजराज	1988	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	
भोजराज (मालवाधीश परमार	2011	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	
राजा भोज प्रथम)			
मालव नरेश भोजराज	2011	कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन	
भोजदेव समरांगण सूत्रधार	2005	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	

श्री भोजराज विरचित:	2008	प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली
चाणक्य-माणिक्य	2012	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
आदि विक्रमादित्य	2008	स्वराज संस्थान प्रकाशन, भोपाल
आदि विक्रमादित्य	2012	स्वराज संस्थान प्रकाशन, भोपाल
सम्राट् विक्रमादित्य	2016	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
बेताल पच्चीसी	2022	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
पुरातत्त्व में विक्रमादित्य	2012	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
विक्रमादित्य और पुरातत्त्व	2012	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
सम्राट विक्रमादित्य और नवरत्न	2018	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
संवत प्रवर्तक	2022	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
माधवानलाख्यान (आनन्दधर-विरचित)	2018	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
पुराणों में विक्रमादित्य	2012	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
सिंहासन बतीसी	2020	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
बेताल पञ्चविंशतिका	2012	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
विक्रमादित्य कथाएँ	2012	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
विक्रमार्क	2012	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
विक्रमार्क	2013	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
विक्रमार्क	2013-14	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
विक्रमार्क	2014-15	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
विक्रमार्क	2015-16	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
संवत् प्रवर्तक विक्रमादित्य		
विद्योत्तमा (उपन्यास)	1985	कालिदास प्रकाशन, उज्जैन
कालिदास	1988	कालिदास प्रकाशन, उज्जैन
रघुवंश कल और कालिदास	2000	शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली
मालविकाग्निमित्रम् (मालवी नाट्यालेख)	2013	संस्कृति अकादमी प्रकाशन, उज्जैन
आभिज्ञानशाकुन्तल (मालवी नाट्यालेय)	2013	संस्कृति अकादमी प्रकाशन, उज्जैन
विक्रमोर्वशीय (मालवी नाट्यालेय)	2012	कालिदास संस्कृति अकादमी, उज्जैन
कालिदास का वागर्थ	1996	कालिदास संस्कृति अकादमी, उज्जैन
कालिदास चरितम्	2018	कालिदास संस्कृति अकादमी, उज्जैन
(संस्कृत, हिन्दी एवं मालवी नाटक)		
ऋतुसंहार (हिन्दी काव्य रूपान्तर)	2019	कालिदास संस्कृति अकादमी, उज्जैन
(लोकनाट्य माच)		

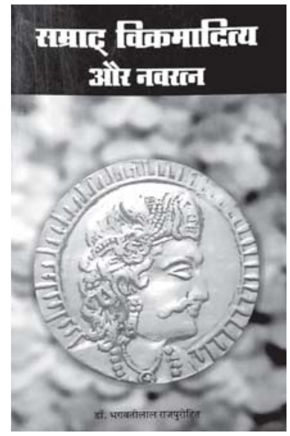

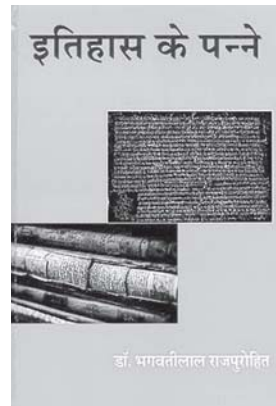

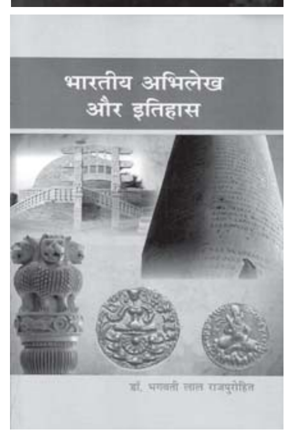

कालिदास, शकुन्तला	2019	कालिदास संस्कृति अकादमी, उज्जैन
मेघदूत भाश्य और महाकवि कालिदास	2012	शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली
विद्योतमा	2023	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
नाट्यम्-16	1986	संस्कृति परिषद् प्रकाशन, सागर
नाट्यम्-20		संस्कृति परिषद् प्रकाशन, सागर
नाट्यम्-42		संस्कृति परिषद् प्रकाशन, सागर
लोकभाषा और साहित्य	2009	शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली
मालवी लोकगीत	1996	कालिदास अकादमी, उज्जैन
गांधी लोकगीत	1987	म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद् प्रकाशन, भोपाल
चितरावन	2008	म.प्र. संस्कृति परिषद् प्रकाशन, भोपाल
मालवी संस्कृति और साहित्य	2004	म.प्र. संस्कृति परिषद् प्रकाशन, भोपाल
हलकारो बादल	1996	कालिदास अकादमी प्रकाशन, भोपाल
मालवी लोकगाथा कालिदास-विक्रम	2021	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
प्राचीन मालवी गाथाएँ	2013	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
मालवी-हिन्दी शब्दको	2010	संस्कृति संचालनालय प्रकाशन, भोपाल
सेज को सरोज	1984	कालिदास निगम प्रकाशन, उज्जैन
मालवी दोहे	2024	अदिवासी ज.जा. संग्रहालय प्रकाशन, भोपाल
हिन्दी : प्रकृति और प्रवृत्ति	2005	शब्द महिमा प्रकाशन, जयपुर
संस्कृत बाङ्.मय विमर्श	2008	बाँके बिहारी प्रकाशन, आगरा
संस्कृत भाषा और साहित्य	2004	शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली
संस्कृत नाटक और रंगमंच	2003	शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली
रंगमंच और संस्कृत नाटक	2019	शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली
भारतीय कला और संस्कृति	2003	शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली
भारतीय कला और संस्कृति	2006	शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली
भारतीय कला और संस्कृति	2019	शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली
भारती के प्राचीन राजवंश-प्रथम भाग	2000	पब्लिकेशन स्कीम प्रकाशन, जयपुर
भारती के प्राचीन राजवंश-द्वितीय भाग	2000	पब्लिकेशन स्कीम प्रकाशन, जयपुर
भारत के प्राचीन राजवंश-तृतीय भाग	2000	पब्लिकेशन स्कीम प्रकाशन, जयपुर
अभिनव ऐतिहासिक अभिलेख	2019	लिट्रेरी सर्किल प्रकाशन, जयपुर
प्राचीन भारतीय अभिलेख	2007	शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली
भारतीय अभिलेख	2002	वाकणकर शोध संस्थान प्रकाशन, उज्जैन

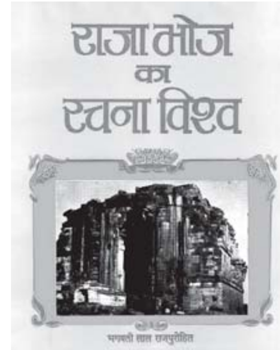

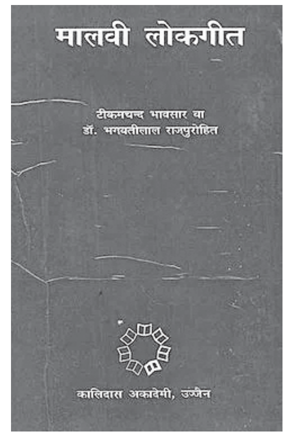

भारतीय अभिलेख और इतिहास	2003	शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली
भारतीय अभिलेख और इतिहास	2019	शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली
ओझा निबन्ध संग्रह प्रथम खण्ड	2010	शब्द महिमा प्रकाशन, जयपुर
ओझा निबन्ध संग्रह द्वितीय खण्ड	2010	शब्द महिमा प्रकाशन, जयपुर
संस्कृति संवाद	2018	लिट्रेरी सर्किल प्रकाशन, जयपुर
संस्कृत और संस्कृति	2017	लिट्रेरी सर्किल प्रकाशन, जयपुर
इतिहास के पन्ने	2023	लिट्रेरी सर्किल प्रकाशन, जयपुर
वररूचि	2006	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
अनेकार्थ ध्वनिमंजरी	2012	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
भर्तृहरि	1981	देवस्थान प्रकाशन, उज्जैन
भर्तृहरि	2020	महाराजा विक्रमादित्य प्रकाशन, उज्जैन
लस्तक :(काव्यसङ्ग्रह:)	2006	ज्ञानभारती पब्लिकेशन प्रकाशन, दिल्ली
मीरा (नाटक)	2019	एम.बी. पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीबूटर्स, जयपुर
भर्तृहरि स्मारिका	1988	मध्यप्रदेशीय संस्कृत प्रचार समिति, उज्जैन
पाणिनि	2017	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
शुद्रक	2013	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
पतंञ्जली	2013	स्वराज संस्थान प्रकाशन, भोपाल
घटकर्पर	2014	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
पत्र कौमुदी(वररूचि विरचित)	2014	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
सर्वांग	2018	म.प्र. लोककला अकादमी प्रकाशन, भोपाल
सर्वांग	2019	म.प्र. लोककला अकादमी प्रकाशन, भोपाल
उज्जयिनि और महाकाल	1992	बिड़ला शोध संस्थान प्रकाशन, उज्जैन
श्री विशाल उज्जयिनि	2016	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
श्री विशाल उज्जयिनि	2016	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
अवन्ती क्षेत्र और सिंहस्थ महापर्व	2004	क्लैसिकी शोध-संस्थान प्रकाशन, उज्जैन
अमृताभिनन्दन ग्रन्थ	2013	बड़े गणेश प्रकाशन, उज्जैन
आनन्दप्रभा	2013	बड़े गणेश प्रकाशन, उज्जैन
संस्कृत भाषा और साहित्य	2004	शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली
संत पीपा (प्रथम)	2017	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन
भर्तृहरि (प्रथम)	2023	महाराजा विक्रमादित्य शोध संस्थान, उज्जैन

(पुस्तक प्रकाशन विवरण उपलब्ध जानकारी के अनुसार)

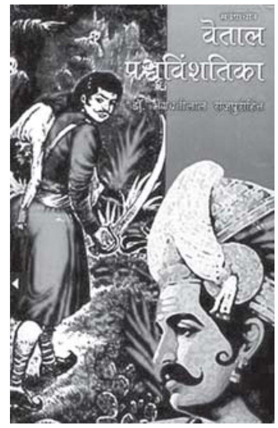

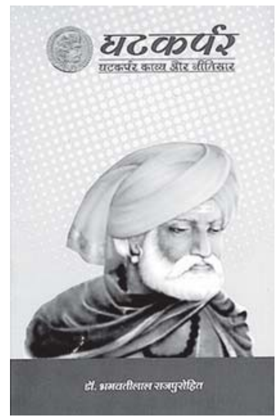

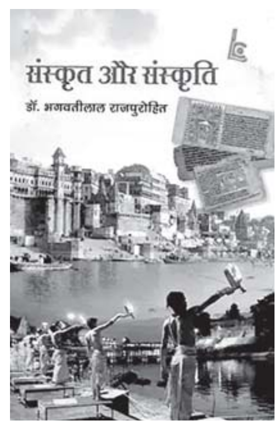

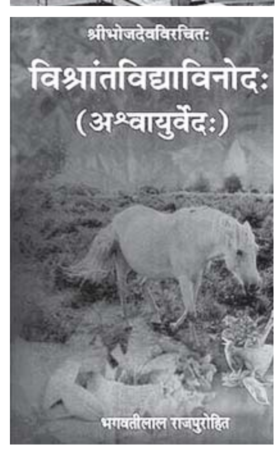

जीआईएस-2025 का प्रधानमंत्री द्वारा शुभारंभ प्रदेशवासियों के लिए गौरवशाली क्षण

डॉ. मोहन यादव

मध्यप्रदेश की राजधानी और झीलों की नगरी भोपाल में सोमवार को नया इतिहास रचा गया है। हमारे लिए यह गौरव की बात है कि 8 वीं ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-2025 के इस ऐतिहासिक समागम का शुभारंभ हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आशीर्वाद के साथ हुआ है। ये दो दिन मध्यप्रदेश की प्रगति और विकास के नये आयाम स्थापित करेंगे। इस वर्ष की थीम है अनंत संभावनाएं, जो मध्यप्रदेश में उद्योग और निवेश की असीमित संभावनाओं को दर्शाती है। इन्वेस्टर्स समिट के रूप में निवेश मनीषियों का यह समागम अनंत संभावनाओं के साथ विकास का नया इतिहास लिखने जा रहा है। हमारे लिये सौभाग्य की बात है कि राजा भोज की नगरी भोपाल अपने गौरवशाली अतीत के साथ भविष्य की स्वप्निल उड़ान के लिये तैयार है।

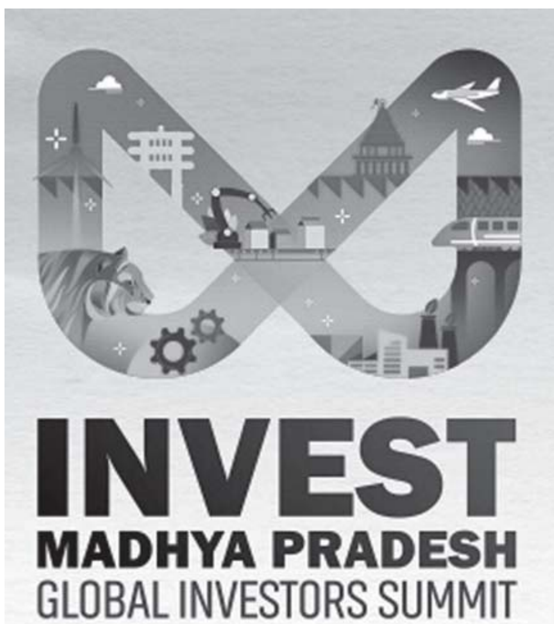

हमें अति प्रसन्नता है कि दुनिया के सबसे बड़े गणतंत्र के सबसे बड़े नायक, यशस्वी प्रधानमंत्री स्वयं इस समिट के साक्षी बने और उन्होंने मध्यप्रदेश को स्वर्णिम विकास का आशीर्वाद दिया। समिट में अनेक देशों के प्रतिनिधि, उद्योग जगत के प्रमुख उद्योगपति, निवेशक बंधु, मध्यप्रदेश के प्रवासी मित्र आदि शामिल हुए हैं। मैं इस समिट में पधारे सभी निवेशकों का अपने हृदय की गहराइयों से मध्यप्रदेश की साढ़े आठ करोड़ जनता की ओर से स्वागत करता हूँ। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत विकास की नई ऊंचाइयों की ओर चढ़ रहा है। उनके नेतृत्व में भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। आज पूरी दुनिया में भारत और भारतवासियों का सम्मान बढ़ा है। प्रधानमंत्री जी का संकल्प है कि वर्ष 2047 तक भारत आर्थिक और सामरिक रूप से विश्व में सर्वश्रेष्ठ शक्ति बने। प्रधानमंत्री जी के इस संकल्प के अनुरूप ही मध्यप्रदेश ने विकास की रूपरेखा तैयार की है। विकास का यह स्वरूप विरासत के साथ वैश्विक भी है।

मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि यशस्वी प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से हम एक वर्ष पहले निवेश और औद्योगिक विकास की यात्रा पर निकले। मध्यप्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से दूसरा सबसे बड़ा राज्य है। यह जल, वन, खनिज, पुरा और कृषि संपदा से समृद्ध है। विविधता से संपन्न प्रदेश के हर क्षेत्र की अपनी विशेषता है, क्षमता है, मेधा है और आवश्यकता है। इसी को केन्द्र में रखकर हमने पहली बार सबसे पहले रीजनल इन्वेस्टर्स समिट का नवाचार किया। इसमें प्रदेश के हर क्षेत्र का कौशल और उद्यम शामिल हुआ। हमने व्यापार में सरलता और निवेशकों के साथ सीधे संवाद को प्राथमिकता दी। मार्च 2024 में उज्जैन से शुरू हुई इस निवेश यात्रा में जबलपुर, ग्वालियर, सागर, रीवा, शहडोल, नर्मदापुरम, मुंबई, कोयंबटूर, बेंगलुरू, कोलकाता, पुणे, दिल्ली, यूके, जर्मनी और जापान आदि शामिल हैं। इन विभिन्न सम्मेलनों, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय रोड-शोज के माध्यम से मध्यप्रदेश ने 4.8 लाख करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव प्राप्त किए हैं। इन निवेश प्रस्तावों ने लगभग 2 लाख नए रोजगार के अवसर सृजित किए है, जो प्रदेश के प्रति निवेशकों के विश्वास को दर्शाता है।

हमने 'वर्ष-2025 को उद्योग एवं रोजगार वर्ष' के रूप में मनाने का निर्णय लिया और लक्ष्य निर्धारित किया। इसी दिशा में निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न कदम उठाये। निवेश को सरल, सहज और व्यवहारिक बनाने के लिए विभिन्न उद्योगों और क्षेत्रों के लिए विशेष नीतियां बनाई गई। निवेश, उद्योग, ऊर्जा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, नवाचार, अनुसंधान, बुनियादी ढांचे के विकास के लिए 19 नई नीतियां

लेकर आए हैं। इन नीतियों से ऑटोमोबाइल, टेक्सटाइल एवं गारमेट, कृषि, दवा उत्पादन, आईटी, डाटा सेंटर एवं जीसीसी, एनिमेशन एवं गेमिंग, ड्रोन एवं सेमी-कंडक्टर, खनिज, पेट्रोलियम, पर्यटन, शिक्षा तथा चिकित्सा के क्षेत्र में निवेश कर अच्छा वित्तीय लाभ प्राप्त किया जा सकता है। प्रधानमंत्री ने मध्यप्रदेश को देश का टेक्सटाइल कैपिटल और मैन्युफैक्चरिंग का फेवरिट डेस्टिनेशन कहा है। यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। साथ ही हमें टेक्सटाइल, टूरिज्म और टेक्नोलॉजी का 'ट्रिपल-टी' मंत्र दिया है, हम उस मंत्र का अनुसरण करेंगे। हम भाग्यशाली है कि माननीय प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन और आशीर्वाद से मध्यप्रदेश को लगातार महत्वपूर्ण सौगाते मिल रही हैं। इससे प्रदेश की अर्थव्यवस्था ने तेजी से विकास करते हुए अन्य प्रदेशों से चार गुना से अधिक प्रगति की है। केन्द्र और प्रदेश की डबल इंजन सरकार, डबल डिजिट की विकास दर के साथ निरंतर आगे बढ़ रही है। उद्योगों के विकास और विस्तार के लिए भूमि, जल, बिजली और कुशल कार्यबल आवश्यक है। मुझे यह बताते हुए संतोष है कि हमारे प्रदेश में सरप्लस बिजली है, पर्याप्त पानी है, विशाल लैंड बैंक है और स्किल्ड मैन पॉवर है। कुशल कार्यबल निर्मित करने के लिए हमने ग्लोबल स्किल पार्क की स्थापना की, जिसमें कौशल संवर्धन के लिए विभिन्न कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।

प्रदेश में विकास, निर्माण और उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए ईज ऑफ डूइंग व्यवस्था की गई, देश में सबसे पहले मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी लागू कर समय पर सेवाएं प्रदान करने का क्रम निर्मित किया। किसानों के लिए लाभकारी लैंड पूलिंग योजना लागू की और कृषि उपज व्यवस्था को सीधे उद्योग जगत से जोड़ा। मध्यप्रदेश की जीवन रेखा मां नर्मदा से यहां जल संपदा की प्रचुरता है। मुझे यह बताते हुए खुशी है कि प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में प्रदेश को केन-बेतवा और पार्वती-काली सिंध-चंबल रिवर लिंक परियोजना की सौगात मिली है। ऊर्जा संपन्न मध्यप्रदेश ने नवकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में कई नवाचार किए। रीवा सोलर प्लांट से दिल्ली मेट्रो को बिजली की आपूर्ति हो रही है। वर्ष 2030 तक प्रधानमंत्री जी द्वारा नवकरणीय ऊर्जा और हरित हाइड्रोजन उत्पादन का जो लक्ष्य रखा है उसमें मध्यप्रदेश महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए तैयार है। मध्यप्रदेश को देश का मुख्य इंडस्ट्रियल हब बनाने के लिए देशभर के एक्सप्रेस-वे से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। अधोसंरचना विकास के अंतर्गत मेगा फुटवेयर क्लस्टर (मुरैना), नवकरणीय ऊर्जा उपकरण निर्माण (मोहासा-बाबई) और पीएम मित्र पार्क (धार) सहित कई बड़े प्रोजेक्ट प्रगति पर हैं। विक्रम उद्योगपुरी (उज्जैन) में मेडिकल डिवाइसेज पार्क और 6 नए औद्योगिक क्षेत्रों का विकास हो रहा है। मुझे यह बताते हुए संतोष है कि आगामी वर्ष में 13 औद्योगिक पार्क पूर्ण होंगे और 20 नए औद्योगिक पार्कों का कार्य प्रारंभ किया जाएगा, जिससे प्रदेश में निवेश और रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे। हमारा प्रदेश सांस्कृतिक धरोहरों से समृद्ध है। इस समिट में दुनिया भर से पधारे औद्योगिक प्रतिनिधि और निवेशक प्रदेश के पर्यटन और सांस्कृतिक वैभव से परिचित होंगे। हमने विरासत से विकास का संकल्प लिया है। भारत का वैभवशाली और समृद्ध इतिहास है। अपनी वैभवशाली विरासत के साथ इस ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, स्पेस टेक्नोलॉजी, डिफेंस टेक्नोलॉजी तथा अन्य प्रतिस्पर्धी क्षेत्रों में निवेश को केंद्रित किया गया है। प्रधानमंत्री जी का संकल्प है आजादी के 100वें वर्ष यानी वर्ष 2047 तक भारत को 35 ट्रिलियन डॉलर की पूर्ण विकसित अर्थव्यवस्था बनाना और विश्व की सर्वोच्च शक्ति के रूप में स्थापित करना है। विकसित भारत निर्माण के इस संकल्प में आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता और सुशासन सहित विकास के विभिन्न पहलू शामिल हैं। प्रधानमंत्री जी के इस संकल्प की पूर्ति में मध्यप्रदेश सहभागी बनने के लिये प्रतिबद्ध है। यह समिट प्रधानमंत्री जी के सकंल्प, प्रदेश के विकास और जनता के विश्वास को पूरा करेगी। इस समिट में क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय उद्योग जगत शामिल हो रहा है। यह पहला अवसर है, जब ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में गांव से लेकर ग्लोबल का समागम हो रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह समिट मध्यप्रदेश की आधारभूत प्रगति और समृद्धि की नई इबारत लिखेगी। विकसित मध्यप्रदेश निर्माण के साथ विकसित भारत निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

(लेखक, मध्यप्रदेश के मा. मुख्यमंत्री हैं)

■

भारत की सांस्कृतिक एकता के उद्घोषक आचार्य शंकर

कैलाशचन्द्र पन्त

भारत भूमि पर जन्म लेने को देवता लालायित रहते हैं। यह लोकोक्ति सामान्य नहीं है। इसमें गहरे अर्थ अंतर्निहित हैं। इसे देवभूमि भी कहा जाता है और अनेक विदेशी विद्वान तथा वैज्ञानिक भी भारत के प्राचीन ग्रंथों में व्याप्त ज्ञान देखकर चमत्कृत होते रहे हैं। आखिर ऐसा क्या है इस भूमि में इसके लिए भारतीय शास्त्रों का गहन अध्ययन करने की आवश्यकता पड़ती है। वेदों के बाद वेदान्तों, उपनिषदों, रामायण और महाभारत का अध्ययन करना होता है। इन सबका अध्ययन करने के बाद सभी एक निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि ऋषियों की सनातन चिन्तन परम्परा में व्यक्ति समष्टि, सृष्टि से लेकर परमेष्टि तक का सूक्ष्म विवेचन किया गया है और अन्तर्विरोधों में सामंजस्य पैदा कर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसी उदात्त अवधारणा को प्रस्तुत किया गया है। इसका सर्वोत्तम प्रमाण गीता में मिलता है, जिसमें ज्ञान, कर्म और भक्ति का अद्भुत समन्वय कर सभी सन्देहों का निराकरण है।

लेकिन भारत को वैदिक ज्ञानधारा से हटाने वाले प्रयास भी निरन्तर होते रहे। इतिहास साक्षी है कि वैचारिक भ्रमजाल तो फैलाया ही गया, हिंसक आक्रमण भी किए गए। लोगों को भ्रामक और पाखण्डी आचरण का शिकार होना पड़ा। वेदों के प्रति भारतवासियों की श्रद्धा समाप्त करने के प्रयास भी हुए। यह सब बाहरी लोगों ने ही नहीं, समाज के भीतर व्याप्त तमस शक्तियों ने भी किया। ऐसे धनीभूत अंधकार को चीरने वाले और सत्य का उजाला फैलाने वाले सन्त पुरुषों का अवतरण भी ऐसे काल में होता रहा और 'सत्यमेव जयते' का उद्घोष ज्यादा निखर कर सामने आया। ऐसा ही समय था वह जब आचार्य शंकर का अविर्भाव हुआ। भारतीय ज्ञान और वैदिक धर्म पर जब विरोधी शक्तियों का, पाखण्डियों तथा कापालिकों का दबदबा बढ़ रहा था तभी आचार्य शंकर का अवतरण हुआ। कल्पना कीजिए एक नौ वर्ष का बालक नदी में डूबने लगता है, माँ निस्सहाय सी उसे बचा लेने की गुहार लगा रही है, तभी वह कहता है मुझे संन्यास लेने की आज्ञा दे दो तो मैं बच जाऊँगा। बेबस माँ अपने पुत्र के जीवन रक्षा के लिए स्वीकृति दे देती है और वह बालक सुरक्षित किनारे आ लगता है। उस बालक का जीवन भी कितना अल्प रहा–मात्र बत्तीस वर्ष। इस अवधि में वह पूरे देश का भ्रमण करता है। संन्यासी शंकर ओंकारेश्वर में गोविन्द पादाचार्य से दीक्षा लेकर अद्वैत दर्शन की व्याख्या करता हुआ वेद विरोधी शक्तियों को शास्त्रार्थ की चुनौती देता, उन्हें पराजित करता हुआ जगद्गुरु की उपाधि से विभूषित होता है। भारत की चार दिशाओं में चार मठ स्थापित कर सांस्कृतिक एकता की उद्घोषणा करता है। ढाई हजार वर्ष पूर्व स्थापित ये मठ चार धामों से सम्बद्ध हैं। सुदूर उत्तर में हिमालय की उच्च श्रृंखलाओं के बीच बद्रीनाथधाम, उसके निकट जोशी मठ में स्थापित ज्योतिष्पीठ, पूर्व में जगन्नाथधाम में स्थापित गोवर्धन पीठ, दक्षिण में रामेश्वरम धाम के निकट स्थापित श्रृंगेरी पीठ तथा पश्चिम में द्वारका शारदा पीठ की यात्रा प्रत्येक हिन्दू परिवार की जीवन कामना रहती है। सांस्कृतिक एकता का ऐसा दिग्दर्शन भारत में ही संभव हुआ। इन धामों की पवित्रता वहाँ पर चलने वाली निरन्तर साधना से संरक्षित है। आचार्य शंकर की इस देन को हम कृतज्ञता पूर्वक स्मरण करते हैं।

आचार्य शंकर तो इस आलेख के केन्द्र में हैं। लेकिन इतिहास उठाकर देखें तो पता चलता है कि भारत भूमि पर जब भी धर्म को चुनौती

मिली है तब अवश्य ही किसी महापुरूष का जन्म भी हुआ है। यदि ऐसा न होता तो गीता में भगवान श्रीकृष्ण का यह आश्वासन गलत सिद्ध हो जाता कि जब भी धर्म की गलानि हुई है तो मैं धर्म के अभ्युत्थान के लिए अवतरित होता हूँ। यह अटल आश्वासन इस पुण्य भूमि को स्वयं भगवान ने दिया है। इसीलिए हर काल में अनेक महापुरूषों ने जन्म लिया और धर्मच्युत होते समाज को पुन: पटरी पर ले आए। इस तथ्य से दो बातें सिद्ध होती हैं।

यह भूमि धर्म की रक्षार्थ ही अस्तित्व में है और जब तक इसका अस्तित्व रहेगा यह धर्म का वास्तविक स्वरूप पूरे विश्व को देता रहेगा। भारत में धर्म विरोधी शक्तियाँ कभी टिक नहीं सकतीं। यह देश धार्मिक था, है और रहेगा। आचार्य शंकर इसके प्रतीक है।

आचार्य शंकर के संबंध में एक स्तुति करते हुए श्लोक का अर्थ है-'प्रगाढ़ अज्ञान के कारण आत्म भाव से पतित हुए लोगों को संसार दावाग्नि में झुलसते देख, उनके स्वार्थ द्रवित होकर भगवान लोकगुरु श्री शंभु का शास्त्र प्रसिद्ध श्री दक्षिणा मूर्ति स्वरूप अपनी स्वयंसिद्ध मौन मुद्रा एवं वह मूल निवास का त्याग कर नीचे उतरे। भारत में अवतरित हुए और श्री शंकराचार्य के रूप में आत्म विद्या का उपदेश देते हुए विचरण करते हैं। इस स्रोत के अनुसार ही आचार्य शंकर को भगवान शंकर का अवतार माना जाता है।

लेकिन इसी स्रोत में आत्म विद्या का उल्लेख भी आया है जो आदि गुरु का इस देश को दिया गया अमर सन्देश है। हमारी परम्परा में आत्म तत्त्व का महत्वपूर्ण स्थान है। इस तत्व की खोज ही मनुष्य को परमात्म तत्व तक पहुँचने का मार्ग दिखाती है। अद्वैत दर्शन को वेदान्त दर्शन अर्थात ब्रह्मविद्या कहा जाता है। यही भारत की विश्व को सबसे बड़ी वैचारिक देन है।

प्रारंभ से ही भारतीय चिन्तन धारा सृष्टि के सूत्रधार और उसके सृजन पर चिन्तन और मनन करती रही है। महाप्रलय के समाप्त होने पर ब्रह्म ने हिरण्य गर्भसे ब्रह्मा को उत्पन्न किया और उसे वेद-ज्ञान दिया। इस ज्ञान को लेकर ब्रह्मा सृष्टि करता है और मानसिक सृष्टि के अन्तर्गत उत्पन्न हुए ऋषियों के तप:पूत अन्त:करण में वेद मंत्र उद्भासित हुए। इन ऋषियों ने ही मानव संस्कृति की स्थापना की। इसकर पुष्टि गीता के दसवें अध्याय में भगवान स्वयं करते हुए कहते हैं-' सप्त ऋषि पहले प्रकट होने वाले सनक आदि चार कुमार, स्वायंभुव आदि चौदह मनु - ये सब मुझमें भाव वाले मेरे संकल्प से उत्पन्न हुए हैं जिनकी संसार में सम्पूर्ण प्रजा है।'

यही भाव एकोऽहं ब्रह्मस्याम जैसे महावाक्य में भी है।

जब एक वही है तो द्वितीय कोई अन्य नहीं हो सकता। आत्मा परमात्मा से विलग नहीं है-विलगाव देह-भाव से उत्पन्न होता है। इस भ्रम को दूर कर दिया जाय तो वही है, वही है। यह अनुभूति ही ब्रह्मभाव है। यही अद्वैत है। आत्म ज्ञान होते ही मनुष्य अपने कर्तव्य का निर्धारण करने में समर्थ हो जाता है तब उसे स्व का भान नहीं रहता। भव अथवा ब्रह्म ही सत्य मानकर चलता है।

आचार्य शंकर द्वारा प्रतिपादित अद्वैत दर्शन से भारतीय संस्कृति के उज्जवल पक्ष को सामने रखा। इसका अनुगमन कर ही हम व्यष्टि से परमेष्टि की यात्रा को संभव कर सकते हैं। अन्ततः मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं।

लेखक : वरिष्ठ साहित्यकार है। हिन्दी भवन, श्यामला हिल्स, भोपाल
संपर्क : ए-3, सागर कैम्पस, चूना भट्टी कोलार रोड, भोपाल
मोबा. 9826046792

कला समय प्रकाशन

लेखक
दीपक पंडित

मूल्य:
रु. 250

कला समय प्रकाशन की
नई प्रकाशित कृतियाँ

0755-2562294, 9425678058

kalasamayprakashan@gmail.com

कार्यालय: जे-191, मंगल भवन, ई-6
महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462016 (म.प्र.)

लेखक
सुन्दरलाल प्रजापति

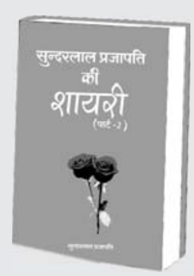

मूल्य:
रु. 100

स्वावलंबन व स्वाभिमान के प्रतीक नानाजी

डॉ. मोहन यादव

आज हम राष्ट्रऋषि श्री नानाजी देशमुख की 15वीं पुण्यतिथि पर उनका स्मरण कर रहे हैं। एकात्म मानवदर्शन के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के सखा और सहचर नानाजी ने इस भारतीय दर्शन को धरातल पर उकेरने का बीड़ा उठाया था। लगभग 6 दशकों में उनके द्वारा स्थापित दीनदयाल शोध संस्थान ने ग्रामीण विकास के अनुकरणीय मॉडल तैयार किए हैं। इस विशुद्ध देशज मॉडल के लिए मोदी सरकार ने 2019 में नानाजी को भारत रत्न से सम्मानित किया। मध्यप्रदेश का सौभाग्य है कि गोंडा और बीड के बाद भगवान राम की तपोभूमि चित्रकूट को नानाजी ने अपनी कर्मभूमि बनाया। उन्होंने संपूर्ण समाज जीवन को समग्र दृष्टि से देखा। पंडित जी ने एकात्म मानवदर्शन में यही कल्पना की थी। हम आज अपने महान भारत को यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में परम वैभव के पथ पर तेजी से अग्रसर होते देख रहे हैं।

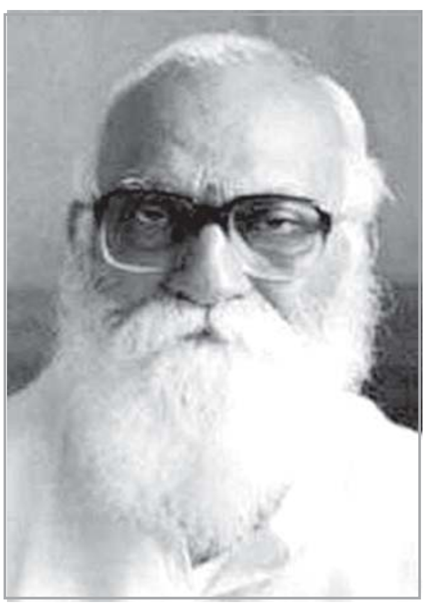

डीआरआई के संस्थापक नानाजी देशमुख ने 1990 के दशक में संस्थान का जो चित्रकूट मॉडल देश के सामने रखा था, उसका नामकरण ही स्वावलंबी ग्रामीण व्यवस्था से किया था। उन्होंने कहा कि स्वावलंबी समाज ही स्वाभिमानी हो सकता है। नानाजी कहते थे कि हमें गांधी जी व पंडित दीनदयाल उपाध्याय का अनुसरण करते हुए एक देशानुकूल व युगानुकूल व्यवस्था का निर्माण करना है और इन व्यवस्थाओं का केंद्र बिंदु होंगे हमारे देश के गांव। देश का ग्रामीण अंचल ही पूरे देश के विकास चक्र की धुरी होगा।

डीआरआई ने समग्र विकास का जो मॉडल खड़ा किया है, उसमें सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था के सभी आयामों व पहलुओं को साथ में लिया है। कृषि, कृषि-आधारित उद्योग, कौशल विकास, शिक्षा, चिकित्सा, आदि सभी पहलुओं पर काम कर रहे हैं संस्थान के सैकड़ों कार्यकर्ता। सचमुच, यह मॉडल देश के अन्य भागों में भी अनुकरणीय है। स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार उनका क्रम व प्राथमिकताएं अलग हो सकती हैं, लेकिन मूल अवधारणा वही रहेगी। हां, स्थानीय कौशल व प्राकृतिक स्थानीय संसाधनों के समुचित मेल के साथ-साथ स्थानीय बाजार भी तलाशने होंगे। देशभर के ग्रामीण अंचलों में स्थानीय कौशल, स्थानीय संसाधन, स्थानीय उत्पाद और स्थानीय बाजार के माध्यम से आत्मनिर्भर कैसे बना जा सकता है, इसे नानाजी ने अपने प्रयोगों का आधार बनाया।

हम सबका सौभाग्य कि हमें देश में आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नेतृत्व मिला है। समग्र विकास का जो प्रतिमान उन्होंने खड़ा किया है, वह पूरी दुनिया के लिए अजूबा बन गया है। जनकल्याण की अनेक नीतियों व कार्यक्रमों के अलावा प्रधानमंत्री मोदी ने अंतरिक्ष, आईटी, सेमीकंडक्टर, एआई, कृषि, उद्योग, शिक्षा, रक्षा, आंतरिक सुरक्षा जैसे विषयों पर जो दृष्टि और दृढ़ता दिखाई है, उससे दुनिया भर के देशों में भारत का दबदबा बढ़ा है। टैरिफ जैसे मुद्दों पर मोदी सरकार के स्टैंड ने अमेरिकी राष्ट्रपति के स्वरों में भी परिवर्तन ला दिया है।

राष्ट्रहित में सामाजिक क्षेत्र में भी मोदी सरकार के निर्णयों पर अपने देशज ज्ञान और उदात्त परंपराओं की गहरी छाप है। सामाजिक समरसता, जनजातियों का उत्थान, जनधन जैसी सर्वसमावेशी योजनाओं के माध्यम से वित्तीय अनुशासन आदि, ढेरों अनोखे कार्यक्रम प्रधानमंत्री मोदी की दूरदृष्टि का परिचय कराते हैं। हम सब जानते हैं कि प्रधानमंत्री अपने भाषणों में नानाजी की प्रेरणा का बार-बार उल्लेख करते रहे हैं।

मध्यप्रदेश में भाजपा की डबल इंजन सरकार भी पंडित जी और नानाजी के फूके हुए मंत्रों पर देशानुकूल व युगानुकूल काम करने का प्रयास कर रहे है। अपने राष्ट्र मंदिर में प्रगति के नये सोपान चढ़ने के लिए सर्व प्रथम लोकमन को संस्कारित करने का प्रयास कर रहे हैं। महाराज विक्रमादित्य एवं देवी अहिल्याबाई जनित देश में सुशासन के दो विश्वविख्यात मॉडल मध्यप्रदेश से ही अवतरित हुए। भारत के संविधान निर्माता बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर भी इसी प्रदेश के सपूत थे। आज हमें अपने स्वनामधन्य प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भी भरपूर स्नेह मिल रहा है।

हमने वैदिक काल को तो स्मरण किया है, लेकिन उसे युगानुकूल संदर्भों में रखने के लिए ग्लोबल इन्वेस्टर समिट जैसे आयोजन भी किए। वोकल फॉर लोकल होने के लिए क्षेत्रीय आधार पर भी निवेशकों को आमंत्रण दिया, लेकिन आत्मनिर्भरता हमारा मूल मंत्र रहेगा, इस दृष्टि से मध्यप्रदेश शासन ने अपने प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों का समुचित व न्यायोचित उपयोग करने के लिए विभिन्न योजनाएं व कार्यक्रम चलाए हैं।

कृषि के क्षेत्र में परंपरागत कृषि विकास योजना, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन, मुख्यमंत्री कृषक समृद्धि योजना, फसल विविधिकरण हेतु प्रोत्साहन योजना, अन्नपूर्णा योजना एवं सूरजधारा योजना, मृदा परीक्षण और मृदा स्वास्थ्य पत्रक योजना, आत्मा योजना, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से कृषि विस्तार योजना, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना आदि प्रदेश के किसानों को आर्थिक संबल प्रदान कर आत्मनिर्भर बना रही है।

राज्य शासन ने प्रदेश को विकसित एवं समृद्ध बनाने के लिए अभी हाल में ही औद्योगिक संवर्धन नीति-2025 की स्वीकृति दी है। इसके अंतर्गत 10 सेक्टर विशिष्ट नीतियों यथा कृषि, डेयरी एवं खाद्य प्रसंस्करण नीति, टेक्सटाइल नीति, परिधान, फुटवियर, खिलौने और सहायक उपकरण नीति, एयरोस्पेस और रक्षा उत्पादन प्रोत्साहन नीति, फार्मास्यूटिकल्स नीति, बायोटेक्नोलॉजी नीति, मेडिकल डिवाईसेस नीति, ईवी विनिर्माण नीति, नवकरणीय ऊर्जा उपकरण विनिर्माण नीति और हाई वेल्यू-एड विनिर्माता नीति को स्वीकृति दी गई है।

प्रदेश के युवाओं को विविध क्षेत्रों में दक्ष एवं कुशल बनाने के लिए प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना एवं व्यवसायिक कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु मुख्यमंत्री युवा स्वाभिमान योजना का संचालन सफलतापूर्वक किया जा रहा है। नगरीय स्वच्छता को हमने सदैव प्राथमिकता सूची में ऊपर रखा है। देश का सबसे स्वच्छ शहर इंदौर 'स्वच्छ भारत मिशन' के ईमानदार क्रियान्वयन का अनुकरणीय उदहारण है।

आधुनिक तकनीक का हम अधिकाधिक इस्तेमाल कैसे कर सके, इसके लिए हमारी सरकार अपने देश की प्रतिभा को आमंत्रित करने के लिए एक अनुकूल वातावरण बना रहे हैं। उनके लिए बुनियादी सुविधाएं जुटा रहे हैं। मसाला फसलों समेत विभिन्न उद्यानिकी फसलों के साथ दलहन उत्पादन में क्षेत्र में हम देश के सबसे बड़े राज्य हैं। दूध उत्पादन में देश के तीसरे बड़े राज्य है। 17.50 लाख हेक्टेयर क्षेत्र से अधिक में प्राकृतिक खेती के साथ इसका सर्वाधिक रकबा मध्यप्रदेश में है।

रोड नेटवर्क में पूरे देश को जोड़ने का जो गौरव मध्यप्रदेश को मिला है, उसके लिए हम सड़कों के सुधार के लिए सदैव कृतसंकल्प हैं। बिजली के उत्पादन में मध्यप्रदेश सिर्फ आत्मनिर्भर ही नहीं, बल्कि दूसरे प्रदेशों को भी सरप्लस बिजली सप्लाई कर रहा है, लेकिन इसका श्रेय अकेले शासन व्यवस्था को ही हमारे पूरे समाज को जाता है, जो चतुष्पुरुषाथार्थ की अवधारणा पर काम कर रहा है। हम सब मिलकर समाज जीवन के हर क्षेत्र में उत्कृष्ट रूप से काम करते रहे, नाना जी को यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

लेखक : मध्यप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री हैं।

कला समय प्रकाशन

लेखक
सत्य नारायण शर्मा

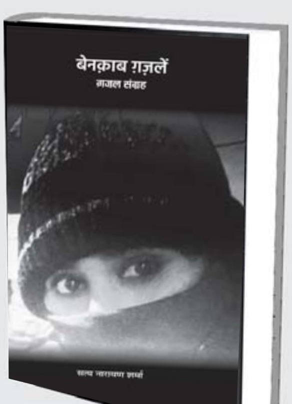

मूल्य:
रु. 350

कला समय प्रकाशन की नई प्रकाशित कृति

0755-2562294, 9425678058

kalasamayprakashan@gmail.com

कार्यालय: जे-191, मंगल भवन, ई-6
महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462016 (म.प्र.)

समय की धरोहर ....

लोक के महान अध्येता डॉ. भानावत
(निधन : 25 फरवरी, 2025)

डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

अध्ययन के लिए लोक एक गहन क्षेत्र है और उसका अध्ययन निरंतर रहता है। लोक का अपना संसार है और उसको समग्रता से किसी एक जन्म में जानना आकाश फल की तरह संभव नहीं लेकिन हमारी लगातार अध्ययन का संकल्प लोक को आलोकित कर सकता है। ऐसी संकल्प रची बातें करने वाले और लोक के अध्ययन के लिए अपना संपूर्ण जीवन देने वाले डॉ. श्री महेंद्र भानावत जी नहीं रहे, यह सुनकर ही विश्वास नहीं होता क्योंकि वे अपनी धारणाओं और शब्दों से हमारे मन में रचे बसे हैं।

उदयपुर जिले के कानोड़ गांव में एक सम्मानित जैन परिवार में उनका जन्म हुआ और गांव सहित छोटीसादड़ी और बीकानेर में उच्च शिक्षा प्राप्त भानावत जी देश के जनजाति साहित्य के पहले पीएचडी हैं जिन्होंने गवरी जैसे नाटिकाओं की शृंखला के साथ राजस्थान की अन्य लोक नाट्य परम्पराओं का तुलनात्मक अध्ययन किया और लिखा कि संसार में गवरी के जैसी संपूर्ण नृत्य, गायन जैसा वादन की अन्य कोई वाचिक और दृश्य विरासत नहीं। अरावली की पहाड़ियों और भील जैसी सबसे पुरानी सम्मानित जनजाति ने उसमें मानव के आखेटचारी युग से लेकर देवसत्ता, राजसत्ता और लोकसत्ता की सदैव यथारूप और यथाचरित्र सुरक्षा की है। गवरी जनजातीय व्रत और अनुष्ठान का प्राचीनतम रूप है।

कई बार वे मुझे गवरी के मूल केंद्र उनवास (खमनोर) लेकर गए। वहीं पीपल वाली देवी पीपलाज माता का धाम है। हल्दीघाटी की ख्याति इतिहास में रणांगन के रूप में है तो मेवाड़ी भारत गाथाओं में देवियों के लीला क्षेत्र के रूप में। आज जहां बाग कहा जाता है, वह बहुत पहले मानसरोवर के नाम से पहचान में था और वहीं जल भरने आई देवियों को भियावड (महिषासुर) ने ब्याह का प्रस्ताव रखा। गवरी के झामटा और वारता में भी यह विवरण है और पदयात्रा करें तो बलीचा, हल्दीघाटी से उनवास तक कई देवियों के स्थान है : खेमज, चामुंडा, सीतला, बड़ली, अंबा, गौरख्या, कालिका आदि से पीपलाज तक। पास ही भोल्या भूत भी ! यह शास्त्रीय मान्यताओं में देवियों के साथ वीरभद्र की मान्यता का आधार लगता है।

उनवास को 11वीं सदी के एक शिलालेख में अनरवास कहा गया है। बलीचा के 13 वीं सदी के लेख में आई देवी स्तुति बताती है कि यह क्षेत्र नौ दुर्गा का पीठ रहा। भारत गाथा इस क्षेत्र की महिमा लिए है। पीपल यदि भारतीय मूल का वृक्ष है तो उसकी प्रतिष्ठापक देवी पीपलाज यहां विराजित है। भक्तों को वरदान और अभयदान देने वाली। बहुत पुराना मंदिर है जिसकी परिक्रमा में भित्तियां अनेक देवी रूप लिए हैं। यह मंदिर मेवाड़ - गुजरात संबंधों के अध्ययन के महत्व रखता है। इसको 'देवल उनवा' भी कहा जाता है।

अरावली में बसी प्राचीन भील जनजाति की आस्था का सबसे बड़ा केंद्र बरगद का वृक्ष यहीं है। वट और पीपल के जोड़े की तरह यहां बृहद बरगद की छांव और पीपलदेवी का देवल। मेवाड़ की प्रसिद्ध 'बडलियां हिंदवा' की लोकगाथा यहीं से जुड़ी है। यही गाथा नाट्य रूप में गवरी में सबसे पहली रमी जाती है। यह लोक और शास्त्र का सुंदर तीर्थ है। आदिम और अभिजनों के विश्वास का अनूठा निरूपण। वृक्षावास और देवालय वास ! विक्रम संवत् 1016 तदनुसार 959 ईस्वी के इस अभिलेख का 1990 में जब मैंने हिंदी अनुवाद किया था तो उसमें नाट्यशास्त्र के पारिभाषिक शब्द मिले और देवी की सुंदर स्तुति भी। (राजस्थान के प्राचीन अभिलेख)

क्या है बडलियां हिंदवा ? यह गाया जाता है कि देवियां पाताल लोक से बरगद को जैसा लाई, वैसा ही यहां रोपा और थाला बनाकर घी तथा दूध से सींचा। यह आग्रह राजा जैसल का था। यह जैसल था पाटन का अधिपति सिद्धराज जयसिंह। उसकी प्रतिज्ञा थी कि वह देववट की रक्षा करेगा। सिर काट जाए लेकिन बरगद नहीं कटेगा ! पाटन के प्रताप से पेड़ फला तो आबू का भानिया जोगी सवा लाख चेलों की सेना लेकर चढ़ बैठा। महारानी मेंणला के आगे देवी स्वयं परीक्षा लेने पहुंची। वरजू कंजरी बनकर ! सब चकित, शक्तियां कभी जाति, वर्ग, वर्ण नहीं विचारती, सर्वहारा और सर्वसहारा किसी भी कुल में जन्म ले सकती है। इधर, बरगद ऐसा फैला कि चारों ओर के बारह कोस कम पड़ गए। उसकी मूलों को

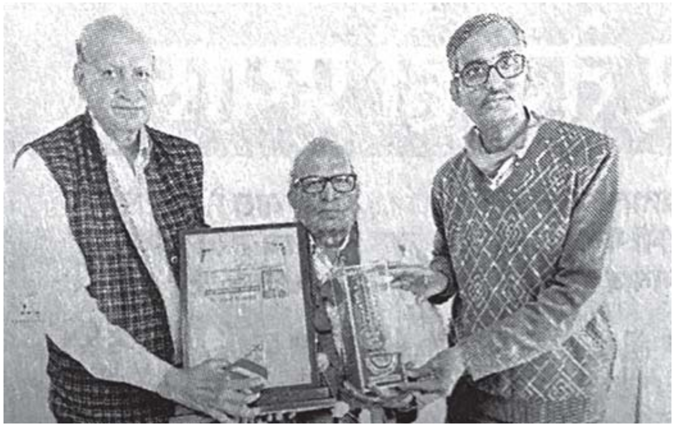

डॉ. महेन्द्र भानावत को कला समय संस्था का लोकशिखर सम्मान से सम्मानित करते हुए डॉ. श्री कृष्ण जुगनू तथा डॉ. देव कोठारी।

गूंथ कर देवियों ने झूला डाला और हिंडना शुरू किया। नौ लाख देवियां दिन रात झूलने लगीं। पेंग लगाती तो एक आजू गुजरात और दूजी बाजू जांगल मारवाड़ दिखाई देता। देवियों ने दिन रात एक कर वृक्षों का पोषण किया और अपनी संतानों को पेड़ पालना सिखाया! शिलालेख की माने तो उनवास में भरत जैसा महाकवि हुआ उसने ऐसी गाथा को लिखा। पीपलाज मुनि तपे। उसी समय यहां मंदिर बना। आसपास पांच मंदिर बने।

कहना न होगा कि यह जनजातीय गवरी, राजस्थान की अन्य समस्त नृत्य विधाओं पर अपनी तरह का पहला शोध कार्य था। भानावत जी ने लोकगीतों, कहावतों, लोक देवी - देवताओं और भारत जैसी लोकगाथाओं पर खूब लिखा। कोई शताधिक पुस्तकें उनकी देश की सबसे बड़ी निधि हैं जिन पर सैकड़ों विद्यार्थियों ने शोध प्रबंध लिखे हैं। देश के अनेक राज्यों की उन्होंने यात्राएं की। वह कहते थे कि भारत में लोकनाट्यों के जितने रूप प्रचलित हैं, उतने शायद ही अन्यत्र हो। हर राज्य में लोकनाटकों के अपने रूप और रंग है। उनकी अपनी अनुष्ठानिकता है, अपने-अपने ख्यालिये और प्रस्तोता हैं। राजस्थान में तो नाट्यशास्त्र में वर्णित लगभग सारे ही नाट्य रूप आ जाते हैं।

इनकी प्रस्तुतियों के मूल में लोकरंजन ही नहीं, निखिल पर्यावरण- परिवेश की खुशहाली का भाव भी जुड़ा हुआ है। ये भाव संस्कृत के उन नांदी वचनों की फलश्रुति लिए हैं जिनमें सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय का भाव निहित होता है। यह रोचक पक्ष है कि उनके शोध प्रबंध के परीक्षक, जाने माने आलोचक डॉ. नगेंद्र ने कहा था कि गवरी जैसा विषय तो एक निबंध का भी नहीं है, मगर इस पर शोध प्रबंध हो सकता है, ये आश्चर्य ही है...।

पिछले कुछ समय से वह अस्वस्थ थे। आना जाना कम ही होता तब राजस्थान साहित्य अकादमी ने एक सराहनीय कदम उठाया और उनके यहां पहुंचकर अभिनंदन किया था। भानावत साहब एक पूर्णकालिक लेखक और पत्रकार रहे। ऐसा कोई दिन नहीं, जब वे लिखते नहीं थे। सोचते भी लेखन में और सोते भी लेखन में! शब्द के साधक, स्मृतियों के आराधक, लोक के प्रतिष्ठापक, अतीत के अपने तरीके के शोधक और संशोधक!

लोक साहित्य के लिए उन्होंने अपना जीवन दे दिया। मेरी दृष्टि में वे लोकसाहित्य के सिद्ध हैं। साबर मंत्र का जाप जिस तरह कौतुक करता है, वैसे ही उनका सृजन इक्के दुक्के नहीं, हजारों अध्येताओं के शोध अध्ययन में सहायक बना है। उन्होंने बीज के रूप में लिखा, जो हमें वट वृक्ष के समान लगता है। उनकी पोथियां सदैव शोध प्रबंधों के रूप में फलवान हुई हैं। देशभर के विश्व विद्यालय इसके साक्षी हैं। मैं उनके आशीष का प्रत्यक्षदर्शी हूँ।

एक बात याद आ रही है। वर्ष 2016 लगा ही था। नववर्ष में किसे क्या दूं, बधाइयां ही बधाइयां। मगर, मेरे गवेषणा-कार्य के प्रेरक, लोकांचल में साक्षात्कार की विधा के मार्गदर्शक और लेखन को सर्वदिशोन्मुख करने और कहने वाले श्रद्धास्पद, लोकवार्ता मनीषी डॉ. भानावत को मैं क्या देता ? मेरा शोध प्रबंध नववर्ष पर प्रकाशित रूप में मेरे हाथ में था, यही डॉ. भानावत साहब को सौंपा। वर्ष 1993 में लिखा मेवाड़ प्रदेश का हीड़ साहित्य शीर्षक शोध प्रबंध 'राजस्थान की हीड़ गायकी और देवनारायण-बगड़ावत' नाम से पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ है। यह राजस्थान, मध्यप्रदेश, ब्रज, गुजरात आदि में हीड़, हीड़ो, हूड़ो नाम से गेय उन गाथाओं का अध्ययन है जिनका न कोई पाठ था न ही कोई आधार। हीड़ों के संकलन और संपादन के साथ ही उन पर अध्ययन है। सोचियेगा कि जिस विषय पर प्राथमिक स्तर पर ही कोई जानकारी नहीं थी, उसकी परिकल्पना तैयार कर आठ अध्यायों में शोध प्रबंध का प्रणयन करना था। श्रद्धेय डॉ. महेंद्रजी भानावत के मार्गदर्शन में 1991 में जब आधार-पत्र तैयार कर राजस्थान विश्व विद्यालय, जयपुर को प्रस्तुत किया गया तो मेरे शोध निदेशक, तत्कालीन हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. नरेंद्रजी भानावत (महेंद्रजी के अग्रज) ने कहा था कि हीड़ें कहां है? अगर न मिली तो पीएचडी का क्या होगा? मगर, जो विचारा था, वह होकर ही रहा।

भाई-भाभी, पत्नी व बच्चों के साथ दिवाली के दिनों में मेवाड़ आदि प्रदेशों के गांव-गांव घूमकर हीडें रिकॉर्ड की, ध्वन्यांकित सामग्री लिपिबद्ध की और उनका संपादन, कठिन शब्दों का अर्थ और उनमें निहित सामग्री के आधार पर सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन किया और मूलपाठ सहित इसको उपाधि के लिए प्रस्तुत किया तो न केवल मेरे लिए बल्कि राजस्थानी के मूर्धन्य विद्वानों श्री कोमलजी कोठारी, डॉ. ओमानंदजी सरस्वती, विजयदानजी देथा, श्री नानूराम संस्कर्ता, लक्ष्मीकुमारीजी चुंडावत, कन्हैयालालजी शर्मा, आलमशाह खान, जयचंदजी शर्मा (कई नाम हैं)... सबके? लिए कौतुक था। क्योंकि, तब इस विषय पर मेरे कई लेख प्रकाशित हुए थे। उपाधि मिलने तक इस संबंध में मैंने सैकड़ों खतों के जवाब दिए थे और अधिकांश पत्र विद्वानों

के थे, कई तो मुझसे मूलपाठ ही चाहते थे। जवाब में बधाई के साथ लिखा मिलता कि बहुत मौलिक कार्य है, इस विषय पर आपका अधिकार है... यही बात उपाधि देने चंडीगढ़ से आए डॉ. धर्मपालजी मैनी ने भी कही। हालांकि तब तक गुरुदेव डॉ. नरेंद्रजी इस दुनिया को अलविदा कह गए थे और एक महीने के लिए मेरे निदेशक बने थे डॉ. रामप्रकाशजी कुलश्रेष्ठ...। इस प्रकाशित ग्रंथ को भेंट करते समय अतीत की ऐसी ही बातें डॉ. महेंद्रजी और मेरे बीच ताजा हो गई। इस ग्रंथ के अनेक पक्षों पर भी चर्चा हुई और खासकर राजस्थान की हीड़ जैसी विधा के पाठ को पहली बार सुरक्षित करने के सबंध में। आठ अध्यायों में यह ग्रंथ करीब 400 पन्नों का सचित्र प्रकाशित हुआ है। आर्यावर्त संस्कृति संस्थान (डी. 48, गली नं. 3, दयालपुर, करावलनगर रोड, दिल्ली 110094) के संचालक भाई श्री गोविंदलाल सिंह (मोबा. 09868584456) का धन्यवाद कि नए साल की बधाई के रूप में मुझे मेरा शोधप्रबंध ही सौंप दिया और मैंने इसे त्वदीय वस्तुं समर्पयामि कहते हुए डॉ. महेंद्रजी को सुपुर्द कर दिया। उनका गर्व झलक रहा था और मेरी आंखों में पानी।

उनके प्रति कवि हिम्मत सिंह उज्ज्वल ने लिखा : श्रद्धा रा सबद

साहित्य अर इतिहास रो
फैल गयो आलोक ।
भानावत सा भाण जद
पढ़ पढ़ लिखियो लोक ।।
कद कानोड़ा जनमिया
महैन्द्र भाणावत्त ।
आप जस्यो नहं दूसरो
लोक कला रो भक्त ।।
लोक कला मण्डल तणा
निर्देशक बण आप ।
कला साहित्य ने सेविया
भाणावत अणमाप ।।
सूनी सगळी है कला
संग साहित्य संसार ।
महैन्द्र भाणावत्त जद
सुरगां गया सिधार ।।

कबीर की तरह आंखनदेखी और लोककही लिखकर उन्होंने महेंद्र-मन को मथा और नवनीत लिखा! उस ज्ञानाश्रय में कितने लेखकों का प्रस्थान बिंदु है, यह जानकर ही मैं गौरव पाता हूं। प्रलोभन शून्य, स्पष्ट वक्ता और रंजन के अंजन से आंखों को उजास देने वाले, अपनी प्रतिभा का स्वयं निर्माण और निवेश करने वाले भानावतजी सदा सर्वदा सम्मान योग्य विभूति रहेंगे, भविष्य के निर्देशक ही नहीं, ऋषि आत्मा! अद्वितीय शब्द साधक!

लेखक - वरिष्ठ साहित्यकार,भारतीय विद्याविद्
और संस्कृत के वैज्ञानिक ग्रंथो के खोजकर्ता हैं।
संपर्क : विश्राधरम्, 40 राजश्री कॉलोनी, विनायक नगर,
उदयपुर 313001 (राज.) मो. 9928072766

पत्रिका ही नहीं, एक रचनात्मक अनुष्ठान

पत्रिका मुफ्त मांग कर, कृपया हमारे अनुष्ठान को आघात न पहुँचाएं

'कला समय' के सदस्य बनें- ❍ पत्रिका की वार्षिक/द्वैवार्षिक /आजीवन सदस्यता ग्रहण करें। सदस्यता शुल्क मनीआर्डर, ड्राफ्ट, ऑनलाइन अथवा व्यक्तिगत रूप से भुगतान किया जा सकता है।

'कला समय' की एजेंसी के नियम- ❍ आपके गांव, कस्बे, शहर में सांस्कृतिक पत्रिका 'कला समय' की एजेन्सी के लिए सम्पर्क करें। ❍ कम से कम दस प्रतियों से एजेन्सी शुरू की जायेगी। ❍ पत्रिका कुरियर अथवा रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से भेजी जायेगी। डाक खर्च एजेन्सी को वहन करना होगा। ❍ कमीशन, प्रतियों की संख्या के आधार पर।

स्थायी तथा सम्पादकीय पता और दूरभाष क्रमांक के साथ सम्पर्क करें- जे-191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई-6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल- 462016 Email : bhanwarlalshrivas@gmail.com मो. 9425678058, 0755-2562294

लेखकों/कलाकारों से ❍ कला, संस्कृति साहित्य एवं समसामयिक विषयों के अछूते पहलुओं पर सृजनात्मक, शोधात्मक और सूचनात्मक आलेख, टिप्पणियां, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, ललित निबंध, कविताएँ, छायाचित्र, रेखांकन तथा शोध आमंत्रित हैं। ❍ रचनाएँ कागज के एक ओर टाइप की हुई तथा मौलिकता का प्रमाण पत्र संलग्न हो। कृपया रचना के साथ पर्याप्त डाक टिकिट लगा लिफाफा भी संलग्न करें। रचनाएँ और चित्र ई-मेल से भी भेजे जा सकते है।

प्राथमिकता के साथ : Chanakya फोंट / वर्ड फाइल / PDF फॉर्मेट में ही भेजें।

अनुरोध : **वे सदस्य जिनका वार्षिक / द्विवार्षिक सदस्यता शुल्क समाप्त हो रहा है, कृपया अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करायें। सदस्यों को पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। नहीं मिलने की स्थिति में सदस्यता शुल्क के साथ 300/- का प्रतिवर्षानुसार रजिस्टर्ड डाक शुल्क अतिरिक्त भेजा जाना होगा।**

-संपादक

आलेख

होली निरंकुशता के विरुद्ध लोक का जयजयकार है।

डॉ. राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी

हिरण्यकशिपु कहता था कि ईश्वर मैं ही हूँ, मेरे अतिरिक्त कोई भी ईश्वर नहीं है। होलिका दैत्यराज हिरण्यकशिपु की बहिन थी। प्रह्लाद की भुआ। देवता के वरदान के रूप में उसके पास एक ऐसी चद्दर थी, जिस पर अग्नि का प्रभाव नहीं होता था। दैत्यराज हिरण्यकशिपु का आदेश था इसलिये वह विवश थी। प्रह्लाद को दंडित करने के लिये उसे गोद में लेकर वह अग्नि में बैठ गयी, किन्तु कुछ ऐसा हुआ कि चद्दर तो प्रह्लाद पर आगयी और होलिका जल गयी। शायद यह होलिका का आत्मबलिदान था। राजा बलि परम उदार और दानी था, होलिका के प्रति उसका पूज्य भाव कहिये, उसने होलिका के पूजा-पर्व को त्यौहार का रूप दिया। बात तो उस मिथ्यादंभ और अभिमान की थी, इस प्रकार से होली निरंकुशता के विरुद्ध लोक का जयजयकार है। होलिकादहन की रात्रि में महाराष्ट्र में कोली स्त्रियाँ होलिकादहन की रात्रि को चट्टे बजाकर नाचते हुए गाती हैं-

हॉलु बाय हॉलु बाय तुझी पूजा कराशी करूँ,
तुझे पुंजेला काय काय आणु।
आई न कोंकण दे राला फिरीन नारली बनाला,
नारली में नारल आनीन हॉलु बाय तुझे पुंजेला
आईन श्रीवर्धन शहराला फिरीन सोपारी बनाला,
श्रीवर्धन ची सोपारी आनीन हॉलु बाय तुझे पुंजेला
जाईन बसई शहराला फिरीन केलिया बनाला,
बसई ची केली आनीन हॉलु वाय तुझे पुंजेला

ए होली माता। तुम्हारी पूजा किस तरह करूं और तुम्हारी पूजा में क्या-क्या अर्पित करूं। मैं कोंकण और सह्याद्रि जाऊंगी और नारियल के वनों में घूमूंगी और ए होली माता, मैं तुम्हारी पूजा के लिए नारियल लाऊंगी। मैं श्रीवर्धन नगर जाऊंगी और सुपारी के वनों में घूमूंगी। ए होली माता, तुम्हारी पूजा के लिए श्रीवर्धन की सुपारी लाऊंगी। मैं बसई जाऊंगी और केले के वन में घूमूंगी। ए होली माता, तुम्हारे लिए बसई के केले लाऊंगी और तुम्हारी पूजा करूंगी। होली का जैसे-जैसे जनपदों में विकास हुआ, वैसे वैसे उसके साथ नये नये प्रसंग जुड़ते चले गये। जैसे राजस्थान में इलोजी की कथा है, जो होली का प्रेमी अथवा मँगेतर था। जब मैं लोकवार्ता का संग्रह-सर्वेक्षण करने निकला तो समामई की अम्माजी से घरगुली की कहानी पूछी, उसका विधिविधान पूछा तो अम्माजी ने घरगुली का गीत गा कर सुना दिया- राजा बलि के द्वार मची रे होरी। राजा बलि के। अब तक तो मैं सोच रहा था ब्रज की होली का संबंध तो राधा-कृष्ण से है। अब समझ नहीं आ रहा था कि ये राजा बलि होली में कहाँ से आ गये ? लोकस्मृति के सूत्र इसी प्रकार से उलझे हुए होते हैं। स्वयं राजा बलि की ऐतिहासिकता लोकस्मृति के इन सूत्रों में उलझी हुई है। इतिहास का सत्य अपनी जगह पर है, जहाँ तक उसकी नजर जा सकती है, वह उसको देखता-परखता भी है किन्तु जीवन का विस्तार इतिहास के उस पार भी है।

हालाँकि भागवत के सातवें स्कन्ध में प्रह्लाद की कथा है, हिरण्यकशिपु की निरंकुशता और अहंकार का बहुत विस्तार है, किन्तु वहाँ शंबरासुर का उल्लेख तो है किन्तु होलिका का नाम तक नहीं है। दसवें अध्याय के अन्त में त्रिपुर-दहन का उल्लेख अवश्य है। ध्यान रखने की बात है कि तमिलनाडु में होलिका दहन को कामदहन की पुराण-कथा से जोडा जाता है। बंगाल में भी होलिका दहन में एक पुतला जलाया जाता है और श्रीकृष्ण की प्रतिमा के साथ उसकी परिक्रमा की जाती है। यह पुतला प्राकृत-काम है, जबकि कृष्ण अप्राकृत काम हैं साक्षान्मन्मथमन्मथ:। कामदेव के मन को भी मथने वाले मदनमोहन। इसलिए आगे चल कर होली अथवा मदनोत्सव के समस्त केलिगीतों के नायक कृष्ण बन गये।

मदनोत्सव

वसन्त को काम का सखा कहा गया है। जब तक यक्षों का प्रभुत्व रहा तब तक काम की पूजा का बहुत अधिक प्रभाव था! शिव के तीसरे नेत्र से काम के दहन की कहानी के बहुत गहरे अर्थ हैं। काम के शरीर का जलना और बाद में गौरा के द्वारा उसे अनंग या अशरीरी के रूप में जीवन प्रदान करना! यह बात काम के इन्द्रिय से अतीन्द्रिय हो जाने की बात है। काम तो मदन है, मद। काम का अशरीरी हो जाना। पशुस्तर की वासना का जलना। हालाँकि इतिहास के अध्येता इस कथा की व्याख्या इस प्रकार से भी करते हैं कि शैवों ने यक्षों के मुक्त यौन-संबंधों की परंपरा को समाप्त कर दिया। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने संस्कृत साहित्य को आधार बना कर अपने उपन्यास बाणभट्ट की आत्मकथा में मदनोत्सव का वर्णन किया है।

'भारत में नाना संस्कृतियों का संगम' शीर्षक निबन्ध में आचार्य क्षितिमोहनसेन ने लिखा है कि 'होलिकादाह के लिये आग अनेक स्थानों पर अन्त्यज (महारों। के घर से लायी जाती है।' उस जमाने में स्पर्शास्पर्श का रिवाज प्रचलित था किन्तु होली पर शास्त्र ने श्वपचस्पर्श का विधान किया है। इतना ही नहीं, होलिका दहन के लिए जो अंगार आयेगा, वह

डोम के यहाँ से लाया जायेगा ! होली पर्व है, होली उत्सव है। जीवन में मांगलिकभाव की नयी चेतना लेकर एक क्रम के बाद दूसरा क्रम आता है, इसलिये ये त्यौहार पर्व कहे जाते हैं। पर्व जिन्दगी की एकरसता और अकेलेपन का अतिक्रम करता है। पर्व में सभी सम्मिलित होते हैं। बांस या ईख की गांठ का नाम पर्व है। मूल रूप से पर्व बांस या ईख की गांठ का नाम है। सन्धिस्थान भी पर्व कहलाता है, उँगली में जिसे पोरुआ पर्व का अपभ्रंश) कहते हैं। संधिस्थान के विभाजन से महाभारत में भी अठारह पर्व हैं। गुजराती की कहावत है–बारो मासे तेरो पर्व पार्वण। पर्व आमोद प्रमोद है, पर्व उत्सव नृत्य गीत है।

'पर्व के साथ विश्वास जुड़े हुए हैं। पर्व के साथ मनोरथ जुड़े हुए हैं। पर्व के साथ ऐतिहासिक पौराणिक संदर्भ जुड़े हुए हैं। पर्व में लोकजीवन की परंपरा है, पर्व में जातीय अस्मिता है। पर्व में इतिहास है। पर्व में जीवन दर्शन है। पर्व में अनुष्ठान हैं। पर्व में समष्टिचेतना है, समष्टि-भाव है। समष्टिजीवन के एक बिन्दु पर आ कर पर्व और मेले एकाकार हो गये हैं, इतने अभिन्न कि उनको अलग नहीं किया जा सकता। जीवन में दुखों का कितना भार है। अकेले अकेले न उठाया जा सकेगा। लोकमन ने समष्टिभाव को जगाया, और पर्वों का उत्सव समारोह बना लिया। जीवन में समष्टि का भाव आया, मैं अकेला नहीं हूँ! सब जी रहे हैं, सब के साथ मैं जी रहा हूँ। पर्व में सभ्यता और संस्कृति की विकास यात्रा है। प्रत्येक पर्व के साथ कुछ कथाएं हैं, कुछ गीत हैं गाथाएं है। प्रत्येक पर्व का कोई न कोई देवता है। प्रत्येक पर्व से सामाजिक सरोकार मंगलभाव और पुण्य की अवधारणा जुड़ी हुई है। वीरों का गौरव गान जुड़ा हुआ है। प्रत्येक पर्व से उपासनाओं का इतिहास जुड़ा हुआ है। उत्सव का भाव जुड़ा है उत्सव शब्द का अर्थ है आनन्द की छलकन। मन आनन्द से भर जाय और छलकने लगे। होली के पास वह आनन्द भाव है. जिसमें मन का साधारणीकरण हो जाता है, चित्त द्रवीभूत हो जाता है। होली अर्थात् सुख की अदम्य खोज, प्रणय और सौन्दर्य की अतृप्त प्यास। मन की उद्दाम तरंगा'

हां, यह सच है कि जिस दिन से ब्रज में फागुन आया है. उस दिन से गांव के गांव पागल हो गये हैं। बौरा गये हैं। कैसे कहूं, कि यह टेसू के फूलों का उत्पात है या आम पर आये बौरों की शैतानी है। यह भ्रमरों की गुंजार का नशा है या फागुन की बयार काब्रज के वे लोग टोल के टोल नाचते हैं, गाते हैं. झांझ-मजीरा बजाते हैं. गुलाल के बादल उडाते हैं और केसरिया रंग बरसा देते हैं। कोलाहल करते हैं, हंसते हैं और हंसते ही चले जाते हैं। ब्रज में आज कोई श्रोता नहीं है. सभी तो गबैया बन गये हैं। कोई दर्शक नहीं है. सभी तो दृश्य बन गये हैं–सब नाचहिं गावहिं सबै, सबै उडावत छार। सठ पंडित बेस्या बधू सबै भये इकसार। अहो हरि होरी है। होली यौवन के उन्माद का त्योहार है। परंतु यह द्वारिका के यदुवंशियों का सर्वनाशी उन्माद नहीं है, जिसमें वे अपने बल, श्रेष्ठता और सुंदरता के अहंकार में व्यष्टि को ही अंतिम समझने लगे थे। होली का उन्माद समष्टि का उन्माद है, जिसमें हास, परिहास बिखर पड़ता है। ऐसा जो समेटे न सिमटे। गरीब को अपनी गरीबी याद है न अमीर को अपनी अमीरी। पंडित को अपनी पंडिताई की सुधि है न ठाकुर को अपनी ठकुराइत की। कलुआ ने उल्फत की दाढ़ी हिला दी और मुहल्ले का जमादार जमींदार का गाल नोचकर भाग गया। अब तक जमींदार देखे, तब तक हंसी फूट पड़ी. होली है, होली है। सबै भये इकसार, अहो हरि होरी है। नाती कहे होरी है. बाबा कहे होरी है। बूढी कहे होरी है और बारी कहे होरी है। देवर कहे होरी है और भाभी कहे होरी है। चारों ओर एक ही गूँज होली है होली है। द्यौरानी ने तानभरी ससुर देवरिया सौ लागे और जिठानी ने ढोलक बजायी–मस्त महीना फागुन को जी कोई जीवे सो खेले होरी फाग, भला जी कोई जीवै सो खेलै होरी फाग।

ऋतूत्सव

मूल रूप से होली एक ऋतूत्सव है, इसमें कोई संदेह नहीं। संसार के विभिन्न देशों के ऋतूत्सवों को लेकर मानवशास्त्रियों ने अध्ययन किये हैं। वसन्त के त्यौहार विभिन्न देशों में आनन्द-भाव से मनाये जाते हैं। प्रकृति में परिवर्तन हुआ तो मनुष्य के मन में भी परिवर्तन हुआ। प्रकृति में उल्लास बिखरा तो मनुष्य के मन में भी उल्लास बिखरा । यह प्रकृति और मन के गहरे संबंध का रहस्य है। होली के साथ वसन्त का वैभव जुड़ा हुआ है। वसन्त ऋतु को लेकर जो साहित्य रचा गया है, उसे होली से अलग नहीं किया जा सकता। वास्तव में तो वह होली की पृष्ठभूमि है।

'औरें भाँति बिहग समाजमें अवाज होत,
ऐसे ऋतुराज के न आज दिन द्वै गये।
औरें रस औरें रीति, औरें राग औरें रंग,
औरें तन औरें मन औरें बन ह्वै गये।'

वसन्त को काम का सखा कहा गया है। यह प्रकृति और मन के गहरे संबंध का रहस्य है। होली एक दिन का त्यौहार नहीं है। यह तो त्यौहारों का त्यौहार है। माघ शुक्लपक्ष की पंचमी [वसन्तपंचमी से लेकर के चैत्र महीने की रंगपंचमी तक चलने वाला उत्सव । गाँवों में होलीदंड (एरंड की स्थापना वसन्तपंचमी के दिन ही हो जाती है!

वैदिक-परंपरा में होली नवान्न शस्येष्टि यज्ञ अथवा नवान्न यज्ञोत्सव है। है। देव जब कृषि करने लगे तो दो ही फसलें मुख तथा 2. यव (जो). धान की फसल तैयार होने पर दीपावली तथा जौ की फसल तैयार होने पर होली मनाई जाती थी, इसीलिये दीपावली पर लक्ष्मी पूजा धान की खीलों से होती है, खील और बताशों का आदान प्रदान होता है तथा होली की अग्नि में जौ की बालें भूनकर वितरित की जाती हैं। तान्त्रिक-परंपरा में होली दारुणरात्रि के रूप में उपासना का पर्व है। तान्त्रिक-परंपरा में उपासना की चार रात्रियों का उल्लेख हुआ है –

प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रय विभाविनी।
कालरात्रि: महारात्रि: मोहरात्रिश्च दारुणा !

कालरात्रि शिवरात्रि, मोहरात्रि शरदपूर्णिमा की रास की रात्रि महारात्रि दीपावली और दारुणरात्रि होली की रात !

महामहोपाध्याय गिरिधरशर्मा जी ने उल्लेख किया है कि मीमांसा के भाष्यकार शबरस्वामी ने सदाचार के प्रसंग में होली के उदाहरण दिये हैं।

शैवागम से संबंधित एक ग्रन्थ ''वर्षक्रियाकौमुदी'' में मदनमहोत्सव के अन्तर्गत प्रात:काल से एक प्रहर तक संगीत और वाद्य के साथ श्रृंगारिक अपशब्दों को बोलते हुए कीच उछालने का उल्लेख हुआ है। हर्षदेव की रत्नावलि में उल्लेख है कि इस उत्सव में चित्र बना कर कामदेव की पूजा होती थी। ''रत्नावलि'' में विदूषक कहता है कि कामिनियाँ रंग डाल रही हैं और पुरुष नाच रहे हैं जब राजा प्रमदवन में कामदेव की पूजा के लिए जाता है तो विदूषक फिर कहता है कि देखो, एक उत्सव में से दूसरा उत्सव निकल रहा है। सद्य: सान्द्र विमर्द कर्दम कृत: क्रीडे क्षणं प्रांगणे। दशकुमार चरित में कलिंगराज कर्दम के तेरह दिन तक चलने वाले वसन्तोत्सव का उल्लेख है। भविष्यपुराण में कामदेव और रति की मूर्तियां बनवा कर पूजने का विधान है। कामसूत्र ने इसे ''सुवसन्तक-उत्सव'' बताया है, जिसमें युवतियां कानों में आम्रमंजरी लगा कर वसन्त का स्वागत करती थीं तथा ''सींग की पिचकारी'' से किंशुक-जल छिडका जाता था। बौद्धसाहित्य की ''कृपण-कोसीय जातककथा'' में राजगृह का एक भिक्षु होली के दिन पूआ खा रहा था, तब कोटिपति सेठ के मन में भी पूआ खाने की लालसा उत्पन्न होने का उल्लेख है।

गालियां

होली- दहन के बाद उन्माद जैसे रंग में अररर अररर कह कर गाली गायी जाती हैं। सूरदास ने अपने होली-पदों में गालियों का बार-बार उल्लेख किया है-केकी कोक कपोत और खग करत कुलाहल भारी। मानहु लै लै नाँउ परसपर देत दिबावत गारी। झूमि झूमि झूमक सब गावत बोलत मधुरी बानी देत परसपर गारि मुदित मन तरुनी बात सयानी।

अथवा

छोडि सकुच सब देत परसपर अपनी भाई गारि।

ग्वारि मदमाती हो। लोकगीतों में भी नैनन में मोप गारी दई का उल्लेख है रसखान तो कहते हैं कि कहि रसखान एक गारी पै सौ आदर बलिहारी।

एक विचित्र लोकविश्वास के अनुसार अश्लील और पशुवृत्ति से संबंधित गालियां सुनाने से ढुंढा राक्षसी नष्ट हो जाती है। पता नहीं लोकविश्वास का यह सूत्र इतिहास के गर्भ में समायी किसी प्राचीन आदिम संस्कृति का अवशेष है अथवा आदिम वासनाओं के विरेचन का माध्यम है।

होली के उत्सव में यक्ष, राक्षस, पिशाच, देव, दैत्य, वैदिक तान्त्रिक आर्य-अनार्य, वैष्णव, शैव, शाक्त, हिन्दू-मुस्लिम और सिख उत्तर-दक्षिण की सभी संस्कृतियों का अन्तर्भाव या समन्वय है। यक्षों की कामपूजा है, दैत्यसंस्कृति की होलिका है, धूलिवन्दन के समय पिशाच नृत्य का उल्लेख है. शैवों का मदनदहन है, वैदिकों का नवसस्येष्टि-यज्ञ है। आगम-परंपरा की दारुण-रात्रि है।

प्राय: सभी कृष्णभक्त कवियों ने होली के पद लिखे हैं, धमार लिखे हैं। अकेले सूरदास ने ही वसन्तलीला के सौ से अधिक पद लिखे हैं, जिनसे तत्कालीन ब्रज और गोपों में होली की परंपराओं की विस्तृत जानकारी मिल जाती है। कितने प्रकार के गीत गाये जाते थे, कितने प्रकार के वाद्य थे। उद्दाम नृत्य होते थे। झूम-झूम झूमक सब गावत। झूमक लोकगीतों की एक शैली थी। देति परस्पर गारि मुदित मन। आम्रमंजरी हाथ में ले कर चांचर खेलते थे-सूरदास सब चांचर खेलें अपने-अपने टोलें। बाजत ताल मृदंग झांझ ढप। उन्मुक्त हास-परिहास होता था कोउ न रहत घर घूंघटबारी। जोबन भार भरीं। सूरदासजी जिनमें गोपसंस्कृति में रगीपगी होली का सजीव चित्रण है। उन्हों ने फाग को सबसुखों का सार बतलाया है। उन्होंने लिखा है कि फाग में

हृदय का गुप्त अनुराग प्रकट हो जाता है। सूरदास ने फागुन की पन्द्रह तिथियों का वर्णन किया है, जिसमें सम्राट कामदेव का शासन है. लोकवेद की मर्यादा को टांग दिया है, हरिहोरी है की टेक साथ-साथ चल रही है नृपति कहे सोइ कीजिये क्यों राखिये विवेक । अहो हरि होरी है। चतुर्भुजदास ने तो हो-हो-हो-हो को होली का मन्त्र कह दिया है। होली के वर्णन में सूरदास ने लिखा है कि कुल की मर्यादा खूँटी पर टांग दी गयी है। पद्माकर ने होली का वर्णन इस प्रकार से किया है-

फाग के भीर अभीरन तें गहि, गोबिंदै लै गई भीतर गोरी।
भायी करी मन की पदमाकर, ऊपर नाय अबीर की झोरी।
छीन पितंबर कंबर तें सु बिदा दई मीड कपोलन रोरी।
नैन नचाय कही मुसकाय, लला फिर आइयो खेलन होरी ।

मुगलों के दरबार से लेकर वाजिद अली शाह तक की होलियाँ हैं। अब्दुल हलीम शरर ने लिखा है कि नवाब के यहाँ लोग जोगिया वस्त्र पहन कर होली देखने जाते थे। शाहतोराबअली (काकोरबी] जो कलन्दर सूफी थे, उन्होंने कृष्ण के प्रेम में अनेक रचनाएं लिखी थीं-इनकी होरी का रंग न पूछो धूम मची है बिंदरावन माँ श्यामबिहारी चित्र खेलारी खेल रहा होरी सखियन माँ। रंग से भींज गयी सब धरती, बिचलत पाँव चलत कुंजन माँ। अंग निहारत ताक के मारत दाग लगावत उजले बसन माँ। अनेक मुस्लिम कवि और गायकों की होली रचनाएं शास्त्रीय-संगीत के रागों में निबद्ध हैं। सूफी-संत बुल्ले-शाह की होली रचना है >> होरी खेलूंगी कह कर बिस्मिल्लाह नाम नबी की रतन चढी, बूँद पडी इल्लल्लाह ! होरी खेलूंगी कह कर बिस्मिल्लाहहोरी

खेलूंगी कह कर बिस्मिल्लाह, नाम नबी की रतन चढी, बूँद पडी इल्लल्लाह, रंग-रंगीली उही खिलावे, जो सखी होवे फ़ना-फी-अल्लाह होरी खेलूंगी कह कर बिस्मिल्लाह। फुज अज्कुरनी होरी बताऊँ, वाश्करुली पीया को रिझाऊं, ऐसे पिया के मैं बल जाऊ, कैसा पिया सुब्हान-अल्लाह, होरी खेलूंगी कह कर बिस्मिल्लाह। सिबगतुल्लाह की भर पिचकारी, अल्लाहुस-समद पिया मुंह पर मारी, नूर नबी (स) डा हक से जारी, नूर मोहम्मद सल्लल्लाह, बुला शाह दी दी धूम मची है, है, ला-इलाहा इल्लल्लाह, होरी खेलूंगी कह कर बिस्मिल्लाह। अनेक मुस्लिम कवि और गायकों की होली रचनाएं शास्त्रीय-संगीत के रागों में निबद्ध हैं। मुस्लिम कवयित्री ताजबीबी ने होली की धमार लिखी थी बहुरि, ढप

बाजन लागे हेली। रसखान ने तो होली का बड़ा जीवन्त वर्णन किया है। जहांगीर के हरम में होली मनायी जाती थी, लन्दन के संग्रहालय में 'जहांगीर-अलबम में अबलहसन के द्वारा बनाया गया होली का चित्र है। इस चित्र में बादशाह और बेगम भी हैं।'

पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक चांचर गीत है-पियरी सोहै पियरी सोहै, अरी पियरी सोहै, देख जरे नयना पियरी सोहै, अपने बलमवा से मुखवा न खोले ली, भला आनक बलम भरि-भरि बयना, भरि-भरि बयना, पियरी सोहै अरी, तेरी पीले वस्त्रों को देखकर मेरे नयनों में तृषा जग जाती है। आंखें जलने लगती हैं। अपने बालम से तू इतनी लाज करती है कि मुख ही नहीं खोलती। परंतु दूसरे के प्रिय से खुल कर बोलती है। उद्दाम रस से उच्छल नायिका दूसरी ओर से उत्तर देती है-अरे अपना बलमवा से हरी हरी चुरियां हो, हरी हरी चुरियां, अरे आनक बलम भरि भरि कंगना भरि भरि कंगना, पियरी सोहै। अरे

अपने बालम से तो मुझे हरी हरी चूडियां ही मिलती है परंतु आनक- बलम तो मुझे भर बांह कंगन पहना जाता है।

रसिया

आज जब देश के सुदूरवर्ती अंचलों में लोकमन आनन्द उल्लास से उमंग रहा है। सारे भेदभाव जैसे समष्टि-उल्लास के आगे पराजित हो गये हैं। नाना प्रकार के गीत, नाना प्रकार के नृत्य नाना प्रकार के रंग। रंग क्या, उल्लास की अभिव्यक्ति कहें। रसिया, फाग, धमार, कबीर, चैता, चहक, तान और चांचर। धरती से आकाश तक का अंतराल आनंद, उल्लास और कोलाहल से भर गया। कहीं ढपयायी होली, कहीं रजपूती होली। कहीं पतोला की होली तो कहीं सुखैया की होली। कहीं चांचर और कहीं ' धपंग। कहीं झुमका और कहीं वसंता। होरी आई रे वसंता ढप लै लै। जितने सुर उतनी तान। जितने गाम उतनी होली। होली के इतने रंग, इन्हें कौन गिन सकेगा। इनमें एक ब्रज का रसिया भी है। यों तो रसिया रस और रसिक शब्द का ही विस्तार है। रसिया, ब्रज लोक- संगीत की एक परंपरा ही है। यों इसका एक रूप फूलडोल की गायकी में भी है, जिसे रसियाई कहा जाता है। रसियाई और रसिया में अन्तर है। रसिया लोक का अपना गीत है, किसी दूसरे को सुनाने की उसे जरूरत ही क्या है? लेकिन जिसको सुनना ही हो उसे तो ढप बजाने वालों की भीड़ में सौ सौ धक्के खाने ही पड़ेंगे। अब रसिया की कुछ पंक्तियाँ गुगुनाने के लिये प्रस्तुत हैं -

होरी खेली न जाय। खेली न जाय होरी खेली न जाय।
नैनन में मोय गारी दई पिचकारी दई, होरी खेली न जाय ।
क्यों रे लंगर लंगराई मोते कीनी, केसर कीच कपोल दीनी ।
लै गुलाल ठाडौ मुसकाय.. लै गुलाल ठाडौ मुसकाय, होरी खेली न जाय।
औचक कुचन कुमकुमा मारै, रंगसुरंग सीस पै डारे।
अंग लिपट हँसि हा हा खाय... हँसि हा हा खाय... होरी खेली न जाय ।

❖

मनुआँ बड़ौ गरीब गुजरिया ले गई बातन में
रूप सिखर गोरी चढ़ी, रवि ते तेज अनूप।
नैन बटोही थकि रहे, लखि बदरौटी धूप।
छिपे पलकन के पातन में।
मनुआँ बड़ौ गरीब गुजरिया लै गई बातन में।

❖

मन में घर करि गई गुजरिया गुन गरबीली सी
ऐसी पैनी धार की काजर रेख लगाय
आँजत अँगुरी ना चिरी कट्यौ करेजा जाय।
न निकरै नोंक नुकीली सी।

❖

पा लागों कर जोरी श्याम मोसों खेलौ न होरी।
गैया चरावन हौं निकसी हों सास-ननद की चोरी।
श्याम मोसों खेली न होरी।
सिगरी चुंदरिया न रंग में भिगोवौ,
इतनी बात सुनों मोरी।
श्याम मोसों खेलौ न होरी।

❖

रे मत मारै! मत मारै द्दगन की चोट रसिया होरी में मेरें लग जायगी।
नैना खेलें नैन खिलावें नैना डारें रंग।
नैना मारें प्रेमप्रीत की पिचकारी पचरंग।
भिंजोय दें बरजोरी। रे मत मारै।
काजर कै कांटे लगौ, बेंदी की लग गयी फांस।
रसिया के नैना लगे कसि के बारौ मास ।
मत मारै द्दगन की चोट रसिया होरी में मेरें लग जायगी।

देवर का नायकत्व

किसी प्राचीन संस्कृति का एक सूत्र होली पर देवर के नायकत्व का है। दाऊजी का हुरंगा हो, नंदगांव बरसाने की लठमार होली हो, अथवा जाव बठैन की सर्वत्र लोकगीतों में देवर का नायकत्व प्रतिष्ठित है।

भमर कारे रे भमर कारे छिटकाय आई केस भमर कारे
कौन पै पहरीं तैनें हरी हरी चुरियां कौन पै नैन करे कारे
देवर पै पहरों मैंने हरी हरी चुरियां यार पै नैन करे कारे
छिटकाय आई केस भमर कारे।

अथवा

मृगनैनी तेरी यार नवल रसिया।

होली का यह उल्लास भिन्न-भिन्न जगहों पर भिन्न-भिन्न प्रकार से अभिव्यक्त होता है। जहां देखो वहीं ढोल और ढप बज रहे हैं। धरती से आसमान तक उल्लास। कहीं ढपियायी होली, तो कहीं रजपूती होली कहीं पतोला की होली तो कहीं सुखैया की होली । कहीं चांचर, तो कहीं धपंग! कहीं झुमका तो कहीं बसन्ता ब्रज को ही लें तो बरसाने की लठामार होली, दाऊजी का हुरंगा ! फालैन की होली, जाव बठैन की होली। ग्राउस ने जाटों का उल्लेख किया है। राजस्थान की होली ! बनारस की होली-दिगंबर खेले मसाने में होरी

खेलें मसाने में होरी दिगंबर खेले मसाने में होरी, भूत पिशाच

बटोरी, दिगंबर, खेले मसाने में होरी. चिता, भस्म भर झोरी, दिगंबर, खेले मसाने में होरी.

गोप न गापी श्याम न राधा, ना कोई रोक ना कौनाऊ बाधा, ना साजन ना गोरी, दिगंबर खेले मसाने में होरी गाचत गावत डमरूधारी, छोड़ै सर्प-गरल पिचकारी, पीतैं प्रेत-धकोरी दिगंबर खेले मसाने में होरी भूतनाथ की मंगल-होरी, देखि सिहाएं बिरिज की गोरी, धन-धन नाथ अघोरी, दिगंबर खेलें मसाने में होरी.

अवध की होली

अवध माँ होली खेलें रघुवीरा...

ओ केकरे हाथ ढोलक भल सोहै, केकरे हाथे मंजीरा।

राम के हाथ ढोलक भल सोहै, लछिमन हाथे मंजीरा।

ए केकरे हाथ कनक पिचकारी, ए केकरे हाथे अब्बीरा।

ए भरत के हाथ कनक पिचकारी शत्रुघन हाथे अबीरा।

होली की मनोभूनि राग की मनोभूमि है, वह मनोभूमि जिससे कलाओं का उद्भव होता है! लाल-पीला-हरा-नारंगी नीला और गुलाबी। जैसे होली के रंग अनेक हैं, वैसे ही होली के बोल भी अनेक हैं। होली के संगीत का अध्ययन अनुसंधान का विषय बनाया जा सकता है। होली के गीतों की कितनी विधाएं और शैलियों हैं ध्रुपद धमार रसिया चाँचर तान राग काफ़ी दीपचन्दी ताल। धमार का तो अर्थ ही ऊधम है। धमगज्जर या हुड़दंग। होली के अवसर पर कितने वाद्य बजाये जाते हैं? ढप, ढोलक, मजीरे, नगाड़े, बैन, मुंहचंग, किन्नर, महुआ, हुड़का। गोप-ग्वालों के मृदंग पखावज और द्रुप हों अथवा विंध्याचल के जंगलों में अपने आदिम-विश्वासों और अनेक अभावों के बीच जीने वाले मुसकराते-गाते भील-भीलनियों के घिन्न-धिन्न करते हुए मादल और ढोल हों, प्रत्येक ताल और लय में वहीं शाश्वत तरंग है। होली पर कितने प्रकार के नृत्य होते हैं? थावल चौंडनी हो, शेखावाटी का गींदड या भीलवाडा का गेर हो। ब्रज का चरकुला हो। करमा नाच, लहराओबा नृत्य, वसन्त की मदमाती बयार में चांदनी के दूध में नहाये युवा-हृदय की सौन्दर्यचेतना उमंगती है, तो पैर अपने-आप थिरकने लगते हैं। असम के बिहू का प्रणय-उन्माद से तरंगित गीत है नाचने की लालसा है, नाचती ही रहूं, मगन रहूं, ओ साथी। बिहू नाचते-नाचते मुझे भगा कर मत ले जाना । भविष्यपुराण और भविष्योत्तर-पुराण में होली का वर्णन है। पिशाच-नृत्य की बात आयी है, होली की भस्म, धूलि और कुंकुम को लेकर पिशाच जैसा नृत्य हो रहा है।

फागुन, होरी के खिलैया यार, जाय मत रे!

होली के पास वह आनन्द भाव है, जिसमें मन का साधारणीकरण हो जाता है, चित्त द्रवीभूत हो जाता है। सुख की अदम्य खोज प्रणय और सौन्दर्य की अतृप्त प्यास। मन की उद्दाम तरंग। जब होली के दिन बीतने को होते हैं तब रसिक-मन की प्यास बुझती नहीं, वह कहता है, फागुन, होरी के खिलैया यार, जाय मत रे।

लेखक वरिष्ठ साहित्यकार हैं।

संपर्क : 1828 हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी सेक्टर- 13-12, पानीपत - 132203 (हरियाणा) मोबा. 9996007186

द्वैमासिक पत्रिका 'कला समय' के संबंध में स्वामित्व तथा अन्य विवरण विषयक

घोषणा-पत्र

फार्म- 4 (नियम 8 देखिये)

1. प्रकाशन का स्थान	-	जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016
2. प्रकाशन की अवधि	-	द्वैमासिक
3. मुद्रक का नाम	-	भँवरलाल श्रीवास
राष्ट्रीयता	-	भारतीय।
पता	-	जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016
4. प्रकाशक का नाम	-	भँवरलाल श्रीवास
राष्ट्रीयता	-	भारतीय।
पता	-	जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016
5. संपादक का नाम	-	भँवरलाल श्रीवास
राष्ट्रीयता	-	भारतीय।
पता	-	जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	-	भँवरलाल श्रीवास
राष्ट्रीयता	-	भारतीय।
पता	-	जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016

मैं भँवरलाल श्रीवास घोषणा करता हूँ कि ऊपर दी गई विशिष्टियाँ मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के साथ सही हैं।

तारीख: 31 मार्च 2025

भँवरलाल श्रीवास

प्रकाशक के हस्ताक्षर

संस्कृति के रंग
जनजातीय जीवन शैली का अभिन्न अंग है नृत्य-संगीत

लक्ष्मीनारायण पयोधि

मध्यप्रदेश के इन्द्रधनुषी जनजातीय संसार में जीवन अपनी सहज निश्छलता के साथ आदिम मुस्कान बिखेरता हुआ पहाड़ी झरने की तरह गतिमान है। मध्यप्रदेश सघन वनों से आच्छादित एक ऐसा प्रदेश है, जहाँ विन्ध्याचल, सतपुड़ा और अन्य पर्वत-श्रेणियों के उन्नत मस्तकों का गौरव-गान करती हवाएँ और उनकी उपत्यकाओं में अपने कल-कल निनाद से आनंदित करती नर्मदा, ताप्ती, तवा, पुनासा, बेतवा, चंबल, दूधी आदि नदियों की वेगवाही रजत-धवल धाराएँ मानो, वसुंधरा के हरे पृष्ठों पर अंकित पारंपरिक गीतों की मधुर पंक्तियाँ।

ढोल, माँदर, गुदुम, टिमकी, डहकी, माटी माँदर, थाली, घंटी, कुंडी, ठिसकी, चुटकुलों की ताल पर जब बाँसुरी, फेफरिया और शहनाई की स्वर लहरियों के साथ भील, गोण्ड, कोल, कोरकू, बैगा, सहरिया, भारिया आदि जनजातीय युवक-युवतियों की तरह विन्ध्य-शिखर थिरक उठते हैं तो पचमढ़ी की कमर में करधौनी की भाँति लिपट कर सतपुड़ा झूमने लगता है और भेड़ाघाट में अपने धुआँधार हर्ष राग से दिशाओं को आनंदित करता नर्मदा का जल-प्रपात। जनजातियों का नृत्य-संगीत प्रकृति की इन्हीं लीला-मुद्राओं का तो अनुकरण है।

जनजातीय समुदाय प्राय: प्रकृति सान्निध्य में रहते हैं। इसलिये निसर्ग की लय, ताल और राग-विराग उनके शरीर में रक्त के साथ संचरित होते हैं। वृक्षों का झूमना और कीट-पतंगों का स्वाभाविक नर्तन जनजातियों को नृत्य के लिये प्रेरित करते हैं। हवा की सरसराहट, मेघों का गर्जन, बिजली की कौंध, वर्षा की साँगीतिक टिप-टिप, पक्षियों की लयबद्ध उड़ान ये सब नृत्य-संगीत के उत्प्रेरक तत्व हैं।

नृत्य मन के उल्लास की अभिव्यक्ति का सहज और प्रभावी माध्यम है। संगीत सुख-दुख यानी राग-विराग को लय और ताल के साथ प्रकट करता है। कहा जा सकता है कि नृत्य और संगीत मनुष्य की सबसे कोमल अनुभूतियों की कलात्मक प्रस्तुति हैं। जनजातियों के देवार्चन के रूप में आस्था की परम अभिव्यक्ति के प्रतीक भी। नृत्य-संगीत जनजातीय जीवन-शैली का अभिन्न अंग है। यह दिन भर के श्रम की थकान को आनंद में संतरित करने का उनका एक नियमित विधान भी है।

जबलपुर, कटनी, मंडला, डिण्डौरी, पुष्पराजगढ़, उमरिया, शहडोल, सीधी, सिवनी, बालाघाट, छिन्दवाड़ा, बैतूल, रायसेन आदि ज़िलों में गोण्ड जनजाति समूह में करमा, सैला, भड़ौनी, बिरहा, कहरवा, ददरिया, सुआ आदि नृत्य-शैलियाँ प्रचलित हैं। गोण्ड समुदाय के 'सजनी' गीत-नृत्य की भाव-मुद्राएँ चमत्कृत करती हैं। इनका दीवाली नृत्य भी अनूठा होता है। माँदर, टिमकी, गुदुम, नगाड़ा, ठिसकी, चुटकी, झांझ, मंजीरा, खड़ताल, सींगबाजा, बाँसुरी, अलगोझा, शहनाई, तमूरा, बाना, चिकारा, किंदरी आदि इस समुदाय के प्रिय वाद्य हैं।

बैगा माटी माँदर और नगाड़े के साथ करमा, झरपट और ढोल के साथ दशेहरा नृत्य करते हैं। विवाह के अवसर पर ये बिलमा नृत्य कराते हैं। बारात के स्वागत में किया जाने वाला परधौनी नृत्य आकर्षक होता है। छेरता नृत्य नाटिका में मुखौटों का अनूठा प्रयोग होता है। इनकी नृत्यभूषा और आभूषण भी विशेष होते हैं।

भील जनजाति समूह के लोग नृत्य को सोलो या नास कहते हैं। लाहरी, पाली, गसोलो, आमोसामो, सलावणी, दौड़ावणी, घोड़ी, भगोरिया आदि इस जनजाति समूह की बहु प्रचलित नृत्य-शैलियाँ हैं। भील नृत्य के साथ प्राय: बड़ा ढोल, ताशा, थाली, घंटी, ढाक, फेफरिया, पावली (बाँसुरी) आदि वाद्यों का प्रयोग करते हैं।

कोरकू जनजाति के नृत्य प्राय: मिथकों पर आधारित और पर्व-प्रसंगों से जुड़े होते हैं। चैत्र में देव दशेहरा, चाचरी और गोगोल्या, वैशाख में थापटी, ज्येष्ठ में ढाँढल और डोडबली, श्रावण में डंडा नाच, क्वांर में होरोरया और चिल्लुड़ी, कार्तिक की पड़वा पर ठाट्या तथा वैवाहिक अवसरों पर स्त्रियों का गादली नृत्य प्रचलित है। यह जनजाति नृत्य के साथ ढोल, ढोलक, मृदंग, टिमकी, डफ, अलगोझा, बाँसुरी, पवई, भूगडू, चिटकोरा, झांझ आदि वाद्य बजाते हैं। भारिया जनजाति के लोगों को भड़म, सैतम और करम सैला आदि नृत्य प्रिय हैं। ये नृत्य के साथ ढोल, ढोलक, टिमकी, झांझ और बाँसुरी बजाते हैं। युवतियाँ भी मंजीरा और चिटकुला बजाती हैं।

सहरिया जनजाति में स्वांग अधिक लोकप्रिय है। इसमें पुरुष ही स्त्रीवेश धारण करते हैं। ये मस्त होकर फाग नृत्य का आनंद लेते हैं तेजाजी और रामदेवरा प्रसंगों पर आधारित नृत्य विशेष रूप से करते हैं। ये चंग और ताशा वाद्यों का प्रयोग अधिक करते हैं। कोल, कोंदर और अन्य जनजातीय लोग भी विभिन्न अवसरों पर नृत्य-संगीत को विशेष महत्व देते हैं।

स्तंभकार लेखक आदिवासी संस्कृति और भाषाओं के अध्येता,
शब्दकोशकार और प्रतिष्ठित साहित्यकार है।
संपर्क : ए-1, लोटस, स्प्रिंग वैली, कटारा हिल्स, बागमुगल्या, भोपाल
मोबा. 8319163206

■

कला एक गहरी यात्रा

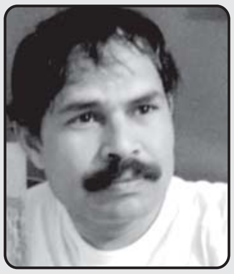

चेतन औदिच्य

भारतीय कला, यात्रा का समर्थन करती है। अर्थात आप चित्र देखते हुए उस चित्र पर ठहरें और फिर इस ठहराव के साथ यात्रा शुरू करें। ठहराव की यह यात्रा आपको मुदित करेगी, विचलित करेगी, शांत करेगी। भारतीय कला परंपरा में अनुशासन का उपयोग ही इतना रखा गया कि आप ठीक दिशा की यात्रा आरंभ कर सको। चित्रकला हो या संगीत उसके लिए विधागत अनुशासन बस यात्रा के आरंभ के लिए है। विधा का अनुशासन भी दर्शक को यही कहता है कि यात्रा पर निकलो,, और चित्र देखते हुए हम यात्रा पर निकल पड़ते हैं, बाहर-भीतर की यात्रा पर। यह निर्विकल्प यात्रा है। किसी कृति के कलापक्ष पर बात हो सकती है। उसके अच्छे बुरे की व्याख्या में बहुत कुछ कहा जा सकता है। किंतु भारतीय कला का 'ध्येय' यह नहीं है। उसका ध्येय है कि इस 'प्रेय' अर्थात कृति के माध्यम से दृष्टा की यात्रा आरंभ करवाना। और मजे की बात यह है कि एक ही कृति से अलग अलग दर्शक अलग अलग गंतव्य पर पहुंचते हैं। सबका गंतव्य उनका अपना निजी होता है। यही कारण है कि एक कृति की व्याख्या में अलग-अलग दर्शक-समीक्षक अलग- अलग बात कहते हैं।

कृति के विन्यास पर बात करें तो भारतीय कला का उद्देश्य अपने विन्यास के माध्यम से दर्शक के भीतर की यात्रा आरंभ करवाना ही रहा है। इसी हेतु कला अपने विन्यास में ही नाना जतन करती है। वह भिन्न भिन्न स्वरूप में आती है कि इससे यात्रा की प्राप्ति हो। विन्यास के इसी अलग अलग स्वरूप के कारण कला की अनेक शैलियां और उपशैलियां उत्पन्न हुई है। जैसे जैसे यह अनुभूति गहरी हुई कि कृति के बाह्य पक्ष को सरल से सरलतम होना चाहिए वैसे वैसे ही कलाकृति, आकार अलंकरण से मुक्त होती गई और हम बिंदु पर आकर ठहर गये। पाश्चात्य जगत जिसे अमूर्त कला का जन्मदाता माना जा रहा है वह अमूर्तन तो मानव जाति ने अपने बहुत आरंभिक काल में ही समझ मिलने प्रारंभ लिया था। इसमें भारतीय कला ने यह इज़ाफ़ा किया कि उसे आकारिकता से अलग नहीं मान कर उसी में समाहित कर लिया। इसके अनेकानेक उदाहरण हड़प्पा काल से ही मिलने प्रारंभ हो जाएंगे। हड़प्पा मुहर पर उस योगी को देखिए जिसे

डॉ जगमोहन मथोड़िया का रेखाचित्र

कलाकार महावीर वर्मा की कलाकृति

पशुपति शिव की मुहर हड़प्पा सभ्यता

जॉन मार्शल आदि शिव कहता है। उसमें आकारिकता का अनुपम अमूर्तन है। वह स्थिर कति अपने आवेग से किसी को भी सुदूर यात्रा पर ले जाती है।

वस्तुत: भारतीय कला का उद्देश्य मुक्ति की कामना ही रहा है। रंग. रेखा. आकार और इसी तड़प और संदर्भ से मुक्ति। ऐतिहासिक दौर की कृतियों यदि देखा जाए तो वे अपने आरंभ से ही इसी ही तड़प और प्यास के साथ रची गई कि इसके सहारे यात्रा आरंभ हो सके। और यात्रा के गंतव्य के रूप में मुक्ति को प्राप्त कर सके। कलाकार और दर्शक इस प्रक्रम में दो अवस्थाओं से गुज़रता है एक ठहराव और दूसरा यात्रा। कृति पर ठहराव जितना सघन होगा यात्रा उतनी ही तीव्र होगी। इन विरोधी दो स्थितियों में जो होता है उसे ही कला की साधना संज्ञा दी गई है। यह साधना ही कलाकार के मुक्ति पथ का विहान करती है।

कलाकार दिलीप शर्मा की पेंटिंग

अब प्रश्न यह उठता है कि कला-यात्रा करते समय पीछे क्या छूटता जाता है? और यात्रा किस तरफ बढ़ती है?

तो बहुत सरल उत्तर है कि यह यात्रा केवल बाहर की यात्रा नहीं है। यह अंदर बाहर की यात्रा है। कृति की रचना करना बाहर का और कृति के आस्वाद में होना, भीतर का खेल है। बाहर से कृति को देखेंगे तो कृति के साथ वह सब अतिरिक्त छूट जाता है जिसकी आवश्यकता नहीं, बस कृति शेष रहती है। और भीतर में जो कुछ छूटता जाता है, वह प्रेम, घृणा, कुंठा, विरोध, स्वीकार्यता अथवा आग्रह-दुराग्रह - कुछ भी हो सकता है। इस तरह छोड़ने और प्राप्ति के बीच कृतिकार या दर्शक से समस्त कला यात्रा की प्रक्रिया में कुछ छूटता जाता है। ठीक इसके समानांतर वह किसी अनिर्वचनीय को प्राप्त करता जाता है।

स्तंभकार लेखक: वरिष्ठ चित्रकार और कवि हैं।
सम्पर्क : 49, सी, जनता मार्ग, सूरजपोल अंदर,
उदयपुर- 313001(राज.) मो. 9602015389

ब्रज में होली के विविध रंग

डॉ. देवेन्द्र वर्मा 'ब्रजरंग'

पं. देवेन्द्र कुमार 'ब्रजरंग' आगरा नगर के एक संगीत प्रेमी परिवार में 20 मई 1960 को जन्मे बहुमुखी प्रतिभा के धनी पं. देवेन्द्र वर्मा देश के जाने माने कलाकार हैं। आप गायन, तबला एवं हारमोनियम वादन में समानाधिकार रखते हैं। आप एक कुशल वाग्गेयकार हैं तथा आपने ख्याल, तराना, तिरवट, चतुरंग, ध्रुपद-धमार, ठुमरी, दादरा, भजन एवं तबला-पखावज तथा कथक नृत्य की हजारों बंदिशों की रचना की हैं जिन्हें देश के अनेकों कलाकार गा, बजा तथा नाच रहे हैं। आप लेखनी के भी धनी हैं। आपके 50 से अधिक शोधपत्र विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। आपने अनेकों पुस्तकों का लेखन किया है। आपको संगीत सेवा के लिए कई सम्मान प्राप्त है। ऐसे ग्वालियर परम्परा के प्रतिनिधि कलाकर संगीतज्ञ पं. देवेन्द्र कुमार 'ब्रजरंग'। कला समय के संगीत चिंतन स्तंभ के लेखक पाठकों के लिए धारावाही संगीत विषय पर अपने आलेख देने हेतु कला समय आभारी है। इससे सुधी पाठकों एवं शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण सामग्री इस स्तंभ में प्रकाशित होगी।

-संपादक

ब्रज की होरी अति सरस. खेली श्यामा श्याम ।
गोपी गोप आनन्द में, तकत रहे अविराम ।।

भारत की लोक लुभावनी संस्कृति अपनी दिव्यता के लिये जानी पहचानी जाती है। यहाँ प्रेम, समरसता, सहजता, सरलता, आनन्द, आशक्ति, विविधता, ग्रहता आदि दूर देश के लोगों को निरन्तर आकर्षित करती रही है। भारतीय संस्कृति में पर्वो और त्यौहारों का सिलसिला वर्ष भर चलता रहता है जो जन-जन को आपस में जोड़कर रखता है। ये पर्व और त्यौहार तो एक बहाने हैं। इसके पीछे का रहस्य आपसी समरसता और भाईचारा है जिसके माध्यम से परिवारीजन और इष्ट मित्र अपनी अपनी व्यस्तताओं को त्यागकर एकजुट होते हैं. नाचते गाते है, खुशियाँ मनाते हैं और अपने सम्बन्धों को निरन्तर मजबूत बनाते हैं।

भारत भूमि ऋषियों और ज्ञानियों की धरा है। आदर्श और सुसंस्कृत समाज की कल्पना इन्हीं महापुरुषों की ही दैन है जो आदिकाल से कल कल निनाद करती हुई वैतरिणी गंगा की भाँति संस्कृति के रुप में अनवरत बहती चली आ रही है। भारत की संस्कृति में दृश्य श्रव्य कलाओं का एक खास योगदान देखने को मिलता है। यहाँ की छः ऋतुएँ में ऋतुराज बसंत है। ऋतुराज बसंत उद्दीप्त भावों, उमंग, उल्लास, प्रेम, साहचर्य को जाग्रत करता है बल्कि कहा जाय तो यह वासना, उत्तेजना, मिलन के लिये जाना जाता है। इसीलिये बसंत में रति और कामदेव का साम्राज्य माना जाता है।

बसंत का प्रमुख त्यौहार है होली। यह पर्व देश के कोने कोने में भिन्न भिन्न प्रकार से मनाया जाता है। एक ओर ब्रज की होली जगत प्रसिद्ध है दूसरी ओर राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश, बिहार, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल की होली की बात ही निराली है। पंजाब में होली होला मोहल्ला के रुप में मनाई जाती है। ब्रज में होली बसंत पंचमी से ही शुरु हो जाती है और पूरे फाल्गुन मास मथुरा, वृन्दावन, गोकुल, नंदगाँव, बरसाना, आदि में गायन, वादन और नृत्य के साथ जोर शोर से मनाई जाती है। होली के इस महापर्व में गीत संगीत का जोर शोर बहुतायत से रहता है। इस आलेख में ब्रज मंडल के विविध क्षेत्रों में मनाई जाने वाली होली का विवरण एवं होरी गायन की विविध विधाओं, उनके राग एवं तालों का शब्दचित्र सुधीजनों के समक्ष रखने का प्रयास किया जा रहा है।

ब्रज में होरी के विविध स्वरुप

ब्रज में पूरे फागुन मास लगभग 40 दिन तक सवा महिने होली की धूम रहती है। इसमें खूब गायन, वादन और नृत्य के साथ राधा कृष्ण की होरियों का वर्णन विशेष रुप से रहता है। ब्रज के विविध क्षेत्रों में होरी आयोजन भिन्न भिन्न स्वरुपों में आयोजित होता है जो निम्नवत है:

1. बरसाने की लड्डू मार होली :-

भक्तजन श्रीजी राधारानी को लड्डू अर्पित करके लड्डूओं की बौछार एक दूसरे पर करते हैं। बरसाने में लड्डू मार होली उत्सव लाड़िली जी के मंदिर में मनाया जाता

है। लड्डू मार होली फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी को मनाया जाता है। इस उत्सव लगभग 40– 50 लड्डुओं का प्रयोग होता है।

2. बरसाने एवं नंदगाँव की लट्ठमार होली:–

बरसाने में लट्ठमार होली फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की नवमी को मनाया जाता है। इस उत्सव में भाग लेने दूर दूर से एवं अन्य देशों के हजारो श्रद्धालु आते हैं। यह उत्सव राधाजी के गाँव बरसाना एवं श्रीकृष्ण के गाँव नंदगाँव में मनाया जाता है।

3. फूलों की होली वृन्दावन :–

फूलों की होली वृन्दावन में श्री बाँके बिहारी मंदिर में खेली जाती है। यह होली वृन्दावन में रंग भरी एकादशी से पूर्णिमा और प्रतिपदा को यह उत्सव मनाया जाता है। इस उत्सव में रंगों का प्रयोग नहीं होता। यह उत्सव प्रकृति प्रेम को भी दर्शाता है। यह ब्रज का खास उत्सव है जिसमें दूर देश के हजारों श्रद्धालु शामिल होते हैं।

4. छड़ीमार होली गोकुल:–

छडीमार होली का आयोजन गोकुल में किया जाता है। यह उत्सव फाल्गुन मास की द्वादशी को पारम्परिक रुप से मनाया जाता है। छड़ीमार होली भी ब्रजमंडल का सुप्रसिद्ध उत्सव है। गोकुल में गोपिया लाठी की जगह छड़ियाँ लेकर चलती है तथा हुरियारों पर छड़ियाँ बरसाती है।

5. होलिका दहन मथुरा:–

होलिका दहन का उत्सव देश के कोने कोने में अर्थात सभी जगह मनाया जाता है। मथुरा में उत्सव फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष में पूर्णिमा को शुभमुहूर्त के अनुसार मनाया जाता है।

6. रंग गुलाल की होली मथुरा:–

ब्रज में रंग गुलाल की होली लगभग पूरे फागुन मास खेली जाती है। विशेषत: यह पूर्णिमा और दूज के दिन का उत्सव है लेकिन ब्रजवासी पूरे फागुन मास रंग गुलाल की होली का मस्ती से आनन्द लेते हुये मनाते है।

7. दाऊ का हुरंगा :–

मथुरा नगर से लगभग 30 किलोमीटर पर दाऊ जी का मंदिर है। दाऊ जी मंदिर का हुरंगा विश्व प्रसिद्ध उत्सव है। यह उत्सव होली के दूसरे दिन मनाया जाता है जिसमें होली खेलने के बाद हुरियारे और हुरियारिनें हुरंगा के लिये मंदिर में एकत्रित होते हैं। हुरियारिनें हुरियारे के ऊपर खूब कोड़े बरसाती है। कोडे के साथ साथ हुरियारिनें पोतने का भी उपयोग करती है। खूब रंग बरसता है और आनन्द ही आनन्द होता है।

8. दही और हल्दी की होली:–

दही और हल्दी की होली वृन्दावन के राधारमण जी के मंदिर में मनाया जाता है।

9. मंदिरों में फाग और समाज गायन:–

ब्रज मंडल के प्राय: सभी मंदिरों में होली का आयोजन आवश्यक रुप से होता है तथा समाज गायन का आयोजन होता है जिसमें समाजी गायक वादक मंदिरों में एकत्रित होकर होरी एवं धमार गायन करते हैं। पखावज, सारंगी और मंजीरा की धूम रहती है। खूब आनन्द होता है।

10. फालैन में होली में से पन्डा का गुजरना:–

मथुरा जिले में एक गाँव फालैन है जहाँ कंडो का विशाल ढेर बनाया जाता है, इस ढेर में आग लगाई जाती है और उस जलती होली में से फालैन के पुरोहित अर्थात पन्डा निकलते है। यह परम्परा काफी पुरानी है जो आज भी अनवरत जारी है। फालैन गाँव में भक्त प्रहलाद का मंदिर और एक कुन्ड भी है। इस मंदिर और कुन्ड के पास ही यह आयोजन सम्पन्न होता है।

11. कीचड़ की होली:–

ब्रज मंडल में कीचड़ की होली की होली की बहुत पुरानी परम्परा है। यह होली ब्रज अंचल के हाथरस, नौहझील, सुरीर आदि ग्रामीण क्षेत्रों में खेली जाती है। हुरियारिनें हुरियारों पर मिट्टी घोलकर डालती हैं। ब्रज की मिट्टी में सराबोर होकर भक्तजन अपने आपको धन्य मानते हैं।

ब्रज की रज चंदन बने माटी बने अबीर,
कृष्ण प्रेम रंग घोल के लिपटें सब ब्रजवीर।

ब्रज में होरी गायन की विधायें:

ब्रजान्चल में होली अनेकानेक प्रकार से मनाई जाती है साथ ही साथ गायन वादन सभी स्थलों पर समान रुप से चलता है। खूब ढोलक, झाँझ, मंजीरा, मृदंग, सारंगी आदि तो सैकड़ों वर्षों से बजते चले आ रहे हैं आजकल हारमोनियम और कीबोर्ड आदि इलैक्ट्रोनिक वाद्य यन्त्रों का

प्रयोग भी देखने को मिलने लगा है। ब्रज में प्रचलित होरी गायन की प्रमुख विधायें निम्नवत हैं:-

1. रसिया ।
2. ठुमरी अंग की होरी ।
3. पुष्टिमार्गीय परम्परा की होरी ।
4. धमार गायन ।
5. लोकगीत शैली की होरी और भजन ।

1. रसिया:

ब्रज की होरी में रसिया का महत्वपूर्ण स्थान है। यह विधा सर्वाधिक प्रचलित और जन सामान्य की विधा है जिसे ब्रज अंचल में बच्चे, युवा, बूढ़े, स्त्री पुरुष सभी समान रूप से गाते हैं। रसिया मूल रूप से परम्परागत लोक धुनों पर ही गाये जाते हैं जिनमें मूल रुप से शुद्ध स्वरों का प्रयोग ही देखने को मिलता है। कुछ रसियाओं में दोनों गंधार और दोनों निषाद का प्रयोग भी होता है। आज के प्रगतिवादी समय में कुछ नवरचित रसिया भी सुनने को मिलते हैं जिनमें कुछ अलग-अलग स्वरावलियों का प्रयोग और आधुनिक वाद्ययन्त्रों का प्रयोग भी हुआ है। लेखक ने भी अनेकों होरी के रसियाओं की रचना की है। कुछ प्रचलित होरी के रसिया उदाहरणार्थ निम्नवत प्रस्तुत है:

1. 'आज बिरज में होरी रे रसिया, होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया'।
2. 'होरी खेलन आयो श्याम आज याहे रंग में बोरो री' ।
3. 'नेक आगे आ श्याम तोपे रंग डारुँ'।
4. 'होरी खेल रहे नंदलाल मथुरा की कुंज गलिन में'।
5. 'होरी खेलूँगी श्याम संग जाय, सखी भागन ते फागुन आयो'।

राधे देखत नैन पसार, श्याम आवें खेलन होरी।
आवें खेलन होरी, श्याम आवें खेलन होरी ।।1।।

तकत तकत बड़ी देर भई है, कान्हा आवे आस यही है,
लहंगा चोरी पहराय, बनाऊँ छोरा ते छोरी।
राधे देखत नैन पसार, श्याम आवें खेलन होरी ।।2।।

बरसाने में धूम मचावें, नाच नाच आनन्द मनावें,
एक होय श्यामा श्याम, प्रेम रस बरसे चहुँ ओरी।
राधे देखत नैन पसार, श्याम आवें खेलन होरी ।।3।।

गुजा गुजिया लडुआ मेवा, खवाय कान्ह को करूँगी सेवा,
नैनन नैन मिलाय,करूँगी नैनन बरजोरी ।
राधे देखत नैन पसार, श्याम आवें खेलन होरी ।।4।।

कान्ह कुँवर मेरे नैन बसत है, मीठी मीठी बात करत है,
'ब्रजरंग' सपने में आय, बनावे सूरत अति भोरी।
राधे देखत नैन पसार, श्याम आवें खेलन होरी ।।5।।

एक स्वरचित होरी का रसिया सुधीजनों के समक्ष प्रस्तुत है जिसमें माता पार्वती भोले नाथ से होली खेलने वृन्दावन चलने का आग्रह कर रही हैं:-
भोला चलो वृन्दावन धाम, संग मिलि खेलेंगे होरी।
खेलेंगे होरी, श्याम संग खेलेंगे होरी ।।
भोला चलो वृन्दावन धाम...
ग्वाल सखी को भेष बनावें, गली-गली में धूम मचावें,
कान्हा को ले संग, चलेंगे बरसाने ओरी ।।1।।
भोला चलो वृन्दावन धाम...
सोने की पिचकारी मंगाओ, केसर टेसू के रंग बनाओ,
मिलि जाय श्यामा श्याम, संग होगी ब्रज होरी ।।2।।
भोला चलो वृन्दावन धाम...

रंग गुलाल की धूम मचेगी, गोप गोपी कोऊ नाहिं बचेगी,
मुख को कर दें लाल, बनावें छोरा को छोरी ।।3।।
भोला चलो वृन्दावन धाम...
लडुआ पेड़ा गुजिया खावें, खाय खास आनन्द मनावें,
भूलि जायें मरजाद, आनन्द रस बरसे चहुँ ओरी ।।4।।
भोला चलो वृन्दावन धाम....
'ब्रजरंग' ब्रज की महिमा न्यारी, खेलत संग सखि राधा प्यारी,
सब मिलि है जाय एक, करें नहिं कोऊ तोरी मोरी ।।5।।
भोला चलो वृन्दावन धाम...

2. ठुमरी अंग की होरी :

ठुमरी अंग की होरी संगीतज्ञों और शास्त्रीय संगीत में प्रशिक्षित गायक गायिकायें ही अधिकांशत: गाते हैं। ये होरी मुख्य रुप से राग काफी, पीलू, देश, खमाज, कल्याण, भैरवी, जोगिया आदि रागों में सुनने को मिलती हैं लेकिन राग काफी की होरियों सर्वाधिक प्रचलित हैं। इन

होरियों में

मुख्य रूप से दीपचंदी ताल, चाचर ताल, जतताल, अद्धाताल, पंजाबी ताल, धुमाली, तीनताल, कहरवा और दादरा ताल का प्रयोग देखने को मिलता है। ठुमरी अंग की होरी के कुछ उदाहरण निम्नवत है–

1. पा लाँगू कर जोरी, श्याम मोसे खेलो न होरी। (राग काफी, दीपचंदी ताल)

2. डारो डारो जिन डारो न मोपे रंग।(राग भैरवी, तीनताल)

3. खेलत श्यामा श्याम, ललित ब्रज में होरी। (राग काफी, दीपचंदी ताल)

4. होरी खेलन कैसे जाऊँ।(राग पीलू, दीपचंदी ताल)

राग पहाडी और दीपचदी ताल में निबद्ध एक स्वरचित स्वना प्रस्तुत है:

मोपे रंग ना डारो गोपाल ।
मैं भोरी बरसाने की छोरी, काहे करत बेहाल ।।1।।
सब जानत तुम मानत नाहीं, छिन छिन चलत कुचाल ।
ग्वाल बाल संग रोकत मारग, कहत बनें नहीं हाल ।।2।।
रंग गुलाल मलत मुख भर भर, लाल करत हो गाल ।
तुम छलिया जानत नहिं जिय की, नाचत हो दे ताल ।।3।।
मैं गोरी वृषभानु किशोरी, जानत हूँ सब चाल ।
कहत बनें नहिं तेरी चतुराई, 'ब्रजरंग' करो निहाल ।।4।।

3. पुष्टिमार्गीय परम्परा की होरी :–

पुष्टिमार्गीय परम्परा भक्ति और सेवा का आध्यात्मिक मार्ग है जिसकी स्थापना महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य जी ने की थी। इस परम्परा में भगवान कृष्ण के प्रति समर्पित भाव से सेवा पूजा की जाती है। इस सेवा में गाये जाने चाले पदों को हवेली संगीत के पद कहा जाता है। इन हवेली पदों में भगवान की अष्टयाम सेवा के पद संकलित है जिन्हें समयानुसार पारम्परिक रुप से गाया जाता है। होरी की अनेकों रचनायें भी इनमें संकलित हैं जिनके उदाहरण निम्नवत दिय गये हैं–

1. लाल गोपाल गुलाल हमारी, आँखिन में जिन डारो जू ।
बदन चन्द्रमा नैन चकोरी, इन अन्तर जिन पारो जू ।।
2. गोकुल गाम सुहावनों, सब मिलि खेलें फाग,
मोहन मुरली बजावें, गावें गोरी राग ।।

4. धमार गायन :–

ब्रज मंडल में समाज गायन की समृद्ध परम्परा है। समाज गायन मूल रुप से कृष्ण मंदिरों में होता है जिसके लिये मंदिर प्रशासन द्वारा कीर्तनियाँ गायक नियुक्त रहते हैं। पुष्टिमार्गीय परम्परा में समाज गायन अनिवार्यत: होता है। धमार गायन ब्रज की विशिष्ट शैली है जिसमें भगवान कृष्ण की होली लीला का विशेषत: वर्णन होता है। धमार गायन शैली पुरुष गायन शैली है जिसमें मींड़ और गमक का विशेष प्रयोग होता है। धमार के साथ पखावज वादन होता है तथा धमार नामक 14 मात्रा की ताल ही बजती है। धमार गायन शैली मंदिरों की ही शैली है और इसका जन्म सम्भवत: ब्रज परिक्षेत्र में ही हुआ है। यह गंभीर गायन शैली है। इसके प्रणेता के रुप में ग्वालियर के राजा मान सिंह तोमर को माना जाता है। राजा मान सिंह तोमर ने इसके प्रचार प्रसार में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। ब्रज से ही यह गायन शैली देश के भिन्न भिन्न स्थानों पर प्रचलित हुई तथा डागुर वाणी, खंडार वाणी, गौबरहार वाणी तथा नौहार वाणी के रुप में प्रचलित हुई है। ब्रज के धमार गायकों में पुराने गायकों में स्वामी हरिदास का नाम अग्रगण्य है। आधुनिक गायकों में पंडित लक्ष्मण चौबे, पंडित बालजी चौबे, पंडित केशव देव चतुर्वेदी, डा. सत्यवान शर्मा, पंडित सुखदेव चतुर्वेदी का नाम प्रमुख है। धमार की कुछ प्रचलित धमार की रचनायें निम्नवत है:–

1. ब्रज में होरी खेलत बिहारी, मारत पिचकारी नर नारी। राग मधुवंती

2. कैसे खेलत फाग हो तुम ढीठ लंगर हम सन। राग शुद्ध सारंग

2. ब्रज में आज मची है होरी घर घर गायें मिलि फाग धमार। राग यमनी बिलावल

4. अब में कैसे खेलूँ री देया फाग फागुन में हरि बिन सूनो लागत। राग अहीर भैरव

5. लोकगीत शैली की होरी और भजन:–

ब्रज मंडल में उपरोक्त विधाओं के अतिरिक्त होरी लोकगीत और भजनों का भी खूब प्रचलन है। ये होरी भजन जनसाधारण में खूब प्रचलित हैं और घरों में तथा होरी की महफिलों में खूब गाये जाते हैं। होरी भजन जन सामान्य की विधा है। ब्रजमंडल में बसंत पंचमी से लेकर दूज तक इन भजनों का खूब गायन होता है। धुलेन्डी और दूज के दिन लोग ढोलक मजीरा लेकर गाते बजाते घर–घर होरी भजन गाते हुये जाते हैं, रंग गुलाल लगाते हैं इस अवसर पर होरी भजनों के अतिरिक्त रसिया और लोक भजन भी आम लोगों द्वारा गाये जाते हैं। इस अवसर पर धमार और ठुमरी शैली की होरियों का गायन नहीं होता। कुछ होरी भजन उदाहरणार्थ प्रस्तुत है।

1. होरी में आज जराय दीजो या मन के सब दुरभाव ।
2. होरी खेल रहे नंदलाल मथुरा की कुंज गलिन में।
3. फागुन में उड़े रे गुलाल कहियो नंदरानी से।
4. मेरी चुंदरी में पड़ गयो दाग री ऐसो चटक रंग डारो।

इस प्रकार ब्रज आध्यात्मिक क्षेत्र के साथ साथ सांस्कृतिक सम्पदा का अद्भुत खजाना है। यहाँ राधा कृष्ण का प्रेम, सदभाव, आपसी सामंजस्य, मेलजोल अपनी खास पहचान रखता है। सभी कला और संस्कृति प्रेमियों को इस धर्म और संस्कृति के अद्भुत भंडार का दर्शन अवश्य करना चाहिये ।

स्तंभकार लेखक वरिष्ठ संगीतकार एवं लेखक हैं।
संपर्क : 353 भूतल, सूर्य नगर फैस–2, सेक्टर 91, फरीदाबाद, हरियाणा
मोबा. 9999539998

■

व्यंग्य आलेख

क्या व्यंग्य में आलोचना का स्थान होना चाहिए

डॉ. सुरेश गर्ग

डा. सुरेश गर्ग क्या तथाकथित व्यंग्य लेखन में कभी आलोचना का स्थान रहा है? क्या आज होना चाहिए? जब साहित्य में हर विधा के आलोचक-समालोचक हुए हैं, तब व्यंग्य में क्यों नहीं हुए? 'व्यंग्य यात्रा यू ट्यूब मासिकी' पत्रिका के अंतर्गत 'व्यंग्य में आलोचना आलोचना: का व्यंग्य' सुन और पढ़कर दिल-ओ-दिमाग़ में ऐसे प्रश्नों को लेकर क्यों ऽऽऽऽ की प्रतिध्वनि बार-बार होने लगी। जबकि पिछले तीन दशक से मैं स्वयं अपने व्यंग्य लेखन के लिए कोई आलोचक तो क्या, उसे कोई मात्र बकवास कहकर भाव देने वाला भर मिल जाये, तो बाकी जुगाड़ लगायी जा सकती है, परन्तु नतीजा शून्य...। यहाँ नाम तो बड़े-बड़े हैं, परन्तु दर्शन द्रोणाचार्यी...। वर्तमान विज्ञापनी व्यापारिक पूंजीवादी व्यवस्था में मारीची मृगतृष्णा के अलावा मिल ही क्या सकता है? और जब व्यंग्य के शीर्ष हस्ताक्षर श्री प्रेम जनमेजयजी को सुना. व्यंग्य-विधा के क्षेत्र में आलोचकों की रुचि बहुत कम या यदाकदा ही हुआ करती थी, लेकिन व्यंग्य यात्रा के माध्यम से इसमें अनेक ख्यातनाम आलोचकों ने भाग लेकर इसे समृद्ध किया है। तब लगा कि यह समस्या तो शीर्ष तक है। उन्होंने यह भी बताया कि शीर्षस्थ आलोचक स्व. श्री नामवरसिंह जी ने उनसे व्यंग्य को लेकर कहा था-व्यंग्य का जो अंग है, वह डंक होना चाहिए। यह सुनकर तो मुझ अल्पज्ञानी की बुद्धि फिर गयी... घनचक्कर हो गयी....। साहित्य में ऐसी अहित्य की बात कैसे हो सकती है? क्योंकि सर्जन होने के नाते डंक मारना यानी शरीर के अंदर ज़हर छोड़ना होता है...! जबकि साहित्य तो सब के हित के लिए होता है, अत: यदि व्यंग्य साहित्य की विधा है तो वह बिना दर्द या तकलीफ दिये समाज से सड़ा-गला बीमार तत्त्व निकालने वाली सर्जरी के बाद संजीवनी मलहम-सा सुकून देने वाला होना चाहिए। बहुत सोचने, समझने और पढ़ने के बाद पल्ले पड़ा कि श्री नामवरसिंह जी का कहा तो गलत हो नहीं सकता, मेरी बुद्धि का ही फेर है। उनका मतलब डंक यानी कलम की जीभ होगा...! कलम ऐसी नुकीली और मारक होनी चाहिए कि वह कीटाणुरहित सर्जिकल सुई की तरह चुभने पर मात्र मीठा दर्द देकर शरीर के अंदर मौजूद कांटे को बिना किसी तकलीफ़ के बाहर निकाल दे, या फिर सटीक व्यंजना के रूप में मानस की तरह क्षीर-नीर अलग करके सत्य को उजागर कर दे। शायद, इसीलिए 'परसाई जी' ने व्यंग्य को स्पिरिट कहा है। साहित्य की आत्मा। उसके बिना साहित्य, संस्कृति एवं मानवता जड समान है, अस्तित्वहीन-से हैं। शायद, इसीलिए एक समय तक इस विधा को व्यंग कहा गया है, मतलब देहहीन, अंगरहित, विरूप, निर्गुण, निराकर आदि। महर्षि जनक की तरह वैदेही! लेकिन आज तो व्यंग्य शब्द प्रचलित है। उसका मललब भी व्यंजना शक्ति द्वारा ध्वनित होना होता है। परोक्ष संकेत। गोण सांकेतिक अर्थ। व्यंजना शक्ति (आत्मा) के बिना कोई भी साहित्य कभी रचा ही नहीं गया...! सभी मज़हबी दर्शनशास्त्र वक्रोक्ति अलंकारों के माध्यम से ही पूर्णता पा सके हैं। विडंबना यह है कि पश्चिमी सभ्यता की नकल करते-करते भारतीय आध्यात्मिक ऊर्ध्वगति प्रदान करने वाला व्यंग शब्द, अब सैटाइर, विट्स, जोक, प्रहसन, उपहास, विद्रूपता, हर्सी-मजाक, हाजिर जबावी आदि व्यंग्य के रूप में फूहड़ मनोरंजन का साधन बनता-सा चला जा रहा दिखता है....। 'परसाई जी' ने जैसा लिखा, वैसा ही जीने की कोशिश की, इसलिए उनका लिखा आत्मा की तरह अमिट, अनश्वर और कालजयी है। व्यंग्य यानी सत्य का प्रकटीकरण। एक कसौटी। अत: व्यंग्य यानी सत्य मतलब आत्मा की आलोचना कैसे हो सकती है? शायद, इसीलिए भारतीय पुरातन संस्कृति में आलोचना का स्थान न होकर शास्त्रार्थ की परंपरा पाई जाती है। आलोचना की नहीं, भाष्य की परंपरा रही है। सच्चा व्यंग्य या व्यंग केवल करूणा पैदा करता है। समाज और व्यवस्था को मानवता का संदेश देता है। आगाह करता है। विद्रूपताओं को उजागर करता है। क्या आज ऐसा असर कहीं देखने को मिलता है, जिसकी सख्त ज़रूरत है। प्रश्न यह भी उठते हैं कि आज व्यंग्य की सार्थकता (सारतत्त्व) को कसने की कसौटी क्या है? जौहरी का चयन कैसे हो? कथनी और करनी में कितना सामंजस्य है ?

व्यंग्य की परिभाषा क्या होनी चाहिए? आलोचना-समालोचना करना ही है तो डंक शब्द के गूणार्थ पर करना चाहिये, क्योंकि नामवरसिंह जी का कहा बेमानी नहीं हो सकता। वरना कबीरदास जी कह गये हैं सांच कहूं तो बारिहै, झूठे जग पतियाई। ये जग काली कूकरी, जो छेड़े तो खाइ।। अत: जो चल रहा है. उसे चलने देना चाहिए। बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे?

मो. 9425131010

■

मातृभाषा हमारी सांस्कृतिक विरासत और पहचान

सुनील कुमार महला

21 फरवरी को अन्तरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है। मातृभाषा यानी कि हमारी मां-बोली। मातृभाषा मतलब वह भाषा, जिसे हम जन्म लेने के बाद सबसे पहले सीखते हैं। मैथिलीशरण गुप्त जी ने कहा है कि है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी भरी। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी। सरल शब्दों में कहें तो मातृभाषा मां की गोद की भाषा होती है। मां-बोली, मां-बोली होती है, जिसका स्थान दुनिया की अन्य कोई भी भाषा कभी भी नहीं ले सकती है, क्यों कि यह हमारी मातृभाषा ही होती है, जो हमारी क्षमताओं को अच्छी तरह से उजागर करने की अभूतपूर्व क्षमताएं रखतीं हैं। शायद यही कारण है कि मातृभाषा शिक्षा हर बच्चे की क्षमताओं को उजागर करने की कुंजी कहा जाता है। हिन्दी हम सबकी भाषा है। जन-जन की भाषा है। हमारी मातृभाषा है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि दक्षिण अफ्रीकी क्रांति के महानायक नेल्सन मंडेला ने कहा था यदि आप किसी व्यक्ति से उस भाषा में बात करते हैं, जिसे वह समझता है, तो वह उसके दिमाग में चली जाती है. वहीं, अगर आप उससे उसकी भाषा में बात करते हैं, तो वह उसके दिल तक जाती है। उल्लेखनीय है कि सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में हिन्दी महानतम स्थान रखती है। यह सरल, सुबोध, सहज व वैज्ञानिक शब्दावली लिए विश्व की एक सिरमौर भाषा है। यदि हम यहां आंकड़ों की बात करें तो 600 मिलियन से अधिक भाषाओं के साथ हिंदी विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, साथ ही भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। गौरतलब है कि संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत हिंदी को आधिकारिक उद्देश्यों के लिये अंग्रेज़ी के साथ भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। इसे 8वीं अनुसूची में भी सूचीबद्ध किया गया है, जिसमें आधिकारिक प्रयोग के लिये मान्यता प्राप्त 22 भाषाएँ शामिल हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि जीवन के छोटे से छोटे क्षेत्र में हिन्दी अपना दायित्व निभाने में समर्थ है। महात्मा गांधी जी के शब्दों में कहना चाहूंगा कि 'हिन्दी भाषा का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है।' वास्तव में,राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है। डॉ.राजेंद्र प्रसाद ने कहा है कि हिंदी भाषा और हिन्दी साहित्य को सर्वांगसुंदर बनाना हमारा कर्तव्य है। वास्तव में हमें अपनी मातृभाषा को अधिकाधिक महत्व देना चाहिए, क्यों कि वाल्टर चेनिंग के शब्दों में 'विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है।' वास्तव में भाषा किसी भी देश व समाज की संस्कृति का केंद्रीय बिंदू होती है। कहना ग़लत नहीं होगा कि मातृभाषा मात्र अभिव्यक्ति या संचार का ही माध्यम नहीं होती है,अपितु यह हमारी संस्कृति और संस्कारों की सच्ची संवाहिका भी होती है। माखनलाल चतुर्वेदी ने यह बात कही है कि हिन्दी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है। मातृभाषा में ही व्यक्ति ज्ञान को उसके आदर्श रूप में सही तरह से आत्मसात कर पाता है। सच तो यह है कि मातृभाषा से ही सभ्यता एवं संस्कृति पुष्पित-पल्लवित और सुवासित होती हैं।

मातृभाषा हमारी असली पहचान होती है। कहना चाहूंगा कि भारत को अगर एकता के सूत्र में बांधना है तो हमें अपनी मातृभाषा को उचित सम्मान तो देना ही होगा साथ ही साथ हमें अपनी मातृभाषा पर गर्व की अनुभूति भी करनी होगी। सच तो यह है कि मातृभाषा से ही हमारे राष्ट्र और समाज के उत्थान का मार्ग प्रशस्त होगा। हरिऔध जी ने कहा है कि कैसे **निज सोऐ भाग को कोई सकता है जगा, जो निज भाषा-अनुराग का अंकुर नहिं उर में उगा।** मातृभाषा का महत्व किस कदर है इस बात का पता हमें सैयद अमीर अली मीर जी के इस कथन से पता चलता है जिसमें उन्होंने कहा था कि **देश में मातृ भाषा के बदलने का परिणाम यह होता है कि नागरिक का आत्मगौरव नष्ट हो जाता है, जिससे देश का जातित्व गुण मिट जाता है। सच तो यह है कि मातृभाषा मनुष्य के विकास की आधारशिला होती है। यह मातृभाषा ही होती है** जिसके माध्यम से ही वह भावाभिव्यक्ति, विचार और विचार-

विनिमय करता है। सरल शब्दों में कहें तो मातृभाषा ही किसी भी व्यक्ति के शब्द और संप्रेषण कौशल की उद्गम होती है। यह हमें राष्ट्रीयता से जोड़ती है और देश प्रेम की भावना उत्प्रेरित और संचारित करती है। मातृभाषा सामाजिक व्यवहार एवं सामाजिक अन्त:क्रिया की भी आधार होती है। यही कारण भी है कि प्राय: सभी समाज अपनी शिक्षा का माध्यम भी मातृभाषा को ही बनाते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि मातृभाषा का नष्ट होना राष्ट्र की प्रासंगिकता का नष्ट होना होता है। कोई भी भाषा सीखना ग़लत नहीं होता है लेकिन अपनी मां-बोली को तिरस्कृत और दरकिनार कर अन्य भाषाओं को अपनाना ठीक नहीं है। **अंग्रेजी हो या कोई भी अन्य भाषाएं उनका ज्ञान प्राप्त करना एक अच्छा कदम है, लेकिन मातृभाषा का स्थान कोई अन्य भाषा नहीं ले सकती।** सच तो यह है कि अपनी मातृभाषा से अलग होकर किसी देश, अस्तित्व, पहचान ही खत्म हो जाती है। इसीलिए संविधान में 22 भाषाओं को राष्ट्रीय भाषाओं का दर्जा प्रदान किया गया। देश के विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों में बोली जाने वाली ये 22 राष्ट्रीय भाषाएं भारत की विविध और समृद्ध संस्कृति का आधार हैं। इन 22 भाषाओं में क्रमश: बांग्ला, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगू, उर्दू, बोडो, संथाली, मैथिली और डोगरी शामिल हैं। मातृभाषा के महत्व को रेखांकित करते हुए भारतेंदु हरिश्चंद्र को लिखना पड़ा-**'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटन न हिय के सूल'।** अर्थात मातृभाषा के बिना किसी भी प्रकार की उन्नति संभव नहीं है। भाषा एक सेतु के रूप में काम करती है और **हिंदी भाषा, किसी अन्य भाषा की तुलना में हमारे जीवन, हमारे देश की संस्कृति और यहां तक कि मौलिकता के कहीं अधिक निकट है।** आज फ्रांस में फ्रेंच, जर्मनी में जर्मन भाषा में, चीन में चीनी मंदारिन का हर क्षेत्र में प्रयोग होता है, तो हम क्यों न हर क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दें ? पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि महाराष्ट्र सरकार ने अपने राज्य के सरकारी कार्यालयों में मराठी भाषा के उपयोग के निर्देश जारी किए हैं। इतना ही नहीं, कुछ समय पहले ही पिछले साल ही यानी कि वर्ष 2023 में पंजाब सरकार ने भी दुकानदारों और व्यापारियों को अपनी दुकानों या प्रतिष्ठानों के बोर्ड आदि पंजाबी में लिखने की अपील की थी। यह ठीक है कि कोई भी राज्य अपने यहां की भाषा को आगे बढ़ाने के लिए समय-समय पर ऐसा करते हैं और करना भी चाहिए, लेकिन क्या यह हम लोगों की यह एक सामूहिक जिम्मेदारी नहीं बनती है कि हम अपनी मातृभाषा के महत्व को समझें और उसे अपने जीवन में आत्मसात करें। आज विश्व के अनेक विकसित देश अपनी मातृभाषा को बढ़ावा देने की दिशा में लगातार काम कर रहे हैं। इसी क्रम में फ्रांस, जर्मनी, इटली सहित दुनिया के कई विकसित देशों ने अंग्रेजी भाषा तक सीमित न रहते हुए अपनी राष्ट्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए अनेक प्रभावी व दूरगामी कदम उठाए हैं।आज अपनी लोकभाषा/मातृभाषा में कितने अच्छे और गूढ़ अर्थ के लोकगीत, बाल कविताएं, दोहे, छंद चौपाइयां उपलब्ध हैं, बहुत सा साहित्य भी उपलब्ध है,जिन्हें हम प्राय: भूलते जा रहे हैं। बहरहाल, मातृभाषा हिंदी पर अनेक विद्वानों द्वारा विचार प्रकट किए गए हैं। मसलन, डॉ. फादर कामिल बुल्के ने यह बात कही है कि **संस्कृत माँ, हिन्दी गृहिणी और अंग्रेजी नौकरानी है।** ग्रियर्सन ने कहा है कि **हिन्दी संस्कृत की बेटियों में सबसे अच्छी और शिरोमणि है।** महात्मा गांधी का विचार यह है कि हिंदुस्तान के लिए देवनागरी लिपि का ही व्यवहार होना चाहिए, रोमन लिपि का व्यवहार यहाँ हो ही नहीं सकता। बहरहाल,21 फरवरी को अन्तरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाते हैं, ताकि हम अपनी भाषा को बढ़ावा दे सकें और उसे आत्मसात कर सकें। वास्तव में इस दिवस को मनाने का उद्देश्य है कि विश्व में भाषायी एवं सांस्कृतिक विविधता और बहुभाषिता को अधिक से अधिक बढ़ावा मिले। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 2025 दुनिया भर के लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली सभी भाषाओं के संरक्षण और सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक पहल है और सर्वप्रथम यूनेस्को ने वर्ष 1999 में 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में घोषित किया था और वर्ष 2000 से संपूर्ण विश्व में यह दिवस मनाया जाता है। इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के पच्चीस वर्ष होने जा रहे हैं। गौरतलब है कि यूनेस्को द्वारा इस दिवस की घोषणा 17 नवंबर, 1999 को की गयी थी। कहना ग़लत नहीं होगा कि इस दिन को मनाने का मकसद, भाषाई विविधता के महत्व को रेखांकित करना है। वास्तव में,यह दिन बांग्लादेश द्वारा अपनी मातृभाषा बांग्ला की रक्षा के लिये किये गए लंबे संघर्ष को रेखांकित करता है। बांग्लादेश में भाषा आंदोलन के उपलक्ष्य में मातृभाषा दिवस की स्थापना की गई। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि ढाका विश्वविद्यालय के छात्रों ने आम लोगों की मदद से बड़े पैमाने पर मार्च और सभाएँ आयोजित कीं। 21 फरवरी, 1952 को प्रदर्शनकारियों पर पुलिस ने गोली चलाई। इसमें तीन लोगों की मौत हो गई और सैकड़ों लोग घायल हो गए। अपनी मातृभाषा के लिए लोगों का बलिदान इतिहास में एक असामान्य घटना थी। यह भी उल्लेखनीय है कि कनाडा में रहने वाले एक बांग्लादेशी रफीकुल इस्लाम ने 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाने का सुझाव दिया था। भाषा किसी भी देश की असली विरासत और संस्कृति होती है। कहना ग़लत नहीं होगा कि किसी देश की सांस्कृतिक विविधता को बनाए रखने के लिए स्वदेशी भाषाओं का जिंदा रहना बहुत आवश्यक और जरूरी है। आज के इस युग में मातृभाषाओं का संरक्षण करना और उन्हें बढ़ावा देना बहुत ही जरूरी है, क्यों कि आज के इस युग में भाषाएं विशेषकर मातृभाषाएं लगातार विलुप्त होती चली जा रही है। कहना ग़लत नहीं होगा कि यदि किसी भी स्थान पर कोई भाषा विलुप्त होती है इसका सीधा असर हमारी सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत पर पड़ता है, इसलिए विशेषकर आज मातृभाषाओं का

संरक्षण किया जाना बहुत ही जरूरी और आवश्यक हो गया है। संयुक्त राष्ट्र (यूएन) के अनुसार, हर दो सप्ताह में एक भाषा विलुप्त हो जाती है और विश्व एक पूरी सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत खो देता है। कहना चाहूंगा कि वैश्वीकरण के कारण, बेहतर रोजगार के अवसरों के लिए विदेशी भाषाओं को सीखने की होड़ मातृभाषाओं के लुप्त होने का एक प्रमुख कारण है। दुनिया में बोली जाने वाली अनुमानित 6000 भाषाओं में से कम से कम 43% लुप्तप्राय हैं। केवल कुछ सौ भाषाओं को ही वास्तव में शिक्षा प्रणालियों और सार्वजनिक डोमेन में जगह दी गई है, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भाषा होठों पर शराब है। दूसरी भाषा का होना दूसरी आत्मा का होना है और मातृभाषा हमारी असली आत्मा है। गौरतलब है कि संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2022 और वर्ष 2032 के मध्य की अवधि को स्वदेशी भाषाओं के अंतर्राष्ट्रीय दशक के रूप में नामित किया है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इससे पहले संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष 2019 को स्वदेशी भाषाओं का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित किया था। पाठकों को बताता चलूं कि वर्ष 2023 की थीम बहुभाषी शिक्षा – शिक्षा को बदलने की आवश्यकता तथा वर्ष 2024 में इसकी थीम बहुभाषी शिक्षा अंतर-पीढ़ीगत शिक्षा का एक स्तंभ है। रखी गई थी। अंतरराष्ट्रीय **मातृभाषा दिवस 2025 का विषय अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का रजत जयंती समारोह है।** बहरहाल, आइए इस अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर संकल्प लें कि हम अपने परिवार के साथ केवल अपनी मातृभाषा में ही संवाद करेंगे और इसका अपने जीवन में, व्यवहार में उपयोग करेंगे। पाठकों को बताता चलूं कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के अनुसार शिक्षा का माध्यम, जहां तक संभव मातृभाषा होनी चाहिए। आज दुनिया भर में आज लगभग 7,000 भाषाएँ मौजूद हैं। यदि हम यहां आंकड़ों की बात करें तो यूनेस्को के अनुसार, दुनियाभर में 8,324 भाषाएं व बोली हैं। आज भाषाई विविधता खतरे में है, क्योंकि हमारी तेजी से बदलती दुनिया में कई भाषाएं तेजी से लुप्त हो रही हैं। भारत की यहां बात करें तो 1635 मातृभाषाएं और 234 पहचान योग्य मातृभाषाएं हैं। हम ज्यादा से ज्यादा भाषाएं सीखें लेकिन अपनी मातृभाषा को कभी भी नहीं भूलें। मातृभाषा को संरक्षित रखना बहुत ही महत्वपूर्ण और जरूरी है क्यों कि किसी भाषा के नष्ट होने से संचार और विरासत प्रभावित हो सकती है, क्योंकि भाषाओं में सांस्कृतिक पहचान, रीति-रिवाज और ज्ञान निहित होता है।

संपर्क : फ्रीलांस राइटर,
कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड
मोबाइल 9828108858/9460557355

कला समय

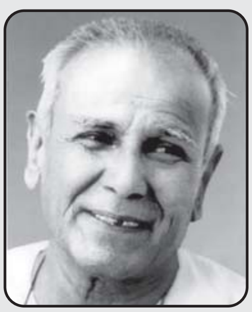

पं. रामनारायण उपाध्याय
(पद्मश्री सम्मान से विभूषित)
निमाड़ के लोक संस्कृति पुरुष,
गांधीवादी विचारक

आगामी अंक
अप्रैल – मई 2025

पं. रामनारायण उपाध्याय पर केन्द्रित विशेषांक

प्रो. डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा
इस विशेषांक के अतिथि संपादक
(उज्जैन म.प्र.)
मो. 9826047765

अतिथि संपादक : प्रो. डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी अध्ययनशाला तथा कुलानुशासक
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

इस प्रतिष्ठापूर्ण विशेषांक हेतु मौलिक आलेख, दुर्लभ छाया चित्र, विशेष पाण्डुलिपियाँ, संस्मरण सादर आमंत्रित हैं।
सामग्री प्राप्ति की अंतिम तिथि 30 अप्रैल 2025 है।

– संपादक

ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com / bhanwarlalshrivas@gmail.com **मो.– 94256 78058**

समानांतर सिनेमा के प्रमुख फिल्मकार : श्याम बेनेगल

अश्विनी कुमार दुबे

भारतीय फिल्मों का इतिहास सौ साल पुराना है। शुरू-शुरू में पौराणिक कथाओं पर फिल्में बनाई गईं । पहले मूक फिल्मों का जमाना था। जल्द ही फिल्में बोलने लगीं। नाटक को मंच पर देखा जाता था, उसकी अपनी सीमाएं थीं। फिल्में आईं तो उन्हीं कहानियों को परिष्कृत ढंग से फिल्मों में दिखाया गया। यहां वातावरण दिखाने के लिए स्पेस था। बाहर मैदान में, पहाड़ पर और बाग-बगीचों में जाकर शूटिंग की जा सकती थी। पाश्व संगीत पिरोया जा सकता था। गीत रखे जा सकते थे। इस प्रकार सिनेमा एक उन्नत कला के रूप में स्थापित होता चला गया। इसमें नृत्य, गीत-संगीत, फोटोग्राफी, दृश्य संयोजन की सुविधा थी और नाट्य कला का यह विस्तार तो था ही। इसप्रकार सिनेमा लोकप्रिय होता चला गया।

सिनेमा शुरू से एक खर्चीला माध्यम है। कई अभिनेताओं को एक साथ जोड़ना, आउटडोर और इनडोर शूटिंग। गीत, नृत्य और संगीत का संयोजन। इस प्रकार यह एक महंगा माध्यम है। हर कला के साथ किसी-न-किसी रूप में व्यवसाय जुड़ा है। जब नाटकों का मंचन हो रहा था, आज भी हो रहा है, तब थिएटर में टिकट लेकर ही आप प्रवेश पाते हैं। ग्रामीण अंचलों में नाटक, नौटंकी, रामलीला आदि का मंचन बिना टिकट होता रहा है और हजारों लोग उसे देखते रहे हैं। परंतु उन आयोजनों में कुछ-न-कुछ तो खर्च होता था, जिसे कला प्रेमीजन मिलजुल कर वहन कर लेते थे।

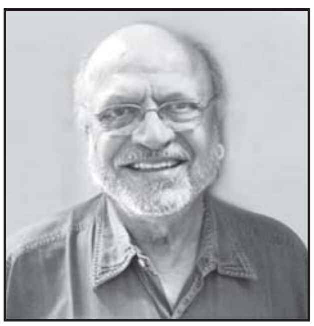

इधर सिनेमा एक व्यवसाय के रूप में उभर कर आया। फिल्में बंबई में बनतीं थीं, पूरे देश में प्रदर्शित होती थीं। हर उम्र के लोग इन्हें देख रहे थे। इस प्रकार फिल्म निर्माण मोटी कमाई का जरिया बना। इसमें कई लोगों ने निवेश प्रारंभ कर दिया। नई-नई फिल्म निर्माण कंपनियां बनती चली गईं। फिल्मों को मनोरंजन प्रदान बनाने के लिए उनमें अनावश्यक चीजों को भी मिलाया जाने लगा, जिन्हें मसाला कहते हैं। मसाला अर्थात सेक्स, हिंसा, एक्शन, फूहड़ नाच- गाने इत्यादि। यह सब फिल्मों द्वारा अधिक-से-अधिक पैसा कमाने के लिए किया जाने लगा। इस प्रकार के सिनेमा को व्यावसायिक सिनेमा कहा गया। इसमें सिर्फ मनोरंजन प्रधान है, भले ही इसके लिए अतिरंजित करके घटनाओं को दिखाना पड़े। पतला-दुबला नायक पर्दे पर अपने से ज्यादा बलिष्ट आठ-दस गुंडों को पलक झपकते ही मार गिराता है। गैर जरूरी सेक्स दृष्य इनमें डाले गए। फूहड़ और उत्तेजक डांस आदि डाले गए। किंतु इन फिल्मों ने पैसा खूब कमाया और आज भी ऐसी फिल्में बहुत पैसा कमा रही है। इस प्रकार का सिनेमा व्यावसायिक सिनेमा के नाम से ख्यात हुआ।

जीवन में पैसा ही सब कुछ तो नहीं होता ! कला भी कोई चीज है। बहुत सारे ऐसे कलाकार कला के हर क्षेत्र में हैं, जो सिर्फ आत्म संतोष के लिए, सामाजिक सरोकारों के लिए और कला क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करने के लिए नया कुछ सृजित करते हैं। समय ऐसे ही कलाकारों को याद रखता है। श्याम बेनेगल ऐसे ही महान फिल्मकार हैं। उन्हें समानांतर सिनेमा का महत्वपूर्ण फिल्मकार माना जाता है।

ये समानांतर सिनेमा क्या है? सिनेमा के प्रमुख रूप से तीन वर्गीकरण है; व्यावसायिक सिनेमा, समानांतर सिनेमा और क्षेत्रीय सिनेमा। व्यावसायिक सिनेमा से आपका परिचय है। विशुद्ध मनोरंजन। पैसा कमाने के लिए बनाया जाने वाला सिनेमा, जो आजकल खूब प्रचलित है। इसमें जिंदगी को अतिरजित करके दिखाया जाता है। इसके समानांतर जिंदगी की व्याख्या करने वाला सिनेमा, जिंदगी की सच्चाइयों को दर्शाता सिनेमा, समानांतर सिनेमा कहलाया। क्षेत्रीय सिनेमा, भारत के विभिन्न अंचलों के जन-जीवन और उनकी बोली में बनाया गया सिनेमा कहलाता है।

यह माना जाता है की व्यावसायिक फिल्मों के समक्ष एक आंदोलन के रूप में समानांतर सिनेमा आया। सन 1950 के समय इसकी शुरुआत पश्चिम बंगाल से मानी जाती है। इसमें सत्यजीत राय, ऋत्विक घटक, मृणाल सेन और तपन सिन्हा जैसे फिल्मकार अपनी फिल्में लेकर आए। ये फिल्में व्यावसायिक रूप से भले ही उतनी सफल न हुई हों परंतु कलात्मक क्षेत्र में इन्होंने उत्कृष्टता के झंडे गाड़े। सत्यजीत राय को तो विश्व स्तर का फिल्मकार माना जाता है। आपको पाथेर पांचाली (1955 द सॉन्ग ऑफ़ द रोड) इसके दो सीक्वल, जो अपू ट्रिलॉजी के नाम से प्रसिद्ध हैं, के साथ भारतीय सिनेमा को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने के लिए जाना जाता है। भारत सरकार ने आपको भारत रत्न से सम्मानित किया। उस समय कई बंगाली फिल्मकार आगे आए, जिन्होंने सामाजिक यर्थाथ और जीवन की विसंगतियों पर महत्वपूर्ण फिल्में बनाईं, जिन्हें भारत ही नहीं विश्व स्तर पर प्रतिष्ठा मिली।

व्यावसायिक सिनेमा के समानांतर जीवन की सच्चाईयों पर आधारित फिल्मों की शुरुआत मराठी में पहले हो चुकी थी। वहां व्ही. शांताराम लीक से हटकर फिल्में बना रहे थे, वे कलात्मक फिल्में कही गईं। इस प्रकार समानांतर सिनेमा में सामाजिक यथार्थ, प्रकृतिवाद और राजनीतिक परिवेश को फिल्माने की परंपरा सामने आई। शुरू-शुरू में

समानांतर सिनेमा के समर्थकों ने अपनी फिल्मों में गीत-संगीत से परहेज किया। उनका कहना था, सिनेमा को सिर्फ सिनेमा होना चाहिए। अन्य कलाओं को समाहित करने से उसका मूल स्वरूप नहीं रह पाता। अक्सर तो कई फिल्मों में गीत-संगीत ही प्रमुख हो जाता है। बाद में फिल्मकारों ने यह माना कि गीत-संगीत से फिल्म का प्रभाव बढ़ जाता है। दृष्यों और परिस्थितियों के चित्रण में गीत-संगीत का योगदान महत्वपूर्ण है। इस प्रकार बाद के कई समानांतर आंदोलन वाले फिल्मकार अपनी फिल्मों में गीत-संगीत का समुचित उपयोग करने लगे।

हिंदी फिल्मों में समानांतर फिल्मों की परंपरा मराठी फिल्मों के साथ आई। व्ही. शांताराम मराठी के साथ हिंदी फिल्मों के भी महत्वपूर्ण फिल्मकार माने जाते हैं। हिंदी फिल्म जगत में फिल्म निर्माण की कई कंपनियां अपना व्यावसाय कर रहीं थीं। उस समय की कई फिल्म कंपनियां बहुत प्रसिद्ध हुई, जिन्होंने लगातार मनोरंजन प्रधान फिल्में बनाईं और खूब पैसे कमाए। यहां मैं 'राजश्री प्रोडक्शन' का नाम जरूर लेना चाहूंगा, जिन्होंने व्यावसायिक और समानांतर सिनेमा के बीच का रास्ता चुना। उन्होंने सामाजिक, पारिवारिक और उद्देश्य पूर्ण फिल्में बनाईं, जिनमें मनोरंजन के साथ-साथ एक संदेश भी हुआ करता था।

हिंदी फिल्मों की दुनिया में व्ही. शांताराम के पश्चात, विमल राय, ऋषिकेश मुखर्जी, गोविंद निहलानी, गुलजार के साथ श्याम बेनेगल का नाम बहुत आदर पूर्वक लिया जाता है। आपने मंथन, भूमिका, जुनून, मंडी, सूरज का सातवां घोड़ा, मम्मों और सरदारी बेगम जैसी महत्वपूर्ण फिल्में बनाई। उनकी फिल्म 'सरदारी बेगम' को सर्वश्रेष्ठ उर्दू फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ था। स्मिता पाटिल, शबाना आजमी, किरण खेर जैसी महत्वपूर्ण अभिनेत्रियों को श्याम बेनेगल की फिल्मों से ही राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। उनकी सभी फिल्में राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित हुईं और दर्शकों द्वारा सराही गई।

भारत में जब दूरदर्शन आया तो उसमें 'बुनियाद' और 'हम लोग' जैसे लोकप्रिय एवं व्यावसायिक धारावाहिक आए, जो बहुत सफल हुए परंतु श्याम बेनेगल अपना सीरियल लेकर आए; 'भारत एक खोज' जवाहरलाल नेहरू की यह पुस्तक निबंधात्मक है, जिसके अंश उन्होंने पत्र के रूप में अपनी बेटी इंदू (इंदिरा गांधी) को जेल से पत्र शैली में लिखे थे। यह किताब भारत का संक्षिप्त इतिहास जानने के लिए महत्वपूर्ण है। श्याम बेनेगल अपने सीरियल 'भारत एक खोज' में इतिहास को कहानी की तरह कहते हैं। यह सीरियल उस समय दूरदर्शन पर आ रहे अन्य धारावाहिकों से बिल्कुल हटकर था, जिसमें भारत का इतिहास पर्दे पर इतने विस्तार से पहली बार दिखाया गया था। यह उनकी समानांतर सिनेमा की दृष्टि थी, जो वे इसप्रकार का सीरियल बना पाए। उनका दूसरा महत्वपूर्ण सीरियल आया 'संविधान' हमारे संविधान का निर्माण भी इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है, इसको अत्यंत सरल और सहज ढंग से बेनेगल अपने सीरियल में फिल्मा पाए। हालांकि यह एक कठिन विषय था और पेचीदा भी, परंतु बेनेगल ने पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ इस सीरियल को बनाया, जो बहुत सराहा गया।

श्याम बेनेगल में बचपन से फिल्म निर्माण के संस्कार थे। वे कर्नाटक के रहने वाले थे। उनके पिता एक प्रसिद्ध फोटोग्राफर थे। उन्होंने श्याम के बारहवें जन्म दिवस पर उसे एक कैमरा उपहार में दिया था। तब से श्याम जीवन भर कैमरे से खेलते रहे। भले ही उनकी फिल्मों में फोटोग्राफर के रूप में किसी और का नाम जाता रहा हो परंतु फिल्म के हर फ्रेम में श्याम बेनेगल की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। उनकी फिल्में अपनी फोटोग्राफी के लिए विशेष रूप से जानी जाती हैं। श्याम बेनेगल ने हैदराबाद उस्मानिया विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की, तत्पश्चात आपने वहां हैदराबाद फिल्म सोसाइटी की स्थापना की। इसप्रकार आपके फिल्मी जीवन की शुरुआत हुई। कम बजट में अच्छी फिल्में बनाना शुरू से आपका उद्देश्य रहा है। 1976 में भारत सरकार ने आपको पद्म श्री और 1991 में पद्म भूषण से सम्मानित किया। 23 दिसंबर 2024 की शाम आपका 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

14 दिसंबर को आपने अपना जन्मदिन दिवस मनाया था, जिसमें फिल्म जगत की कई महत्वपूर्ण हस्तियां आई थीं। उस अवसर पर उन्होंने बताया था कि इन दिनों तीन प्रोजेक्ट उनके पास हैं, जिन पर वे काम कर रहे हैं। वे 90 वर्ष की उम्र में भी बेहद सक्रिय थे।

इस समय व्यावसायिक फिल्मों का बोलबाला है। कोई भी फिल्म इन दिनों सौ करोड़ से कम बजट की नहीं होती और वह तीन-चार सौ करोड़ का बिजनेस न करे तो फिल्म फ्लॉप मानी जाती है। फिल्म शुरू होते ही पर्दे पर धूम-धड़ाका चालू हो जाता है। जबरदस्त एक्शन, मार-धाड़, हिंसा, सेक्स और जोरदार उत्तेजक संगीत से लबरेज होती हैं, हमारी आज की व्यावसायिक फिल्में। इनमें सबसे ज्यादा कमाल तो कंप्यूटर ग्राफिक्स का होता है, जिसके द्वारा अविश्वसनीय दृष्यों की भरमार फिल्मों में होती है। इन फिल्मों का जिंदगी और जिंदगी के यथार्थ से कोई सरोकार नहीं होता। ये फिल्में विशुद्ध मनोरंजन प्रधान हैं। पैसा कमाना उनका उद्देश्य है और वे उसमें सफल भी हैं।

सिनेमा के इस दौर में श्याम बेनेगल जैसे लोगों का चला जाना स्वस्थ सिनेमा की दुनिया में एक बड़ी क्षति है। वे तीन प्रोजेक्ट पर काम कर रहे थे, यह सूचना सुनकर ही सुकून मिला था किंतु कुछ दिनों पश्चात ही उनका इसप्रकार चला जाना, बहुत अखरा है।

1950 से शुरू हुआ समानांतर सिनेमा का आंदोलन इस समय नेपथ्य में चला गया है। बहुत कम लोग इस समय समानांतर सिनेमा में काम कर रहे हैं। कम बजट में अच्छी फिल्में बनाना, सचमुच कठिन काम है। उस समय भी यह बहुत मुश्किल था, जब श्याम बेनेगल जैसे लोग काम कर रहे थे। बावजूद श्याम बेनेगल ने हमेशा सार्थक फिल्में बनाईं। ज्ञानवर्धक टी.वी. धारावाहिक बनाए। आज के समय में उनकी और उन जैसे लोगों की बहुत जरूरत है। वे समानांतर सिनेमा के एक प्रमुख फिल्मकार थे, उनके जाने से जो जगह खाली हुई है, उसे भर पाना मुश्किल दिखाई देता है। हम उनकी फिल्में देखते हुए उन्हें याद करते हैं और आज उन्हें अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

लेखक वरिष्ठ साहित्यकार हैं।
संपर्क : 376-बी, सेक्टर आर,
महालक्ष्मी नगर, इंदौर- 452010 (म.प्र.) मो.: 9425167003,
ई-मेल: ashwinikudubey@gmail.com

■

जीआईएस के दौरान पर्यटन में निवेश की संभावनाओं के लिये खुलेंगे नए द्वार

– टूरिज्म समिट में शामिल होंगे अभिनेता पंकज त्रिपाठी, केंद्रीय पर्यटन मंत्री, सचिव सहित कई नामचीन हस्तियां
– विभिन्न निवेश परियोजनाओं के लिये 1000 हेक्टेयर भूमि चिह्नित
– पर्यटन नीति 2025 और फिल्म पर्यटन नीति 2025 में निवेशकों के लिए विशेष लाभ

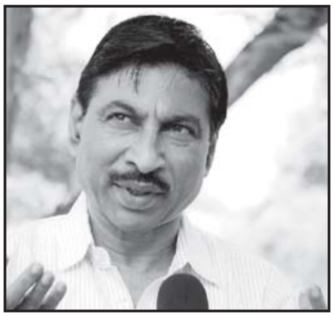

भोपाल। ग्लोबल इन्वेस्टर मीट के दौरान पर्यटन क्षेत्र में निवेश के लिये संभावनाएं के नए द्वार खुलेंगे। आयोजन के दूसरे दिन 25 फरवरी को फ्यूचर रेडी मध्यप्रदेश के निर्माण में पर्यटन और संस्कृति के योगदान और अवसरों पर एक परिचर्चा का आयोजन किया जाएगा। इसमें माननीय केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र शेखावत जी, सचिव, पर्यटन मंत्रालय भारत सरकार सुश्री वी विद्यावति, प्रमुख सचिव, पर्यटन एवं संस्कृति विभाग और प्रबंध संचालक म.प्र. टूरिज्म बोर्ड श्री शिव शेखर शुक्ला, इतिहासकार पद्मश्री के. के. मोहम्मद, अध्यक्ष, एडवेंचर टूर ऑपरेटर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष पद्मश्री अजीत बजाज, अभिनेता श्री पंकज त्रिपाठी, कार्यकारी उपाध्यक्ष इंडियन होटल्स कंपनी श्री रोहित खोसला, हेड कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन्स एंड कॉर्पोरेट एफेयर्स मेक माई ट्रिप श्री समीर बजाज, निदेशक जेहनुमा होटल्स श्री अलि राशिद, अभिनेता श्री विजय विक्रम सिंह अपने विचार व्यक्त करेंगे।

पर्यटन अधोसंरचनाओं का विकास हो या फिर पर्यटकों की सुविधाओं में विस्तार, मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग ने विभिन्न स्तर पर तैयारियां की है। प्रमुख सचिव श्री शुक्ला ने बताया कि पर्यटन क्षेत्र में निवेश को आकर्षित करने के लिए विभिन्न पर्यटन परियोजनाओं में कुल 1000 हेक्टेयर से अधिक भूमि चिह्नित की है। निवेशकों को इन स्थानों पर होटल रिसोर्ट, गोल्फ कोर्स वे साइड एमिनिटिज इत्यादि परियोजनाएं शुरू करने पर नई पर्यटन नीति के तहत प्रोत्साहन दिया जाएगा।

रोप-वे से लेकर क्रूज में निवेश का अवसर

पब्लिक-प्राइवेट-पार्टनरशिप (पीपीपी) परियोजनाओं में हनुवंतिया, मांड, ओधा अमरकंटक सहित विभिन्न पर्यटन गंतव्यों पर टेंट सिटीज, कारवां पर्यटन, रोपवे गोल्फ कोर्स और स्टैचू ऑफ वननेस (ओंकारेश्वर) और स्टैचू ऑफ यूनिटी (केवड़िया, गुजरात) को जोड़ने वाले क्रूज पर्यटन के लिए निवेश के अवसर उपलब्ध है।

पर्यटन नीति और फिल्म पर्यटन नीति में निवेशकों को विशेष लाभ

पर्यटन नीति और फिल्म पर्यटन नीति में निवेशकों को विशेष लाभ दिया जाने का प्रावधान किया गया है। फिल्म शूटिंग की अनुमति के लिए पारदर्शी, समय सीमा के अंतर्गत दी जाने ऑनलाइन 'सिंगल विंडो सिस्टम' लागू किया गया है और जनजातीय भाषाओं जैसे मालवी बुंदेलखंडी, आदि में फिल्में बनाने के लिए अतिरिक्त अनुदान दिया जा जायेगा जिससे राज्य की सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा मिलेगा। बच्चों के सिनेमा और महिला केंद्रित फिल्मों को भी विशेष अनुदान दिया जाएगा, जिससे स्वस्थ मनोरंजन और महिलाओं के मुद्दों पर आधारित कहानियों को प्रोत्साहन मिलेगा। मध्य प्रदेश के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक व्यक्तित्वों पर आधारित फिल्मों के लिए भी अतिरिक्त अनुदान का प्रावधान है, ताकि राज्य की समृद्ध विरासत को सिनेमा के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया जा सके।

क्षेत्रीय भाषाओं के लिए विशेष अनुदान

क्षेत्रीय भाषाओं, जैसे मराठी, मराठी, बंगाली, तमिल कन्नड़ और मलयालम में फिल्म निर्माण को प्रोत्साहित किया जाएगा, जिससे सिनेमा में विविधता बढ़ेगी और इन प्रदेशों में मध्य प्रदेश के पर्यटन स्थलों का प्रचार होगा। स्थानीय प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने के लिए अतिरिक्त अनुदान का प्रावधान है, जिससे स्थानीय फिल्म उद्योग को बढ़ावा मिलेगा। शॉर्ट फिल्मों के लिए भी वित्तीय सहायता दी जाएगी, जो स्वतंत्र फिल्म निर्माताओं के लिए महत्वपूर्ण साबित होगा और सिनेमा में रचनात्मकता को बढ़ावा देगा। कुल मिलाकर, यह नीति फिल्म निर्माण

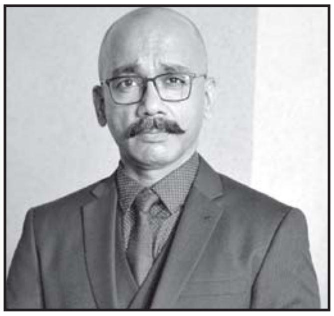

को सुगम बनाने सांस्कृतिक विविधता को प्रोत्साहित करने और स्थानीय प्रतिभाओं को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाई गई है।

2 दो करोड़ का अनुदान

मध्य प्रदेश फिल्म पर्यटन नीति 2025 का मुख्य उद्देश्य राज्य में फिल्म निर्माण को बढ़ावा देना रोजगार और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाना, तथा फिल्म निर्माण संबंधी आधारभूत ढांचे में निवेश आकर्षित करना है। नई नीति में वित्तीय अनुदान को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाया गया है। फीचर फिल्म के लिए अधिकतम अनुदान 2 करोड़ रुपए तक, वेब सीरीज के लिए 1.50 करोड़ रुपए तक टीवी शो/सीरियल्स के लिए 1 करोड़ रुपए तक, डॉक्यूमेंट्री के लिए 40 लाख रुपए तक अंतर्राष्ट्रीय फिल्म के लिए 10 करोड़ रुपए तक, और शॉर्ट फिल्मों के लिए 15 लाख रुपए तक का अनुदान दिया जा सकता है। यह अनुदान कुल शूटिंग दिनों के 75% मध्य प्रदेश में होने पर ही मिलेगा। यह नीति प्रदेश में फिल्म निर्माण को प्रोत्साहित करेगी, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को लाभ होगा और पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। इसके साथ ही, यह राज्य को फिल्म निर्माण के एक प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित करने में मदद करेगी।

मध्य प्रदेश की फिल्म पर्यटन नीति 2025 कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करती है। सिनेमाघरों के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए नए सिंगल स्क्रीन सिनेमाघरों के निर्माण और मौजूदा सिनेमाघरों के नवीनीकरण के लिए निवेश आकर्षित करने के उपाय किए गए हैं, जिससे राज्य में सिनेमाघरों की कमी को दूर किया जा सके। गुणवत्तापूर्ण डॉक्यूमेंट्री फिल्म निर्माण को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में पुरस्कार प्राप्त डॉक्यूमेंट्री फिल्मों को अनुदान प्राप्त करने का अवसर दिया गया है। अंतरराष्ट्रीय फिल्म निर्माण परियोजनाओं को आकर्षित करने के लिए 10 करोड़ तक के प्रोत्साहन दिए जाएंगे, जिससे विदेशी फिल्म निर्माताओं को राज्य की खूबसूरत लोकेशंस और संस्कृति को वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। यह नीति सिनेमा उद्योग के सभी पहलुओं को शामिल करते हुए समग्र विकास का दृष्टिकोण अपनाती है, जिसमें स्थानीय प्रतिभाओं, क्षेत्रीय भाषाओं महिलाओं के सशक्तिकरण और बुनियादी ढांचे के विकास को प्राथमिकता दी गई है।

मध्य प्रदेश पर्यटन नीति 2025 के तहत कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। निवेशकों को आकर्षित करने के लिए पर्यटन बोर्ड में निवेश प्रोत्साहन सेल की स्थापना की गई है। भूमि आवंटन की प्रक्रिया को पारदर्शी बनाया गया है और निजी निवेशकों को लैंड पार्सल, मार्ग सुविधा केंद्र और हेरिटेज संपत्तियां आवंटित की जाएंगी। बड़ी परियोजनाओं को विशेष प्रोत्साहन दिया जैसे कि 100 करोड़ से अधिक के निवेश वाली अल्ट्रा मेगा परियोजनाओं को कलेक्टर गाइडलाइन दर पर 90 वर्षों के लिए भूमि का सीधा आवंटन किया जाएगा। पर्यटन परियोजनाओं के लिए 15% से 30% तक पूंजी अनुदान दिया जाएगा, जिसकी अधिकतम सीमा 90 करोड़ रुपए तक होगी। वाइल्ड लाइफ रिसॉर्ट्स और इलेक्ट्रिक क्रूज को विशेष प्रोत्साहन दिया जाएगा। दुर्गम क्षेत्रों में पर्यटन परियोजनाओं की स्थापना पर अतिरिक्त अनुदान दिया जाएगा। निवेशकों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार प्रोत्साहन पैकेज भी दिया जा सकेगा। नई पर्यटन संभावनाओं वाले क्षेत्रों का विकास किया जाएगा और निजी निवेश को प्रोत्साहित किया जाएगा। विभिन्न विभागों से अनुमति प्राप्त करने के लिए सिंगल विंडो सिस्टम लागू किया गया है, जिससे निवेशकों को समयबद्ध तरीके से अनुमतियां मिल सकेंगी। लोक सेवा गारंटी अधिनियम के तहत अनुमतियों को समय सीमा में प्रदान किया जाएगा। गोल्फ टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए निजी निवेशकों को पीपीपी मॉडल के तहत अनुबंध पर जमीन दी जाएगी। निजी निवेशकों को गोल्फ टूरिज्म के लिए आवंटित भूमि का 10% व्यवसायिक उपयोग करने की अनुमति दी जाएगी। आवंटित मार्ग सुविधा केंद्र को कम हुई भूमि के बदले समतुल्य मूल्य की भूमि उपलब्ध कराई जाएगी। नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण, जल संसाधन विभाग, लोक निर्माण विभाग के रेस्ट हाउस गेस्ट हाउस, डाक बंगला सर्किट हाउस आदि को पर्यटन परियोजना की स्थापना के लिए निजी निवेशकों को लीज पर दिया जाएगा। स्टार्टअप उद्यमियों को निविदाओं में भाग लेने का अवसर मिलेगा कुल मिलाकर, यह नीति निवेशकों को आकर्षित करने, पर्यटन को बढ़ावा देने और राज्य में पर्यटन संबंधी आधारभूत ढांचे का विकास करने के उद्देश्य से बनाई गई है जिससे निश्चित ही पर्यटन में नए निवेश के द्वार खुलेंगे।

रपट : ऋचा दुबे
म.प्र. टूरिस्म बोर्ड भोपाल

■

''सूचना क्रांति व एआई चैटबॉट युग में भी जीवन को रौशन कर रहा है रेडियो''

सुनील कुमार महला

आज का युग सूचना क्रांति का युग है, एडवांस एआई तकनीक का युग है। विज्ञान ने आज इतनी अधिक तरक्की कर ली है कि सूचना क्रांति और एआई तकनीक के इस आधुनिक युग में आज हमारे पास मनोरंजन के अनेक साधन उपलब्ध हैं। प्राचीन काल में मनोरंजन के साधन आखेट, कथा-कहानी, आपबीती, तैराकी, घुड़सवारी, पर्यटन, चौसर, खेल-तमाशे, कुश्ती, कबड्डी,ताश, शतरंज ,कला, प्रदर्शन, नृत्य, संगीत, बाजे,नाटक, मेले, सामाजिक सभाएं(चौपाल),ढ़ोलक, हारमोनियम पर गाना आदि हुआ करते थे और मनुष्य इन साधनों के द्वारा मनोरंजन किया करता था। पहले के जमाने में आज की तरह न इंटरनेट की उपलब्धता ही थी और न ही स्मार्ट फ़ोन, लैपटॉप, टीवी ही हुआ करता था। कहना ग़लत नहीं होगा कि पहले के जमाने में मनोरंजन के सीमित संसाधन थे। वैसे पुराने जमाने में मनोरंजन का एक बड़ा साधन जो रहा है, वह'रेडियो'है। कहना ग़लत नहीं होगा कि रेडियो जानकारी प्रदान करने, लोगों को शिक्षित करने, संस्कृतियों के बीच अभिव्यक्ति की अनुमति देने और निश्चित रूप से, हमारे सभी पसंदीदा संगीत बजाने का एक शानदार और सशक्त मंच है। चाहे तकनीक कितनी भी उन्नत क्यों न हो जाए, रेडियो एक अपूरणीय माध्यम है, खासकर प्राकृतिक या मानव निर्मित आपदाओं के दौरान। सच तो यह है कि रेडियो आज प्रसारण का वह माध्यम है जो मनोरंजन, स्थानीय समाचार, खेल अपडेट, चर्चाएँ, बढ़िया संगीत प्रदान करता है, और मार्केटिंग का भी एक प्रभावी तरीका है। आज सोशल नेटवर्किंग साइट्स के इस आधुनिक युग में भी रेडियो की प्रासांगिकता समय के साथ बिल्कुल भी कम नहीं हुई है और आज 13 फरवरी है-विश्व रेडियो दिवस। पाठकों को बताता चलूं कि पहला रेडियो प्रसारण 1895 में गुग्लिल्मो मार्कोनी द्वारा किया गया था और संगीत और बातचीत का रेडियो प्रसारण, जिसका उद्देश्य व्यापक दर्शकों के लिए था, प्रयोगात्मक रूप से, कभी-कभी 1905-1906 के आसपास अस्तित्व में आया। यह भी उल्लेखनीय है कि जेम्स क्लर्क मैक्सवेल ने सबसे पहले रेडियो की संभावना का प्रस्ताव रखा था। साल 1920 के दशक की शुरुआत में रेडियो व्यावसायिक रूप से अस्तित्व में आया और लगभग तीन दशक बाद रेडियो स्टेशन अस्तित्व में आए और 1950 के दशक तक रेडियो और प्रसारण प्रणाली दुनिया भर में एक आम वस्तु बन गई। वास्तव में विश्व रेडियो दिवस का उद्देश्य रेडियो के महत्व के बारे में जनता और मीडिया के बीच अधिक जागरूकता बढ़ाना है। इस दिन का उद्देश्य रेडियो स्टेशनों को अपने माध्यम से सूचना तक पहुंच प्रदान करने और प्रसारकों के बीच नेटवर्किंग और अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करना भी है। बहरहाल,भले ही आज के युग के बारे में कोई ये समझे कि आज का मल्टीप्लेक्स सिनेमा का युग है या सोशल नेटवर्किंग साइट्स का युग है। लेकिन रेडियो का महत्व आज भी कम नहीं हुआ है। शहरों में सिटी बसें दौड़ रहीं हों या आटो-टैक्सियां आपको इनमें रेडियो बजता हुआ सुन जाएगा। आज स्थान स्थान पर बहुत से कम्युनिटी रेडियो सेंटर्स खुल गये हैं अथवा एफ.एम. की बहार है। सिटी बसेज में तो एफ.एम. का

अपना अलग ही आनंद है। आप दिल्ली चले जाइए, जयपुर घूम आइए या किसी अन्य बड़े शहर की सैर कर आइए, आपको रेडियो मिर्ची, समाचार जरूर ट्यून होते मिलेंगे। चाय की थड़ियों में, दुकानों में अखबार पढ़ने के साथ ही आपको रेडियो सुनने का आनंद लेते लोग मिल जाएंगे। आज भागमभाग भरी व दौड़-धूप भरी इस जिंदगी में भी रेडियो की एक अपनी अलग ही महत्ता व खूबी है। गांवों में आज भी बहुत से लोग बड़े चाव से रेडियो सुनते हैं, क्योंकि रेडियो अनपढ़ और पढ़े-लिखे दोनों ही लोगों का परम् मित्र है। रेडियो वह शक्तिशाली माध्यम है जो लोकतान्त्रिक विमर्श के लिए एक शानदार मंच का निर्माण करता है। रेडियो संचार का सबसे अच्छा व बेहतरीन माध्यम है। वास्तव में रेडियो एक ऐसी सेवा है जो

दुनियाभर में सूचनाओं का आदान प्रदान करती है। यह बात सत्य है कि आज के समय में अधिकतर लोगों के लिए रेडियो पुराने जमाने की बात हो गई है, परंतु रेडियो बुजुर्गों के लिए आज भी मनोरंजन का एक अत्यंत सशक्त साधन व शानदार माध्यम है। मोबाइल फोन के अधिक प्रयोग से अन्य वर्गों का इससे रुझान पहले से काफी कम हुआ है। लेकिन आज भी रेडियो पर हम सभी समाचार सुनतें हैं, कृषि संबंधी विभिन्न जानकारियां सुनते हैं, सरकार की योजनाओं के बारे में सुनते हैं, रेडियो फोन- इन - प्रोग्राम सुनते हैं, यहाँ तक कि नाटक,कहानी,वार्ता व विज्ञापन तक सुनते हैं। महानगरों में सिटी बसों में रेडियो ही बजता सुनाई देता है और इससे सवारियों का अच्छा खासा मनोरंजन होता है। वास्तव में सूचनाओं को आदान प्रदान करने में रेडियो की जो भूमिका है, वह किसी अन्य साधन की अब तक नहीं है, क्योंकि रेडियो सूचनाओं का प्रसार करने का सबसे शक्तिशाली और सस्ता माध्यम है। वैसे विश्व रेडियो दिवस की शुरुआत वर्ष 2011 में की गई थी। साल 2010 में स्पेन रेडियो अकादमी ने 13 फरवरी को विश्व रेडियो दिवस मनाने के लिए पहली बार प्रस्ताव दिया था। साल 2011 में यूनेस्को के सदस्य देशों ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और 13 फरवरी को विश्व रेडियो दिवस मनाने की घोषणा की। बाद में साल 2012 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने भी इसे अपना लिया। फिर उसी साल 13 फरवरी को पहली बार यूनेस्को ने विश्व रेडियो दिवस मनाया। गौरतलब है कि इटली के पीसा विश्वविद्यालय में प्रथम विश्व रेडियो दिवस के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था। पहली बार 13 फरवरी, 2012 को विश्व रेडियो दिवस आयोजन में विश्व की प्रमुख प्रसारक कंपनियों को बुलाया गया था जिसमें 44 भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित करने वाली दुनिया की सबसे बड़ी एवं पुरानी कंपनी रेडियो रूस भी शामिल हुई थी। भारत में 1936 में 'इंपीरियल रेडियो ऑफ इंडिया' की शुरुआत हुई थी जो आजादी के बाद 'ऑल इंडिया रेडियो' के नाम से विख्यात हुआ। वर्ष 1957 में ऑल इंडिया रेडियो का नाम बदलकर 'आकाशवाणी' कर दिया गया। 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' के अपने ध्येय वाक्य के साथ आकाशवाणी 27 भाषाओं में शैक्षिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक, खेलकूद, युवा, बाल एवं महिला तथा कृषि एवं पर्यावरण संबंधी प्रस्तुतियों से संपूर्ण देश को एकता के सूत्र में पिरोते हुए सुवासित परिवेश निर्मित कर रही है। साथ ही शेष विश्व को भारतीय संस्कृति और साहित्य से परिचित भी करा रही है। 2 अक्टूबर, 1957 को स्थापित 'विविध भारती' ने 1967 से व्यावसायिक रेडियो प्रसारण शुरू कर नए युग में प्रवेश किया। यह भी बताना बड़ा रूचिकर होगा कि आजादी के समय भारत में केवल 6 रेडियो स्टेशन थे और आज बहुत से रेडियो स्टेशन उपलब्ध हैं। बताता चलूं कि हर साल रेडियो दिवस पर एक खास थीम तैयार की जाती है और इस साल यानी कि वर्ष 2022 की थीम 'विकास' थी। विश्व रेडियो दिवस 2023 का विषय 'रेडियो और शांति' रखा गया था। वहीं पर वर्ष 2024 में इसकी थीम 'रेडियो: सूचना देने, मनोरंजन करने और शिक्षित करने वाली एक सदी' रखी गई थी। पाठकों को बताता चलूं कि इस वर्ष यानी कि 2025 में रेडियो दिवस की थीम रेडियो और जलवायु परिवर्तन रखी गई है।हमें यह भी जानना चाहिए कि डॉयचै वैले जर्मन अंतरराष्ट्रीय प्रसारणकर्ता है जो तीस भाषाओं में प्रसारण करता है। इसके अलावा वॉइस आफ अमेरिका, बीबीसी अन्य प्रमुख प्रसारणकर्ता हैं। एक दौर था जब देश में टेलीविजन नहीं हुआ करते थे और उस जमाने में हर कोई रेडियो सुनना पसंद करता था। आज तो टीवी है, टीवी भी नहीं एल ई डी टीवी आ गए हैं, स्मार्टफोन का जमाना है, स्मार्टफोन ही नहीं स्मार्ट घड़ियां भी आ चुकीं हैं लेकिन रेडियो का महत्व कम नहीं हुआ है। यह बात अलग है कि पहले के जमाने की तुलना में रेडियो आज कम ही सुना जाता है लेकिन अब धीरे धीरे देश दुनिया रेडियो की और लौट रही है। आज कम्यूनिटी रेडियो आ गए हैं जो बीस पच्चीस किलोमीटर के एरिया में सुने जाते हैं। कम्यूनिटी रेडियो अपने एप तैयार कर रहे हैं, जिससे उन्हें दुनिया के किसी भी कोने में सुना जा सकता है। दूर-दराज के क्षेत्रों, पहाड़ों, दुर्गम क्षेत्रों, रेगिस्तान आदि में रेडियो सुनने का जो आनंद है, वह कहीं भी नहीं है। रेडियो की पहुंच शहरों ही नहीं कस्बों व गांवों तक है और आप कहीं भी बैठे आसानी से रेडियो सुन सकते हैं। आजकल तो विभिन्न मोबाइल कंपनियां की बोर्ड वाले फोन में 'रेडियो' का ऑप्शन जरूर देतीं हैं, जिसे इयरफोन का इस्तेमाल कर कभी भी सुना जा सकता है। एंड्रॉयड फोन में तो आप कभी भी रेडियो एप इंस्टाल करके रेडियो सुनने का आनंद ले सकते हैं। रेडियो का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इससे आपकी आंखों की सेहत हमेशा अच्छी बनी रहती है, हम सभी घरों में बैठे बैठे टेलीविजन देखना अधिक पसंद करते हैं, कलर टेलिविजन आंखों पर बुरा प्रभाव डालता है, जबकि रेडियो पॉरटेबल होता है, उसे आप खेतों में पानी लगाते वक्त, वॉक करते समय, रसोई या कहीं भी काम करते करते भी सुन सकते हैं। वास्तव में रेडियो की प्रासांगिकता हमेशा हमेशा के लिए कायम रहेंगी, क्योंकि रेडियो से हम भावात्मक रूप से जुड़ाव महसूस करते हैं। वास्तव में बहुत बार हमारी आंखें वह काम नहीं कर पातीं हैं जो हमारे कान कर पाते हैं, भगवान ने हमें दो कान ज्यादा से ज्यादा सुनने के लिए ही दिए हैं। जो चीज आंखें देख नहीं पाती हैं, उसे हमारे कान सुन लेते हैं, रेडियो में यह क्षमता है कि वह हमें सुनना सिखाता है, हमारा ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करता है। रेडियो की खास बात यह है कि यह हमारी कल्पनाशीलता को हमेशा बढ़ावा देता है, टेलीविजन में वह बात नहीं है, जो रेडियो में है। बहुत कम लोगों को यह जानकारी होगी कि पहले के जमाने में रेडियो रखने व सुनने के लिए लाइसेंस लेना पड़ता था। आज की युवा पीढ़ी को यह बात आश्चर्यचकित कर सकती है लेकिन यह सत्य है। आज सोशल नेटवर्किंग साइट्स के इस जमाने में लोग यह बात कह सकते हैं कि रेडियो ने दिन-ब-दिन अपनी पहचान व महत्व खो दिया है, आज शहरों में भी रेडियो को ठीक करने की दुकानें नहीं मिलतीं, जैसा कि आज से बीस-पच्चीस बरस पहले मिलती

थी। यहाँ तक कि नया रेडियो तक बाजार में उपलब्ध नहीं हो पाता है, क्योंकि युवा पीढ़ी का अधिक रूझान एंड्रॉयड मोबाइल की ओर है लेकिन, नये माध्यम के आने के बावजूद रेडियो प्रचलन से बाहर कतई नहीं हुआ है, रेडियो हमारे एंड्रॉयड व साधारण मोबाइल में हमेशा उपलब्ध है। जिस प्रकार से घड़ी पहनना पसंद करने वाले लोग मोबाइल आने के बाद भी घड़ी पहनना नहीं छोड़ते,ठीक उसी प्रकार से रेडियो के प्रति भी लोगों का मोह आज तक बना हुआ है। रेडियो के साथ जो आत्मीयता आदमी की होती है, शायद किसी ओर माध्यम के साथ कभी नहीं हो सकती। पुराने जमाने में रेडियो गांव की चौपालों में,गांव के घरों में बजता था, यह हमारे सैनिकों के मनोरंजन व समाचार प्राप्त करने का सच्चा साथी था। नये माध्यम आने से पुराने माध्यम कभी भी अपना दम नहीं खोते,बल्कि वे उभरते जाते हैं। आज गांव-गांव कम्युनिटी रेडियो हैं तो शहर शहर एफ.एम.स्टेशन। रेडियो मिर्ची प्रोग्राम आदमी को जो खुशी व आनंद प्रदान करता है, वह कभी भी मल्टीप्लेक्स संस्कृति में हमें प्राप्त नहीं हो सकती है। जिस प्रकार से सोशल नेटवर्किंग साइट्स, इंटरनेट, कम्प्यूटर युग आने से प्रिंट मीडिया का महत्व कम नहीं हुआ है, ठीक उसी प्रकार से रेडियो का महत्व भी कभी कम नहीं होगा, क्योंकि रेडियो हमारी आत्मा और हमारे मन से जुड़ा है और जो चीज हमारी आत्मा और मन से जुड़ी हुई होती है वह न तो कभी आउटडेटेड हो सकती है और न ही हमसे परे। रेडियो की आवाज गति हमेशा त्वरित होती है। आपने क्रिकेट कमेंट्री के वक्त अक्सर टेलीविजन पर देखा होगा कि रेडियो पर जब प्लेयर द्वारा चौका-छक्का लगाने की बात हम सुनते हैं, तब तक टेलीविजन पर बॉलर द्वारा बॉल फेंकने की तस्वीर आ रही होती है। मतलब यह है कि रेडियो में गति है। रेडियो आपको दृश्य जगत की कल्पनीय दुनिया में तुरंत ले जाता है और रेडियो से हम भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं। आकाशवाणी केन्द्र बिजली द्वारा ध्वनि को बिजली की लहरों में परिवर्तित कर देता है। फिर इन लहरों को आकाश में छोड़ दिया जाता है। इन लहरों को रेडियो रिसीवर पकड़ लेते हैं और सुनने वाले रेडियों के बटन दबाकर मनचाहे कार्यक्रम सुन सकते हैं। आज रेडियो क्षण भर में विश्व में घटित महत्वपूर्ण सूचनाएं हम तक तुरन्त पहुँचा देता है । व्यापारी वर्ग व विभिन्न कंपनियों के विज्ञापन भी रेडियों से प्रसारित होते हैं। रेडियो पर विभिन्न सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों की जानकारी, पर्वों पर विशेष कार्यक्रम, बच्चों के लिए शिक्षाप्रद कहानियाँ आदि अनेक कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। इसके अतिरिक्त पुराने नए फिल्मी गाने, विभिन्न कलाकारों से वार्तालाप, शास्त्रीय संगीत, नाटक, महत्वपूर्ण वार्ताएं, स्त्रियों के घरेलू कार्यक्रम, जिनमें उन्हें-खाना बनाने की रेसिपी, कपड़ों,बच्चों की देखभाल, घरेलू चिकित्सा के उपाय आदि के बारे में भरपूर जानकारी दी जाती है। कृषि, मौसम संबंधी अनेक जानकारियां हमें रेडियो से मिलती हैं। रेडियो में हर कला का दृष्टिकोण इस में समाहित है। मनोरंजन का यह साधन पहले भी लोकप्रिय था, आज भी लोकप्रिय है और भविष्य में भी रहेगा। रेडियो की महत्ता कभी भी कम नहीं होगी।

संपर्क : फ्रीलांस राइटर,
कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड
मोबाइल 9828108858/9460557355

कला समय प्रकाशन

● सुरूचिपूर्ण फोर कलर प्रिंटिंग ●आकर्षक गेटअप
●नयनाभिराम पेपरबैक में...

- कला समय प्रकाशन द्वारा कला, साहित्य और संस्कृति पर केन्द्रित उत्कृष्ट पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। हम प्रकाशन के लिए अच्छी पुस्तकों की पांडुलिपियाँ आंमत्रित करते है। चयनित पांडुलिपियों का प्रकाशन लेखक और प्रकाशक की परस्पर सहमति से तय शर्तों के अनुसार किया जायेगा।
- जिन रचनाकारों को अपनी मौलिक अनुदित, संपादित रचनाओं को पुस्तक रूप में प्रकाशन करवाना है। वे कम्प्यूटर पर साफ- साफ अक्षरों में कागज की एक ओर टाइप की हुई पांडुलिपि की सॉफ्ट कॉपी के साथ कला समय प्रकाशन, भोपाल से संपर्क करें।
- पुस्तक के लोकार्पण और साहित्यिक मंच पर संवाद, चर्चा आदि की व्यवस्था है।
- प्रकाशित पुस्तक की समीक्षा सुविधा भी उपलब्ध है।

- भँवरलाल श्रीवास
निदेशक

आप स्वयं पधारे या सम्पर्क करें...

0755-2562294, 9425678058
kalasamayprakashan@gmail.com

कार्यालय: जे-191, मंगल भवन, ई-6 महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462016 (म.प्र.)

महाकवि तुलसीदास जी की सामाजिक दृष्टि

सत्य नारायण शर्मा

सम्प्रति देश के बिगडते हुए सामाजिक परिवेश के सन्दर्भ में महाकवि तुलसीदास जी की महान कृति रामचरितमानस की प्रासंगिकता मनीषियों के बीच वाद-विवाद का विषय प्रस्तुत करती है. वैसे तो महाकवि की अनेक कृतियाँ हैं परन्तु उनकी कालजयी कृति 'रामचरितमानस' है जिसकी चौपाइयों का घर -घर पाठ होता है अधिकांश बुद्धिजीवी महाकवि तुलसीदासजी को समाज सुधारक मानते हैं। वस्तुत: 'रामचरितमानस' को समझने के लिए उस काल खंड और दबाबों का अध्ययन करना समीचीन होगा जिनके मध्य रामायण रची गयी जिस समय रामचरितमानस की रचना हुई, उस समय हिन्दू धर्म दो सम्प्रदाय में बंटा हुआ था. शैव और वैष्णव के झगडे थे देश में मुगलों का साम्राज्य था. इस्लाम धर्म का दबदबा था. भाषाई विवाद थे विषम परिस्थितियाँ थीं अशिक्षा अंध विश्वास और आत्म बल के अभाव के चलते हिन्दू समाज को एक सूत्र में पिरोना आसान काम नहीं था कहा जाता है की प्रारम्भ में तुलसीदास जीने संस्कृत भाषा में रचना शुरू की तो रात में वह जिसे रचते थे, सुबह होते ही वह अंतर्ध्यान हो जाती थी. वह बहुत परेशान थे. तब एक दिन उन्हें सपने में भगवान् शंकर का आदेश मिला, 'अयोध्या जाओ, हिंदी में काव्य रचना करो.' सपने में मिलने वाला आदेश संभवत: उनकी आत्मा के ही बोल थे. दूसरे शब्दों में कहें तो उनसे पहले महर्षि वाल्मीकि संस्कृत में रामायण रच चुके थे, तब हिंदी के उद्धार के लिए यह परम आवश्यक था की कविता कर्म हिंदी में किया जाय. रामचरितमानस की रचना के समय तुलसीदास जी का विरोध करने वालों की संख्या अत्यधिक थी. यहाँ तक की उनकी इस महान कृति को नष्ट करने के अनेकानेक प्रयास किये गए तब उन्हें यह घोषणा करना पडी की मानस की रचना बिना किसी राग-द्वेष के की गई है. इसीलिये उन्होंने इस कृति में सभी की विशेषत: धार्मिक गुरुओं, आचार्यों, कवियों आदि की वंदना की है. ताकि वे उनके रचना कर्म में व्यवधान उत्पन्न न करें. यह निर्विवाद है की गोस्वामी जी को मानस की रचना अनेक मानसिक एवं सामाजिक दबाबों के चलते करना पड़ी. इतना सब होने पर भी उन्होंने रामचरितमानस में सामाजिक चेतना, सामाजिक विकास एवं सामाजिक संरचना हेतु अपना अप्रतिम योगदान दिया. इस प्रकार समाज को प्रदत्त यह ग्रन्थ तुलसीदास जी की बहुत बड़ी एवं महत्वपूर्ण उपलब्धि है जिसमें समाज के लिए सर्वोच्च कोटि के आदर्श प्रस्तुत किये गए हैं. चौपाई है.: ढोल गवांर सूद्र पशु नारी, सकल ताड़ना के

अधिकारी इस चौपाई ने समाज के कुछ बुद्धिजीवियों को बौखला दिया उपर्युक्त चौपाई को पढने पर साधारण अर्थ निकलता है की ढोल, गंवार, शूद्र, पशु और नारी प्रताड़ना के अधिकारी होते हैं. इसके लिए कवि की जितनी भी भर्त्सना की जाए कम होगी तथा उसका सामाजिक बहिष्कार उचित दंड होगा परन्तु किसी भी महा कवि या विद्वान लेखक की दृष्टि इतनी संकीर्ण या तुच्छ नहीं हो सकती. उसके द्वारा कहे गए शब्दों के मर्म को समझे बिना अर्थ को नहीं समझा जा सकता है. कवि का ठीक मूल्यांकन नहीं किया जा सकता कोई भी रचनाकार साधारण बात को कहने. के लिए काव्य की रचना नहीं करता जो साधारण है उसे काव्य में कहने का औचित्य ही क्या? जो दिखता है जो समझ में आता है उससे परे अन्तर्निहित बात का और उसके छिपे हुए पहलुओं को सबके सामने लाना लेखक, कवि और पत्रकार का धर्म और कर्म होता है. कवि का काम गागरमें सागर भरना होता है वह कभी एक शब्द के कई अर्थ प्रयोग में लाता है. और कभी एकही वाक्य से अनेक अर्थ उदाहरणार्थ -

सुवरन को खोजत फिरत कवि, व्यभिचारी चोर.

यहाँ एक ही शब्द सुवरन (कवि अच्छे दृश्यों / शब्द, विषयी सुन्दर रूप, चोर स्वर्ण) से कवि, व्यभिचारी और चोर का मतलब हल कर लिया गया है अर्थात कवि कभी-कभी असाधारण बात कहने के लिए साधारण बात का सहारा लेता है। ले सकता है. हजारों-हजार वर्षों से महापुरुष प्राय: साधारण वाक्यों द्वारा असाधारण बात कहते आये हैं. महा राजा पृथ्वी राज चौहान का किस्सा जग जाहिर है जब मोहम्मद गौरी ने उन्हें अंधा बना दिया, तब कविवर चंदवरदाई ने अपनी कविता की दो पंक्तियों के द्वारा उन्हें संकेत दिया - चार हाथ चौबीस गज अंगुल अष्ट प्रमान, ता ऊपर सुलतान है मत चूको चौहान पंक्तियों का आशय समझने में उन्होने बिलकुल देर नहीं की, इन्हें सुनते ही नेत्र हीन पृथ्वी राज चौहान ने शब्द भेदी बाण चला कर एक ही

तीर से मोहम्मद गौरी का अंत कर दिया था. महा कवि तुलसी दास जी ने भी रामायण में इसी बात को दोहराया है. उन्होंने साधारण बात द्वारा असाधारण बात कही है. रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने कहा है की उन्होंने रामायण की रचना स्वान्त: -सुखाय की है.

परन्तु ऐसा था क्या ? यदि स्वान्त: सुखाय ही उनका उद्देश्य होता तो वह मन ही मन काव्य दोहराते, लिखने की आवश्यकता न होती है की समाज को एक पारदर्शी स्वच्छ निर्मल दृष्टि के साथ अच्छी कृति मिले वह विद्वानों से कृपा करने को कहते हैं क्यों की वह स्वंय को ज्ञानी नहीं मानते, शास्त्र का ज्ञाता नहीं मानता, शब्द कौशल नहीं जानतो फिर भी जो कुछ कहा गया है उसको सही दृष्टि से आकलन कर स्थान दिया जाए. तुलसी दास जी के इर्द-गिर्द का वातावरण बुंदेलखंड का वातावरण है. बांदा, चित्रकूट, राजापुर और निकटवर्ती क्षेत्र उन्हें प्रभावित करता है. वह यहाँ समाज में व्याप्त अव्यवस्थाओं, कुरीतिमों को दूर करना चाहते थे. वह समाज के विकास में ढोल (मीडिया), जो प्रचार का संकेतक है, गंवार अशिक्षा का द्योतक है, शूद्र समाज का सबसे निचला दलित तबका है, पशु के बिना श्वेत क्रान्ति संभव ही नहीं और नारी समाज की बुनियाद है, आधारशिला है. इन सभी पाँचों तत्वों को, जिनकी हालत तत्समय दयनीय थी. अपने लेखन व सोच का विषय बनाना महा कवि ने श्रेयस्कर माना क्यों की इनके उद्धार के बिना समाज का सर्वोन्मुखी विकास संभव नहीं था . चूंकि तुलसीदास जी ने एक शब्द ताड़ना का प्रयोग किया है जिसके द्वारा ही इन पाँचों तत्वों का शमन किया गया है. मनीषियों ने इसका अर्थ मारने, पीटने, दंड देने से लिया फलत: चौपाई की व्याख्या गलत हो गई और समाज में गलत सन्देश प्रसारित हुआ . वस्तुत: ताड़ना शब्द बुन्देली भाषा में प्रयुक्त होता आया है और इसका अर्थ है- देखना, भांपना, देखभाल करना, नजर रखना आदि रामचरितमानस अनेक भाषाओं का सम्मिश्रण है, परन्तु प्रयुक्त शब्द का अभिप्राय उसकी मूल भाषा के सन्दर्भ में लिया जाना अपेक्षित है. ग्रन्थ में अवधी, उर्दू, ब्रज आदि भाषा का प्रयोग भी है. ताड़ना शब्द बुन्देली भाषा का है. कवि का मानना था की समाज में परिवर्तन के लिए मीडिया (ढोल) को शसक्त बनाने की आवश्यकता है इसलिए उस पर सतत नजर रखी जाना चाहिए अनपढ़ व्यक्ति (गंवार) को शिक्षित किये बिना देश का विकास कठिन है समाज को आगे बढाने के लिए दलित और शोषित वर्ग (शूद्र) की समुचित देखभाल आवश्यक है. चूंकि पशुयों की देख-रेख, उनके आहार-विहार पर ही श्वेत क्रान्ति निर्भर करती है. इसलिए गोस्वामी जी पशुयों की गतिविधियों को भांपते रहने (ताड़ना) की बात कहते हैं. उनके अनुसार महिलायें (नारी) भी ताड़ना की अधिकारी है क्योंकि जिस समाज में नारी की दशा ठीक और सम्मान -जनक नहीं होगी, उस समाज की केन्द्रीय शक्ति है. नारी को दोयम दर्जा देकर नहीं रखा जा सकता. इसलिए नारी पर ध्यान देना समाज का पुनीत कर्तव्य है इस प्रकार हम देखते हैं की ताड़ना का आशय विकास या उद्धार से है. उनके अनुसार महिलायें (नारी) भी ताड़ना की अधिकारी है क्योंकि जिस समाज में नारी की दशा ठीक और सम्मान -जनक नहीं होगी, उस समाज की केन्द्रीय शक्ति है. नारी को दोयम दर्जा देकर नहीं रखा जा सकता. इसलिए नारी पर ध्यान देना समाज का पुनीत कर्तव्य है इस प्रकार हम देखते हैं की ताड़ना का आशय विकास या उद्धार से है. जिस सन्दर्भ में इस चौपाई का प्रयोग हुआ है वह है समुद्र द्वारा रास्ता देने का अनुरोध न सुनना क्रोधित होकर राम चन्द्र जी अपना धनुष-बाण उठा लेते हैं तब समुद्र अपने पक्ष में इस चौपाई का प्रयोग करता है. समुद्र में रास्ता बनाकर जाना विकास का प्रतीक है. समुद्र ज्ञान का भी प्रतीक है. लंका पर आक्रमण की तैयारी विकास का मार्ग प्रशस्त करने की तैयारी है, वह भी ज्ञान के समुद्र को जीतकर . समुद्र ही राम चन्द्र जी को बोध कराता है की ढोल, गंवार, सूद्र, पशु, नारी सकल ताड़ना के अधिकारी हैं. अर्थात वह सकल शब्द का प्रयोग करता है। अभिप्राय है की किसी एक के द्वारा नहीं पाँचों के उद्धार या विकास द्वारा ही ज्ञान के समुद्र में रास्ता बनाया जा सकता है. समुद्र पर क्रोधित होने से अच्छा है की इनका विकास किया जाए, वरना इस प्रसंग में समुद्र स्वयं क्षमा मांग सकता था इन पाँचों के बारे में कहने का क्या आशय था ? यहाँ तुलसीदास जी की सामाजिक द्रष्टि उजागर होती है की किसी दुर्बल व्यक्ति पर ध्यान देकर उन्हें दूर करना चाहिए. विकास के प्रमुख पांच घटक हैं इनका सकल विकास होना चाहिए, किसी एक का नहीं. चौपाई में एक और शब्द का प्रयोग हुआ है अधिकारी. यह प्रयोग मामूली नहीं है जैसा विद्वतजन योग्यता के अर्थ में प्रयोग करते हैं. ताड़ना के अधिकारी-दंड पाने के योग्य हैं. किन्तु संदर्भित स्थान और प्रयक्ति में ऐसा अर्थ कदापि नहीं हो सकता क्यों की दंड आने का कोई अधिकार नहीं होता है. अधिकारी से तात्पर्य अधिकार रखने वाले से है. दंड देने का अधिकार तो हो सकता, मारने का अधिकार हो सकता है, पिटने का नहीं शोषित होने का अधिकार कभी होता है क्या ? सही अर्थों में सकल तत्व ढोल (मीडिया), गंवार (अशिक्षित), शूद्र (निचला दलित वर्ग), पशु (दुर्बल पालतू जानवर) और नारी (पीड़ित एवं शोषित महिला वर्ग) अपने-अपने उद्धार का अधिकार रखते हैं इनका अधिकार इनको मिलना चाहिए. कुछ आलोचक और विद्वानों ने ताड़ना का बुन्देली अर्थ समझे बिना ही, उसे प्रताड़ना के करीब मानकर अर्थ का अनर्थ कर दिया, जबकि हिंदी शब्द कोष में कहीं भी ताड़ना का अर्थ प्रताड़ना नहीं दिया गया है उर्दू में कहा गया है की नुक्ते के हेर फेर में खुदा जुदा हो गया यहाँ यह कहावत पूरी तरह चरितार्थ होती है तुलसी दास जी का हृदय कितना कोमल था, यह इस पंक्ति से जाहिर है. मर्म वचन जब सीता बोला, पीपल पात सरिस मन डोला समूर्ण राम चरित मानस में कहीं भी ऐसा प्रसंग नहीं जहां मानवता या मानव मूल्यों की स्थापना में कोताही बरती गई हो यही कारण है की समुद्र की बातें सुनकर श्री रामचन्द्र जी मुस्कराने लगते हैं सुनत विनीत वचन अति कह कृपालु मुस्काई. अस्तु, महाकवि तुलसीदास जी ने सामाजिक मर्यादाओं का पालन करते हुए, कुप्रथाओं को तोड़ने का प्रयास किया तथा आदर्श राज धर्म, भक्ति, त्याग, सदाचार की शिक्षा देने वाला ग्रन्थ रचा है, विद्वेष -मूलक नहीं.

संपर्क बी-102, जानकी अपार्टमेंट कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.)
मोबा. 9926364058

■

वागेव विश्वा भुवनानि जज्ञे से साक्षात्कार कराती पुस्तक: भारतीय ज्ञान परम्परा विविध आयाम

पुस्तक विवरण–

पुस्तक शीर्षक	:	भारतीय ज्ञान परंपरा (विविध आयाम)
लेखक	:	आचार्य प्रभुदयाल मिश्र
प्रकाशक	:	महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ, स्वराज संस्थान संचालनालय, उज्जैन
पृष्ठ संख्या	:	200
मूल्य	:	₹300/–
प्रकाशन वर्ष	:	प्रथम संस्करण 2024 (विक्रम संवत् 2081)

प्रो. डॉ. सरोज गुप्ता

इस सृष्टि का मूल तत्व वाक् है। वाणी विचार शक्ति का सशक्त माध्यम अवश्य है परन्तु वाणी पर्याप्त नहीं है। आत्मानुभूति की मौलिक अभिव्यक्ति के लिए वाणी को वाक बनाकर ही अध्यात्म क्षेत्र में सफलता प्राप्त की जा सकती है। शोधित वाणी को वाक् कहते हैं। यही विश्वव्यापिनी वेदों की माता है और अमृत की नाभि है।

वेद, वेदान्त और वाक् संस्कृति के उन्नायक आचार्य पं प्रभु दयाल मिश्र जी वैदिक विज्ञान के प्रकाण्ड विद्वान हैं। आपने अपनी सद्य: प्रकाशित पुस्तक भारतीय ज्ञान परम्परा विविध आयाम में भारतीय अध्यात्म दर्शन के वाक् पक्ष को अत्यंत समृद्ध, बौद्धिक, वैचारिक दृष्टि से सम्पन्न बनाया है। भारतीय ज्ञान परम्परा की ऐसी प्रभा आलोकित की है जिससे समग्र दर्शन को वेद, उपनिषद, पुराण, श्रीमद्भगवतगीता वांग्मय ग्रंथों से भारतीयता की सही पहचान मिली है। एक पूरी परम्परा जो संस्कृत से अनवरत प्रवहमान होकर आत्मा बुद्ध्या समेत्यर्थान् मनो युङ्क्ते विवक्षया आत्मा और बुद्धि के मिलन के लिए मन को युक्त बनाने में सर्वथा सक्षम है। मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग भारतीय ज्ञान परम्परा प्रकोष्ठ के अन्तर्गत अनेक कार्यक्रम सम्पन्न करा रहा है ताकि युवा पीढ़ी धर्म अध्यात्म दर्शन को समझ सके। आचार्य पं. प्रभु दयाल मिश्र जी ने 18 लेखों में ज्ञान के समस्त आयामों पर विस्तार व गहराई से विवेचन किया है। इन लेखों में ज्ञान के पर्याय वेद से लेकर प्रत्यभिज्ञान तक ज्ञान विज्ञान की समस्त आधारभूत जिज्ञासाओं को मानव की बुद्धि और हृदय की समृद्धि को सम्प्रेषणशील बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आपकी इस पुस्तक में आस्तिक षड्दर्शन और नास्तिक दर्शन-त्रय में न्याय दर्शन, सांख्य दर्शन, वैशेषिक दर्शन, मीमांसा व योग दर्शन का बड़ी ही सूक्ष्मता के साथ विवेचन किया है। वैदिक और अवैदिक दर्शन जिन्हें पढ़ने सुनने में जिज्ञासु भ्रमित होते हैं, मिश्र जी ने सारे संदेहों का निवारण इस छोटे से लेख द्वारा कर दिया है। सार्वभौमिक ज्ञान: गीता, शैव शाक्त आगम में शक्ति का अद्वय लोक में परमेश्वर, ईश्वर और उसके अवतार, योग और ध्यान परंपरा पर विशेष ध्यान आकृष्ट किया है। भारतीय ज्ञान परम्परा में यदि आयुर्वेद की बात न हो तो अधूरा सा लगता है। प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति में वैदिक ज्ञान एवं संहिताओं का अद्भुत समन्वय है। भारतीय संस्कृति में साहित्य, संगीत, नाटक और नृत्य के शास्त्रीय पक्ष रखकर भरत मुनि से लेकर कालिदास, महाकवि भास, भवभूति, शूद्रक, राजशेखर, विशाखदत्त, हर्षवर्धन के पश्चात् की परम्परा द्वारा पुरुषार्थ सिद्धि तक की यात्रा सुगम की है। चौदह विद्याओं के साथ चौसठ कलाएं सुप्रसिद्ध हैं। मिश्र जी ने भारतीय कलाएँ, भित्ति और शिलालेख में समग्र कला दर्शन को हमारे सामने प्रत्यक्ष कर दिया ताकि विद्या और कलाओं से सम्पन्न षोडश कला पुरुष की अवधारणा सिद्ध हो सके। रामराज्य की भूमिका और रामायण संदर्भ, ब्रह्माण्ड विज्ञान और सृष्टि रचना, प्रकृति और पर्यावरण का पृथिवी सूक्त जैसे विषयों से आर्ष भारत वेद की सर्जनात्मक सत्ता को पाठक समझ सकेंगे। श्री रामानुजाचार्य जी की भक्ति परम्परा के सामाजिक समरसता

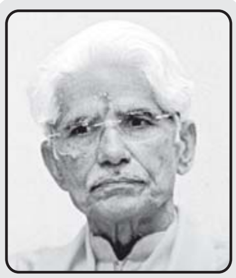

आचार्य प्रभुदयाल मिश्र
(वरिष्ठ साहित्यकार)
प्रधान संपादक
तुलसी मानस भारती

की भक्ति-धारा, करोड़ों भारतीयों का अन्त:स्थ मन्दिर ज्ञान परंपरा का प्रहरी प्रतिष्ठान गीता प्रेस की चर्चा करते हुए आपने बताया कि अब तक पन्द्रह भाषाओं में तेहत्तर करोड़ पुस्तकों का रिकार्ड गीता प्रेस ने बनाया है। श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार एवं शीर्षस्थ विद्वान पंडित मदनमोहन मालवीय, पूज्यनीय करपात्री जी महाराज जी की भूरि भूरि प्रशंसा की है। संस्कृत की अथाह शब्द संपदा लेख में देवनागरी संस्कृत की व्याकरणिक विशेषताओं का विलक्षण वर्णन किया है। ज्ञान परंपरा नहीं प्रत्यभिज्ञान के अन्तर्गत सनातन धर्म के कर्तव्यबोध ईशावास्य उपनिषद्- ऊं क्रतो स्मर, कृतं स्मर स्वयं के कार्यों के प्रति सचेत रहने का संदेश दिया है। यह पुस्तक महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ, स्वराज संस्थान संचनालय संस्कृति विभाग मध्यप्रदेश शासन भोपाल से प्रकाशित है। इस पुस्तक में पुरोवाक् निदेशक श्री राम तिवारी जी ने लिखकर भारतीय ज्ञान परम्परा के राष्ट्रव्यापी आन्दोलन की ओर इंगित किया है। अस्मिता, अस्तित्व, आत्मबोध - पद्मश्री श्री विजयदत्त श्रीधर संस्थापक संयोजक, सप्रे संग्रहालय भोपाल द्वारा लिखा गया। पुस्तक हर घर में पढ़ी जाने योग्य है। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए संग्रहणीय है। घर-परिवार में इन लेखों पर चर्चा हो। यह पुस्तक बाल, वृद्ध, युवा, स्त्री, पुरुष सबके लिए पठनीय एवं ज्ञान चक्षु खोलने के लिए पर्याप्त है।

लेखिका अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
पं दीनदयाल उपाध्याय शासकीय कला एवं
वाणिज्य अग्रणी महाविद्यालय सागर मध्य प्रदेश, पिनकोड 470001
मोबा. 7000606501

कला समय

कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

के सदस्य बने

मैं .... कला समय पत्रिका का .... एक वर्ष : 600/- रूपये, दो वर्ष : 1200/- रूपये, चार वर्ष : 2300/- रूपये, आजीवन : 10,000/- रूपये का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ। रजिस्टर्ड शुल्क रूपये 300/- प्रतिवर्ष सहित कुल रूपये .... ऑनलाइन/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर .... दिनांक .... संलग्न है।

नाम : ....

पता : ....

....

पिन : .... मो.: ....

हस्ताक्षर

सदस्यता सहयोग राशिः

(रजिस्टर्ड डाक शुल्क 300/- प्रति वर्ष अतिरिक्त)

वार्षिक	:	600 (व्यक्तिगत)	700 (संस्थागत) साधारण डाक
द्वैवार्षिक	:	1200 (व्यक्तिगत)	1400 (संस्थागत) साधारण डाक
चार वर्ष	:	2300 (व्यक्तिगत)	2700 (संस्थागत) साधारण डाक
आजीवन	:	10,000 (व्यक्तिगत)	12000 (संस्थागत) साधारण डाक

(15 वर्ष के लिए)

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाईन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'कला समय' के नाम पर उक्त पते पर भेजें)

विशेष : 'कला समय' की प्रतियाँ साधारण डाक/रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेजी जाती हैं यदि कोई महानुभाव रजिस्टर्ड पोस्ट से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं तो कृपया वार्षिक डाक खर्च 300/- अतिरिक्त भेजने का कष्ट करें।

कार्यालय सम्पर्क :

संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग

जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016
फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
वेबसाइट : **www.kalasamaymagazine.com**

ऑनलाइन सदस्यता सहयोग सुविधा :

'कला समय' का बैंक खाता विवरण

पंजाब नैशनल बैंक की शाखा अरेरा कॉलोनी भोपाल, म.प्र. **(IFSC : PUNB0093210)** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में ऑनलाइन राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

- कृपया सदस्यता शुल्क 'कला समय' के नाम भेजें।
- सदस्यता शुल्क प्राप्त होने के बाद अगले अंक से पत्रिका भेजना प्रारम्भ की जावेगी।
- सदस्यता शुल्क निम्न पते पर भेजे:- जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कालोनी, भोपाल (म.प्र.) 462016
- नमूना प्रति ₹100/- , एवं रजिस्टर्ड डाक शुल्क ₹50/-

-प्रबंध संपादक

पुस्तक समीक्षा

वैश्विक दर्शनों का तुलनात्मक विवेचनः द्वैत से अद्वैत की ओर

पुस्तक विवरण-

पुस्तक शीर्षक : द्वैत से अद्वैत की ओर
लेखिका : डॉ. नुसरत मेहदी
प्रकाशक : संदर्भ प्रकाशन, भोपाल
पृष्ठ संख्या : 322
मूल्य : ₹350/-
प्रकाशन वर्ष : प्रथम संस्करण 2023

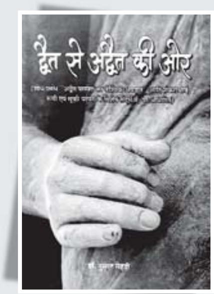

डॉ. राम वल्लभ आचार्य

जब मनुष्य के मन में अपने और विश्व के अस्तित्व के रहस्यों को जानने समझने की इच्छा उत्पन्न हुई होगी तो उसके मन में अनेक प्रश्न उपस्थित हुए होंगे जैसे -सृष्टि का रचयिता कौन है? सृष्टि की रचना क्यों और कैसे हुई? जब ये प्रश्न मन को मथने लगे होंगे तो उस परम तत्व को जानने की इच्छा बलवती हुई होगी जिसे ईश्वर या ब्रह्म का नाम दिया गया होगा। तब उसने गहन चिन्तन, मनन और शोध किया होगा जिसके फलस्वरूप नाना मत मतान्तर अस्तित्व में आये होंगे।

वेदों को ज्ञान का प्रथम स्त्रोत कहा गया है जिनमें अनेक विषयों का विस्तृत वर्णन मिलता है। ब्रह्म को जानने की इच्छा को 'अथातो ब्रह्म जिज्ञासा' कहा गया। इसका समाधान खोजते हुए भारतीय मनीषियों ने दर्शन शास्त्र के अनेक ग्रंथ रचे जिन्हें षट दर्शन कहा जाता है। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा एवं वेदान्त नामक ये छह दर्शन अलग अलग मनीषियों ने प्रतिपादित किये । तत्व दर्शन या दर्शन का अर्थ है तत्व का ज्ञान। मानव के दुखों की निवृति के लिए ही भारत में दर्शन शास्त्र का जन्म हुआ है। उपनिषदों में वेदान्त दर्शन का विस्तृत वर्णन मिलता है। आदि शंकराचार्य ने बारह उपनिषदों पर भाष्य लिखे। इनमें अद्वैत दर्शन आचार्य शंकर का मुख्य प्रतिपाद्य विषय रहा है। अद्वैत का अर्थ एकत्व भाव से है। आचार्य ने कहा कि ब्रह्म और जीवात्मा अलग अलग नहीं अपितु एक ही हैं। उन्होंने 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' के कथन से समूची सृष्टि को ही ब्रहा रूप माना तथा' अहं ब्रहास्मि अर्थात् में ब्रह्म हूँ तथा तत्त्वंमसि अर्थात् तुम भी वही हो कहकर द्वैत भाव को नकारा । इस प्रकार समस्त जड़ चेतन जगत में एकत्व का प्रतिपादन किया । विदुषी शोधकर्ता डॉ. नुसरत मेहदी की कृति 'द्वैत से अद्वैत की ओर उनके शोध प्रबंध' अद्वैत परंपरा का वैश्विक अवदान, आदि शंकराचार्य, रूमी एवं सूफी परंपरा के विशेष संदर्भ में पर आधारित है।

डॉ. नुसरत मेहदी
(वरिष्ठ साहित्यकार)
कवि, निदेशक- उर्दू अकादमी म.प्र. शासन भोपाल

डॉ. नुसरत ने अपने शोध प्रबंध में विभिन्न वैश्विक दर्शनों पर अद्वैत दर्शन के प्रभाव का विस्तृत अध्ययन कर तुलनात्मक विवेचन किया है। आपने अपने शोध को पुष्ट करने हेतु शताधिक पुस्तकों का अनुशीलन कर तथ्यात्मक सामग्री प्रस्तुत की है। पुस्तक में जहाँ साहित्य और परंपरा, भारतीय दार्शनिक परंपराएँ, वेद कालिन परंपरा, पुराणकालीन परंपरा, उपनिषद कालीन परंपरा, महाकाव्य कालीन परंपरा, नास्तिक परंपरा, आस्तिक परंपरा, अद्वैत परंपरा एवं सूफी परंपरा की जानकारी दी है वहीं साहित्य एवं दर्शन, हिन्दी साहित्य का काल विभाजन, अद्वैत परंपरा की संकल्पना व स्वरूप के अंतर्गत इसका उद्गम, इतिहास, विकासक्रम, सिद्धांत व शांकर अद्वैत की विविध अवधारणाओं का विशद विवेचन प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही आचार्य शंकर के दार्शनिक साहित्य का वैश्विक अवदान, सूफी परंपरा की संकल्पना एवं स्वरूप, रूमी के दार्शनिक साहित्य का वैश्विक अवदान, तथा आदि शंकराचार्य और रूमी के दार्शनिक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए अद्वैत एवं सूफी परंपरा का तुलनात्मक अध्ययन एवं हिन्दी साहित्य पर प्रभाव और अद्वैत के वैश्विक अवदान पर व्यापक चर्चा की है। कृतिकार ने जहाँ संत कबीर, दादूदयाल, रैदास, रसनिधि, रहीम, गुरु नानक आदि की रचनाओं

पर अद्वैत के प्रभाव को दर्शाया है वहीं सूफी परंपरा के शायर अमीर खुसरो, उरफी शीराजी, फैज़ी, नज़ीरी, तालिब, कलीम, दारा शिकोह सरनद शहीद, चन्द्रभान, बेदिल, ब्रह्मण तथा आनन्द राम मुखलिस सहित अन्य शायरों के कलामों पर अद्वैत के प्रभाव का वर्णन किया है। पुस्तक में एलिया, क्सेनोफेन, स्टेस, परमेनिद, ज़ेनो, प्लेटो, अरस्तू, टामलिन, देकार्त, स्पिनोज़ा, लाइनिज, बर्कले, काण्ट, फिक्ते, शेलिंग, हेगल, शोपेनहावर के कथनों के माध्यम से वैश्विक दर्शन पर अद्वैत के प्रभाव की समीक्षा की है। इस्लाम और सूफी मत तथा अद्वैत के विषय में भी अनेक उदाहरणों से समानता को रेखांकित किया गया है।

विदूषी लेखिका ने विषय के विशद विश्लेषण के पश्चात अन्ततः निष्कर्ष निकाला है कि 'यह कहना गलत नहीं होगा कि सूफ़ी वाद प्राचीन भारतीय दर्शन एवं चिंतनवका ईरानी संस्करण प्रतीत होता है। अद्वैत वेदान्त ज्ञानयोग कहलाता है और इस्लाम के अन्तर्गत सूफ़ियों ने इसी ज्ञानमार्ग एवं यतीवृत्ति को अपनाने का साहस दिखाया। इस धारा के सबसे बड़े विचारक अल गजाली हुए जिन्होंने एलान किया कि ईश्वर और जीव के मौलिक स्वभाव में मौलिक एकता है। जीव ईश्वर को जान सकता है और उस कोटि तक पहुँच सकता है। यह स्पष्ट रूप से अद्वैत वेदान्त का प्रभाव था। अद्वैत वेदान्त के मोक्ष की तरह सूफ़ियों ने फ़ना की कल्पना की। योग के ध्यान को मराकबा कहकर अपनाया। त्याग एवं सन्यासपूर्ण जीवन पद्धति, जपमाला आदि यह सब भारतीय साधना से लिया।'

डॉ. नुसरत मेहदी का यह श्रमसाध्य कार्य वास्तव में अप्रतिम एवं श्लाघनीय है। अध्यात्म एवं दर्शन में रुचि रखने वाले पाठकों के लिये यह उनका महत्वपूर्ण अवदान है। यद्यपि पुस्तक में कहीं कहीं वर्तनी की गल्तियाँ तथा पंक्तियों का दोहराव खटकता है तथापि यह अक्षम्य नहीं है क्योंकि 320 पृष्ठों की पुस्तक में यह स्वाभाविक है। फिर भी अगले संस्करण में इसे सुधारा जाना अपेक्षित है।

'कला समय' पत्रिका के सदस्यता शुल्क में वृद्धि की सूचना

प्रिय पाठकों,

द्वैमासिक 'कला समय' एक अव्यावसायिक कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक सांस्कृतिक पत्रिका है, जो विगत 28 वर्षों से अविकल रूप से कला/साहित्य जगत की सेवा कर रही है। आप इस तथ्य से परिचित हैं कि एक अव्यावसायिक कला-सांस्कृतिक पत्रिका निकालना बड़ा ही दुष्कर और श्रमसाध्य कार्य है। विगत कुछ वर्षों में मुद्रण, टंकण, कागज आदि की लागत में असामान्य बढ़ोत्तरी हुई है। ऐसे में पत्रिका के नियमित प्रकाशन को आप तक पहुँचाने के लिए ग्राहक सदस्यता शुल्क में (फरवरी-मार्च 2025) अंक से वृद्धि करना अपरिहार्य हो गया है। सदस्यों से अनुरोध है कि अब वे अपना सदस्यता शुल्क निम्नानुसार भेजकर सहयोग करें। जिन आजीवन (15 वर्षीय) सदस्यों की सदस्यता अवधि के 15 वर्ष पूरे हो चूके हैं, उनसे अनुरोध है कि वे पुनः अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण कराने हेतु 'कल ा समय' के पक्ष में आजीवन सदस्यता शुल्क भेज कर अनुगृहीत करें।

संशोधित सदस्यता शुल्क

प्रति अंक	–	100/–	(साधारण डाक)
वार्षिक	–	600 (व्यक्तिगत)	(साधारण डाक)
	–	700 (संस्थागत)	(साधारण डाक)
द्वैवार्षिक	–	1200 (व्यक्तिगत)	(साधारण डाक)
	–	1400 (संस्थागत)	(साधारण डाक)
चार वर्ष	–	2300 (व्यक्तिगत)	(साधारण डाक)
	–	2700 (संस्थागत)	(साधारण डाक)
आजीवन	–	10,000 (व्यक्तिगत)	(साधारण डाक)
(15 वर्ष के लिए)	–	12,000 (संस्थागत)	(साधारण डाक)

(कृपया सदस्यता शुल्क-ऑनलाईन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'कला समय' के नाम पर उक्त पते पर भेजें)

विशेष : 'कला समय' की प्रतियाँ साधारण डाक से भेजी जाती हैं यदि कोई महानुभाव रजिस्टर्ड पोस्ट से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं तो कृपया वार्षिक डाक खर्च 300/- अतिरिक्त भेजने का कष्ट करें।

नमूना प्रति ₹100/- , एवं रजिस्टर्ड डाक शुल्क ₹50/- – संपादक

पुस्तक समीक्षा

जनजातीय मान्यताओं, संवेदनाओं और प्रणयानुभूतियों का सूक्ष्मदर्शी चित्रण है 'लमझना'

पुस्तक विवरण-

पुस्तक शीर्षक	:	लमझना (जनजातीय भावलोक की कविताएँ)
कवि	:	लक्ष्मीनारायण पयोधि
प्रकाशक	:	राष्ट्रीय प्रकाशन मंदिर, लखनऊ
पृष्ठ संख्या	:	222
मूल्य	:	₹500/-
प्रकाशन वर्ष	:	प्रथम संस्करण 2019

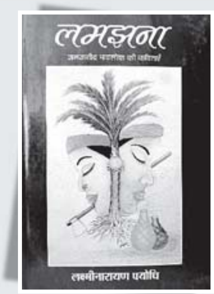

यशपाल शर्मा यशस्वी

'बहुत समय पहले अवतार सिंह पाश' की एक कविता पढ़ी थी। उसकी शुरुआती पंक्तियाँ याद आती हैं -

भारत/ मेरे सम्मान का सबसे महान शब्द/ जहाँ कहीं भी प्रयोग किया जाए/ बाकी सभी शब्द अर्थहीन हो जाते हैं।

इस शब्द के अर्थ/ खेतों के उन बेटों में हैं/ जो आज भी वृक्षों की परछाइयों से/ वक्त मापते हैं/ उनके पास सिवाय पेट के कोई समस्या नहीं।

लक्ष्मीनारायण पयोधि की काव्यकृति लमझना से पृष्ठ-दर-पृष्ठ गुज़रते हुए मुझे बार-बार यह अहसास हुआ कि कवि के रचना-संसार से होते हुए मैं उसी भारत को जानने-समझने का प्रयास कर रहा हूँ, या शायद उससे भी अधिक गहरे उतर रहा हूँ। जनजातीय मान्यताओं, संवेदनाओं, प्रणायानुभूतियों व पीड़ाओं को जिस बारीकी और आत्मीयता से पयोधि जी ने अपने शब्दों में उकेरा है,उसे सूक्ष्मदर्शी चित्रण कहना सर्वथा समीचीन होगा।

लक्ष्मीनारायण पयोधि
वरिष्ठ साहित्यकार
कवि जनजातीय
संस्कृति के अध्येता

सोमारू के उपरांत यह पयोधि जी का दूसरा काव्य संग्रह है,जिसे उन्होंने स्वयं आत्मकथ्य में एक अभिनव काव्य-प्रयोग के रूप में संज्ञायित किया है। बिना संशय के यह कहा जा सकता है कि लमझना उनका एक सफल काव्य-प्रयोग है। जनजातियों में प्रचलित विश्वासों, मान्यताओं, कथाओं तथा उन कथाओं के पात्रों को अपने शब्दों में पिरोते हुए संग्रह की प्रथम कविता पृथ्वी का जन्म में वे स्वीकारते हैं कि-

'दुनिया में जितने होंगें मानव समुदाय/ होंगे उनके उतने पालनार/ जहाँ हुआ होगा पृथ्वी का जन्म/ हर समुदाय का अपना कोई भीमुलदेव।'

लेकिन साथ ही इसके आगे वे मनुष्य की नित्य बढ़ती लालसाओं को इंगित करते हुए यह कहने से भी नहीं चूकते -

'आज हम भी खोज ही तो रहे हैं/ कोई और पृथ्वी/ जिस पर स्थापित कर सकें/ स्वार्थ का साम्राज्य।'

इन आदिवासियों के लोकगीत,लोकनृत्य आदि का चित्रण भी बहुलता से समीक्ष्य कृति में देखा जा सकता है। कवि इनमें भी जनजातीय जीवन में निहित राष्ट्रीयता के भावों के सूत्र खोज लेता है -

'बना सकता गेड़ियों पर चढ़/ साथियों के साथ पिरामिड/ शिखर पर लहरा सकता राष्ट्र ध्वज/ या बिखेर सकता गुदुम का हर्ष।'

कवि अज्ञेय ने कभी अपनी चर्चित व्यंग्य कविता 'साँप' में कहा है -

'साँप/तुम सभ्य तो हुए नहीं/ नगर में बसना भी/ तुम्हें नहीं आया/एक बात पूछूँ/ उत्तर दोगे/ फिर कैसे सीखा डसना/ विष कहाँ से पाया?'

ऐसे ही सभ्य वर्ग द्वारा जब इन वनवासियों को हेय दृष्टि से देख जाता हैं,इन्हें गँवार,पिछड़े तथा असभ्य बताया जाता है तो कवि की पीड़ा इन शब्दों में प्रकट होती है -

'हे राजन/ हमारे ही तराशे सिंहासनों पर बैठ/ हमें पिछड़ेपन के/ नित्य नूतन विशेषणों से/ अभिसिक्त करते/ तुम्हें नहीं आती शर्म?'

अगली ही कविता 'हे राजन' में कवि की वाणी घनीभूत वेदना से सिक्त होकर तीक्ष्ण व्यंग्य के रूप में उभर आती है -

'सत्य के प्रवक्ता/ संवेदना के धनी/ ईमानदारी के पर्याय/ हे राजन/ किसी प्रतिभा से / करते छल/ देते धोखा/ इतिहास को/ काँपा नहीं तुम्हारा दिल?'

किसी भी प्रकार के भाषायी आडंबर से रहित इन रचनाओं में उपमा,उत्प्रेक्षा,रूपक,अनुप्रास व मानवीकरण से लेकर विशेषण विपर्यय तक अलंकारपूर्ण सहजता के साथ समाविष्ट होते देखे जा सकते हैं। इन अतुकांत रचनाओं में गीत की-सी तरलता व स्निग्धता के दर्शन विविधता के साथ होते हैं।जैसे -

'रात महक रही खिले फूल-सी/ चाँदनी का झरना बिखेर रहा संगीत/ गीत जंगल के गुनगुनाने लगी हवा/ दूर गूँज रही/ माटी मादल के साथ शहनाई/ सैला की धुन

पर चलो नाचें/ फिर एक दूसरे की बाँह थामकर/ कभी न छोड़ने के लिये।'

जल,जंगल व जमीन से जुड़ी जनजातियों के वर्णन में प्रकृति से जुड़े उपमान न जोड़े जायें,ऐसा तो संभव ही नहीं। उदाहरण स्वरूप कुछ पंक्तियाँ हैं –

'वन कुसुमों की सुगंध जैसे/ महमहाते स्वर शहनाई के/ फैल जाते दिगंत में/ मुग्ध करते जंगल को।'

प्रकृति सौंदर्य के साथ ही मानवीय सौंदर्य के सूक्ष्म चित्रण में भी कवि को पर्याप्त सफलता मिली है। चाक्षुष बिम्बों के अन्यतम उदाहरण हमें देखने को मिलते हैं। मसलन –

'गलबाँहें डाल/ इठलाती हवा के साथ/ जाना तुम्हारी हँसी का/ नदी की ओर/ भाता होगा जगनी पुंगार को/ मेरा तो रोज़ ही जलता दिल/ धूप मलने लगती तुम्हारी देह/ और पानी का रंग/ हो जाता सुनहला।'

या कि –

'मुझे पता नहीं था/ कि उसकी आँखें चकमक हैं/ और मेरा दिल सेमरा की रुई/ कि एक रगड़ में लपक लेगी चिंगारी।'

नवयुगल की प्रणायानुभूतियों के आकर्षक चित्र भी 'लमझना' में प्रचुरता से उपलब्ध हैं। सभवत: किसी लोकगीत के भावों को प्रतिबिंबित करता एक शब्दचित्र दृष्टव्य है–

'करौंदे की बाड़ी में/ चुभ गया काँटा/ और गाँव भर में/ बजने लगे बाजे/ तू आजा डिंडोरी के हाट मनमीत/ खरीदेंगे मनपसंद लुगड़ा/ और सिलवायेंगे सुंदर पोलका।'

स्त्री जाति की दुरवस्था कवि की संवेदना को झंकृत करती है। किसी भी ज्यादती की घटना में भले ही अपराधी पुरुष हो,किंतु कलंकित महिला ही होती है। ऐसे में परिणीता नायिका लिटिया के माध्यम से अपना संदेश प्रियतम को भेजती हुई कहती है –

'लिटिया जा/ कह दे प्रियतम से/ कि न भेजे मुझे लेने/ ससुर या जेठ को/ खुद आयें और ले जायें/ जैसे ले गये थे ब्याहकर।'

जनजातियों में व्याप्त अंधविश्वास भी कवि को व्यथित करते हैं। उनका शिकार भी अंतत: महिलाओं को ही होना पड़ता है। कवि की वाणी चित्कार उठती है –

केवल स्त्रियों पर सवार प्रेत/गो कि पुरुषों पर/सवार नहीं होते भूत/कि ज़रूरी नहीं उतारा जाना/पुरुषों पर चढ़े प्रेत/कब तक लगेंगे दुनिया में/भूतों के मेले/कब तक बना रहेगा/विश्वास झाड़फूँक पर/आदमी कब/अपने भूत से छुटकारा पा/सीखेगा/वर्तमान में जीना? भोगवादी संस्कृति ने मानव को लालची बना दिया है। जल,जंगल व ज़मीन उससे त्रस्त है। इस लालच की घुसपैठ जब आदिवासियों के रहवास तक पहुँचती है तो पयोधि जी लिखते हैं –

'जंगल दुखी हैं सचमुच/ विदा होते वृक्षों के लिये/ हम उसके दुख में/ शामिल भले न हों/ पर समझें तो सही!' वनदेवी की कल्पना वनवासियों ने सदैव की है। आदिवासियों की इच्छाओं व आवश्यकताओं को पूरी करने वाली वनदेवी भले ही एक कल्पना मात्र हो,किंतु इसे प्रकृति के प्रति एक पूज्य भाव का प्रतीक भी माना जाना चाहिए। लेकिन जब पोषक का ही शोषण चरमावस्था पर पहुँचता है तो –

प्रकट नहीं होती वनदेवी/ अब किसी लकड़हारे के सामने/ आरी छीनने के फ़न से/ नावाक़िफ़/ वह आतंकित/ जंगल माफ़ियाओं से/ छुपकर बैठ गयी/ किसी खोह–कंदरा में।

जनजातीय संस्कृति के कुछ सकारात्मक पक्षों को भी कवि ने पूर्ण प्रबलता के साथ उद्घाटित किया है। श्रमजीवी किसान श्रम तो करता है,किंतु उसके फल पर मात्र अपना अधिकार नहीं समझता। सहअस्तित्व एवं वसुधैवकटुम्बकं की सुंदर भावना को प्रकट करता एक चित्र है –

खेत पर उसके/ हक़ सभी का/ दिन में पंछी/ और रात में बनैले पशु/ चर जाते अपना–अपना हिस्सा/ रोका नहीं भद्दू ने कभी किसी को/ परंपरा से मिले संस्कारों का/ करता खूब निर्वाह भद्दू/ बचे को भाग्य मानकर ले जाता घर। आदिवासियों का कोई भी गाँव, गाँव से अधिक एक परिवार होता है। इसमें किसी के भी सुख–दुख केवल उसके अपने नहीं, सभी के होते हैं। गाँव के किसी भी परिवार का मेहमान पूरे गाँव का मेहमान होता है –

मेहमान हो/ किसी परिवार का/ बंगला करता/ उसका उचित सत्कार/ और बंगले की देखभाल में/ तैनात/ पूरा सहराना। किंतु इन भोले–भाले वनवासियों का सामना जब महाजनी सभ्यता से होता है तो वे दीन–हीन अवस्था में पहुँच जाते हैं। मूल का ब्याज और ब्याज का ब्याज, क़र्ज़ का अंतहीन चक्कर। पयोधि जी के शब्दों में –

सूद पर / चढ़ता गया सूद/ असल/ कटा ही नहीं कुछ/ फ़सल के साथ। इस चक्कर में एक अवस्था वह भी आती है, जब किसान अपने खेत से मालिकाना हक़ खो देता है और केवल श्रमजीवी बनकर रह जाता है। लेकिन इस श्रम के बदले में भी उसे क्या प्रतिफल मिल पाता है,यह एक विचारणीय बिंदु है। अपने श्रमकणों से सिंचित फ़सल को लहलहाते हुए देखना ख़ुशी तो देता है किंतु.......। बरसूद्या नामक एक किसान की मनोव्यथा को कवि इन शब्दों में मार्मिकता के साथ प्रकट करते हैं–

बरसूद्या/ नहीं था मगर/ खेत का मालिक/ उसे नहीं था हक़ आनंद का/ फ़सल उगाकर/ कोठी तक पहुँचाने के लिये वह पूरा जिम्मेदार/ अन्न पर/ सिर्फ़ मालिक का अधिकार/ खेत में बन गया मचान/ रखवाली में तैनात/ बरसूद्या/ जैसे बिजूका। इससे भी अधिक दर्दनाक स्थिति का चित्रण कवि ने डोंडिया नामक कविता में किया है। सतत् शोषण एवं लाँछन झेलने के बाद निरीह डोंडिया के भीतर क्रोध की ज्वाला भड़कने लगती है। साहूकार के विषसिक्त शब्दों को सुनकर –

उबलने लगा डोंडिया का खून/ लगता फट जायेंगी नसें दिमाग की/ जन्म लेने लगते खतरनाक विचार/ फड़फड़ाने लगती उसकी भुजाएँ।

कवि का मानना है कि स्थितियाँ सदैव एक जैसी नहीं रहतीं। परिदृश्य में परिवर्तन की झलक को दर्शाते हुए कवि लिखते हैं –

सड़क नयी बन रही थी/ पुल पुलिये भी/ सब हो रहे थे पक्के/ उपेक्षा के दंश झेलते/ बीजापुर ज़िले में/ आज़ादी के सत्तर बरस बाद/ कुछ नया होता दिखा/ पिछले चालीस बरसों से/ खुदती रही सड़क/ केवल बारूदी सुरंगों के लिये।

लक्ष्मीनारायण पयोधि के कुल 220 पृष्ठों के इस काव्य संग्रह की 60 कविताओं के विषय में बहुत कुछ कह चुकने के बाद भी बहुत–बहुत कहना शेष रहता है। समय एवं स्थान की मर्यादाओं से समीक्षक भी मुक्त नहीं होता। स्याह लम्बी रात के बाद अवश्यम्भावी भोर के आगमन के प्रति आश्वस्त करते,आशावादी भाव समेटे इसी संग्रह में मुद्रित पयोधि जी के ही शब्दों से मैं अपनी बात पूरी करना चाहूँगा –

मक्खियाँ कभी तो छोड़ जायेंगी मुहाल/ या उतारकर रख देंगी/ डंक अपने/ बौराँगी फिर चढ़ेगा पेड़ पर/ लायेगा मटका भर शहद/ और रख देगा बावोन के सिर पर।

संपर्क : पहुँना, जिला–चित्तौड़गढ़ राजस्थान 312206 मो. 8104665141

■

पुस्तक समीक्षा

कवि ब्रजछैल रचित काव्य सियवर विनोद

पुस्तक विवरण-

पुस्तक शीर्षक	:	सियावर विनोद (कवि ब्रजछैल द्वारा रचित काव्य)
टीकाकार एवं संपादक	:	गौरीशंकर दुबे
प्रकाशक	:	श्री विनायक प्रकाशन, इंदौर (म.प्र.)
पृष्ठ संख्या	:	144
मूल्य	:	₹200/-
प्रकाशन वर्ष	:	संस्करण 2022

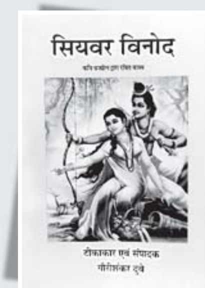

गौरीशंकर दुबे

हिन्दी साहित्य अपने आँचल में कई रत्नों को समेटे हुए है। उनमें से कई अपनी विशेषताओं के कारण जन सामान्य के प्रिय हो गए किन्तु कई मूल्यवान रत्न अभी तक प्रकाशित नहीं हो पाए। ज्ञात हिन्दी साहित्य सेवियों के अवदान पर प्रचुर सामग्री प्रकाशित हो चुकी है किन्तु देश के हिन्दी भाषी क्षेत्रों में एक बड़ी संख्या उन साहित्यकारों की भी रही जो उपक्षित रहे अथवा उनके योगदान को सभुचित सम्मान प्राप्त नहीं हो सका। सीतामऊ रियासत में भी साहित्यकारों और संगीतकारों को राज्याश्रय प्राप्त था। अत: यहाँ भी हिन्दी साहित्य की कुछ विलक्षण रचनाओं का सृजन हुआ। मेरे शोध कार्य ''सीतामाऊ राज्य में साहित्य - साधना'' के दौरान मुझे ऐसी कई अमूल्य रचनाओं की जानकारी मिली उनमें से कवि ब्रजछैल रचित ''सियवर विनोद'' अपने आपमें अनूठी रचना है।

सीतामऊ जिला मंन्दसौर (मध्यप्रदेश) में श्री श्रीधर जी द्विवेदी के यहाँ से मुझे उक्त काव्य ग्रन्थ की पाण्डुलिपि प्राप्त हुई। पाण्डुलिपि सुन्दर सुवाच्य अक्षरों में लिखी हुई है। इस काव्य की लिपि उन्नीस वीं सदी की नागरी है। इसके कागज जीर्ण है। प्रस्तुत ग्रन्थ के रचनाकार का नाम ''ब्रजछैल'' है। जैसा इस दोहे में ज्ञात होता है।

जिहि रस तैं उपजत रूचिर रति विनसत मन मैल।
सियवर विपिन विनोद सो वदत सुकवि बृजछैल।

सियवर विनोद प्रथम विश्राम छंद 9 ग्रन्थ में बारह विश्राम है। प्रत्येक विश्राम की पुष्पिका में रचनाकार का नाम ब्रजछैल लिखा हुआ है। यथा ''इति श्री परमानंद कंदांकुरांकितांतरे श्री सियवर विनोदे श्री बृजछैल कवि विरचिते वसंत वर्ण ने सानंद रघुनंदनों नाम प्रथमो विश्राम:।

इससे स्पष्ट है कि सियवर विनोद काव्य के रचयिता ब्रजछैल है। कवि ब्रजछैल के परिचय के संबंध में कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। ग्रन्थ के बारह विश्राम (अध्याय) प्राप्त हुए है जिनमें प्रथम विश्राम का प्रथम पृष्ठ एवं द्वादश विश्राम का अंतिम पृष्ठ प्राप्त नहीं हुआ। संभव है इन प्रथम और अन्तिम पृष्ठ में कवि ने स्वयं के संबंध में कुछ उल्लेख किया हो। अत: कवि के संबंध में कोई जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी।

मेरे विचार से कवि ब्रजछैल सीतामऊ निवासी जीवराज जी पुराणी होना चाहिए। वे सीतामऊ के महाराज कुमार रतन सिंह जी ''नट नागर'' (सन् 1808 से 1864) के समकालीन थे। वे नटनागर की कवि गोष्ठी में काव्य पाठ किया करते थे। सियवर विनोद काव्य जीवराज जी पुराणी द्वारा रचित होने के संबंध में निम्नलिखित आधार है।

(1) यह ग्रन्थ मुझे उनके ही वंशज के पास से प्राप्त हुआ है।

(2) महाराज कुमार रतन सिंह नट नागर का समय हिन्दी साहित्य में रीतिकाल का अन्त और आधुनिक काल का प्रारंभिक समय था। इस युग में अनेक कवि हुए जो- ब्रजनिधि (जयपुर महाराज प्रतापसिंह), ब्रजराज (उदयपुर महाराजा जवानसिंह), ब्रजचंद, ब्रजदास, ब्रजपति आदि उपनाम से काव्य रचना करते थे।

नट नागर की कवि गोष्ठी में लक्ष्मण जी बारहठ आगत साहित्यकार थे। वे ब्रजघीस घाप से कविता लिखते थे। इनकी कविताएँ श्री नटनागर शोघ संस्थान सीतामऊ की श्री रघुवीर लायब्रेरी में हस्त लिखित ग्रन्थ संख्या 148 गीत सागर बड़ो तथा कवित्त सागर ग्रन्थ संख्या 225 में संग्रहीत है। इसी परंपरा में जीवराज जी पुराणी भी ब्रजछैल उपनाम से काव्य रचना करते होंगे।

(3) सीतामाऊ के पास लदूना ग्राम के निवासी श्री लच्छीराम जी व्यास नट नागर की कविगोष्ठी के सदस्य थे। उन्होंने आम्र-विनोद, फाग विनोद, मृगया विनोद, काव्यग्रन्थ लिखे थे जो श्री नट नागर शोघ

संस्थान सीतामऊ की रघुवीर लायब्रेरी में हस्तलिखित ग्रन्थ संख्या 225 कवित्त सागर में संग्रहीत है। उसी तर्ज पर जीवराज जी ने भी अपने ग्रन्थ का नाम सियवर विनोद रखा हो। कालांतर में महाराज कुमार रतन सिंह नट नागर ही कविताओं का संग्रह नट नागर विनोद शीर्षक से प्रकाशित हुआ तथा महाराजा राम सिंह मोहन की कविताएँ मोहन विनोद शीर्षक से प्रकाशित हुई।

(4) सियवर विनोद काव्य में पग, वतावै, सुवासिनी, सरावै आदि अनेक मालवी शब्दों का प्रयोग हुआ है। उससे सिद्ध होता है कि यह कवि मालवा का होकर सीतामऊ निवासी होगा।

उक्त आधार पर मेरा मानना है कि ब्रजछैल कवि जीवराज जी पुराणी ही होना चाहिए। कवि के संबंध में अन्य कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं हुई है। विद्वज्जन इस पर शोधकर प्रामाणिक जानकारी दे सकते हैं।

सियवर विनोद काव्य

ऐसा अनुमान है कि इस ग्रन्थ की रचना सन् 1840 से 1860 ई. के मध्य हुई होगी। प्रस्तुत ग्रन्थ जयदेव रचित संस्कृत काव्य गीत गोविन्द की शैली में लिखा गया है। गीत गोविन्द में कुल द्वादश सर्ग है। सियवर विनोद में भी द्वादश विश्राम है।

गीत गोविन्द में गुर्जर रागे प्रतिमण्ठ ताले, मालव रागेण एक ताली ताले, भैरवी रागे रूपक ताले आदि विविध राग रागनियों में 24 अष्ट पदी गीतों का प्रयोग हुआ है। सियवर विनोद काव्य में भी गीत गोविन्द की राग रागनियों के क्रमानुसार ही 24 अष्टपदी गीतों का प्रयोग है।

गीत गोविन्द के प्रथम सर्ग में दशावतार के रूप में श्री कृष्ण की स्तुति है, सिमवर विनोद के प्रथम विश्राम में भी दशावतार के रूप में श्री राम की स्तुति है।

गीत गोविन्द में राधा-कृष्ण की प्रणय लीलाओं का चित्रण है, सियवर विनोद में सीता-राम की प्रणय-लीलाओं का चित्रण है।

गीत गोविन्द में सखी श्री कृष्ण का संदेश राधा के पास तथा राधा जी का संदेश श्री कृष्ण के पास पहुँचाती है।

सियावर विनोद में भी सहचरी श्री राम का संदश सीता के पास और सीता जी का संदेश श्री राम के पास पहुँचाती है।

गीत गोविन्द की भाषा माधुर्य गुण युक्त है सियवर विनोद की भाषा में भी माधुर्य गुण है।

सियवर विनोद में छन्दों का क्रमांक भी गीत गोविन्द के छंद क्रमांक के अनुसार ही है।

गीत गोविन्द के अष्ट पदी गीतों के पद्यों और सियवर विनोद काव्य के गीतों के पद्यों में भावों की समानता है।

उदाहरणर्थ-

गीत गोविन्द के चतुर्थ सर्ग कर्णाटक रागे एकताली ताले अष्ट पदी गीत क्र. 8 का पद्य क्र.1

निन्दति चन्द्रनमिन्दु किरण पनु विन्दति खेदमधीरम् व्याल निलयमिलनेन गरलमिव कलयति मलय समीरम् सा विरहे तव दीना।

हे माघव विरह व्यथा में राधा चन्दन की निन्दा करती है। चन्द्रकिरणें को अधीर होकर कष्ट कारिणी समझती है। मलय समीर को सर्पगृह से आने के कारण विषके समान मानती है। सियवर विनोद चतुर्थ विश्राम कर्णाटक रागे एक ताले गीत क्र8 पद्य क्र.1

चंदन निंदित इंदु सरद्वर किरन करत तन तापं।
व्याल गरलइव परल वियुल कृत त्रिविद्य पवन दव दापं।
सा विरहे तव दीना।

हे राम! आपके विरह में सीता चन्दन की निंदा करती है। शरद के चन्द्रमा की किरणें भी उसके शरीर को तपा रहीं है। शीतल, मन्द, सुगंध (त्रिविध) पवन को भी सर्प के विष के समान तरल अग्नि के समान जलाने वाला मानती है। इस प्रकार गीत गोविन्द और सियवर विनोद के कई गीतों के पद्यों में भाव-साम्य मिलता है। इस प्रकार प्रस्तुत काव्य ग्रन्थ में गीत गोविन्द की शैली को अपनाया गया है।

सियवर विनाद रीतिकालीन पद्धति में लिख गया काव्य ग्रन्थ है। मुख्य रूप से श्रृंगार रस पूर्ण रचना है। इस ग्रन्थ में विवाहोपरान्त दूलह रूप में श्री राम का अयोध्या आगमन, मत्स्य, कूर्म, वराह आदि दशावतार रूप में राम-वन्दना, वसंत वर्णन, सीता-राम के आमोद-प्रमोद का वर्णन, सीता-राम का केलि रहस्य, वसंत विहार एवं प्रथम समागम का वर्णन, मानिनी सीता को मनाने का वर्णन, सीता के प्रति श्री राम का वियोग, तथा राम के प्रति सीता के वियोग का वर्णन, अभिसार वर्णन आदि विविध लीलाओं का वर्णन किया गया है।

भावुकता, कोमलता और प्रेम की पीर ने ब्रजछैल के काव्य को जन्म दिया। ब्रजछैल प्रधानत: श्रृंगार रस के कवि है। श्रृंगार रस में सीता और राम के विरह वर्णन का जैसा उत्कृष्ट निरूपण ब्रजछैल ने किया है वह अद्वितीय है। रामचरित मानस सुन्दर काण्ड दोहा 30 में तुलसी ने सीता की विरह दशा का वर्णन किया है-

नाम पाहरू दिवस निसि, ध्यान तुम्हार कपाट
लोचन निज पद जंत्रित, जाहि प्राण के हि बाट।।

अर्थात सीता जी के लिए कहा है कि आपका नाम रात-दिन पहरा देने वाला है, आपका ध्यान ही किवाड़ है, नेत्रों को अपने चरणों में लगाये रहती है यही ही ताला है फिर प्राण जाय तो किस मार्ग से।

सीता की विरह-दशा पर यही भाव सियवर विनोद के इस छंद में देखिये-

यों सुनि बैंन सखि सिय के पिय पैं कहि सो मृदु मंजुल वानी।
नाथ प्रिया विरहातुर में तजती तन प्रान विथा विलखानी।।
है पलकें पहरे निसि-वासर, रावर ध्यान कपाट प्रभानी।
नैन निरंतर जंत्रित जीव कढ़ै किम पांउन पंथ लुकानी।।

चतुर्थ विश्राम छंद 2

अर्थात् सीता के ये वचन सुनकर सखि सप्रियतम (श्री राम) से

सुन्दर कोमल वाणी में कहती है- हे नाथ। आपकी प्रियतमा विरह व्यथा से व्याकुल होकर प्राण-त्याग करना चाहती है। किन्तु पलकें रात-दिन पहरा देने वाले है। आपका ध्यान ही किवाड़ है। नेत्रों का निरन्तर ताला लगा हुआ है।

फिर प्राण किस मार्ग से जाए?

सीता की विरह दशा पर कवि की सुन्दर कल्पना-

श्रवत नयन जल जलद अनल्पं
कृत आभिषेक संभु सिर स्वल्पं।

षष्ठ विश्राम गीत 92 पद 6

नेत्र रूपी बादलों से या नेत्रों से बादलों से समान पर्याप्त (बहुत अधिक) जल गिर रहा है अर्थात आँसू प्रवाहित हो रहे हैं किन्तु भगवान शंकर के सिर पर थोड़े से जल से अभिषेक हो रहा है अर्थात् आँखों से तो बहुत अधिक जल गिर रहा है किन्तु विरह की अग्नि में सूख जाता है और शंकर के सिर पर थोड़े से जल से अभिषेक हो रहा है।

वियोगावस्था में सीता जी योगी मुनीन्द्रों के समान हो गई है-

प्यारे प्राणवल्लभ वियोग तव जोगी इव
साघे हैं समाधीस वर्स धक मनीन्द का।
स्वासन वियोग के उसासन विभासै मुख
इंदु विन अमृत उजास विन चंद्रिका

षष्ठ विश्राम छंद 7

अर्थात् हे प्राण वल्लभ। आपके वियोग में सीता योगी। मुनीन्द्रों की तरह समाधिस्थ हो गई है। आपके वियोग में लंबी साँसे ले रही है जैसे योग प्राणायाम कर रही है। तथा उसका मुख ऐसा शोभित हो रहा है जैसे अमृत के बिना चन्द्रमा तथा प्रकाश के बिना चाँदनी। ऐसे अनेक मनोहर भाव कवि ने व्यक्त किये हैं।

ग्रन्थ में अनुप्रास की छटा सर्वत्र बिखरी पड़ी है। इसके अतिरिक्त उपमा रूप का उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का सुन्दर प्रयोग है। वर्षा के रूप में श्री राम के शरीर के सौन्दर्य की सुन्दर उपमा देखिये-

तनु घन तड़ित वसन वर विलसत छवि पावस इस राजै वचन वृष्टि रव गरज मंद सृज विजय कारमुक साजै।

द्वितीय विश्राम गीत 4 का पद क्र.3

अर्थात- बादलों के समान श्याम शरीर पर सुन्दर वस्त्र बिजली के समान सुशेभित होते हैं। इस प्रकार की छवि वर्षा ऋतु जैसी शोभित हो रही है। उनकी सरस वाणी में वर्षा के समय की मन्द मन्द गजर्ना की ध्वनि हो रही है तथा विजय दिलानेवाला धनुष (इन्द्रधनुष) सुशोभित हो रहा है।

तीन छंदों में एकावली अलंकार का भी प्रयोग किया है। यथा-

कैसे वे जलज नील अतसी कुसुम जैसे
कैसे वे कुसुम जैसे नीलमणि धाम है।
नीलमणि धाम कैसे सोभित तमाल जैसे,
कैसे वे तमाल जैसे दूवदल स्याम है।।
दूवदल स्याम कैसे जमुना प्रवाह जैसे,
जमुना प्रवाह कैसे जैसे तनु राम है।
राम सुष्ठु स्याम कैसे नव धनश्याम जैसे,
नव घनश्याम कैसे जैसे स्याम राम है।।

प्रथम विश्राम छंद 20

अर्थात-नील कमल कैसे है जैसे अलसी के फूल है। अलसी के फूल कैसे जैसे नीलम का स्थान (घर) है, नीलम का धाम कैसा जैसे तमाल वृक्ष शोभित है। वे तमाल वृक्ष कैसे है जैसे दूर्वादल की तरह श्याम रंग के है। काली दूब कैसी है जैसे यमुना नदी का प्रवाह है, यमुना का प्रवाह कैसा प्रतीत होता है जैसे श्री राम का शरीर है, श्री राम का साँवला रूप कैसा है जैसे नया काला बादल है, काले बादल कैसे है जैसे श्रीराम का साँवला रूप है।

अष्टपदी गीतों के अलावा ग्रन्थों में दोहा मत्तगयंद, मनहरण कवित्त (छंद मनोहर) छंदों का प्रयोग है। सुललित ब्रज भाषा में यह ग्रन्थ लिखा गया है। साथ ही पग, वतावै, सुवासिनी, जोइ, अखूटो, सरावै, रिसात, वीजन जैसे मालवी शब्दों का भी जगह-जगह प्रयोग हुआ है। गीतों में संस्कृत निष्ठ पद्या वली भी है। जैसे

वदति रघुवर हा ममोपरि गता साकुपि तेव।
मैथिलीय विना नव न सृज पीत पट न वहामि।।

तृतीय विश्राम गीत क्र. पद्य क्र. 2.

तथा-

किं करोमि वदामि किं वद वल्लवी क्व वृजामि
अयि तवागमनं विना वर विपिन किं विभजामि

तृतीय विश्राम गीतक्र पद्य क्र 8

सियवर विनोद प्रेम धर्मका गीतिकाव्य है अतः इसमें आशा निराशा, सुख-दुःख विरह-मिलन के साथ भक्ति भावनाओं को भी व्यक्त किया गया है। इसमें सीता-राम की अलौकिकलीला और लौकिक प्रेम का चित्रण होने से यह ग्रन्थ लौकिक और अलौकिक दोनों है। यह प्रेम-गीत भी है तो भक्ति संगीत भी कवि ब्रजछैल के गीतिकाव्य की मधुर-कोमलकान्त पदावली तथा संगीत भंगिमा ही सर्व प्रथम हमारा ध्यान आकृष्ट करती है। इनके रचनाकौशल से ही हृदय चमत्कृत और आनंदित हो उठता है।

सियवर विनोद आस्था की दृष्टि से न पढ़कर साहित्य और काव्य सौन्दर्य की दृष्टि से पढ़ने पर यह अद्‌भुत, अद्वितीय काव्य है। प्रस्तुत काव्य हिन्दी साहित्य जगत के एक अभाव की पूर्ति करेगा ऐसा मेरा विश्वास है।

संपर्क : सन सिटी कॉलोनी मकान नं. सी- 55 गली नं - 7
सैलाना रोड रतलाम (म.प्र.) 457001
मोबा. 8277072474

■

प्रस्तुत व्यंग्य समीक्षा हरिशंकर परसाई की व्यंग्य विद्या से सक्षात्कार कराना है। किसी की मानहानि करना नहीं।

परसाई के रंग में
दिनेश चौधरी (जबलपुर)

उमेश कुमार गुप्ता

जबलपुर प्रवास के दौरान 'कला समय' पत्रिका देते समय उसमें छपे आलेख 'बदलें हुए पते वाले लिफ़ाफ़े की पहुँच' के लेखक श्री दिनेश चौधरी जी से भेंट हुई। वे परसाईवाद को आगे बढ़ाने वाले में से वे एक हैं । परसाई ने जो लिखा उसी पर लिखना स्वीकारते हुए लिखते है । जिसमें प्रेम चंद का जूता है,। जो यह दर्शाता हैं कि टेलीविजन, मोबाइल आने के बाद निराला ,कबीर सुरदास किलो के भाव में रद्दी में बिक रहे हैं । कुछ दिन बाद इन्हें फ्री में कोई नहीं पूछेगा ।

मानहानि की बीमारी का ज़िक्र है । जिसका अपनीं नज़र में मान नहीं है वह सबसे ज़्यादा मानहानि की चिंता करता हैं ।

मानहानि के लिए ज़रूरी है कि दूसरे की नज़र में आपकी अच्छी छवि हो जो मानहानि के बाद कम हो जाए । इसे क़ानून के दस अपवादों में साबित करना मुश्किल है। लेकिन किसी को नेता बोलना मानहानि हो सकता है ।

हिंदी साहित्य वादविवाद में फँसा है। पुस्तक मेले की राजनीति है,साहित्य की चोरी है,एक तरफ़ प्रभावित साहित्य है तो दूसरी तरफ़ डुप्लीकेट साहित्य है,तीसरी तरफ़ फ़र्ज़ी पुरस्कार है तो चौथी तरफ़ नकलचोर हैं जो सृजन की पीड़ा नौ माह बग़ैर उठाये रोज़ हरामी बच्चों को जन्म दे रहे हैं ।

दिनेश चौधरी
(वरिष्ठ साहित्यकार)

लेखक को आसपास देखकर लिखना चाहिए । परसाई ने सच लिखा आज कुंदन की तरह कालजयी चमक के साथ साहित्यिक आकाश में सूर्य बने हुए हैं ।

फ़िल्मों में कास्टिंग काउच से गुज़रना पड़ता हैं। साहित्य के तमग़े फ्री में थोड़े मिलेंगे ये वीरता के नहीं हैं जो जंग में शहीद होने पर मिले। पाठकों का प्यार उसका इनाम हैं ।

जैसे पैटिंग की क़ीमत अनुभव के ब्रश तय करते है,उसके बनने में लगा समय नहीं, लियानारडो द विंची के काग़ज़ के टुकड़ों में बनाई। पिकासो की सैकडो में तैयार चित्र लाखों के हैं ।

ऐसे ही फूल की अभिलाषा, कबीर की बकरी, झाँसीं की रानी, गुनाह का देवता, साये मे धूप करोड़ों की साहित्यिक रचना है। जो किसी तमग़े की मोहताज नही है ।

यह आश्चर्य की बात है कि अंडे से उपजा चूज़ा पुरस्कार के सपने देखने लगता हैं और सेंध लगा कर पा भी लेता हैं।

लेकिन पद्मश्री का काग़ज़ कितने की भूख मिटा पाया हैं। कई काग़ज़ लेकर भूखे नंगे प्यासे बैठे हैं। सरकार को कोस रहे हैं। पुरस्कार सिर्फ़ जुगाड़, रीढ़ की लचक,दुम का छिपा भाग प्रकट करता हैं ।

कलादारी के मुकदमे आने में देर है। कला चोरी के चौकीदार, समीक्षक,आलोचक के मरने के बाद ही कलापुलिस, कोर्ट कचहरी थाने बाउंसर पैदा होंगे। परसाई ने चिंता नहीं की चेलों को डरने की ज़रूरत नही हैं ।

कुत्तों की लड़ाई बदस्तूर जारी है। पंडित का पंडित को देखकर भौंकना लाजिमी है। उच्च, निम्न, मध्यम वर्गीय का संघर्ष जारी है। कार के पीछे भौंकता श्वान,वर्ग संघर्ष का प्रतीक है। राजा का साला लोकपाल होना भारतीय इतिहास का अंग है ।

साहित्यिक ढाबे हो सकते है लेकिन साहित्य ढाबे की विषय वस्तु नहीं है। जिसे राजनीति की तरह दाल चावल रोटी के साथ खाया जा सके। ऐसी कई व्यर्थ की चिंताएँ परसाई के चेलों को कमजोर बनाती है ।

अनारकली भर के चली,जंगल की रानी,पहाड़ की नागिन,वाले वाहन जंगल में नींद भगाते है इनको पढ़कर, इनपर बनी चित्रकारी देख कर मंगल, जंगल में मिलता हैं। यह साहित्यिक सोच का नतीजा हैं। जो ढाबे में विश्राम करता मिलता है ।

चोरी करना और झूठ बोलना और गाली गलौज करना एक कला भी है और बीमारी भी है जो नेतागीरी और साहित्य के साथ हर आर्ट में रचबस गई हैं ।

जिसका इलाज अब सम्भव नहीं है। इस कारण सही क़ीमत कलाकारों को नहीं मिल पा रही है। नेता भी पहचान में नहीं आ रहे हैं। गालीयाँ मातृभाषा बनती जा रहीं है ।

अब कलाकारों को खुद बने रहने अपने ढंग से इसमें रचना बसना होगा। जो माल दिखें और बिके वह बनाना होगा। इनके भरोसे घर चलाना परसाई की वसुधा निकालने जैसा होगा।

लोक को भी परसाई की तरह सजक प्रहरी बनना होगा। कोई पार्टी हो सबके नेता गब्बर जैसे हैं। सरकारी विज्ञापन से पटे अख़बार, न्यूज़ चैनल पहले से राजनीतिक दल के पक्ष मे माहौल बना रहे है। इसलिए सर्वे सटीक बैठता है। रामसिंह ब्रेकिंग न्यूज़ में छाए हैं।

माफ़ी का पूरा दर्शन शास्त्र, आप तो मुझे माफ ही कर दें, मैं है। जो बुद्धू बनाने, काम निकालने काम आती हैं। गला काटने, कोई नहीं माफ़ी माँगता।

भैस तत्व से भरी मूर्खता हम सब में भरी हैं । बनिया पुराना माल नयी बढ़ी क़ीमत पर, उधार बेचकर, मूर्ख हम तो पहले से हैं, सिध्द करता हैं ।

गुलाब को निराला ख़ानदानी हरामी साबित कर गये अब गुलाम दिवस पर प्रलाप मायने नहीं रखता। लेकिन दिल जोड़ने का काम अब भी गुलाब काँटे चुभाकर कर रहा हैं ।

वेलेंटाइन डे पर विदेशी चॉकलेट न हो तो गोभी गुलाब लगेगी। गाँधी का भूत उतरना आसान नहीं है ।

सच्चे सुर की तलाश में कई पेन और तूलिका भटक रही हैं । हर कोई परसाई बिस्मिल्ला मुक्तिबोध निराला नहीं बन सकता। तूलिका कैनवास को आर्ट गैलरी, लक्ष्मी ने भटका दिया है ।

इसलिए राजा रवि वर्मा पैदा नहीं हो सकते। पैदा होते ही करोड़ों में पैटिग बेचना चाहते हैं। सब एम एफ बनना चाहते हैं। उसके पीछे की 30/40 साल की मेहनत को भूल जाते है।

प्रत्येक कलाकार को अपनी क़ीमत तय करनी चाहिए और उसके अनुसार कार्य करना चाहिए। यदि कलाकार दस हज़ार रुपये प्रति दिन अपनी क़ीमत तय करता है तो वह एक दिन में दस हज़ार की एक, एक हज़ार की दस, पॉच सौ की बीस कलाकारी बनाकर

सस्ता महँगा सभी प्रकार का कार्य कर कई लोगों के सम्पर्क मे आ सकता हैं।

राजा रवि वर्मा ने लाखों क़ीमत के चित्रों के प्रिंट सस्ते दामों में उपलब्ध करा कर जनलोक प्रियता पाई, परसाई ने भी पेपर बैंक संस्करण आमलोगों को उपलब्ध करा कर जनता के लेखक की उपाधि प्राप्त की।

लोचा दोनों तरफ़ से है। ग्राहक को सस्ता, बजट में, माल चहिए, भला डुप्लीकेट हो, प्रकाशक को मुनाफा ज़्यादा कमाना है, चित्रकार को रातोंरात करोड़ के क्लब में शामिल होना है। रैड, कला की पिट रही हैं। कारोना ने घर घर पिकासो,निराला पैदा कर दिए हैं ।

उनकी सड़क खुरदुरी, अपनी चिकनी है। पर्यावरण केवल किताब सेमिनार की वस्तु रह गयी हैं।

ट्रम्प का ख़ौफ़ जारी हैं। आते ही भारतीय हथकड़ी में वापस आ गए हैं ।

आज सब अख़बार सेठ गोबरधनदास निकाल रहे हैं। मजबूरी है। त्याग से पेट नहीं भरता। भूखे पेट भजन नहीं होता, साहित्य सेवा कैसे होगी। तभी पेड साक्षात्कार हैं।

कबीर के परसाई पुजारी थे तो प्रेम चंद के पुरखे थे। परसाई ने कबीर की उलट बंसी पकड़ी तो प्रेमचन्द का आम आदमीं उनका हीरो रहा है। दोनों को मिलाकर हरि पैदा हुआ जिसने जमाने का विष पीकर रंग रेज परसाई पैदा किया जो व्यवस्था के मारे नहीं मर रहा है।

अवधेश के परसाई कैलेंडर ने धूम मचा रखी हैं। जिसे माया देवी गुप्ता आर्ट गैलरी भोपाल के द्वारा ख़रीद कर परसाई शोधपीठ की स्थापना भोपाल में की जा रही हैं ।

जमानी मे 30/50 का ख़ाली प्लाट हर साल बैरंग जन्मदिन, बिना छत के मनाता है। कोई टाटा बिड़ला ध्यान नही दे रहा हैं ।मॉल बनाना होता तो कई उधोगपति अभी तक आगे आ जाते लेकिन जो बखिया परसाई ने उधेड़ी है उनकी वो अभी तक दर्द कर रही हैं ।

जिस प्रगतिशील विचार धारा के लिए परसाई ने ज़िंदगी लगा दी वह भी ठंड खाकर जम गई हैं । जो विचार अभिव्यक्ति की पाबंदी में नये परसाई के जन्म का इंतज़ार कर रही है ।

वक़्त की उड़ान ने सयाने पैदा करना शुरू कर दिया है । बचपन पचपन में खो गया है । बरसात का पानी उन्हें भीगता खेलता न देख कर उदास है।

विक्षिप्त-निराश विपक्ष मे बैठकर अपने पिता का सही नाम भी ग़लत ठहराता है । हर अच्छी बात का विरोध करना विपक्ष की निशानी है। जो उसे सत्ता में लौटने नहीं दे रही हैं ।

ठंडा शरीफ आदमी से देश पटा पड़ा हैं । परसाई की मुख्य चिंता का कारण यहीं आदमी था जो लुटने को चंदा देना मानता है ।

उर्दू शायरी का तर्कशास्त्र आपबीती जीती जागती आत्मकथा है

कुल मिलाकर लेखक ने बढ़िया व्यंग्य लिखे हैं । जो पठनीय विचारणीय अमेजन से ख़रीदकर पढ़ने योग्य हैं । भाषा शैली परसाई है । गंभीर विषय लिए गये हैं । साहित्यिक गिरावट पर साहित्य कार को चिंता होना लाज़मी हैं ।

सम्पर्क : 903 बाई का बगीचा, जबलपुरी

■

श्री अटल बिहारी वाजपेयी का शैक्षिक अवदान

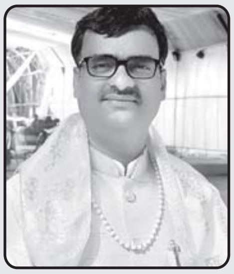

डॉ. आशीष जैन आचार्य

हार नहीं मानूँगा, रार नहीं ठानूँगा
काल के कपाल पे लिखता मिटाता हूँ।।

– अटल बिहारी वाजपेयी

व्यक्ति का जीवन संघर्ष और दृढ इच्छाशक्ति से महान बनता है। बड़े बनने के लिए बडप्पन होना आवश्यक होता है। धैर्य, साहस और दृढ़ता ये सफल व्यक्तियों की पहचान होती है। भारत देश के पूर्व प्रधानमंत्री माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी का सम्पूर्ण जीवन संघर्ष और उत्कर्ष की प्रेरणीय कहानी है। जन-जन तक अपनी वेबाक शैली और दृढ़ता के साथ प्रस्तुतिकरण करने के लिए जाने पहचाने एक प्रखर राजनीतिज्ञ और कवि होने के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी अपने महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए जाने जाते हैं। शिक्षा उनके जीवन का मुख्य आधार बनी। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक दृढ़ता के साथ सीखा। पत्रिकाओं का सम्पादन किया, कविताएं लिखी और शिक्षा के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए अनेक संघर्ष किए। हम यहाँ उनके शैक्षिक अवदान की चर्चा कर रहे हैं, जो उन्होंने राष्ट्र के लोगों के लिए दिया है। उनके द्वारा किए गए शैक्षिक अवदान का की प्रेरणीय परिचर्चा सादर प्रस्तुत है-

सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत विगत वर्षों में अनेक उपलब्धियों परिलक्षित हुई हैं, जिसके परिणाम स्वरूप साक्षरता, सीखने की प्रक्रिया में, रोजगार में जबरदस्त वृद्धि हुई हैं। हम यहाँ निम्न बिन्दुओं के आधार पर यह सुनिश्चित कर करते हैं कि श्री वाजपेयीजी के सर्व शिक्षा अभियान की सोच ने शिक्षा में आमूल-चूल परिवर्तन किए हैं-

1. प्राथमिक विद्यालयों का बुनियादी ढांचा मजबूत हुआ है। 2. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण और संसाधन उपलब्ध करवाए गए हैं। 3. विद्यार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तकों, कंप्यूटर, पुस्तकालयों एवं मूलभूत सुविधाओं की समुचित व्यवस्था की गयी। 4. प्राथमिक स्कूल में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को एक समान समझा गया। 5. लड़कियों के लिए हॉस्टल की सुविधा वाले कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय स्थापित किए गए। 6. विशेष जरूरतों वाले बच्चों को मेडिकल सुविधा प्रदान करने की व्यवस्था की गयी। 7. प्राथमिक विद्यालयों को संगठनों के साथ जोड़ा गया, जिससे विद्यालयों में शिक्षा के स्तर की निगरानी हो सके।8. प्राथमिक विद्यालय को आनंद घर मानकर शैक्षणिक कार्य को मूर्त रूप दिया जा रहा है।

शिक्षा का महत्व और प्रेरणा श्री वाजपेयी जी का मानना था कि शिक्षा का अधिकार सभी का है, इसलिए शिक्षा सभी तक पहुँचना अनिवार्य है। उन्होंने शिक्षा को सब तक पहुँचाने के लिए जहाँ एक ओर सर्व शिक्षा अभियान की शुरूआत की, वहीं दूसरी ओर उन्होंने युवाओं को उत्तम शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित भी किया। उन्होंने शिक्षा को सामाजिक और आर्थिक प्रगति का सबसे महत्वपूर्ण साधन बताया।

साक्षरता अभियान श्री वाजपेयी जी ने शिक्षा घर-घर और जो शिक्षा से वंचित वर्ग हैं उन तक शिक्षा पहुँचाने के लिए और साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों को प्रोत्साहन दिया। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयों की स्थापना और शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार पर कार्य करने के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण कार्ययोजनाओं को भी मूर्त रूप दिया। तकनीकी शिक्षा का विकास वर्ष 2000 से सूचना प्रौद्योगिकी की क्रान्ति प्रारंभ हो गयी। लोग आईटी को जानना चाह रहे थे और उसका उपयोग भी करना चाहते थे। ऐसे में, तत्कालीन प्रधानमंत्री माननीय श्री वाजपेयी जी ने अपने कार्यकाल में तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में कई सुधार किए। उन्होंने सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) और विज्ञान के क्षेत्र में भारत को अग्रणी बनाने के लिए नीतियां लागू की। जिसका प्रभाव अद्यतन परिलक्षित हो रहा है।

हिंदी और मातृभाषा का प्रोत्साहन वे भारतीय भाषाओं के जबरदस्त प्रेमी थे। उनका मानना था ये भारतीय भाषाएं हमारे प्राण हैं। इनमें भी प्राण फूं कने का कार्य हिन्दी करती है। इसलिए हिन्दी भाषा में ही सारे कार्य हो ऐसा उन्होंने खूब प्रयास किया। वाजपेयी जी ने हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में शिक्षा को बढ़ावा दिया। उनका मानना था कि मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से बच्चों का मानसिक और सांस्कृतिक विकास उत्तम होता है। जिसकी फलश्रुति आज हम देखते हैं कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में ही हो, यह प्रावधान किया गया।

साहित्य और प्रेरणा स्रोत वे एक अच्छे कवि और साहित्यकार भी थे। एक वक्तव्य में उन्होंने कहा था मेरे आनंद का विषय मेरी कविताएँ हैं लेकिन देश की सेवा में कविता प्रेम पीछे रह गया। फिर भी, उनकी कविता नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करती है। उनके विचार और कविताएँ छात्रों और शिक्षकों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। उनकी कविता के कुछ अंश –

टूटे हुए तारों से फूटे वासंती स्वर पत्थर की छाती में उग आया
नव अंकुर झरे सब पीले पात, कोयल की कुहुक
रात प्राची में अरुणिमा की रेख देख पाता हूँ
गीत नया गाता हूँ

टूटे हुए सपनों की कौन सुने सिसकी
अंतर की चीर व्यथा पलकों पर ठिठकी हार नहीं मानूँगा,
रार नहीं ठानूँगा काल के कपाल पे लिखता मिटाता हूँ
गीत नया गाता हूँ।।

श्री वाजपेयी जी की कुछ शानदार प्रेरक टिप्पणियाँ –

भारत को लेकर मेरी एक दृष्टि है ऐसा भारत जो भूख, भय, निरक्षरता और अभाव से मुक्त हो।

– मेरी कविता जंग का ऐलान है, पराजय की प्रस्तावना नहीं। वह हारे हुए सिपाही का नैराश्य-निनाद नहीं, जूझते योद्धा का जय संकल्प है। वह निराशा का स्वर नहीं, आत्मविश्वास का जयघोष है।

– हम मानते हैं कि शिक्षा केवल जानकारी देना नहीं है, बल्कि यह चरित्र निर्माण और मस्तिष्क के साथ-साथ आत्मा का भी विकास है।
– शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्राप्त करना नहीं है, बल्कि समाज को एक बेहतर दिशा देने वाले नागरिक बनाना है।
– आज के बच्चे कल के भविष्य हैं। उन्हें शिक्षा से ही सशक्त बनाया जा सकता है। शिक्षा का महत्व केवल रोजगार तक सीमित नहीं है, यह जीवन जीने की कला सिखाने का माध्यम है। हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जो विज्ञान के साथ नैतिकता को जोड़े और संस्कृति के साथ आधुनिकता को मिलाए।

शिक्षा का असली उद्देश्य ज्ञान के माध्यम से मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाना और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को जागरूक करना है। शिक्षा का काम केवल किताबों तक सीमित नहीं है, यह जीवन को सही दिशा देने का माध्यम है।

निष्कर्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी चाहे प्रधानमन्त्री के पद पर रहे हों या नेता प्रतिपक्ष के रूप में रहे हों। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से देश की बात की है। ऐसा देश जहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य और सम्पन्नता का संबल बना रहे। अटल बिहारी वाजपेयी का शैक्षिक अवदान केवल नीतियों और योजनाओं तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने शिक्षा को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला तत्व माना है। उनके प्रयासों ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को न केवल समृद्ध किया, बल्कि उसे आधुनिक और समावेशी भी बनाया।

सम्पर्क : लेखक (राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त)
154 गीतांजलि ग्रीनसिटी, संजय ड्राइव रोड़, सागर म.प्र. मोबा. 9329092390

विशेष आलेख

साहित्य और संस्कृति साधक – पद्म श्री डॉ. भगवती लाल राजपुरोहित

डॉ घनश्याम बटवाल

मालवा की माटी से बाल्यकाल से जुड़े और कालांतर में अपने ज्ञान , शोध को श्रेष्ठता की ऊंचाई पर स्थापित करते हुए वर्तमान में साहित्य – संस्कृति के साथ हिंदी – संस्कृत भाषाओं और मालवी बोली के पर्याय के रूप में जाने – पहचाने व्यक्तित्व हैं पद्मश्री अलंकृत डॉ भगवती लाल राजपुरोहित ।

राजा भोज की नगरी धार जिले के ग्राम चंदोडिया में नवम्बर 1943 में वरेण्य विद्वान, संस्कृत, वेदांत और ज्योतिष के मर्मज्ञ पंडित श्री झब्बालाल राजपुरोहित के सुपुत्र श्री भगवती लाल राजपुरोहित को बचपन से ही अनुकूल पारिवारिक वातावरण मिला। आरंभिक शिक्षा लदुना (सीतामऊ – मालवा) मंदसौर में हुई और बाद में उच्च शिक्षा उज्जैन में।

आपकी प्रारंभ से अभिरुचि रचनात्मक और सकारात्मक विषयों में रही ओर उन्हें विस्तारित करते हुए विभिन्न विधाओं में शोध अनुसंधान भी किये ।चूंकि केंद्र में संस्कृत, हिंदी और मालवी रही , इन भाषाओं में लेखन , नाट्य , रूपक , एकांकी, उपन्यास , नृत्य रूपकों आदि का सृजन आपकी क़लम से हुआ ।साथ ही विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से मालवा – निमाड़ – महाकोशल – राजधानी आदि स्थानों पर नाटकों, नृत्य रूपकों का मंचन भी हुआ। जिन्हें भरपूर सराहना मिली .कोई पांच – छह दशकों से आपकी रचना यात्रा जारी है और नवीनता के साथ युवा वर्ग के साथ शोधार्थियों को प्रेरित कर रही है ।

भारत सरकार द्वारा आपको भाषा, साहित्य और लोक साहित्य क्षेत्र में अतुलनीय योगदान के लिये पद्मश्री सम्मान प्रदान किया गया है ।इसके अलावा भी राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के अन्य उल्लेखनीय सम्मान भी आपको प्राप्त हुए हैं ।

मध्यप्रदेश संस्कृत अकादमी का भोज पुरस्कार, मध्यप्रदेश उच्च शिक्षा आयोग का स्थापित डॉ राधाकृष्णन सम्मान, मध्यप्रदेश साहित्य परिषद का बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' पुरस्कार आदि शामिल है ।

आयु के आठ दशक बाद भी आपकी लेखनी और सृजन यात्रा अविराम है अत्यंत सौम्य और शिष्ट , मितभाषी डॉ राजपुरोहित से मिलने पर यह अहसास कतई नहीं होता कि इतने बड़े विद्वान और पद्मश्री अलंकरण से सम्मानित व्यक्ति से भेंट हुई। बेहद सरल और आत्मीयता से संवाद आपकी विशेषता है जो उनके व्यक्तित्व को आदर का पात्र बनाती है। अगर हम डॉ राजपुरोहित की रचना यात्रा का अवलोकन करें तो पायेंगे कि कोई 50 से अधिक नाटक लिखे हैं । इनमें मीरा , विक्रमादित्य , राधा , राणा प्रताप , श्रीकृष्ण उज्जयिनी , रानी दुर्गावती , छत्रसाल , रानी लक्ष्मी बाई, जय महाकाल, तात्या टोपे आदि प्रमुख हैं ।इन नाटकों का हिन्दी और मालवी में कई बार कई स्थानों पर सार्वजनिक मंचन हुआ है ।आपने संस्कृत में वीणा वासवदत्ता, मृच्छकटिकम सहित महाकवि कालिदास के साहित्य केंद्रित तीनों काव्यों पर नाटक लिखे ।नृत्य रूपकों में नवरस और षडरितु , सीरियल्स में भर्तहरी , सृष्टि , पंचतंत्र , शाकुन्तल आदि , रेडियो रूपकों में मालवा की गंगा शिप्रा और चंबल, मालवी बोली में बेटी को बोझ और सेज के सरोज जैसी रचनाओं को स्वरूप दिया है ।

कोई 38 वर्षों तक डॉ राजपुरोहित उज्जैन के सांदीपनि स्नातकोत्तर महाविद्यालय में हिन्दी, संस्कृत और प्राचीन इतिहास के आचार्य और विभाग अध्यक्ष रहे। इसके अलावा आप महाराज विक्रमादित्य शोधपीठ उज्जैन के 10 वर्षों तक निदेशक रहे। रचनाओं की श्रृंखला में राजा भोज , कालिदास , अभिलेख कला संस्कृति रंगमंच , लोक साहित्य , संस्कृत और हिन्दी में कई पुस्तकें लिखी हैं और कई प्रकाशनों का संपादन भी किया है। प्रसिद्ध विद्वान भारतीय संस्कृति, साहित्य और विरासत के संरक्षण और प्रचार में अद्वितीय समर्पण के लिये आपको प्रतिष्ठित सम्मान पद्मश्री से अलंकृत किया गया है। यह मध्यप्रदेश और मालवा अंचल के लिये ही नहीं अपितु संस्कृति और साहित्य के सम्पूर्ण वांग्मय क्षेत्र के लिये विशिष्ट उपलब्धि है। साहित्यिक क्षेत्र में मिले इस सम्मान पर प्रतिक्रिया में स्वनामधन्य विशिष्ट जनों ने इसे पद्मश्री अलंकरण का सम्मान निरूपित किया है ।

अपनी साहित्य और संस्कृति साधना पर स्वयं डॉ राजपुरोहित विनम्रता से आगे बढ़ने का श्रेय हिंदी में डॉ शिवमंगल सिंह सुमन , डॉ राममूर्ति त्रिपाठी, संस्कृत में वी. वेंकटाचलन और आचार्य श्रीनिवास रथ को तो इतिहास और पुरातत्व विषयों के लिये पद्मश्री डॉ विष्णु श्रीधर वाकणकर को देते हैं। विशिष्ट ओर प्रामाणिक हस्तियों की सन्निधि और मार्गदर्शन ने पथ प्रशस्त किया। आपका स्पष्ट मानना है कि सफलता और श्रेष्ठता में कोई शॉर्टकट नहीं होता, सतत और अनवरत साधना, श्रम और समर्पण आवश्यक है। आपकी रचनात्मक सृजन यात्रा निरंतरता से जारी रहे और साहित्य – संस्कृति और लोक भाषाओं में अवदान होता रहे । आपके सुदीर्घ स्वस्थ और सफ़ल जीवन के लिये भगवान महाकाल से प्रार्थना करते हैं और शतायु की मंगलकामना करते हैं।

सम्पर्क : मंदसौर मो. 9425105959

ध्रुवपदाचार्य पद्मश्री विभूषित पंडित लक्ष्मण भट्ट तैलंग की प्रथम पुण्यतिथि पर उन्हें समर्पित 'ध्रुवपद धरोहर' कार्यक्रम

जयपुर राजस्थान निवासी देश के मूर्धन्य ध्रुवपदाचार्य पद्मश्री विभूषित पंडित लक्ष्मण भट्ट तैलंग के 10 फ़रवरी 2024 को बीमारी के इलाज के दौरान देहावसान के बाद वर्ष भर देश भर की संस्थाओं ने उन्हें श्रद्धांजलि स्वरूप विभिन्न संगीत समारोह और सभाओं का आयोजन किया। दिसंबर 24-25 को राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर जयपुर में 30 वाँ अखिल भारतीय ध्रुवपद नाद निनाद विरासत समारोह का आयोजन पंडित जी को समर्पित किया गया था। ज्ञात रहे कि यह समारोह पंडित जी ने ही 30 वर्ष पूर्व प्रारंभ किया था।

अंतिम चरण के रूप में पंडित जी की प्रथम पुण्यतिथि पर जवाहर कला केंद्र द्वारा इंटरनेशनल ध्रुवपद धाम ट्रस्ट के संयोजन में अखिल- भारतीय स्तर पर आयोजित दो दिवसीय ध्रुवपद - धरोहर 'समारोह दिनांक 10 -11 फ़रवरी का भव्य आयोजन जवाहरकला केंद्र जयपुर के रंगायन सभागार में हुआ। वर्ष 2024 में पद्मश्री से अलंकृत जयपुर राजस्थान के गौरव ध्रुवपदाचार्य पद्मश्री विभूषित पंडित लक्ष्मण भट्ट तैलंग को समर्पित इस समारोह का प्रारंभ दीपप्रज्ज्वलन से हुआ । इसके बाद समारोह संयोजिका प्रोफ़ेसर मधु भट्ट तैलंग द्वारा समारोह के बारे में भूमिका रखी गयी। इसके बाद पंडित जी के जीवनवृत्त पर प्रदर्शनी एवं डॉक्युमेंट्री 'सफ़रनामा' पर आधारित संवाद से हुआ। गौरतलब है कि इस दिन पंडित जी की प्रथम पुण्य तिथि के विशेष प्रयोजन से इस प्रदर्शनी और वृत्तफिल्म का संयोजन किया गया है ,जिस पर राजेंद्र कटारिया एवं डॉ प्रदीप टाँक ने संवाद के अंतर्गत पण्डित जी के संपूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व पर गहनता से प्रकाश डाला ,जिस पर सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री ललित शर्मा 'अकिंचन में मॉडरेटर की भूमिका निभाई । इसके बाद पंडित जी की शिष्या ध्रुवपद -गायिका प्रोफ़ेसर डॉ मधु भट्ट तैलंग द्वारा पण्डित जी के जीवन वृत्त पर लिखी पुस्तक 'संगीत- जगत को समर्पित पद्मश्री' का विमोचन हुआ। इसके बाद पंडितजी एवं प्रोफ़ेसर मधु भट्ट के शिष्य डॉ श्याम सुंदर शर्मा ने ध्रुवपद -गायन का प्रारंभ राग यमन में गुरु स्तुति के मंगलाचरण से करने के बाद नोमतोम के चारों चरणों के आलाप और तुलसीदास रचित ध्रुवपद' जय जय जग जननी देवी का माधुर्य और सुकूनदारी और तैयारी से गायन कर श्रोताओं को रससिक्त किया । साथ में ही इसमें बोलबाँट लयबांट की विविध लयकारियों का बेहतरीन प्रदर्शन किया एवं महाकुम्भ को देखते हुए गायन का समापन राग मालगुंजी में पण्डित जी द्वारा सूलताल में सृजित गंगा स्तुति की ध्रुवपद - रचना 'गंगे शिवसंगे' के तैयारी पूर्ण प्रदर्शन से श्रोताओं को सम्मोहित किया। आपके साथ पखावज पर डॉ अंकित पारिख, सारंगी पर उस्ताद अमीरुद्दीन ने सुरीली संगत दी एवं तानपूरे में आचुकी एवं दीपिका कुमावत ने संगत की। सभा के अंत में मुम्बई के दरभंगा घराने के विख्यात ध्रुवपद गायक पंडित सुखदेव चतुर्वेदी ने ध्रुवपद -गायन से श्रोताओं को अभिभूत कर दिया । उन्होंने बसंत ऋतु को देखते हुए राग बसंत का चयन किया। इस राग में विस्तृत नोमतोम आलापों के बाद ध्रुवपद रचना को अनेक लयकारियों के गणित के साथ उम्दा प्रदर्शन किया इसके बाद उन्होंने राग देश में एक धमार औरन सों खेले होरी एवं राग खमाज में सूलताल में ध्रुवपद जोबन मदमाती एवं अंत में एक हवेली संगीत का गायन कर अपना प्रभाव जमाया। इनके साथ पखावज पर पंडित प्रवीण आर्य एवं सारंगी पर पंडित भारत भूषण गोस्वामी एवं तानपूरा पर किरण कौर ने उम्दा संगत की। इस अवसर पर पंडित सुखदेव चतुर्वेदी को ट्रस्ट द्वारा पंडित लक्ष्मण भट्ट

तैलंग विभूति सम्मान भी दिया गया।

दो दिवसीय इस समारोह के दूसरे दिन का प्रारंभ संवाद - प्रवाह कार्यक्रम में राजस्थान की ध्रुवपद परंपरा में विशेषज्ञ के रूप में शिक्षाविद् एवं ध्रुवपद गायिका विदुषी प्रोफ़ेसर मधु भट्ट तैलंग ने राजस्थान के मंदिरों और राजाओं के संरक्षण में घरानों के अन्तर्गत संरक्षित एवं फ़लीफूली ध्रुवपद गायकी का विस्तार से विवेचन किया एवं ध्रुवपद गायक डॉ श्याम सुंदर शर्मा ने राजस्थान की ध्रुवपद परम्परा प्रबल प्रतिनिधि पण्डित लक्ष्मण भट्ट तैलंग के अद्वितीय योगदान पर प्रकाश डाला , मॉडरेटर के रूप में प्रसिद्ध साहित्यकार श्री राजेश आचार्य द्वारा अनेक रोचक सवालों से कार्यक्रम को सुंदर बनाया। इस अवसर पर अपने गुरु की पुण्यतिथि पर डॉ श्याम सुंदर शर्मा द्वारा लिखी पुस्तक ढूँढाड़ क्षेत्र की रामलीला और प्रचलित संगीत रचनाएँ का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया। इसके बाद दिल्ली के बिहार घराने के डॉ प्रभाकर नारायण पाठक ने सुरीले और तैयारी से गायन कर श्रोताओं को रससिक्त किया । उन्होंने राग यमन और यमन कल्याण में चीतल और सूलताल में दो ध्रुवपद पार ब्रह्म परमेश्वर और शंकर शिव पिनाक धर के बाद बागेश्वरी राग में एवं राग बसंत में धमार नार चली आवत एवं सूलताल में नवल बसंत नवल वृंदावन में बोलबाँट लयबांट की विविध लयकारियों का बेहतरीन प्रदर्शन किया । आपके साथ पखावज पर पंडित राधेश्याम शर्मा, सारंगी पर पंडित भारत भूषण गोस्वामी ने सुरीली संगत दी एवं तानपूरे में किरण कौर एवं दीपिका कुमावत ने संगत की कार्यक्रम का समापन दिल्ली से पधारे भागलपुर मिश्रा घराने के

विख्यात बेला वादक पंडित (डॉ) संतोष नाहर के बेला वादन से हुई।

सर्वप्रथम डॉ नाहर ने सुमधुर दक्षिण भारतीय राग वाचस्पति से अपने कार्यक्रम का आगाज किया पंच तंत्री बेला पर डॉ नाहर ने रागचारुकेशी में ध्रुपद धमार की तरह आलाप जोड़ झाला के बाद मध्य लय गत तीन ताल और द्रुत गत तीन ताल में प्रस्तुति दी जिसमें डॉ नाहर ने क्रमानुसार राग की बढ़त, मधुरता के साथ राग, स्वर विस्तार, आलंकारिक ताने, ग़मक की प्रस्तुति के साथ साथ द्रुत गत में सपाट तान, झाला में तबला एवं पखावज के साथ सवाल जवाब की जुगलबंदी को श्रोताओं ने काफी सराहा, आपके वादन में तंत्र अंग के साथ गायकी अंग वादन सुनने को मिला पंडित संतोष नाहर ने अपने वादन का समापन ठुमरी वादन मिश्रा काफी से कर श्रोताओं पर प्रभाव जमाया।

तबला पंडित राज कुमार नाहर ने उम्दा एवं पखावज पर अंकित पारिख ने प्रभावी संगति की। दोनों दिन समारोह का बेहतरीन मंच संचालन श्री प्रणय भारद्वाज ने किया। समारोह के अंत में समारोह संयोजिका प्रोफ़ेसर मधु भट्ट तैलंग ने सभी का आभार किया। उल्लेखनीय है कि इस समारोह में समाज और कला क्षेत्र की कई नामचीन हस्तियों में सर्वमान्य विधायक डॉ गोपाल शर्मा, श्री भारत रत्न भार्गव , डॉ नंद भारद्वाज, डॉ अखिल शुक्ला, प्रोफ़ेसर भवानी शंकर शर्मा, डॉ जी डी पारीक, सुश्री प्रेरणा श्रीमाली, डॉ रवींद्र गोस्वामी, पद्मश्री विभूषित मोइनुद्दीन ख़ान, संस्कार भारती के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ रवींद्र भारती एवं उत्तर पश्चिम के क्षेत्र प्रमुख श्री श्री अरुण शर्मा, वरिष्ठकला समीक्षक पत्रकार श्री राजेंद्र बोड़ा एवं श्री अशोक आत्रेय, श्री रामू रामदेव एवं राजस्थान संगीत नाटक अकेदेमी के पूर्व अध्यक्ष श्री अशोक पांडे आदि सहित जवाहर कला केंद्र की अतिरिक्त महानिदेशक श्रीमती अलका मीणा, चन्द्रदीप हाड़ा, श्री छवि जोशी ने समारोह को गरिमा प्रदान की।

डॉ निशा भट्ट तैलंग, अध्यक्ष
इंटरनेशनल ध्रुवपद धाम ट्रस्ट , जयपुर
प्रोफ़ेसर डॉ.मधुभट्ट तैलंग संयोजक , समारोह
सचिव , इण्टरनेशनल ध्रुवपद धाम ट्रस्ट

श्री विजय मनोहर तिवारी
माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्व विद्यालय के कुलगुरु

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के कुलगुरु का दायित्व प्रखर पत्रकार सुधी लेखक और भारतीय सरकृति एवं पुरातत्व के अध्येता श्री विजय मनोहर तिवारी को सौंपा गया है। वे इसी विश्वविद्यालय के दूसरे बैच के प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान अर्जित करने वाले छात्र है। श्री विजय मनोहर तिवारी मध्यप्रदेश राज्य सूचना आयोग में पाँच वर्ष तक सूचना आयुक्त (2018-23) रहे हैं। वे बहुकला केन्द्र भारत भवन के न्यासी रहे। दत्तोपन्त ठेगडी शोध संस्थान की संचालन समिति के सदस्य है। श्री तिवारी ने ढाई दशक तक समाचारपत्रों-राष्ट्रीय सहारा, नईदुनिया, इंदौर और दैनिक भास्कर, भोपाल तथा सहारा समय न्यूज चैनल में विभिन्न पत्रकारी करयित्वों का निर्वाह किया।

मुख्यत: उनकी भूमिका मैदानी रिपोर्टिंग की रही है। सन 2010 से 2015 तक श्री तिवारी दैनिक भास्कर के विशेष सवाददाता रहे। इस दौरान देशभर की आठ यात्राएँ की। दैनिक भास्कर के हिन्दी, गुजराती और मराठी संस्करणों के रविवारीय परिशिष्टों में उनकी लिखी आमुख कथाएँ विशिष्ट विषय-विवेचन-शैली के कारण बहुचर्चित रही। राष्ट्रीय स्तर पर उन्हें ख्याति मिली। इसी यात्रा श्रृंखला पर आधारित उनकी पुस्तक भारत की खोज में मेरे पाँच साल को मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी सम्मान मिला। माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय ने उन्हें गणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान प्रदान किया। माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एव शोध संस्थान ने 'माधवराव सप्रे' पुरस्कार से सम्मानित किया। उनकी पुस्तक हरसूद 30 जून को सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार प्रदान किया। इस पुस्तक में नर्मदा सागर बांध की डूब में डूबे हरसूद कस्बे के विसर्जन की मार्मिक कथा आँखों देखा हाल की शैली में बयान की गई है।

श्री विजय मनोहर तिवारी पिछले पांच वर्ष से मध्यप्रदेश के ऐतिहासिक नगर उदयपुर (जिला विदिशा) की विरासत यात्रा श्रृंखला चला रहे है। एक हजार वर्ग प्राचीन ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व के नीलकंठेश्वर मंदिर के संरक्षण की प्रभावी और सार्थक पहल उन्होंने की। फलत: अब यह राष्ट्रीय महत्व की पुरातात्विक संपदा के रूप में सरक्षित स्थल बन गया है। आचार्य सुरेश मिश्र इस पहल में उनके सहयात्री रहे।

सूचना आयुक्त के दायित्व से मुक्त होने के उपरांत श्री विजय मनोहर तिवारी ने दूरगामी सोच की सार्थक पहल रिवर्स माइग्रेशन शहर से अपने गांव और खेती की ओर वापसी को साकार किया। वे अपने गाँव में नई सोच और पद्धति से किसानी कर रहे है। श्री विजय मनोहर तिवारी का कुलगुरु के पद पर चयन विश्वविद्यालय की महा परिषद के अध्यक्ष मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने किया है। इस चयन की सर्वत्र सराहना की जा रही है। उनका कार्यकाल चार वर्ष रहेगा।

विजयदत्त श्रीधर मोबाइल न 9425011407, वाट्सएप 7999460151

विजयदत्त श्रीधर को मिला हिन्दी जगत का सर्वोच्च सम्मान 'साहित्य वाचसपति'

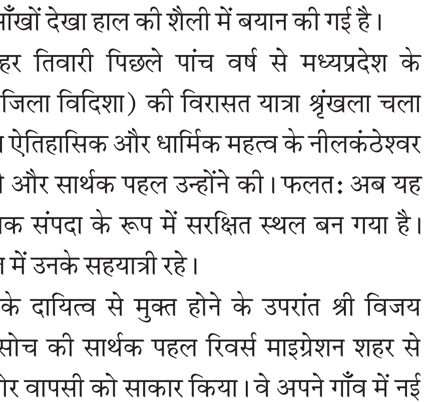

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल के संस्थापक- संयोजक एवं पद्मश्री सम्मान विभूषित विजयदत्त श्रीधर को हिन्दी जगत के सर्वोच्च सम्मान साहित्य वाचस्पति से सम्मानित किया है। श्रीयुत श्रीधर को यह सम्मान यहां वल्लभ विद्यानगर स्थित सरदार पटेल विश्वविद्यालय सभागार में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के 76वें अधिवेशन के खुला अधिवेशन में दिया गया। श्रीधर के साथ यह सम्मान संस्कृत विद्वान पूर्व कुलपति 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र और सरदार पटेल विश्वविद्यालय के कुलपति निरंजन कुमार पूरनचंद पटेल को भी प्रदान किया गया। उक्त सम्मान हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति आचार्य सूर्यप्रसाद दीक्षित और सम्मेलन के प्रधानमंत्री कुंतक मिश्र ने प्रदान किया। सम्मान के पूर्व श्रीधर जी की प्रशस्ति पढ़ी गयी। उसमें पत्रकारिता और साहित्य में उनके योगदान का जिक्र हुआ। श्रीयुत श्रीधर ने अपने सम्मान के बाद उपस्थित विद्वानों, अधिवेशन के प्रतिनिधियों और अन्य लोगों को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि सम्मेलन के जिस मंच पर खड़ा होना सौभाग्य का विषय हुआ करता है,वहां सम्मानित होना गौरव की बात है। उन्होंने समय रहते महत्वपूर्ण संगठनों में समय रहते युवा नेतृत्व को सामने लाना आवश्यक बताया। श्रीयुत श्रीधर को अधिवेशन के राष्ट्रभाषापरिषद के सभापति का भी दायित्व दिया गया। ज्ञातव्य है कि सम्मेलन के इस सत्र के सभापति का दायित्व निभाने वालों में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भी शामिल रहे हैं। इसी तरह साहित्य वाचस्पति की मानद उपाधि ग्रहण करने वालों में महात्मा गांधी, मदनमोहन मालवीय, माधव राव सप्रे और कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी जैसी विभूतियां शामिल रहीं।

उद्धवदास मेहता सम्मान से सम्मानित हुए कैलाशचन्द्र पंत

सुप्रसिद्ध हिंदी सेवी एवं म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के मंत्री संचालक कैलाशचंद्र पंत को पं. उद्धवदास मेहता समाज सेवी सम्मान से सम्मानित किया गया। पं. मेहता की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम का आयोजन कमला पार्क स्थित आईटी पार्क में किया गया। नगर निगम भोपाल द्वारा स्थापित सम्मान के तहत एक लाख की राशि, शॉल एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किया जाता है। कार्यक्रम में सांसद आलोक शर्मा, विधायक भगवानदास सबनानी, महापौर मालती राय, निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। आरंभ में अतिथियों ने स्व. मेहता के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में विजयदत्त श्रीधर, रमेश शर्मा, ओम मेहता, भगवानदास ढालिया प्रेमनारायण 'प्रेमी', भँवर लाल श्रीवास सहित अनेक लोग उपस्थित थे।

हिन्दी गौरव अलंकरण समारोह 2025 सम्पन्न

डॉ. नीरजा माधव और शिवकुमार विवेक को मिला हिन्दी गौरव अलंकरण- 2025

भाषा और भारतीयता की चिंता आवश्यक- प्रो. द्विवेदी
हिन्दी के प्रति भाषाई परतंत्रता आज भी जारी- डॉ. माधव
हिन्दी प्रचार में समाचार पत्रों की अहम भूमिका रही- शिवकुमार विवेक
पाँच कवियों को भी काव्य गौरव अलंकरण मिला

इंदौर। हिन्दी भाषा के विस्तार के लिए लगातार कार्यरत 'मातृभाषा उन्नयन संस्थान' शनिवार 22 मार्च 2025 को स्थानीय राजेन्द्र माथुर सभागार, इन्दौर प्रेस क्लब में हिन्दी गौरव अलंकरण समारोह आयोजित किया गया, जिसमें वर्ष 2025 का हिन्दी गौरव अलंकरण वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. नीरजा माधव व शिवकुमार विवेक को विभूषित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली के पूर्व महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी व अध्यक्षता इन्दौर प्रेस क्लब के अध्यक्ष अरविंद तिवारी ने की। अतिथियों का स्वागत शैलेश पाठक, नीतेश गुप्ता, डॉ. नीना जोशी, जलज व्यास, पारस बिरला, ईश्वर शर्मा, अर्जुन रिछारिया, मणिमाला शर्मा ने किया। स्वागत उद्बोधन डॉ. अर्पण जैन 'अविचल' एवं संचालन डॉ. अखिलेश राव ने किया। अभिनन्दन पत्र वाचन विनीता तिवारी व रमेश चंद्र शर्मा ने किया। हिन्दी गौरव अलंकरण समारोह में काव्य साधकों में पुणे से निधि गुप्ता 'कशिश', धौलपुर से अपूर्व माधव झा, चन्देरी से सौरभ जैन 'भयंकर', रतलाम से प्रवीण अत्रे और गौतमपुरा से पंकज प्रजापत को काव्य गौरव अलंकरण प्रदान किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. संजय द्विवेदी ने कहा कि भाषा और भारतीयता की चिंता आवश्यक है, राष्ट्रीयता कम हुई तो राष्ट्र के मानबिंदुओं का अपमान होगा।' प्रो.द्विवेदी ने कहा कि राजनीतिक परिस्थितियों के कारण यह भारतीय भाषाओं का अमृतकाल भी है। हमें इसका लाभ उठाते हुए भारतीय

भाषाओं को हर क्षेत्र में स्थापित करना होगा। सम्मान मूर्ति नीरजा माधव ने कहा कि %लोक ने हिन्दी को कटघरे से वापस निकालने का समय है। राष्ट्रीयता की भावना का सागर हिलोरे लेने लगेगा, तब ही भाषाई विरोध के तटबंध टूट जायेंगे। हिन्दी को किश्तों में लागू करने की भूल रही, इससे हिन्दी का नुकसान हुआ। भारतीय भाषाओं के लिए सर्वमान्य लिपि देवनागरी हो, तब सभी भाषाओं में साम्य स्थापित होगा। सम्मान मूर्ति शिवकुमार विवेक ने कहा कि हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में समाचार पत्रों की अहम भूमिका रही है। भाषा की मर्यादा और शालीनता समाचार पत्रों ने सिखाई है। समाचार पत्रों ने ही भाषा का बाज़ार तैयार किया। अध्यक्ष अरविंद तिवारी ने कहा कि भाषाई एकता की मज़बूत इकाई है मातृभाषा उन्नयन संस्थान। आयोजन में साहित्यकार सुषमा व्यास 'राजनिधि' के कहानी संग्रह तीसरे क़दम की आहट का लोकार्पण भी हुआ। इस अवसर पर डा. बेनी माधव ,सूर्यकांत नागर, नर्मदाप्रसाद उपाध्याय, पुरुषोत्तम दुबे, योगेन्द्रनाथ शुक्ल, मुकेश तिवारी, दीपक कर्दम, संध्या रॉय चौधरी, डॉ. सुनीता फड़नीस आदि मौजूद रहे।

हिंदी लेखिका संघ के सम्मान सम्मानित हुईं चिन्मयी शर्मा

हिंदी लेखिका संघ द्वारा पत्रकारिता के क्षेत्र में दिये जाने वाले सम्मान से स्वदेश ज्योति की संचालक चिन्मयी शर्मा को सम्मानित किया गया। हिंदी भवन के नरेश मेहता कक्ष में आयोजित कार्यक्रम में वरिष्ठ हिंदी सेवी एवं मप्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के मंत्री संचालक कैलाशचंद्र पंत ने उन्हें यह सम्मान प्रदान किया। इस अवसर पर समिति के सहायक मंत्री डॉ. संजय सक्सेना, बाल शोध केंद्र के निदेशक डॉ. महेश सक्सेना, लेखिका संघ की अध्यक्ष डॉ. कुमकुम गुप्ता, पूर्व अध्यक्ष डॉ. अनीता सक्सेना सहित बड़ी संख्या में लेखिकायें उपस्थित रहीं। चिन्मयी शर्मा बीते करीब 13 वर्षों से पत्रकारिता में सक्रिय हैं। इस दौरान विभिन्न भूमिकाओं में कार्य किया। मुद्रित माध्यम के साथ ही वे डिजीटल तथा दृश्य माध्यम में भी समान अधिकार रखती है। उनकी इस उपलब्धि पर स्वदेश ज्योति परिवार सहित पत्रकारिता की अन्य विभूतियों ने बधाई दी हैं।

बीजापुर ज़िले के भोपालपटनम् में रचित नाटक गुण्डाधूर का भोपाल में सफल मंचन

भोपालपटनम निवासी लक्ष्मीनारायण पयोधि के द्वारा रचित इस नाटक का 36 वर्षों बाद पुनः मंचन

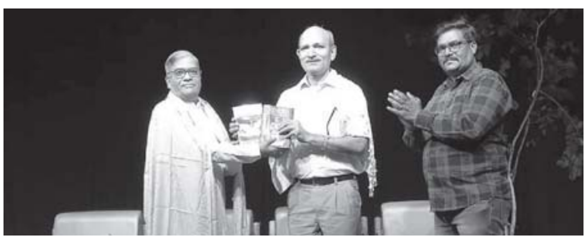

बीजापुर जिले के प्रतिष्ठित साहित्यकार लक्ष्मीनारायण ताटी पयोधि के बहुचर्चित, बहुचित और बहुप्रसारित काव्यनाटक गुण्डाधूर का मंचन 25 मार्च 2025 की शाम को भोपाल के शहीद भवन में किया गया। यह जानकारी देते हुए पयोधि के छोटे भाई और पूर्व जिला पंचायत सदस्य बसंत ताटी ने बताया कि इस नाटक की रचना पयोधि ने गहन शोध के बाद भोपालपटनम में ही वर्ष 1982 में की थी। जिसका प्रकाशन सन् 1984-85 में बस्तर के लोकप्रिय दैनिक दण्डकारण्य समाचार के साहित्यिक परिशिष्ट में धारावाहिक रूप से हुआ था। जिससे इस नाटक की ओर बुद्धिजीवियों का ध्यान आकृष्ट हुआ। और उस पर चर्चा शुरू हुई। बसंत ताटी ने बताया कि बस्तर स्टेट में ब्रिटिश हुकूमत द्वारा आदिवासियों के जल, जंगल, जमीन और अन्य परंपरागत संसाधनों से आदिवासियों के अधिकारों से बेदखल करने तथा दीगर आदिवासी विरोधी नीतियां लागू करने से उपजे असंतोष ने डारामिरी संकेतक के मार्फत आदिवासी समुदायों को एकजुट किया और भूमकाल जैसा महाविद्रोह घटित हो गया। पयोधि रचित नाटक से पहले यह घटना अधिक लोगों की जानकारी में नहीं थी।

बसंत ताटी के अनुसार वर्ष 1987 से 89 तक स्व. हरि नायडू के निर्देशन में बस्तर संभाग के सभी तहसील मुख्यालयों और रायपुर जगार 88 में गुण्डाधूर का महानाट्य के रूप में भव्य मंचन हुआ था। पहले आकाशवणी, जगदलपुर से स्थानीय और फिर आकाशवणी, रायपुर द्वारा इसका रेडियो प्ले के रूप में अखिल भारतीय स्तर पर इसका प्रसारण किया गया था। संस्कृति विभाग मध्यप्रदेश के स्वराज संस्थान संचालनालय द्वारा इस पर आधारित डाक्यूड्रामा का निर्माण भी किया गया। ऐसे लोकप्रिय नाटक का लगभग 36 वर्षों बाद भोपाल में मंचित होना सुखद है। ताटी ने कहा कि बस्तर के भूमकाल विद्रोह को स्वतंत्रता संग्राम के रूप में स्थापित कर आदिवासी-चेतना को जन-जन तक पहुंचाने वाले इस नाटक का भोपाल में मंचित होना भोपालपटनम् और बीजापुर जिले के लिये गौरवपूर्ण है। गुण्डाधूर छत्तीसगढ़ राय में आदिवासी-अस्मिता के प्रतीक हैं। इसलिये इस नाटक का मंचन संपूर्ण छत्तीसगढ़ में होना चाहिए ताकि नयी पीढ़ी को इससे प्रेरणा मिल सके। 25 मार्च 2025 को यामिनी कल्चरल एवं वेलफेयर सोसायटी भोपाल द्वारा शहीद भवन में गुण्डाधूर नाटक के निर्देशक रविन्द्र मोरे के निर्देशन में सफल मंचन हुआ मुख्य अतिथि डॉ. मृगेन्द्र राय मुम्बई और लेखक लक्ष्मीनारायण पयोधि विशेष रूप से उपस्थित थे।

भारतीय हिन्दी सेला पुरस्कार से प्रो. डॉ. श्री राम परिहार सम्मानित हुए

महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी के प्रतिष्ठित पुरस्कारों का वितरण समारोह रहा गरिमापूर्ण

सांस्कृतिक कार्यमंत्री आशीष शेलार की घोषणा भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयी के नाम से दिया गया विशेष भाषा शिखर सम्मान

महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी जल्दी ही भारतरत्न और पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की स्मृति में विशेष भाषा शिखर साहित्य सम्मान प्रदान किया गया। यह सम्मान हिंदी साहित्य में अतुलनीष योगदान देने वाले मूर्धन्य साहित्यकार को प्रदान किया जाता है।। यह महत्वपूर्ण घोषणा महाराष्ट्र सरकार के पर्यटन एवं सांस्कृतिक कार्य मंत्री एडवोकेट आशीष शेलार ने महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए की। यह गरिमापूर्ण समारोह मुंबई के बांद्रा स्थित रंग शारदा सभागार में मंगलवार, 18 मार्च, 2025 की शाम सम्पन्न हुआ, जिसमें वर्ष 2024-25 के लिए विभिन्न प्रतिष्ठित पुरस्कार वितरित किये गये। महाराष्ट्र के सांस्कृतिक कार्य मंत्री आशीष शेलार ने इस मौके पर अपने सम्बोधन में कहा कि महाराष्ट्र की भूमि मराठी के साथ साथ हिंदी साहित्य और भाषा के संवर्धन के लिए भी प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र देश का केवल एकमेव ऐसा राज्य है, जहाँ दस भाषाओं की अकादमियों सक्रिय हैं। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में इन सभी भाषाओं के संवर्धन हेतु महाराष्ट्र सरकार अधिकाधिक प्रयास करती दिखेगी। शेलार ने कहा कि भाषा समाज को जोडने और संस्कारों के संवर्धन का महत्वपूर्ण माध्यम है। इसलिए अच्छे बाल साहित्य की निर्मिती पर अधिक जोर दिया जाना चाहिये, ताकि हमारी आने वाली पीडी भी छत्रपति संभाजी राजे और तारा रानी जैसे महानायकों तथा भारत की समृद्ध एवं अनमोल धरोहर से परिचित हो सके। इस अवसर पर सभी का स्वागत करते हुए महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी के कार्याध्यक्ष डॉ. शीतला प्रसाद दुबे ने अकादमी की विभिन्न गतिविधियों और योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस समारोह में कुल 46 साहित्यकारों को सम्मानित किया जा रहा है और विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि इस साल से विभिन्न पुरस्कारों की राशि दो गुना कर दी गई है। इसके फलस्वरूप सर्वोच्च पुरस्कार दो लाख रुपये का दिया जा रहा है। कार्याध्यक्ष डॉ. दुबे ने पुरस्कार राशि में इस उल्लेखनीय बढ़ोतरी के लिए महाराष्ट्र सरकार का आभार व्यक्त किया। पुरस्कार वितरण समारोह की शुरुआत सांस्कृतिक राज्य मंत्री और विभिन्न गणमान्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन और महाराष्ट्र राज्य गीत के साथ हुई। इस अवसर पर पुण्य श्लोका अहिल्यादेवी होलकर की 300 वीं जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सुरुचिपूर्ण नाटक के प्रभावशाली मंचन ने सभी को अभिभूत कर दिया। बाद में सांस्कृतिक कार्य मंत्री और अन्य अतिथिगणों द्वारा विभिन्न पुरस्कारों का वितरण किया गया। इस वर्ष अखिल भारतीय सम्मान जीवन गौरव पुरस्कारों में महाराष्ट्र भारती अखिल भारतीय हिंदी सेवा पुरस्कार के लिए सुप्रसिद्ध साहित्यकार रामकृष्ण सहस्त्रबुद्धे तथा डॉ. राम मनोहर त्रिपाठी अखिल भारतीय हिंदी सेवा पुरस्कार के लिए सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. (डॉ.) राम परिहार को सम्मानित किया गया।

राहुल श्रीवास की प्रदर्शनी मानव संग्रहालय में

म.प्र. ग्लोबल इनवेस्टर्स समिट दिनांक 24 एवं 25 फरवरी को मानव संग्रहालय में राहुल श्रीवास वाद्य यंत्रों के प्रतिरूप की प्रदर्शनी मानव संग्रहालय में लगायी गई। इसके पूर्व राहुल श्रीवास की प्रदर्शनिया म.प्र. पर्यटन विकास बोर्ड की ओर से ग्वालियर तानसेन समारोह, आर्ट ऑफ लिविंग बैंगलूरू, लोक रंग भोपाल तथा सूरज कुण्ड हरियाणा में भी वाद्य यंत्रों की प्रति कृतियों की प्रदर्शनिया लगाई गई है।

गढ़ पैलेस कोटा के मुक्ताकाश मंच पर शास्त्रीय गायक डॉ. कैवल्य कुमार ने छेड़ी सुरीली तान.......

महाराव श्री बृजराज सिंह स्मृति संगीत समारोह कोटा में मुम्बई से प्रस्तुति देने आऐ किराना घराने के कोहिनूर शास्त्रीय गायक अभिनेता डॉ 0 कैवल्य कुमार गुरव ने अपने गायन से सुधी श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया।

आरंभ में महाराज श्री इज्यराज सिंह जी ने महाराव श्री बृजराज सिंह जी के चित्र पर माल्यार्पण किया।

डॉ. पंडित कैवल्य कुमार गुरव ने राग ..शिव रंजनी.... में विलम्बित ख्याल जिसके बोल.सुघर पिया ...... तथा छोटा ख्याल त्रिताल में जिसके बोल -काहे करत मोसे रार - विभिन्न आलाप तानो जैसे बिजली की तान, बकरे की तान,गमक तान, घसीट तान जैसी चमत्कारिक तानों से उन्होंने अपने गायन को संवारा आपके साथ तबले पर बनारस घराने के पंडित मिथिलेश झा हारमोनियम पर कलकता के पंडित राजेन्द्र बनर्जी तानपुरा पर कोटा सुरीली गायिका सुश्री आस्था सक्सेना एवं रजनीश ने संगत कर चार चांद लगा दिए कार्यक्रम का सधा हुआ संचालन संगीताचार्य प्रेरणा शर्मा ने किया।

पंडित जी ने अपने सुमधुर चमत्कारी शास्त्रीय गायन के बाद अत्यंत लोकप्रिय पूरब की उप शास्त्रीय शैली में राग खमाज में ठुमरी तोरी ना मानूँगी बतिया व झूला अम्बुवा की डारी पे झूला झुलावे, सांवरे अईजईयो व निरंजन भजन सूर चराचर छायो भजन सुनाकर भक्ति रस से सराबोर कर दिया... भक्ति होरी के बोल की निकसे चले कुंवर संग खेलन चले होरी अत्यंत सुरीली प्रस्तुतियां देकर गढ़ में उपस्थित सैकड़ों श्रोताओं को रस विभोर कर दिया। श्रोताओं की फ़रमाइश पर आपने राग बसंत में फगवा ब्रज देखन को चलो री सुनाकर बासंती माहौल बना दिया। उन्होंने संगीत के विद्यार्थियों योग प्राणायाम एवं ध्यान साधना के साथ संगीत साधना करने के लिए प्रेरित किया।

तानपुरा पर गूंज रहे स्वरों में शास्त्रीय गायन के साथ तबले व हारमोनियम पर जवाब सवाल श्रोताओं के अंतर्मन को छू रहे थे। दरबारी महौल में सजी शास्त्रीय संगीत की महफिल जनमानस को तनाव मुक्त कर शान्ति और आनंद प्रदान कर रहा थी।

राज परिवार के सदस्य व गण मान्य अतिथि...... राव माधोसिंह म्युजियम ट्रस्ट कोटा एवं बृजराज भवन पैलेस के तत्वावधान में आयोजित शास्त्रीय संगीत समारोह में आज के आयोजन के साक्षी संरक्षक राजमाता श्रीमती उत्तरादेवी जी, महाराव श्रीमान इज्यराज सिंह, जी, विधायक महारानी कल्पना देवी जी, महाराज कुमार जयदेव सिंह जी, झालावाड़ के राजकुमार जयसल झाला,पूर्व न्यायाधीश दिलीप सिंह झाला, श्री निखिलेश सेठी, सम्भागीय आयुक्त श्री राजेन्द्र सिंह जी, जिला कलेक्टर रविन्द्र गोस्वामी,संस्कार भारती के श्री मनोज गौतम डी सी एम के अनुराग भटनागर, महावीर सिंह उपायुक्त, महाराजा अभिमन्यु सिंह, रविंद्र सिंह तोमर, ठाकुर वी पी सिंह, श्री रणवीर सिंह जी आशुतोष दाधीच एडमिरल श्री विनीत बक्षी, श्री वी के जेटली,इतिहासकार डॉ अरविन्द सक्सेना कोटा के संगीतज्ञ पंडित महेश शर्मा, प्रो0 राजेन्द्र माहेश्वरी, श्री मोहन पाराशर, शास्त्रीय गायिका संगीता सक्सेना ,डॉ 0 संतोष कुमार मीना, तबला वादक घनश्याम राव, गायत्री परिवार के देवेंद्र कुमार सक्सेना, संगीत रसिक श्री हर्षवर्धन सिंह डॉ. टी एन दुबे, श्री अशोक जैन, फोटो ग्राफर एच ए जैदी ताल मात्रा के दीपक सिंह तबला वादक महूराज राव सहित बड़ी संख्या में संगीत रसिक मौजूद थे।

समापन पर महाराव इज्यराज सिंह ने सभी कलाकारों का सम्मान किया व सभी श्रोताओं का आभार व्यक्त किया उल्लेखनीय है कि लगभग 25 वर्ष के दौरान राव माधोसिंह म्युजियम ट्रस्ट कोटा के तत्वावधान भीम

महल में शास्त्रीय संगीत के कई दिग्गज प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक प्रस्तुति देने आये हैं जिनमें पंडित रामाश्रय झा रामरंग, पंडित गोकुलोत्सव जी महाराज, पंडित छन्नूलाल मिश्र, पंडित राजन साजन मिश्र, पंडित विद्याधर व्यास, पंडित प्रभाकर कालेकर, पंडित अजय चक्रवर्ती, विदुषी शुभ्रा गुहा, कौशिकी चक्रवर्ती, उस्ताद मजहर अली जव्वाद अली, श्री सारथी चटर्जी, पंडित भोलानाथ मिश्र, पंडित रितेश रजनीश मिश्र आदि प्रमुख हैं।

रपट - देवेंद्र कुमार सक्सेना कला संस्कृति मीडिया समन्वयक
मोबा. 94142 91112
संगीत विभाग राजकीय कला कन्या महाविद्यालय कोटा

■

रामधारी सिंह दिनकर भवन में बही काव्य की रस धारा

छोटी-छोटी गंभीर गोष्ठियों की बेहद जरूरत है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर के पटना स्थित आवास, दिनकर भवन में, उनके पौत्र अरविंद कुमार सिंह के संयोजन में, प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी, एक यादगार काव्य संध्या का आयोजन वरिष्ठ साहित्यकार भगवती प्रसाद द्विवेदी की अध्यक्षता में किया गया। इस कार्यक्रम में नगर के एक दर्जन से अधिक नए पुराने प्रतिनिधि कवियों ने, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर को अपने अपने गीत-गजलों के माध्यम से काव्यांजलि अर्पित किया। पूरी गोष्ठी का सशक्त संचालन किया वरिष्ठ कवि एवं पत्रकार अरविंद कुमार सिंह ने किया ।

अपनी अध्यक्षीय टिप्पणी में भगवती प्रसाद द्विवेदी ने कहा कि बड़ी-बड़ी गोष्ठियों में लोग कविता सुनते नहीं सिर्फ पढ़ने की ललक रखते हैं. और कविता पाठ के दौरान मोबाइल चलाते हुए देखे जाते है। ऐसे में, इस तरह की छोटी-छोटी गंभीर गोष्ठियों की बेहद जरूरत है। इसी क्रम में वरिष्ठ कवि एवं चित्रकार सिद्धेश्वर ने कहा कि काव्य पाठ की सार्थकता तभी है, जब वह ह्रदय से पढी जाए और गंभीरता से सुनी जाए। यहां पर महत्व कवियों की संख्या से नहीं, बल्कि श्रेष्ठ कविताओं की सार्थक अभिव्यक्ति से है, जो इस तरह की छोटी-छोटी गंभीर गोष्ठियों के माध्यम से ही संभव है। खासकर राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर के उस गृह स्थल पर काव्य पाठ करने का अपना अलग अनुभव महसूस हो रहा है, जहां पर स्वयं राष्ट्र कवि दिनकर ने न जाने कितनी कविताओं का सृजन किया है।

दिनकर के पौत्र अरविंद कुमार सिंह ने, आज रिश्तों में दरार ही दरार है, यह सरासर मनुष्यता की हार है।

भगवती प्रसाद द्विवेदी ने समय-समय से कचनार खिलने खुलने से बचते, यह कैसा विस्तार कि, जिसमें रोज-चब-रोज सिकुड़ना है। चंद्रिका ठाकुर ने देशदीप ने नेह की शाम है, तुम भी आओ न प्रिय, देखो मधुमास का आगमन हो रहा है। भावना शेखर ने सागर के पैरों तले, मिलो नीचे, सोई है जमीन। सिद्धेश्वर ने आर्यों का पानी नहीं, है गम के आंसू, चमक तो नई है मगर, जख्म पुराना है। अनिकेत पाठक ने ना हो अंधीर धड़ धीर वीर वीरता अपनी दिखा दो पार्थ प्रभात कुमार धवन ने वही पलवित है वही पुष्पित है। सुनील कुमार ने टूटे दिल के मेरे एहसास के मंजर देखो, संग दिल शहर में कैसे हैं सितमगर देखो । उत्कर्ष आनंद ने ध्यान रखो है वत्स, प्रेम ही जन्म दिया करता जैसी उत्कृष्ट नज्म, गीत, गजल से समकालीन कविता की श्रेष्ठमय प्रस्तुति दी। अंत में अध्यक्षीय उद्बोधन के साथ कार्यक्रम समापन की घोषणा की गई।

प्रस्तुति: अरविंद कुमार सिंह सिद्धेश्वर
मोबा.9234 760365

मध्य प्रदेश नाट्य विद्यालय के अकादमिक भवन का लोकार्पण

13 साल बाद... MPSD को मिला ऑडियो रूम, ब्लैक बॉक्स थिएटर जैसी सुविधाओं से लैस कैंपस

मध्य प्रदेश स्कूल ऑफ ड्रामा (एमपीएसडी) के नए अकादमिक भवन का लोकार्पण किया गया। इसका उद्घाटन संस्कृति, पर्यटन और धार्मिक न्यास व धर्मस्व राज्य मंत्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी ने किया। इस मौके पर मंत्री लोधी ने कहा-मध्य प्रदेश भारत की सांस्कृतिक विरासत का प्रमुख केंद्र है और हम सब इसी विरासत को आगे बढ़ाने के लिए काम कर रहे हैं। आने वाले समय में मप्र नाट्य विद्यालय को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की तरह विकसित किया जाएगा। इस दौरान अकादमिक भवन का भ्रमण किया और सुविधाओं का जायजा लिया। उद्घाटन अवसर पर प्रमुख सचिव संस्कृति शिव शेखर शुक्ला, संचालक संस्कृति एनपी नामदेव, निदेशक टीकम चंद्र जोशी भी मौजूद रहे। मध्य प्रदेश स्कूल ऑफ ड्रामा को 13 साल के इंतजार के बाद अपना नया और आधुनिक कैंपस मिलने जा रहा है। इस नए परिसर में थिएटर प्रशिक्षण के लिए कई नई सुविधाएं जोड़ी गई हैं, जिससे छात्रों को बेहतर प्रशिक्षण मिल सकेगा।

ब्लैक बॉक्स थिएटर: एक बहुउद्देश्यीय थिएटर, जहां लाइटिंग और साउंड इफेक्ट्स को आसानी नियंत्रित किया जा सकता है। से ऑडियो रूम: ध्वनि रिकॉर्डिंग और एडिटिंग के लिए विशेष रूप से डिजाइन किया गया स्पेस। मेकअप रूम: कलाकारों के लिए प्रोफेशनल मेकअप और ड्रेसिंग सुविधाएं। मल्टी-परपज हॉल: वर्कशॉप, रिहर्सल और परफॉर्मेंस के लिए बड़ा हॉल।

आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर: थिएटर ट्रेनिंग के लिए अत्याधुनिक तकनीक से लैस सुविधाएं। एमपीएसडी से अब तक: नाट्य विद्यालय से अब तक 275 छात्र स्नातक हो चुके हैं। 30+ स्टूडेंट्स थिएटर की बारीकियां सीख रहे हैं। 50 से 70 छात्र मुंबई में एक्टिंग, निर्देशन और पटकथा लेखन में कॅरियर बना रहे हैं। मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय के अकादमिक भवन के लोकार्पण के अवसर पर स्टूडेट्स ने गीत-संगीत की प्रस्तुति भी दी गई।

एक शाम-अटल जी के नाम कवि सम्मेलन में खूब चला कवियों का जादू

अलीगढ़ महोत्सव के सौजन्य से कृष्णांजलि सभागार में अटल जी के जन्म शताब्दी वर्ष पर भव्य विराट कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्री श्रीश शर्मा (एमएलसी, बीजेपी महानगर प्रभारी) महानगर अध्यक्ष, भाजपा इं. राजीव शर्मा, वरिष्ठ नेता राजेंद्र चीफ आदि ने मां शारदे की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन कर किया। तत्पश्चात कवयित्री भारती शर्मा ने मां सरस्वती की सुमधुर वंदना प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ व्यंग्कार अशोक 'अंजुम' ने किया। कार्यक्रम के प्रथम सत्र में डॉ. दौलत राम शर्मा, पंकज भारद्वाज, अमिताभ शर्मा ने अटल जी की कविताओं को अपने अदाज में किया। उसके बाद कवियों ने अपनी कविताओं की प्रस्तुतीकरण से समां बांध दिया। अलवर से पधारे ओज के सशक्त हस्ताक्षर विनीत चौहान ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने अटल जी को समर्पित करते हुए पंक्तियां पढ़ीं-तुम गए लगा कुछ ऐसे ही, जैसे ध्रुव तारा टूट गया या कोई जोगी इकतारा, ले गाते गाते रूठ गया। तुम राजनीति में राजऋषि, थे राष्ट्रवाद के उन्नायक तुम तानसेन की नगरी में, भारत माता के सुर गायक। तुम महाकाल के आराधक, क्यों महाकाल से हार गए या मेरी मति का ही छल है, तुम महाकाल के पार गए। लखनऊ से पधारे प्रसिद्ध हास्य कवि सूर्यकुमार पांडेय ने श्रोताओं को खूब गुदगुदाया। उन्होंने पढ़ा-
पैकिंग पुरानी पड़ चुकी लगेज वही है 'क्या एज से होता है ऑलवेज वही है मॉडल है ओल्ड डेज का पर क्रेज वही है माइलेज भले ज़्यादा एवरेज वही है इटावा से पधारे डॉ. कमलेश शर्मा की कविताओं पर श्रोता ताली बजाने पर मजबूर हो गए जतन से सवारी कलम बोलती है कि बनकर दुधारी कलम बोलती है जहां लोग अन्याय पर मौन रहते वहां पर हमारी कलम बोलती है' कृष्णांजलि सभागार तालियों से गूंज उठा जब सोनरूपा विशाल ने शृंगार रस में डूबी हुई ये पंक्तियां पढ़ी-'दर्द का आकलन नहीं होता इसमें कोई चयन नहीं होता प्यार में डूबना ही पड़ता है प्यार में आचमन नहीं होता' चरिष्ठ व्यंग्यकार कवि अशोक अंजुम ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को खूब आह्लादित किया-'चांद को तोड़ के कंदील बनाती होगी। ओस की बूंद से वो झील बनती होगी। पूछा अम्मा से कि शब्बो कहां है अम्मा जी?' बोली झट से वो छत पे रील बनाती होगी। कवयित्री भारती शर्मा की कविताओं पर श्रोताओं ने खूब तालियां बजाई-'इतना आसां नहीं था हमारे लिए हमने ददों गमों के सहारे लिए अश्क स्याही ये फुरकत कलम बन गई गीत लिखते रहे हम तुम्हारे लिए ' युवा कवि सुधांशु गोस्वामी ने अपनी पंक्तियों से श्रोताओं में देशभक्ति की भावना का जागरण करते हुए खूब तालियां बटोरी 'भारत मां की जय ना बोले यह भी तो गद्दारी है मातृभूमि का मान बचाना सबकी जिम्मेदारी है और अभी तो शीश सुरक्षित हम वीरों के वंशज है बिना शीश भी थड़ गोरा का दुश्मन दल पर भारी है' डॉ. दौलत राम शर्मा ने राम गीत। पढ़कर सभी श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया 'सँवारी है मेरी बिगड़ी सँवारेंगे मेरे प्रभु राम मुझे भवपार निश्चय ही उतारेंगे मेरे प्रभु राम'

मुंबई से पधारे फिल्मी गीतकार विकास कौशिक ने सीता पर बहुत मार्मिक कविता सुनाई। पंकज भारद्वाज, अमिताभ शर्मा आदि कवियों की कविताओं पर श्रोता झूम उठे। कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष भाजपा महानगर अध्यक्ष इं. राजीव शर्मा ने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि आज का कार्यक्रम सफलता के शिखर तक पहुंचा है। उन्होंने कार्यक्रम संयोजक अशोक अंजुम को बधाई देते हुए सभी कवियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

-रपट अशोक 'अंजूम'

कविकुलगुरु कालिदास ने संस्कृत साहित्य को सर्वाधिक समृद्ध किया
कालिदास प्रसंग में नृत्यनाटिका ओर संस्कृति के विविध रंगों की संस्कृतिक प्रस्तुतियां हुई

आरंभ में स्वागत उद्बोधन देते हुए कालिदास संस्कृत अकादमी उज्जैन के निदेशक डॉ. गोविंद दत्तात्रेय गंधे ने स्वागत उद्बोधन दिया व कालिदास संस्कृत अकादमी उज्जैन की गतिविधियों से अवगत कराया। इस अवसर पर जिला कलेक्टर श्रीमती अदिति गर्ग ने संबोधित करते हुए कहा कि मंदसौर मंदसौर क्षेत्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि यहां के साहित्य और सांस्कृतिक स्वरूप को भी प्रकट करती है निश्चित ही यहां साहित्य और संस्कृति के ऐसे स्तरीय आयोजन होने चाहिए।उन्होंने आगामी 30 ओर 31 जनवरी तथा 1 फरवरी को सीतामऊ में होने वाले तीन दिवसीय साहित्य महोत्सव की जानकारी दी। जिला पुलिस अधीक्षक अभिषेक आनंद और जनपरिषद अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार डॉ घनश्याम बटवाल मंचासीन थे।

रपट डॉ घनश्याम बटवाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मुख्यमंत्री निवास में जनसम्पर्क विभाग के मोबाइल ऐप का लोकार्पण किया।

डॉ महेंद्र भानावत का निधन लोकसाहित्य जगत की अपूरणीय क्षति ....

राजस्थान ही नहीं देश के वरिष्ठ लोक साहित्यविद परम आदरणीय डा. महेन्द्र भानावत का निधन सृजनात्मक लोक साहित्य जगत के लिए अपूर्णीय क्षति और दुखद है उन्हें कोटा के साहित्य इतिहास संगीत जगत के लोगों ने श्रध्दांजलि अर्पित की। श्री भारतेंदु समिति कोटा के संरक्षक श्री राजेश कृष्ण बिरला ने कहा कि डॉ. भानावत राजस्थान सहित देश की लोक संस्कृति के सच्चे संरक्षक और संवाहक थे। उनका अपना पूरा जीवन लोक कला व आदिवासी साहित्य को समर्पित किया। इतिहासकार डॉ. अरविंद सक्सेना ने कहा कि वे देश के चुने हुए ऐसे महान लोक कला साहित्यविदों में एक थे, जिनके द्वारा लिखी सौ से अधिक पुस्तकें व दस हजार से अधिक शोधपत्र आलेख राजस्थान के लुप्त हो रहे लोक व आदिवासी जीवन को जानने हेतु शोधार्थियों के लिए अत्यधिक सहायक शोधपरक सामग्री साबित होगी। कालेज शिक्षा के सहायक निदेशक संस्कृत विद्वान डॉ. गीता राम शर्मा ने बताया कि आप सुप्रतिष्ठित भारतीय लोक कला मंडल उदयपुर के निदेशक व राजस्थान संगीत नाटक अकादमी कार्यकारिणी के लंबे समय तक सदस्य रहे हैं । उनका निधन लोक कला साहित्य जगत की अपूरणीय क्षति है। कला संस्कृति सेवक देवेंद्र कुमार सक्सेना ने कहा कि फक्कड़ प्रकृति के धनी स्पष्ट वादी निर्भीक डॉ. भानावत जी से मेरे 1995 – 1996 से आत्मीय संबंध रहे हैं, उनके साथ बीता प्रत्येक रचनात्मक पल प्रेरणा दायक व अविस्मरणीय हैं। उदयपुर जिले के कनौड़ा गांव में उनका जन्म हुआ था 87 वर्षीय डॉ. महेंद्र भानावत कई दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। मंगलवार 25 फरवरी की रात उन्होंने अंतिम सांस ली। शास्त्रीय गायिका श्रीमती संगीता सक्सेना ने बताया कि डॉ. भानावत को राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा विशिष्ट साहित्यकार सम्मान, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा लोकभूषण पुरस्कार, जोधपुर के पूर्व महाराजा गजसिंह द्वारा मारवाड़ रत्न कोमल कोठारी पुरस्कार, भोपाल की कला समय संस्कृति शिक्षा और समाज सेवा समिति द्वारा 'कला समय लोकशिखर सम्मान', अभिनव कला परिषद भोपाल एवं मधुवन संस्था द्वारा सम्मान पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर ने दो लाख पच्चीस हजार रूपये का 'डॉ. कोमल कोठारी लोककला पुरस्कार', कोलकाता के विचार मंच ने 51 हजार रूपये का 'कन्हैयालाल सेठिया पुरस्कार' प्रदान किया। इसी प्रकार राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर द्वारा फेलो, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा राजस्थान के थापे, मेंहदी राचणी, अजूबा राजस्थान पुस्तक पर 'पं. रामनरेश त्रिपाठी नामित पुरस्कार', महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन, उदयपुर द्वारा भारतीय परिवेशमूलक लोकसाहित्य लेखन पर 'महाराणा सज्जनसिंह पुरस्कार' तथा भीलवाड़ा में आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में भंवरलाल कर्णावट फाउंडेशन द्वारा सम्मान उल्लेखनीय है!

राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित गायिका सुश्री आस्था सक्सेना ने बताया कि आदरणीय डॉ0 महेंद्र भानावत जी का सानिध्य और आशीर्वाद मुझे 6 जनवरी 2017 साहित्य मंडल नाथद्वारा में मिला जहाँ उन्हें श्री श्याम जी देवपुरा द्वारा श्री भगवती प्रसाद देवपुरा स्मृति अखिल भारतीय साहित्य सम्मान दिया गया था इस अवसर पर मेरी संगीत प्रस्तुति व सम्मान का कार्यक्रम भी था। मैं लोक कला को समर्पित ऐसे महान लेखक के प्रति अपनी विनम्र श्रध्दांजलि अर्पित करती हूँ.. डॉ. महेंद्र भानावत का निधन लोक साहित्य जगत की अपूरणीय क्षति है...

ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति और मोक्ष प्रदान करें और उनके परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे ? शांति शांति

रपट : आस्था सक्सेना

राष्ट्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत गायिका, कोटा 94142 91112

मध्यप्रदेश खजुराहो में 139 कलाकारों ने रचा वर्ल्ड रिकॉर्ड

मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में विश्व प्रसिद्ध खजुराहो नृत्य महोत्सव के 51वें संस्करण की शुरूआत बुधवार के दिन ऐतिहासिक नगरी खजुराहो में हुई। इस बार हुए आयोजन ने उस समय इतिहास रच दिया जब एक साथ 139 कलाकारों ने करीब 24 घंटे 9 मिनट तक लगातार नृत्य प्रस्तुत किया। करीब 25 घंटे तक चले शास्त्रीय नृत्य ने नया वर्ल्ड रिकॉर्ड बना दिया। इस महोत्सव में शास्त्रीय नृत्य मैराथन (रिले) के लिए गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड भी दिया। इसका प्रमाण-पत्र सीएम मोहन यादव ने स्वीकार किया। दरअसल, गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने का प्रयास 19 फरवरी 2025 के दिन दोपहर 2 बजकर 35 मिनट पर शुरू हुआ। करीब 139 कलाकारों ने घंटों तक लगातार प्रस्तुति देकर 20 फरवरी के दिन इसे अंजाम तक पहुंचा। इसका रिजल्ट यह हुआ कि मध्य प्रदेश ने एक और रिकॉर्ड रच दिया। प्रदेश का नाम एक बार फिर गिनीज ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हो गया।

139 कलाकारों ने करीब 25 घंटे तक दी प्रस्तुति

संस्कृति विभाग की तरफ से आयोजित की गई गतिविधि में 139 कलाकारों ने प्रस्तुति दी। देश भर से अपनी नृत्य कला का प्रदर्शन करने के लिए कई क्लासिकल डांसर खजुराहों पहुंचे थे। इन कलाकारों ने लागातार 24 घंटे 9 मिनट तक कथक, भरतनाट्यम, कुचिपुड़ी, मोहिनीअट्टम, ओडिसी नृत्यों की प्रस्तुति दी। 25 घंटे तक चलते इस वृहद शास्त्रीय नृत्य मैराथन (रिले) की अंतिम प्रस्तुति भरतनाट्यम की थी। गिनीज टीम द्वारा इसे वर्ल्ड रिकॉर्ड घोषित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. यादव को प्रमाण-पत्र सौंपा।

सीएम मोहन यादव ने दी बधाई

इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर सीएम मोहन यादव ने गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड पर सभी कलाकरों को बधाई दी। सीएम ने कलाकारों की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह आयोजन हमारी सांस्कृतिक विरासत का सबसे महत्वपूर्ण प्रतीक है। भारतीय संस्कृति की इस अदभुत प्रस्तुति ने दुनिया को हमारी परंपराओं की समृद्धि से परिचित कराया है। उन्होंने कहा कि ईश्वर की साधना को समर्पित वृहद शास्त्रीय नृत्य मैराथन गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड से नृत्य साधकों का मान बढ़ेगा। यह देश की संस्कृति और नृत्यसाधकों के लिए गौरव का क्षण है। ■

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शताब्दी विशेषांक

नव वर्ष चेतना समिति, लखनऊ की वार्षिक पत्रिका 'नव चैतन्य' के 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शताब्दी विशेषांक' का लोकार्पण अनन्तश्रीविभूषित स्वामी मिथिलेशनन्दिनीशरणजी महाराज (पीठाधीश्वर, सिद्धपीठ, श्रीहनुमन्निवास, अयोध्या), माननीय श्री हृदयनारायण दीक्षित जी (पूर्व अध्यक्ष, उत्तरप्रदेश विधानसभा) तथा श्री रामाशीष सिंह जी (राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य, प्रज्ञा-प्रवाह) के कर-कमलों से 'कला-मण्डपम्', भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय, लखनऊ में सम्पन्न हुआ।

उक्त विशेषांक संघ के शताब्दी-वर्ष को रेखांकित करने के साथ-साथ उन आदर्शों, मूल्यों और सिद्धान्तों को उजागर करने का प्रयास है, जिन्होंने बीती एक शताब्दी में संघ को भारत की सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना का मेरुदण्ड बनाया। इसमें संघ-विषयक प्रामाणिक तथ्यों, दुर्लभ चित्रों, ऐतिहासिक दस्तावेज़ों, प्रेरणादायक घटनाओं और युगान्तकारी प्रसंगों को संकलित कर इसे संग्रहणीय बनाने का विनम्र प्रयास किया गया है। अतिथि सम्पादक के रूप में मुझे विश्वास है कि 'नव चैतन्य' का यह विशेषांक न केवल संघ के कार्यकर्ताओं और विचारानुयायियों के लिए प्रेरणास्रोत बनेगा, अपितु उन सभी पाठकों के लिए भी, जो संघ की विचारधारा और उसकी राष्ट्रोत्कर्ष की यात्रा को समझना चाहते हैं, उपयोगी सिद्ध होगा। ■

अंकुरित संस्कार उम्र से बड़े है इनके...

बाल-मन उम्र की मंजिल तय करते-करते बच्चों को आज की तीव्र गति से भागने वाली दुनिया की हर गतिविधि के साथ ताल से ताल मिलाकर चलने की प्रेरणा देता स्तंभ 'नवांकुर' -' कला समय।'

होनहार विरवान के होत चीकने पात

नाम- कियान दास
माता- श्री मती नेहामहेश्वरी-किराना व्यापारी
पिता- श्री विश्वजीत दास - फिटनेस ट्रेनर मिस्टर एम.पी.
जन्मतिथि - 20-9-2020
कक्षा- नर्सरी
स्कूल सागर पब्लिक स्कूल रोहित नगर, भोपाल (म.प्र.)

कियान दास 5 महीने की उम्र में फोटो देखकर वस्तुओं को पहचान लेता था। जैसे जैसे उम्र बढ़ी, लगाव भगवान के प्रति बढ़ता गया भजन सुनते सुनते संगीत के प्रती रूझान बढ़ने लगा। उसने एक वर्ष की उम्र में भजन गाना शुरू कर दिया। जब भी कियान मा-बाप के साथ घूमने फिरने जाता, रास्तेभर भजन गाता रहता। पढ़ाई में उसका मस्तिक बहुत तेज है। स्कूल में पढ़ाया गया पाठ तथा प्रार्थनायें एक बार में याद कर लेता। स्कूल में शिक्षिकाओं का बहुत लाड़ला है। स्कूल में होने वाली प्रतियोगिता ओं में जैसे फैंसीड्रेस कवितापाठ, गायन आदि में उत्कृबट प्रदर्शन करता रहा है। तथा प्रथम स्थान प्राप्त करता रहा है।

कियान को आने कों भजन, आरतियां तथा शिवस्त्रों, हनुमान चालीसा, चौपाइयां पचासों श्लोक कंठस्थ है। कियान की रूचि संगीत में बढ़ती देख उसको कोलार में संचालित संगीत कक्षा त्रिधा संगीत में प्रवेश दिला दिया गया। वह प्रसिद्ध गायक श्री प्रकाश पाठक एवं श्रीमती आरती शर्मा से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ग्राहण कर रहा है। कियान ने तीन चार दिन में ही 46 अलंकार कंठस्थ कर सबको चमतकृत कर दिया।

कियान को अनेकों राग याद हो गये हैं। राग की बारीक से बारीक चीज भी वह याद रखता है। यदि कोई स्वर इधर उधर कोई साथी गाता है। तो वह टोक देता है। कियान को संगीत के अलावा टी.वी. या मोबाइल देखना पसंद नहीं है। वह संगीत और पूजा पाठ में कंठ तक डूबा रहता है।

सत्यनारायणशर्मा
बी-102, जानकी अर्पाट मेंट कोलार रोड भोपाल मोबा. 9926364058

निवेदनः आप भी अपने बच्चों की प्रतिभाओं, कलाओं को उजागर करने हेतु कला समय 'नवांकुर' एवं 'उत्तराधिकार' स्तंभ इस पृष्ठ का हिस्सा बन सकते है- संपादक

कला समय का हरिशंकर परसाई के जन्म शताब्दी वर्ष विशेषांक पर विद्वानों की प्रतिक्रिया

उमेश कुमार गुप्ता अतिथि संपादक और डॉ. बिनय राजा राम

उमेश कुमार गुप्ता अतिथि संपादक और राजेन्द्र अवस्थी

उमेश कुमार गुप्ता अतिथि संपादक और प्रो. संज्जन लाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'

संपादक भँवरलाल श्रीवास और प्रो. शैलेन्द्र शर्मा

'कला समय' पढ़ा। हरिशंकर परसाई के जन्म शताब्दी पर यह विशेषांक महत्वपूर्ण बन पड़ा है। जिसमें आपकी टीम का श्रम साफ-साफ झलकता है। आप लोगों ने परसाई जी के लेखन के लगभग सभी पहलू पर नजर डालने का प्रयास किया। यहाँ तक की उनके हस्तलिखित अंश के साथ-साथ उनके कुछ व्यंग्य लेखन भी आपने शामिल किया है। जो बहुत ही महत्वपूर्ण है। परसाई जी के विदेश गमन की चर्चा और उन की बातचीत पर पर भी, विशेषत: प्रकाश धर्मपाल महेन्द्र जैन जी द्वारा डाला गया जो खास तरह का आलेख बन पड़ा है।

श्रीवास जी ने काफी कुछ साफ कर दिया ''हरिशंकर परसाई ने सामान्यजन को प्रगतिशील जीवन-मूल्यों के प्रति सचेत एवं समाज-राजनीति में भिदे हुए पाखण्ड को उद्घाटित करने का जितना कार्य किया है, प्रेमचंद जी के बाद उतना हिंदी में किसी लेखक ने नहीं किया। प्रेमचंद की परम्परा को बढ़ाने वाले जो साहित्यकार स्वतंत्र भारत में रचना कर रहे हैं, उनमें हरिशंकर परसाई सबसे प्रथम पंक्ति में आते हैं। हमारी शताब्दी के दूसरे तीसरे और चौथे दशक के लगभग आधे दशक के प्रतिनिधि जन-लेखक यदि प्रेमचंद हैं, तो छठवें और सातवें दशक के हरिशंकर परसाई। साहित्य के माध्यम से सामान्य जनता को सामाजिक और राजनीतिक समझदारी देने और सड़ी गली जीवन व्यवस्था को नष्ट कर एक नई समाज-रचना का संकल्प कर हिंदी में जिन लेखकों ने साहित्य निर्माण किया है उनमें परसाई सबसे आगे हैं।

प्रिय बंधु, प्रेम जनमेजय ने भारतेन्दु से लेकर हरिशंकर परसाई के विविध हस्तक्षेप की जहाँ चर्चा की है वहीं वे श्री लाल शुक्ल एवं शरद जोशी की चर्चा भी विस्तार से करते हैं। ये चर्चाएँ बहुत ही समीचीन एवं पत्रिका को ताकत देती हुई प्रतीत होती है। जनमेजय जी को पढ़ना बहुत ही सुख कर लगा।

आदरणीय उमेश कुमार गुप्ता ने परसाई जी के जीवन के सौ वर्ष पर पर जो टिप्पणियां एकत्रित की हैं, वे पत्रिका की क्षमता को विकसित करती है। सप्रे संग्रहालय का बहुत धन्यवाद की उन्होंने एक महत्वपूर्ण कार्य करने में सहयोग किया। परसाई जी अपनी चुटिली बातों और टिप्पणियों के लिए जाने जाते हैं, आपने उन्हें बहुत ही मेहनत से एकत्र किया और प्रस्तुत किया जो पाठकों की समझ विकसित करेगी।

डॉ सुभाष अत्रे ने व्यक्तिगत यादों में परसाई जी को जिस तरह पिरोया है वह अपूर्व है। अत्रे जी ने परसाई जी के व्यंग्य को उनके शब्दों में ही समझाने का प्रयास किया है।

दो नाक वाले लोग की चर्चा न की जाय तो बात अधूरी रह जाएगी। डॉ. लता अग्रवाल तुलजा ने व्यंग्य को समझाने का पूरा प्रयास किया है और यह नाक कटने वाली बात लोगों तक पहुँच जाती है। समाज को सचेत करते हुए।

परसाई जी पर विशेषांक निकालना बहुत ही दुष्कर कार्य था, लेकिन, संपादक जी ने आलेख तैयार करवा लिया और लोगों ने लिख दिया कला समय को एक आकार मिला। आज का जो हमारा समय है वह बहुत ही कठिन है। इस समय में बोलना बहुत ही मुश्किल हो गया है। सच बोलने वालों पर कार्रवाईयों से कोई भी अपरिचित नहीं है। हरिशंकर परसाई ने जीवन भर सत्य ही बोला, वह सत्य भी ऐसा कि शासक को चुभने वाला। तुरंत घायल करने वाला, चोट करने वाला। मैं आपको कला समय के महत्वपूर्ण अंक की बधाई देता हूँ।

वेद प्रकाश
गोरखनाथ मंदिर, भाँटी विहार,राजेन्द नगर (पश्चिमी) गोरखपुर, उत्तर प्रदेश पिन: 273015 मोबा. 9559097457

पं. कैलाशचंद्र घनश्याम पाण्डेय अतिथि संपादक और त्रिभुवन श्रोत्रिय पूर्व अबकारी अधिकारी, जावरा

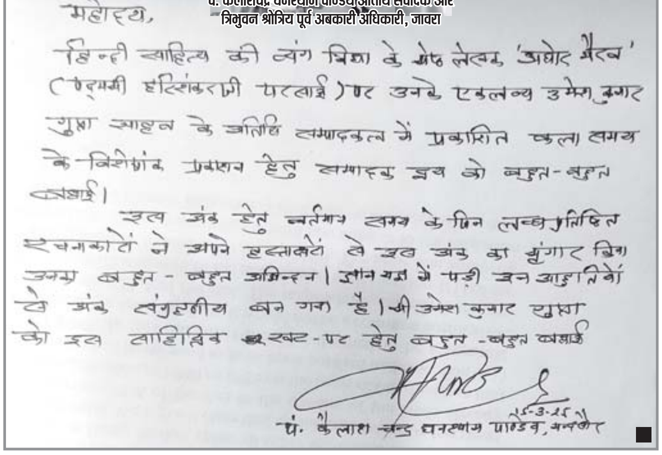
महोदय,

हिन्दी साहित्य की व्यंग विधा के श्रेष्ठ लेखक 'अघोर भैरव' (श्रद्धेय [illegible] हरिशंकरजी परसाई) पर उनके एकलव्य उमेश कुमार गुप्ता साहब के अतिथि सम्पादकत्व में प्रकाशित कला समय के विशेषांक प्रकाशन हेतु सम्पादक द्वय को बहुत-बहुत बधाई।

इस अंक हेतु वर्तमान समय के कई लब्ध प्रतिष्ठित रचनाकारों ने अपने हस्ताक्षरों से इस अंक का शृंगार किया उनका बहुत-बहुत अभिनन्दन। ज्ञान यज्ञ में पड़ी इन आहुतियों से अंक संग्रहणीय बन गया है। श्री उमेश कुमार गुप्ता को इस साहित्यिक रचना-पट हेतु बहुत-बहुत बधाई

15-3-25

पं. कैलाश चन्द्र घनश्याम पाण्डेय, मन्दसौर

आपका अपना

कला समय प्रकाशन

● सुरूचिपूर्ण फोर कलर प्रिंटिंग ● आकर्षक गेटअप ● नयनाभिराम पेपरबैक में...

- कला समय प्रकाशन द्वारा कला, साहित्य और संस्कृति पर केन्द्रित उत्कृष्ट पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। हम प्रकाशन के लिए अच्छी पुस्तकों की पांडुलिपियाँ आंमत्रित करते है। चयनित पांडुलिपियों का प्रकाशन लेखक और प्रकाशक की परस्पर सहमति से तय शर्तो के अनुसार किया जायेगा।
- जिन रचनाकारों को अपनी मौलिक अनुदित, संपादित रचनाओं को पुस्तक रूप में प्रकाशन करवाना है। वे कम्प्यूटर पर साफ-साफ अक्षरों में कागज की एक ओर टाइप की हुई पांडुलिपि की सॉफ्ट कॉपी के साथ कला समय प्रकाशन, भोपाल से संपर्क करें।

विशेष सुविधा

- पुस्तक के लोकार्पण और साहित्यिक मंच पर संवाद, चर्चा आदि की व्यवस्था है।
- प्रकाशित पुस्तक की समीक्षा सुविधा भी उपलब्ध है।
- पुस्तक चयनित ई-पोर्टल (अमेज़न, फ्लिपकार्ट, कला समय ऑनलाईन आदि) पर भी विक्रय के लिये प्रदर्शन की व्यवस्था है।

आप स्वयं पधारे या संपर्क करें....

0755-2562294, 9425678058

kalasamayprakashan@gmail.com

कार्यालय: जे-191, मंगल भवन, ई-6
महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462016 (म.प्र.)

कला समय

के महत्वपूर्ण विशेषांक...

सांस्कृतिक धड़कनों का जीवंत दस्तावेज

सभी विशेषांक कला समय की वेबसाईट www.kalasamaymagazine.com पर देखें व पढ़े जा सकते हैं।

सांस्कृतिक यात्रा का 28वाँ वर्ष...

माया-देवी गुप्ता
ओपन आर्ट गैलरी, भोपाल (म.प्र.)

ग्राम झागरिया, सहारा बायपास से रायसेन रोड गोल्डन सैक स्कायर गेट के अंदर / मो. 9479909299

गैलरी विशेषता : ❖ नये कलाकारों को आर्ट प्रदर्शन हेतु मंच प्रदान करना, ❖ ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देना ❖ भारतीय सभ्यता, संस्कृति कला का प्रचार प्रसार ❖ मासिक साहित्यिक गोष्ठियाँ एवं कला शिविर

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा गणेश ग्राफिक्स, 26 बी, देशबन्धु भवन, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कालोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016 से प्रकाशित। संपादक - भँवरलाल श्रीवास